THE CRAPLER

The Central Reserve Police News Letter & Magazine

1982

THE CRAPLER

The Central Reserve Police News Letter & Magazine

1982

Contents

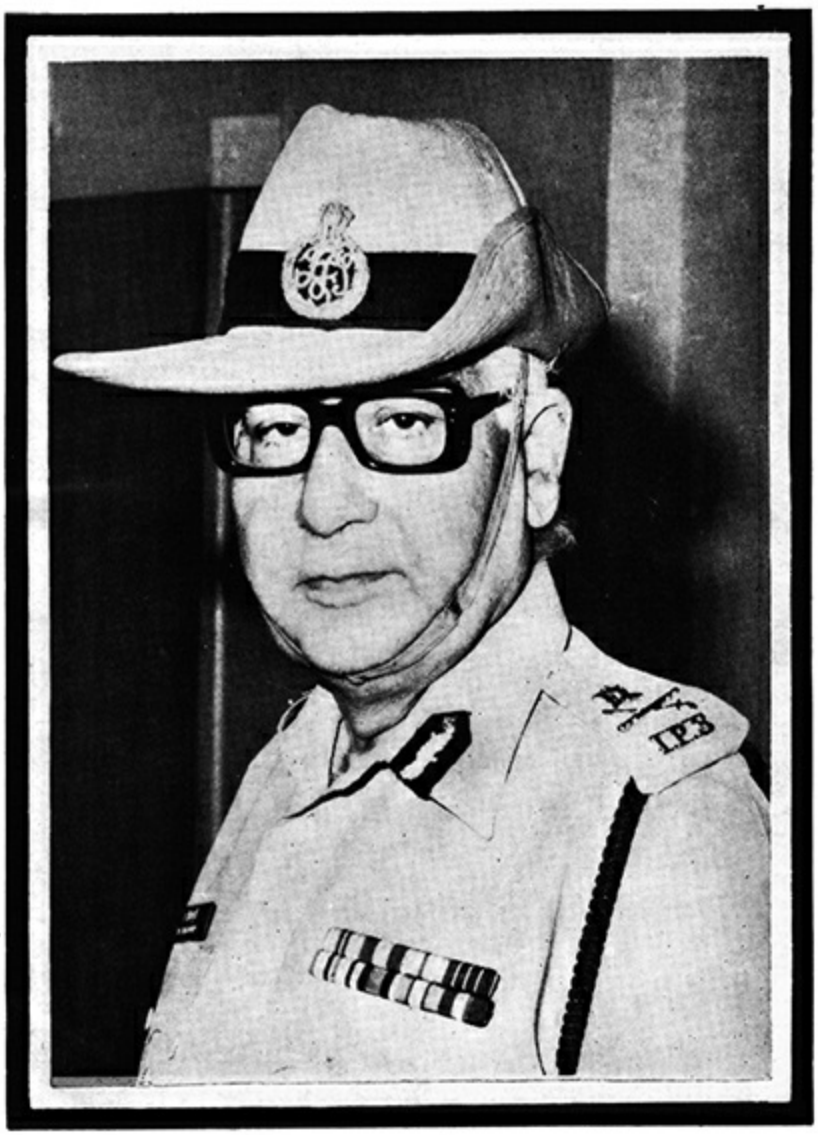
Hindi Vol. 11: No. 1
Hindi Vol. 11: No. 2
Hindi Vol. 11: No. 3
Hindi Vol. 11: No. 4

★ क्रै प लं र ★

● केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल का वृत्तपत्र तथा सचित्र पत्रिका ●

[द्वैमासिक-हिन्दी संस्करण]

31 मार्च, 1982] खण्ड XI अंक 1 [10 चैत्र, 1904



3-5-1925—31-12-1981

महानिदेशक के नाम उपराष्ट्रपति का प्रशंसा-पत्र

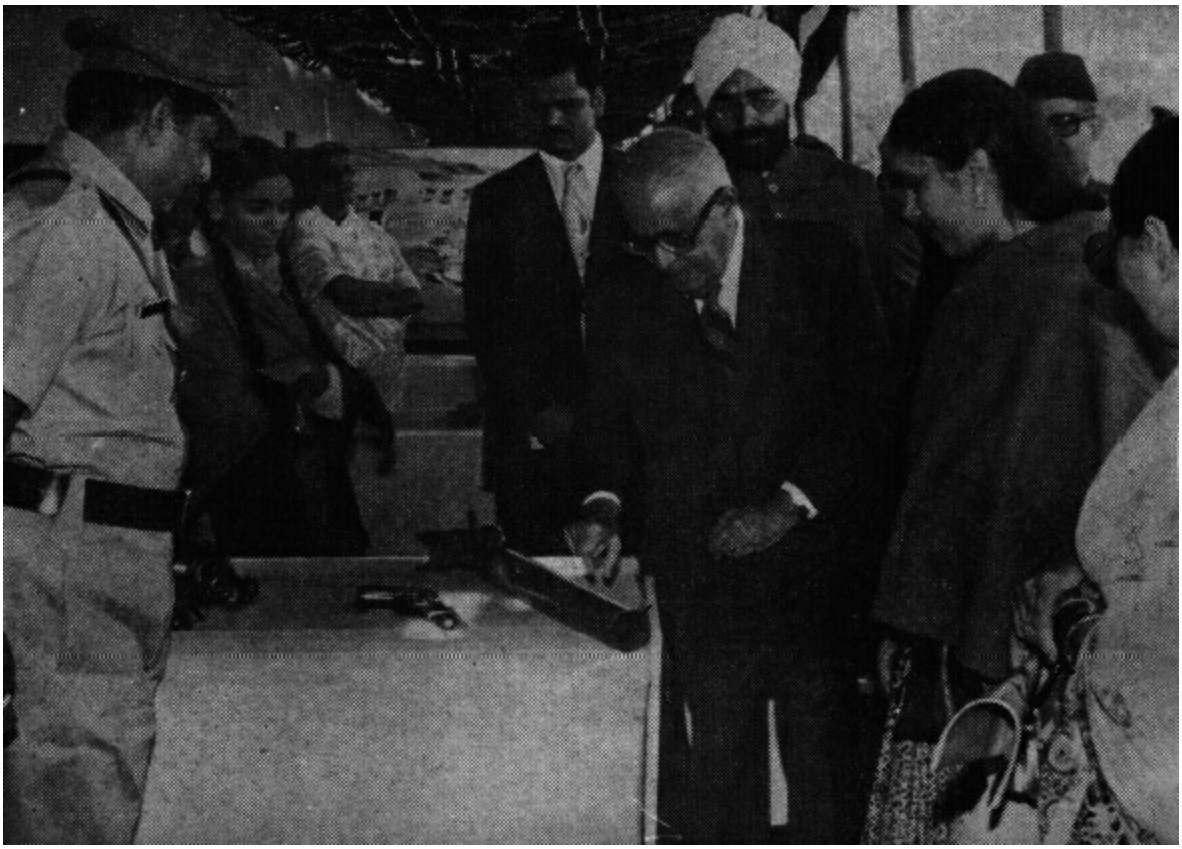


'दिनांक 12 नवम्बर 81 को 42वें वार्षिकोत्सव की परेड़ पर, आपके अधिकारी गण तथा जवानों के उत्तम प्रदर्शन और चुस्त कार्रवाई पर बधाई देने के लिए यह मैं लिख रहा हूँ। श्री के० के० मेहता, पुलिस उप-अधीक्षक, के० रि० पुलिस की सेवाओं का विशेष उल्लेख करना चाहूंगा, जिनके प्रयासों ने मेरी यात्रा को एक आनन्ददायक और सन्तोषजनक अनुभव बनाने में बहुत योगदान किया।'

नये महानिदेशक

दिनांक 27 फरवरी 1982 को, स्व० श्री आर. एन. शिवपुरी के स्थान पर, के० रि० पु० बल के महानिदेशक के पदभार को श्री एस. दत्ता चौधरी ने संभाला है। आप अभी तक इसी बल के पुलिस महानिरीक्षक सेक्टर IV रहे थे । अपनी विशिष्ट सेवा के उपलक्ष्य में, आपने राष्ट्रपति का पुलिस-विशिष्ट-पदक प्राप्त किया है।

प्रदर्शिनी में उपराष्ट्रपति



क्रैपलर

द्वैमासिक]

[हिन्दी संस्करण

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल का वृत्तपत्र तथा सचित्र पत्रिका



खण्ड XI

अंक I

31 मार्च, 1982
10 चैत्र, 1904

मुख्य सम्पादक :
एच० एस० सेठी

हिन्दी सम्पादक :
जे० एस० शर्मा

मुखपृष्ठ : (स्वर्गीय) श्री आर. एन. शिवपुरी, महानिदेशक, के० रि० पु० बल।

सम्पादकीय कार्यालय :
द्वारा महानिदेशालय, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल, पूर्वीय खंड 10, - रामकृष्णपुरम, नई दिल्ली-110066।

मुद्रक—सी० आर० पी० एफ० प्रेस, नई दिल्ली-110072 ।
प्रकाशक—महानिदेशक, के० रि० पु० बल की ओर से एच. एस. सेठी।

क्रम संख्या

विषय

I. वार्षिकोत्सव-उपराष्ट्रपति, गृह मंत्री, गृह राज्य मंत्रियों द्वारा प्रसंशा

II. गौरव गाथाः पदक, प्रशंसा तथा पुरस्कार

III. श्रद्धाञ्जलियाँ :

(i) महानिदेशक श्री शिवपुरी का निधन

(ii) एक कर्मयोगी का महाप्रयाण, ले०—श्रीराम कृष्ण खंडेलवाल, महानिरीक्षक (मुख्यालय)

(iii) 3.9.80 से 31.12.81 तक-ले०—श्री के. दादाभाय, उपनिदेशक (परिचालन)

(iv) स्व० श्री शिवपुरी के प्रति श्रद्धाञ्जलि, ले० श्री जे. एम. कुरेशी, उपनिदेशक (प्रशासन)

IV लेख :

(क) पथ और क्षेत्र के हिरन, ले० श्री एच. एस. सेठी

(ख) के० रि० पु० बल का तंत्रिका-केन्द्र, ले०—श्री सुशील कपूर, सहायक जन सम्पर्क अधिकारी

V. कविता:

श्रद्धाञ्जलि, रचयिता श्री मुरारी लाल यादव, पुलिस अधीक्षक, आन्तरिक सुरक्षा अकादमी

VI. कहानी:

ठोकर, ले०—श्री दुर्गा माधव मिश्र, महानिरीक्षक से II

VII. क्रीडा क्षेत्र:

अन्तरेंज दौड़कूद तथा अन्य प्रतियोगितायें

VIII. स्वास्थ्य सन्देश :

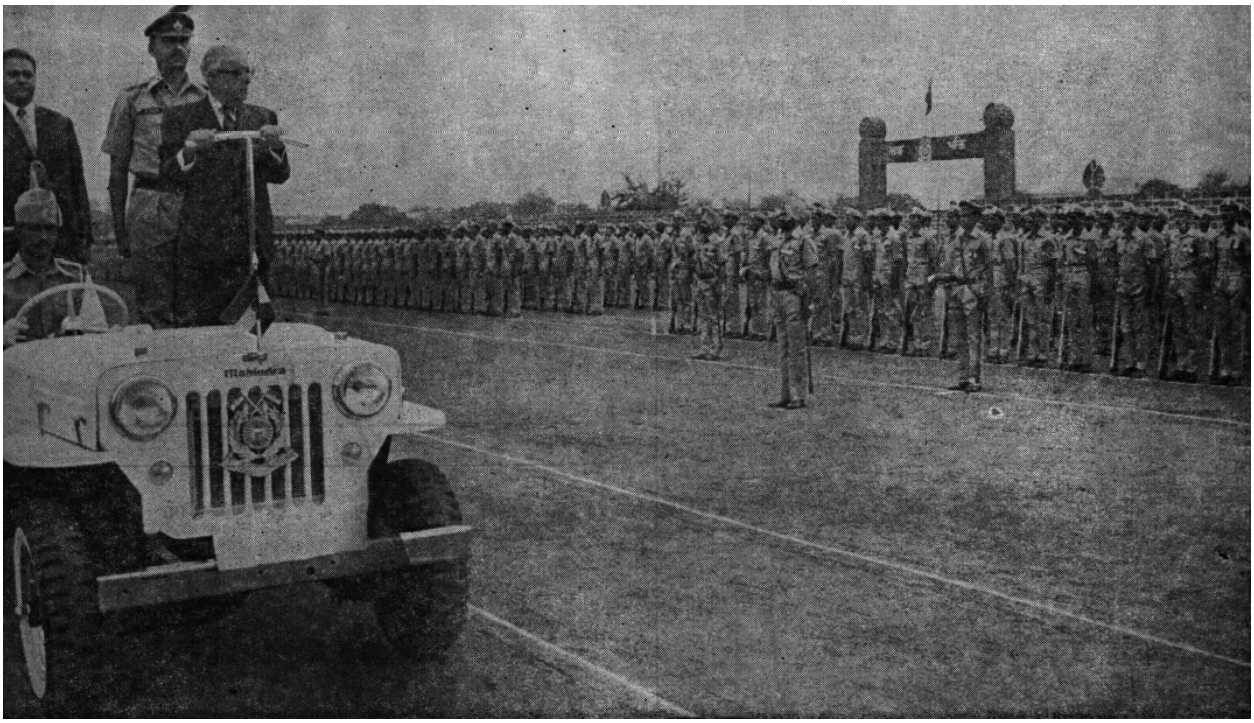
अपनी नाक जानिये—(रीडर डाइजेस्ट के सौजन्य से)

IX. विज्ञान के चढ़ते चरण :

X. विविध

(क) पहेलियाँ, प्रस्तोता दफ्तरी गणेश प्रसाद, कार्यालय उपमहानिरीक्षक, श्रीनगर

(ख) सूक्ति सुधा



उपराष्ट्रपति द्वारा के० रि० पु० बल की प्रशंसा



उपराष्ट्रपति के कर-कमलों से वीरता पदक पाता हुआ कां० पृथी चन्द

भारत के उपराष्ट्रपति, श्री एम. हिदायतुल्ला ने 12 नवम्बर, 1981 को ग्रुप केन्द्र झड़ौदा कलाँ में, के० रि० पु० बल की वर्षगाँठ पर परेड की सलामी ली।

परेड को सम्बोधित करते हुये, उन्होंने भीतरी और बाहरी अन्देशों से देश की। रक्षा करने के लिए, के० रि० पु० बल की प्रशंसा की। उनके शब्दों में, "भीतरी सुरक्षा बनाये रखना, आपका विशेष गण ही नहीं, बल्कि विशिष्ट सेवाभार भी रहा हैं।"

1959 में हाट स्प्रिंगज़ पर तथा कच्छ : के रन, चिकन-नेक क्षेत्र तथा बंगला देश के विभिन्न युद्धों में के०रि०पु० बल द्वारा निबाही गयी ऐतिहासिक भूमिका का उल्लेख उन्होंने किया। सारे देश में शान्ति-स्थापना के हेतु सभी प्रकार के संकटों से झेलने के लिये, उन्होंने इस बल को बधाई दी।

उन्होंने कहा 'केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल ने देश की प्रशंसनीय सेवा की है और मुझे यह आशा भी है कि यह सदा राष्ट्र की आस्था और भरोसा बनाये रखेगा।'

उन्होंने परेड के जवानों के चुस्त प्रदर्शन के लिये उनकी सराहना की। के० रि० पु०

बल के उत्तम अनुशासन तथा प्रशिक्षण के श्रेष्ठ स्तर की भी उन्होंने प्रशंसा की। उन्होंने यह आशा प्रकट की कि के० रि० पु० बल देशसेवा की अपनी परम्परायें बनाये बनाये रखेगा।

श्री जी. आर. शर्मा, कमांडैंट 3 बटालियन (के० रि० पु० बल) ने परेड का नेतृत्व किया।

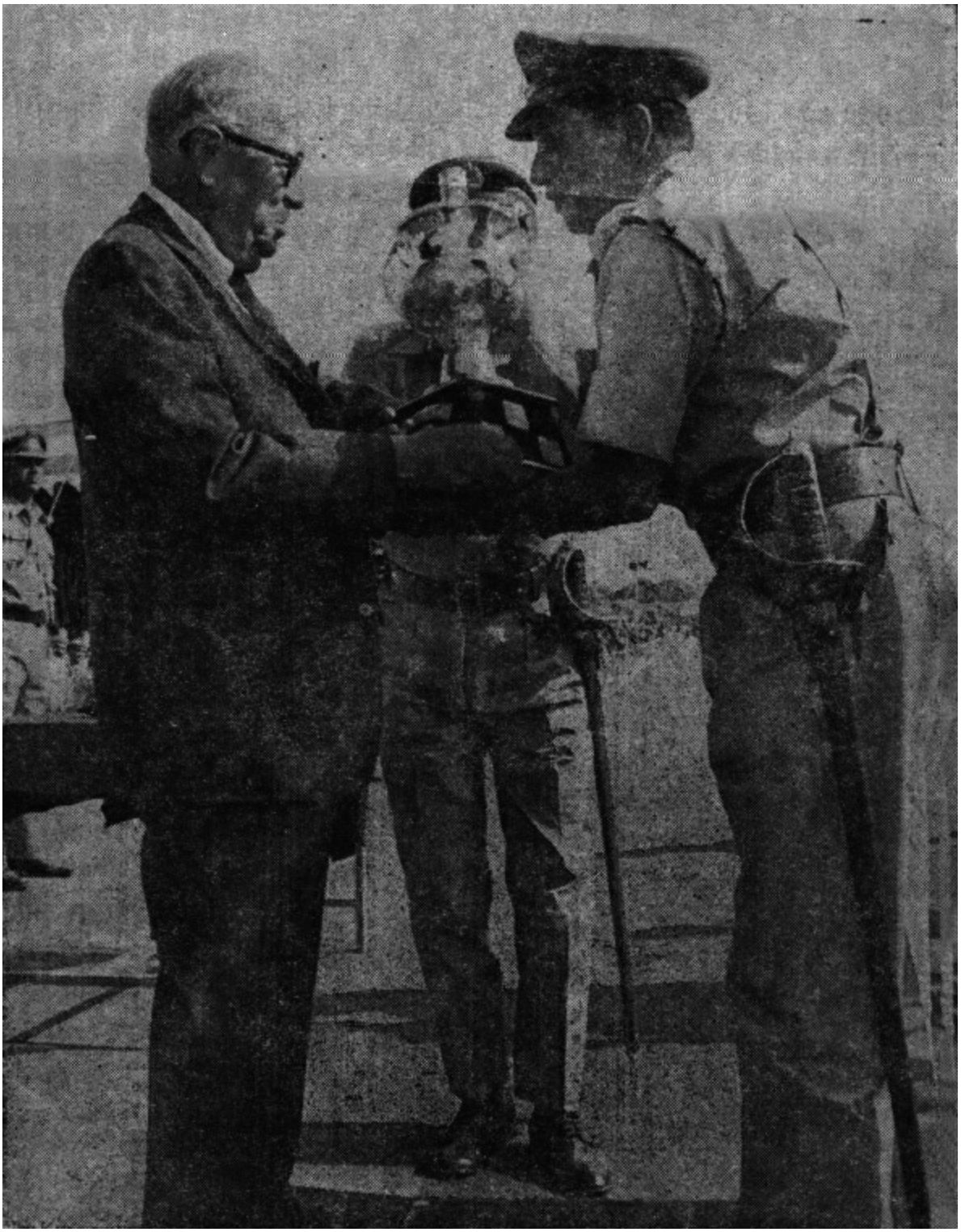
उपराष्ट्रपति ने राष्ट्रपति पुलिस वीरता पदक, हे० का० एन.एम. खाँन (21 बटा.), हे. का. ओम प्रकाश (33 बटा.) ना. लाल चन्द (29 बटा.), का. मुहम्मद बदरु रहमान (ग्रुप केन्द्र इम्फाल) तथा कां० पृथीचन्द (29 बटा०) को प्रदान किये।

श्री सी. पी, सिंह, कमांडैंट, 20 बटा० (आजकल कमांडैंट ग्रुपकेन्द्र नीमच), विशिष्ट सेवा पदक पाने वाले के० रि० पू० बल के पहले अधिकारी थे।

उपराष्ट्रपति ने पुलिस वीरता पदक श्री रवि कुमार, सहायक कमांडैंटड, 11 बटा०, सब-इन्स्पेक्टर शंकरलाल, 33 बटा०, का० एम० एम० पुवय्या, 29 बटा० और कां० के० बाबू, 29 बटा० को दिये ।

श्री डी० एम० मिश्र, पुलिस महानिरीक्षक से० II तथा श्री एस० बी० नारायण राव, पुलिस उप महानिरीक्षक इम्फाल को, राष्ट्रपति के पुलिस विशिष्ट सेवा पदकों से विभूषित किया गया।

बाद में, उपराष्ट्रपति ने कल्याण प्रदर्शनी का उद्घाटन किया, जिस में विभिन्न परिवार कल्याण केन्द्रों की निर्मित वस्तुयें, सिगनल उपकरण तथा जन सम्पर्क विभाग के फोटो (छाया चित्र) दर्शाये गये थे।



‘सर्वश्रेष्ठं बटालियन’ को ट्राफी पाते हुए श्री नरसिंह राव, कमांडेंट 4 बटालियन ।



प्रधानमंत्री जीवन रक्षा पदक पाते हुए डीवाई० एस० पी० जे. एस. वालिया और का० चन्द्रिका प्रसाद ।

ज्ञानी जैलसिंह, गृह मंत्री ने नवम्बर 81 को यह कहा कि वर्तमान कानून व्यवस्था की स्थिति तथा के० रि० पु० बल द्वारा निबाही गयी भूमिका को देखते हुये, इस बल की बढ़ोत्तरी होनी चाहिये तथा इसे तथा आधुनिक साजसज्जा के द्वारा प्रशिक्षित करना चाहिये।

के०रि०पु० बल के 42वें वार्षिकोत्सव समारोहों के अवसर पर नई दिल्ली के विज्ञान भवन में आयोजित वरिष्ठ अधिकारियों के सम्मेलन तथा के० रि० पु० बल के अलंकरण समारोह में, गृह मंत्री भाषण दे रहे थे।

ज्ञानी जैलसिंह ने कहा कि के०रि०पु० बल राष्ट्रीय एकता का प्रतीक है, क्योंकि इसके कर्मी सभी धर्मो, जातियों और (सम्प्रदायों से लिए गये हैं।

गृह मंत्री ने कहा कि वह जानते हैं कि के० रि० पु० बल के जवानों को कैसी कठिन स्थितियों में काम करना पड़ता है। और उनको चिन्ता मुक्त करने की आवश्यकता पर उन्होंने विश्वास दिलाया कि सरकार उनके बच्चों की शिक्षा तथा उनके आश्रितों के लिये रोजगार दिलाने की व्यवस्था करेगी।

ज्ञानी जैलसिंह ने कहा कि राष्ट्र को | के० रि० पु० बल के उन जवानों पर गर्व है, जिन्होंने आंतरिक सुरक्षा के स्थापित तथा रक्षा के लिये, अपने जीवन बलिदान कर दिये हैं।

गृह मंत्री ने प्रधान मन्त्री जीवन रक्षा तथा सराहनीय सेवा पदक श्री पी० जे० एस० बलिया, पुलिस उप-अधीक्षक और का० चंद्रिका प्रसाद यादव को तथा सराहनीय सेवा पदक, के० रि० पु० बल के 33 कर्मियों को प्रदान किये।

गृहमन्त्री के भाषण का निम्नलिखित अविकलरूप है—"के० रि० पु० बल के अधिकारियों और जवानों द्वारा की गयी | सराहनीय सेवा के लिये पदक प्रदान करना, । सदा ही एक सुखद कार्यभार है।

के० रि० पु० बल ही देश का मूल अर्द्ध सेना बल है, जिसमें से विशेष सेवाओं के लिये अन्य दल निकले हैं।

जबकि यह बल 1947 से पूर्व तथा पश्चात्, अनेकों भीतरी उपद्रवों से निपटता । रहा है, यह बाहरी आक्रमण के संरक्षक के रूप में भी निरन्तर खड़ा रहा है।

1959 और 1962 में चीनी आक्रमणों की परीक्षा समय, के० रि० पु० बल खरा उतरा है। अनुभव ने सीमावर्ती क्षेत्रों की रक्षा के लिये, के० रि० पु० बल के अधिनियम के अन्तर्गत, भारत-तिब्बत-सीमा पुलिस के रूप में एक नये संगठन का निर्माण कराया गया।

1965 एक में बार फिर के० रि० पु० बल की चार कम्पनियों ने भुज में पाकिस्तानी आक्रमण के समय खून वहाया। 1970 में पूर्वीय पाकिस्तान (आज के बंगला देश) की घटनाओं ने एक बार फिर के० रि० पु० बल को सीमा की समस्याओं को सुलझने के लिये बाध्य किया।

के० रि० पु० बल केवल युद्धों में ही नहीं निरत रहता है, बल्कि शान्ति-समय में भी सहायता करता है। बाढ़, अकाल, तूफ़ान आदि प्राकृतिक संकटों में, के० रि० बल ने प्रबल साहाय्य की है। के० रि० पु० बल, राष्ट्रीय एकता का प्रतीक है। इस बल में सेवारत कार्मिक सभी धर्मों जातियों तथा सम्प्रदायों के हैं। वे एकता के उदाहरण हैं।

वर्तमान कानून और व्यवस्था की स्थितियों के कारण तथा के० रि० पु० बल द्वारा निवाही गयी प्रतीत की भूमिका को देखते हुये, मैं भी ऐसा सोचता हूँ कि उचित प्रशिक्षण सुविधाओं तथा आधुनिक साजसज्जा के साथ, इस बल का विस्तार होना चाहिये।

राष्ट्र को के० रि० पु० बलिदान पर गर्व है, जिसने भीतरी तथा बाहरी उपद्रवों से रक्षा और रखरखाव के लिये प्राण बलिदान किये हैं।

के० रि० पु० बल बल तथा अन्य सैन्य तुल्य दलों के जवानों को कठिन और कठोर स्थितियों में काम करना होता है। के० रि० पु० बल के कार्मिकों के मनोबल को बनाये रखने के लिये, उन्हें घर की सभी चिन्ताओं से मुक्त करना होगा। सरकार उनके बच्चों की शिक्षा और उनके आश्रितों को रोजगार के अवसर प्रदान करने का उचित प्रबन्ध

करेगी।

मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि इस सम्मेलन की सिफारिशों पर वह उचित ध्यान देगी।"

इससे पूर्व, श्री आर० एन० शिवपुरी महानिदेशक, के० रि० पु० बल ने गृह मंत्री से, के० रि० पू० बल के जवानों के कल्याण आदि सहित बिविध विचाराधीन प्रस्तावों पर, तुरन्त निर्णय लेने की प्रार्थना की।

के० रि० पु० बल के ग्रुप केन्द्र झड़ौदा कलां में के० रि० पु० बल के 42वें वार्षिकोत्सव समारोहों के अवसर पर इस

बल के अधिकारियों को सम्बोधित करते हुये, श्री योगेन्द्र मकवाना, गृह राज्य मंत्री ने 11 नवम्बर 81 को के० रि० पु० बल पर अत्यधिक निर्भर रहने की प्रवृत्ति के विरुद्ध सतर्क किया।

श्री मकवाना ने कहा कि के० रि० पु० बल को एक नेमी अतिरिक्त पुलिस बल के रूप में बहुत समय तक रोके रखने की। प्रवृत्ति इन दिनों मुख्यकर अधिक बढ़ रही है ।

उन्होंने कहा कि इससे के० रि० पु० की शक्ति और उत्साह में तो कमी आयेगी ही; साथ में, चुनौतियों का स्वयं मुकाबला करने में स्थानीय पुलिस का आत्मविश्वास भी क्षीण होगा। उन्होंने यह कहा कि काम खत्म होते ही, के० रि० पु० बल को राज्य से तुरन्त चला जाना चाहिये।

गृह राज्य मन्त्री का कहना था कि कानून को पालन करने की निपुणता के० रि० पू० बल ने प्राप्त कर ली है।

बल को उत्तम व्यावसायिक स्थिति में रखने के लिये, उन्होंने इसके बेरोकटोक प्रशिक्षण की आवश्यकता पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि आवश्यकता हुई, तो हमें बटालियनों की संख्या में भी वृद्धि करनी होगी।

मंत्री ने कहा कि के० रि० पु० बल की भूमिका कठिन तथा दुश्वार है। जल्दी-जल्दी तबादले पारिवारिक जीवन को नष्ट भ्रष्ट कर देते हैं तथा भावनात्मक तनाव, दुःखी परिवारों की देखभाल की कठिनाई और बिना देखरेख के बच्चों की शिक्षा को कठिनाइयां पैदा कर देते हैं।

मंत्री ने यह आश्वासन दिलाया कि के० रि० पु० बल को उनका हक दिलाने में सरकार अपने सीमित साधनों में से कोई यंत्र उठा नहीं रखेगी।



नीमच के बन्द आडीटोरियम (सभा-भवन) में 31 अक्टूबर 1981 को श्री। पी० वंकट सुबय्या, गृहराज्य मंत्री ने नव गठित 65 बटालियन (के० रि० पु० बल) के जवानों को सम्बोधित किया। सरदार पटेल के जन्मदिवस के अवसर पर, उनकी स्मृति में गृह राज्य मंत्री ने भव्य श्रद्धांजलि अर्पित की। उन्होंने कहा कि यह महामना सरदार की दूरदर्शिता ही थी जिसके कारण के० रि० पु० बल स्वाधीनता के उपरान्त भी चलता रहा। बाद की घटनाओं ने इस निर्णय की बुद्धिमत्ता को सत्य सिद्ध कर दिया है, क्योंकि यह बल वास्तव में आज कल प्रबल साहाय्य प्रदान कर रहा है।

राष्ट्र के इतिहास में, मुख्य कर युद्धों तथा विपदाओं में, के० रि० पु० बल की उत्तम भूमिकाओं को श्री वंकट सुबय्या ने स्मरण किया। इस प्रकार, देश की क्षेत्रीय अखंडता तथा शान्ति बनाये रखने में, के० रि० पु० बल ने बड़ा योगदान किया है।

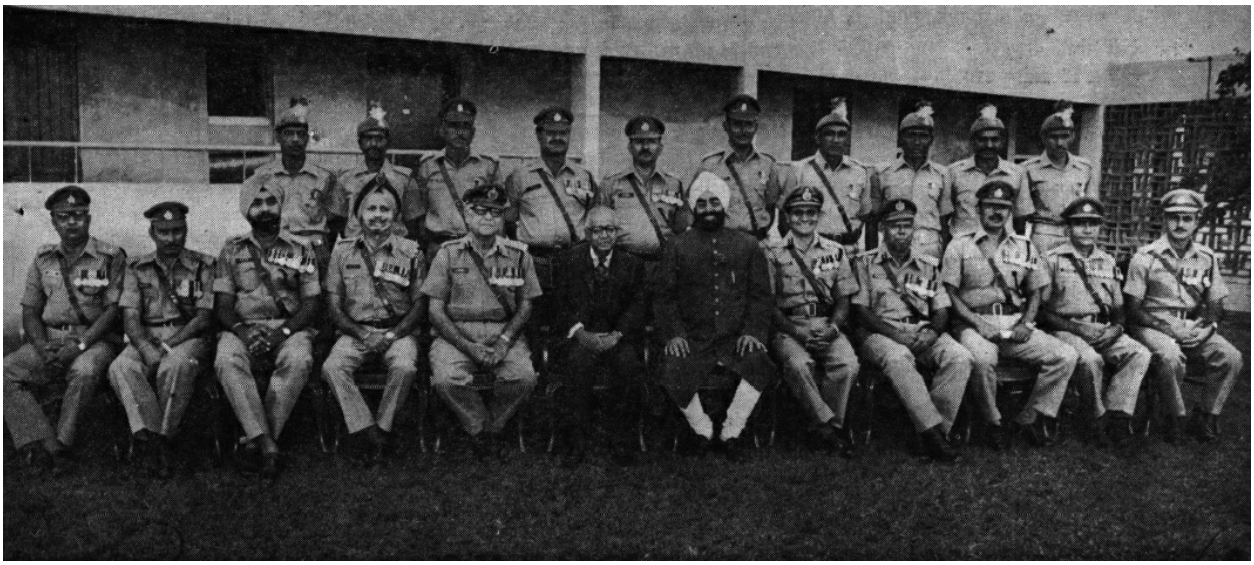
श्री वंकट सुबय्या का कथन था कि इस समय भी, ऐसे तत्व हैं, जो अराजकता फैलाने की चेष्टा कर रहे हैं। किन्तु देश को विश्वास है कि उसकी एकता बनी रहेगी। और के० रि० पु० बल, सभी ऐसी स्थितियों और चुनौतियों से मुकाबला करने का यथाशक्त प्रयत्न करेगा।

नये रंगरूटों को मंत्री ने बधाइयाँ दीं और यह आशा प्रकट की वे अपने सेवा काल में मातृभूमि की भरसक सेवा करेंगे।

इस अवसर पर, मंत्री महोदय ने सभी अधिकारियों और जवानों को शुभ कामनायें दीं।

इससे पूर्व, श्री टी० जी० एल० अय्यर, पुलिस महानिरीक्षक से० I ने मंत्री महोदय का स्वागत किया। उपस्थित जनों में, श्री आर० एन० शिवपुरी, महानिदेशक, के० रि० पु० बल तथा अन्य वरिष्ठ अधिकारी गण थे।

नीचे—उप राष्ट्रपति, गृह मंत्री तथा महानिदेशक, के० रि० पु० बल के साथ पदक पाने वाले के० रि० पु० बल के सदस्य।



पथ और क्षेत्र के हिरन

ले०—एच० एस० सेठी

श्री गुरबचन सिंह रणधावा एक पारव्यापिका हैं। वह 'अर्जुन पुरस्कार' पाने वाले प्रथम भारतीय, 1962 में आयोजित जकार्ता में डेकॅथलॅन में 'स्वर्ण-पदक' पाने वाले प्रथम भारतीय, 1962 में ही भारत जर्मन प्रतियोगिता में ऊँची कद में 6-'6" का और नेजाफेंक में 210'-35" का रिकार्ड बनाने वाले प्रथम भारतीय, बेंगलूर में आयोजित एशियाई खेलों के अभ्यास में डेकॅथलॅन में 6,912 अंक पाने वाले तथा 1964 के टोकियो ओलम्पिक खेलों में 110 मी० बाधा को 14 से० में पूरा करने वाले प्रथम भारतीय हैं। मिल्खा सिंह के बाद, वह ओलिम्पक खेलों में फाइनल में पहुँचने वाले दूसरे भारतीय हैं।

वह खेलों के विषय में वार्तालाप करने के लिये अनेच्छुक थे। जब मैं बल के सहायक कमाँडैंट श्री गुरबचन सिंह रणधावा से धनवाद में मिला, तब उनका कहना था "उत्तम यह होगा कि आप कोयले के विषय में और लोहे के चलते पंजों से कोयले की चोरीलूट को रोकने के लिये मेरे जवानों द्वारा किये जा रहे काम के बारे में मुझ से पूछिये।"

खेलों के विषय में बातचीत करने के लिये उनको प्रेरित करने के लिये कुछ करना चाहिये था। जब मैंने उन्हें पेले कमीज़ पहने देखा, तब मैंने तुरन्त यह टिप्पणी की — "यदि हमारे नवयुवकों को खेलों में शौक़ है, उन्हें बाधा दूर करने, ऊँची कूद लगाने और नेजा फेंकने के लिये गुरबचन की टी शर्टों और क़मीजों का सर्मथन करना चहिये।"

वह यह कहकर मौन हो गये 'नवयुवकों में खेलकूद के लिये सच्ची लगन की कमी नहीं रही है।'

"फिर हम छोटे-छोटे राष्ट्रों से भी खेलों तथा दौड़कूदों में इतने पीछे क्यों रहते हैं ?" उन्होंने उत्तर दिया 'कारण तो कई हैं, जिनमें मुख्य खेल अधिकारियों का निजी स्वार्थ है। वे ही सचमुच में अधि-पुरुष हैं और खिलाड़ी उनके हाथ में केवल मोहरे हैं। जीत का श्रेय वे स्वयं लेते हैं, जबकि हार का दोष खिलाड़ियों पर डाल देते हैं।

उन्होंने हॉकी का उदाहरण दिया। 1975 में क्वालालम्पुर में खेले गये तृतीय विश्व कप में, बलदेव के सौभाग्यशाली कार्नर हिट ने पासा ही पलट दिया और सारे राष्ट्र ने और मुख्यकर अधिकारी वर्ग ने भारतीय जीत से स्वयं को गर्वान्वित किया। सारे देश में खिलाड़ी घुमाये गये और उन्हें स्कूटर तथा दावतें दी गईं। जो समय अभ्यास के लिए आवश्यक था, उसे स्वागतों में नष्ट किया गया और 1976 के मांट्रियल ओलिम्पिक खेलों में खिलाड़ियों की दशा खराब हुयी। ओफ़, उसके उपरान्त कितनी ग्लानि उन्हें सहनी पड़ी।"



उन्होंने यह भी स्मरण किया 'दूसरी ओर, जब पाकिस्तान ने रोम ओलिम्पिक खेलों में भारत को हॉकी में हराया, उसके हर खिलाड़ी को दो मुरब्बे (50 एकड़ भूमि) मिले और जब 1962 के एशियाई खेलों में उन्होंने फिर हमें हराया, तब उन्हें पुनः दो-दो मुरब्बे मिले। ज़रा खिलाड़ी के लिए उनके मूल्य आंकिए।"

तदुपरान्त, उन्होंने भारत से भारी हार पायी; किन्तु जो व्यक्ति तुरन्त हट गया, वह कोई अन्य नहीं होकर पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड का अध्यक्ष जर्नल के० एम० अज़हर था।

अमृतसर ज़िले के नान्गली गाँव में 6 जून 1939 को उत्पन्न हुए श्री गुरबचन सिंह रणधावा का परिवार खिलाड़ियों के लिए प्रसिद्ध था। उनके पिता, मेजर तेहल सिंह रणधावा अपने समय के खिलाड़ियों में अच्छे नाम वाले थे। ऐसा सुनने में आता है कि उन्होंने अकेले ही पंजाब विश्वविद्यालय की दौड़कद ट्राफी को अपने खालसा कॉलेज अमृतसर के लिए जीता था, किन्तु उन्होंने अपने इस पुत्र को एथ्लेटिक बनने से हतोत्साहित किया। उन्होंने गुरबचन को खेलों के लिए नहीं, पर अध्ययन करने के लिए प्रोत्साहित किया। किन्तु गुरबचन सिंह जी की नसों में खिलाड़ी का रक्त बह रहा था और उनके मस्तिष्क में भिन्न विचार थे। वह सदा एथ्लीट बनने के स्वप्न देखा करते थे। फलस्वरूप, किशोर गुरवचन दसवीं कक्षा में प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण होकर इन्टर परीक्षा में अनुत्तीर्ण हुए। परन्तु खेलों और दौड़कूदों में, उन्होंने पिता से अधिक नाम कमाया। 1958 के पंजाब विश्वविद्यालय चैम्पियनशिपों में सर्वश्रेष्ठ एथ्लीट उनको घोषित किया गया।

उसी समय केंद्रीय रिजर्व पुलिस ने उनकी प्रतिभा को पहचाना। भर्ती चुनाव की परीक्षाओं में वह कैसे सफल हुये, यह एक मजेदार बात है। उस समय, राष्ट्रीय स्तर पर के० रि पु० बल का दौड़ कूद में कोई स्थान नहीं था। क्षेत्र में भाला-फेंक में केन्द्रीय रिजर्व पु० बल के तत्कालीन रिकार्ड 124 फुट पर सफल चिन्ह रखा गया, जब कि श्री गुरबचन ने 178 फुट भाला फेंका। फुदकन, चाल और कूद के लिये, उनके लिये खुदी मिट्टी काफी चौड़ी नहीं थी और उनके स्तर से नीची ऊंची कूद की पट्टी थी।

वह सब इन्स्पेक्टर भर्ती होना चाहते थे; किन्तु के० रि० पु० के नियम बाधक सिद्ध हुये। अन्त में, इस वचन के साथ कि उनकी शीघ्र पदोन्नति कर दी जायेगी, उन्हें कान्स्टेबल के पद पर भर्ती किया गया और यह वचन के०रि०पु० ने पूरा किया। धीरे-धीरे जैसे जैसे समय बीतता गया और वह विजय पाते गये, तैसे-तैसे उनकी पदोन्नति होती गयी और आज वह सहायक कमाँडैंट हैं।

छः फुटे गुरबचन जी को समय के साथ मोर्चा नही लगा है उन्हें अभ्यास करना अब भी पसन्द है और पथ-क्षेत्र के इस हिरन को प्रातः काल चक्कर लगाते देख प्रसन्नता होती है। — "इसने मुझे ठीक रखा है। जो भार 1960 के रोम ओलिम्पिक खेलों में जाते समय मेरा था, वही मेरा आज भी है।

एक खेल शिक्षक के रूप में उनके योगदान के विषय में बहुतों को नहीं मालूम है। पटियाला के राष्ट्रीय खेल संस्थान से अर्हता प्राप्त खेल शिक्षक के रूप में, उन्होंने कितने ही प्रशिक्षण शिविर लगाये हैं जिनमें 1972 के ओलिम्पिक खेलों का, 1974 से एशियाई खेलों का और कॉमनवेल्थ खेलों का अनुकूल शिविर उल्लेखनीय है। वह भारतीय एथ्लीटिक संघ के उपाध्यक्ष और भारतीय एथ्लीटों के कल्याण संघ के उपाध्यक्ष रहे हैं।

नेत्रों में ज्योति लाते हुए, उन्होंने ओलिम्पिक खेलों में अपने गौरवशाली क्षण की चर्चा की। "जब मैंने 110 मी० बाधा के फाइनल में दौड़ने की अर्हता पायी, उस समय टोकियों में वर्षा हो रही थी। 45 मिनटों के भीतर ही, फाइनल भी हुआ और उस समय भी वर्षा थी। मैंने यथाशक्ति यत्न किया; किन्तु अन्तिम बाधा के निकट मुझे ऐसा लगा कि मैं सबसे पीछे रह गया हूँ। फिर जोर मारा और मैंने पांचवें स्थान पर स्वयं को पाया। मेरा समय 14 सेकण्ड था और सर्वोपरि समय 13.6 से० था।

वह सन् 1964 था, जब यह कीर्तिमान उन्होंने बनायाया और आज भी यही कीर्तिमान है। वर्ष वर्षान्तर, जब एथ्लीट विभिन्न स्पर्द्धाओं में होड़ करते हैं, तब वे इस कीर्तिमान को और इस कीर्तिमान बनाने वाले को याद करते हैं।

पदोन्नतियाँ

अगस्त, सितम्बर और अक्टूबर 1981 अराजपत्रित सेबीवर्ग में 135 पदोन्नतियों के आदेश दिये गये। इनमें से 107 पदोन्नतियाँ सब इन्स्पेक्टरों को गईं; जो इन्स्पेक्टर बनाये गये। शेष 28 पदोन्नतियाँ तकनीकी जवानों की गई, जिनमें दो स० इ० (आर्मेरर) को इन्स्पेक्टर बनाया गया।

नवम्बर 81 में, अराजपात्रेत अधिकारियों को 349 पदोन्नतियों के आदेश हुये। इनमें से, अधिकतर लॉसनायकों को लाभ हुआ। 161 ला० ना० नायक बनाये गये। 81 ना० (ड्राइवर) अगले पद पर चढ़ाये गये। 51 ला० ना० (ड्राइवर) नायक बने। शेष तकनीकियों को पदोन्नतियों मिलीं।

दिसम्बर 81 में दी गयीं 156 पदोन्नतियों में, 142 हे० कास्टेबलों को गयीं, जो स० इ० बनाये गये। शेष पदोंन्नतियाँ 1 वादक को, 1 आर्मरर को, 5 फिटर को और 7 दज़ियों की गयीं।

मोटर परिवहनों द्वारा दुर्घटनाओं पर महानिदेशक को चिन्ता

श्री आर. एन. शिवपुरी महानिदेशक ने सभी यूनिटों को अपने एक पत्र में मोटर परिवहनों से बढ़ती हुयी दुर्घटनाओं पर चिन्ता व्यक्त की है।

अक्टूबर 1981 तक, 68 ऐसी दुर्घटनायें हुयीं; जिनमें 5 जवानों और 17 नागरिकों की मृत्यु हुयी और 138 जवान तथा 36 अन्य व्यक्ति घायल हुये। चालकों के शिक्षण में कमी और सरबराहकार अधिकारियों की विफलता के प्रति महानिदेशक ने सतर्क किया है।

स्वयंभू मिज़ो सॉजेन्ट बन्दी

फरवरी 8, 1982 को, के० रि० पु० बल के स्वयं साजेंट लाल हैमिंगालियाना को के०रि०पु० बल बन्दी बनाया, जिसे मिजो राष्ट्रीय मोर्चे ने मुख्यमंत्री बिग्रेडियर टी: सैलो और अन्य विशिष्ट व्यक्तियों की हत्या के लिऐ भेजा गया बताते है।

संकटकोष अनुदान

अक्टूबर 1, 1981 से जनवरी 31, 1982 तक के समय को 2,50,000 रु० 50 मृत्यु-प्रकरणों और 5,35,500 रु० अन्य मामलों के लिए, कुल मिलाकर 7,82,500 रु०, महानिदेशालय ने केन्द्रीय कल्याण (संकट प्रव्यजि) कोष से एक मुष्टि राशि के रूप में स्वीकार किया है। 50 मृत्यु प्रकरणों में से हरेक को 250 रु० प्रतिमास उस कोष से स्वीकृत हुये हैं।

के० रि० पु० बल की जनसेवा

सितम्बर 10, 1981 को, श्री एम.पी. जकमोला सहायक कमांडैंट, 7 बटालियन ने 24 परगने के गरिया क्षेत्र में एक महिला और उसकी मद्याजात संतान के प्राण बचाने में सहायता की। परेड ग्राउण्ड जाते हुये श्री जखमोला ने, टालीगंज के नेता जी सुभाषमार्ग पर, दो स्त्रियों को रोते चिल्लाते हुये देखा। पूछने पर, वृद्धा ने बताया कि उसकी पुत्रवधु ने अभी-अभी एक संतान को जन्म दिया है, परन्तु नाल अभी तक बिना कटा है। श्री जखमोला तुरन्त शिविर में गये और अपने साथ एक रोगी बाहन ले आये और माता तथा संतान को बंगुर अस्पताल ले गये।

पैदावार को मूल्य राशि

केन्द्र द्वारा दिये गये आदेशानुसार, के०रि०पु० बल के फार्म की पैदावार की मूल्य राशि को पहले भारत की संचित निधि में और बाद को यूनिट कल्याण और सुख-सुविधा कोष में जमा किया जायेगा। वर्ष के अन्त में, के० रि० पु० बल के कर्मचारियों के कल्याणप्रद उपायों के लिए, उस राशि के बराबर धन सरकार द्वारा सहायक अनुदान के रूप में स्वीकृत किया जायेगा।

हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल द्वारा प्रशंसा

नवम्बर 1981 में हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल की दिल्ली यात्रा के समय, 34 बटालियन ने उनके लिए रक्षक प्रदान किये, रक्षकों के उत्तम प्रदर्शन, चुस्त कार्रवाई और अनुकरणीय व्यवहार की प्रशंशा राज्यपाल ने कमांडैंट से की है।

स्वास्थ्य संदेश :

अपनी नाक को जानिये

ब्लैजपास्कल के कथनानुसार, "यदि क्लोपेट्रा की नाक कुछ छोटी होती, तब दुनिया का सारा चेहरा ही बदल गया होता।" सुन्दरता के अतिरिक्त, नाक मूलतः एक प्राकृतिक छन्ना तथा वातानुकूलक है।

जीवन के लिये वायु की ओषजन आवश्यक है। किन्तु अधिकतर वायु में ऐसा हानिकारक तत्व मिला रहता है, जिससे फेफड़ों को क्षति पहुँचती है और फलस्वरूप, जीवन-अवधि कम हो जाती है। सो जब कभी आप कोई सुगन्ध सूंघे, तब स्मरण रखें कि श्वास लेते समय आपकी नाक को और भी महत्वशाली काम करना होता है। तीन प्रकार से रक्षा :

शरीर के लिये सुरक्षित श्वास लेने हेतु, आपकी नाक में तीन रक्षात्मक रचनायें हैं। अस्थि तथा मृदुल उपास्थि की लचीली दीवार (पर्दे) से दोनों नथुने विभक्त हैं। उसकी नाज़ुक परत सदैव वायु से प्रदूषण दूर करने में सक्रिय रहती है, जबकि नथुने में दीखने वाले बाल बड़े बड़े कणों को बाहर रखते हैं।

फिर, आपकी नाक के सारे मार्गों से अपेक्षाकृत और भी धूलि को बाहर निकालने के लिये, एक चिपचिपी किन्तु तरलश्लेष्मा निकलती रहती है। आपने देखा होगा कि जब आपको जुखाम होने वाला होता है, तब नाक का बहना उसके प्रथम लक्षणों में से एक होता है। सचमुच में, नाक द्वारा श्लेष्मा का यह स्त्राव सामान्य क्रिया से अत्यधिक होता है और उत्तेजक तथा संक्रामक वस्तु को बाहर निकालने का यह एक प्रतिरक्षात्मक उपाय है।

तीसरे रक्षात्मक उपाय के लिये परत से निकले अति सूक्ष्म वालों के समान उभार होते हैं, जिन्हें पक्ष्य कहते हैं। पक्ष्मों के निरन्तर चलते रहने से धूलि बाहर निकलती

रहती है। जब कभी नासामार्गों में कोई अवाँछेत तत्व अनायास लग जाता है; तब उनकी अतीव कुशल रक्षामत्क कार्यवाई बहुधा ढीली पड़ जाती है।

श्वास रोधी नाक : जैसे पूर्व कहा जा चुका है, छन्ने के काम करने के साथ-साथ, आपकी नाक वातानुकूलक के समान है। आपकी नाक की श्लेष्मी कला में बहुत ही ज्यादा केशिकायें हैं। इनसे गर्म रक्त का प्रसार होता है, जो श्वास लेने वाली वायु की शीतलता कम करता है। जब आप को जुखाम होता है, तब इन केशिकामों को अत्यधिक काम करना पड़ता है तथा उनमें शीघ्र ही रक्त, और तन्तुरस का बड़ा जमाव हो जाता है। फलस्वरूप, परत सूज कर नासामार्ग को अवरुद्ध करती है, आपको श्वास लेने में कष्ट होता है, उस समय कोई बलगम पिघलाने वाली औषध सहायता करती है। केशिकाओं को संकुचित कर तथा इस प्रकार सूजन कमकर नासामार्गों को खोलने में ही उसकी कार्यसाधकता है। यह सावधानी रखनी चाहिये कि बलगम पिघलाने वाली औषध कहीं उत्तेजक तो नहीं है, क्योंकि नासामार्गों की की भीतरी परत सुकुमार होती है।

सिन्युअस (कोटर) विकार : नासामार्गों से जुड़े सिन्युअस (कपालास्थि कोटर) नामक विवर रक्षात्मक निष्कासनप्रक्रिया में सहयोग देते हैं। नथुनों की नहरों के समान, ये विवर श्लेष्मी झिल्ली में पंक्तिबद्ध होते हैं। इनके संक्रामी होने पर, श्लेष्मा अधिक निकलती है।

बन्द नाक से केवल असुविधा ही नहीं होती, आप को मुख से श्वास लेने को मजबूर होना पड़ता है, और इस तरह वायु में साधारण तथा विद्यमान दूषणों के खतरों में स्वयं को डालना पड़ता है। अतएव श्वासरोधी नाक को साधारण रोग कभी नहीं समझना चाहिये। जैसे ही नाक बन्द होना अनुभव करे, वैसे ही लगभग पिघलाने वाली औषध का प्रयोग करें, जिससे बाद को नाक में श्लेष्मा अधिक जमने पर उसके दीर्घ-कालीन प्रयोग से बच जायें। नासाबिन्दु जैसी बलगम पिघलाने वाली औषध को शीध्र प्रयोग के लिये घर में रखना एक बहुत ही अच्छी आदत है।

[रीडर डाइजेस्ट के सौजन्य से]

हिन्दुस्तान टाइम्स में प्रशंसा

दिसम्बर 4, 1981 के 'हिन्दुस्तान टाइम्स' में अपने लेख 'मनमोहक पूर्वोत्तर' में, श्री गिरीश भंडारी ने इन शब्दों में के० रि० पु० बल के जवानों की प्रशंसा की हैं —

"जब आप नगर में घूमते हैं, तब शान्ति-व्यवस्था बनाये रखने के उद्देश्य के लिये, पीठ पर रायफल लटकाये, मौन मुख किये तथा सतर्क दृष्टि रखे व खाकी वर्दीधारी के० रि० पु० बल के जवानों को नहीं भूल सकते। उनकी निन्दा की जाती है, उनसे घृणा की जाती है, तथा उनसे भिन्न विचार वाले पुरुषों द्वारा प्रेम भी किया जाता है; किन्तु उनके साहस, निष्ठा तथा सौम्य दक्षता के ऊपर कोई प्रश्न चिह्न नहीं लगा सकता।"

नागालैंड के मुख्यमंत्री द्वारा सराहना

श्री जे. बी. जैसीकि मुख्य मन्त्री नागालैंड ने के० रि० पु० बल की एक चौकी हनिंगकुँगल्वा का निरीक्षण किया, मुख्य मंत्री जवानों के चुस्त प्रदर्शन से प्रभावित हुये। उन्होंने शिबिर को 'उत्तम देखरेख' वाला पाया तथा जवानों के कल्याण के लिये 3,000 रु० का नक़द पुरस्कार दिया।

राशन भत्ता

के० रि० पु० बल के अराजपत्रित सैन्यीकृत कर्मियों के लिये, राशन भत्ते की सरकारी साहाय्य 1 अक्टूबर 1981 से 31 मार्च 1982 तक, ऊँची दरों के लिये 121 रु. प्रतिमास और नीची दरों के लिये 99 रु० प्रतिमास बढ़ा दी गई है। पहले, 114 रु० प्रतिमास अर्हताकारी क्षेत्रों में और 92 रु० प्रतिमास अन्य क्षेत्रों में यह साहाय्य राशि थी।

निश्चल संस्थानों के मुख्यालयों में और प्रशिक्षण प्रतिष्ठानों में निरत अराजपत्रित सैन्यीकृत कर्मचारियों को यह मदद 50 रुपये प्रतिमास ही चलती रहेगी।

महानिदेशक श्री शिवपुरी का निधन

जैसे ही 1981 का सूर्यायु समाप्त हुई, वैसे ही श्री राजेन्द्रनाथ शिवपुरी, महानिदेशक के०रि०पु० बल की भी इहलोक लीला समाप्त हुई।

उसके साथ ही, एक सर्वगुण सम्पन्न व्यक्ति, एक महान नेता, मनुष्यों और वस्तुओं के एक पारखी, एक सर्वांगीण उदार हृदय तथा के० रि० पु० बल और भा०ति०सी० पुलिस के प्रत्येक व्यक्ति के हितचिन्तक का स्वर्गवास हुआ। उसके साथ ही, एक वह प्रख्यात सेवाकाल भी कालकवलित हो गया, जिसे श्री शिवपुरी ने 1948 में भारतीय पुलिस सेवा के उत्तरप्रदेशीय संवर्ग में सम्मिलित हो कर प्रारंभ किया था।

25 दिसम्बर 81 को गुर्दे की बीमार के कारण, श्री शिवपरी को जी. बी. पन्त अस्पताल में भर्ती किया गया और डायलीसिस पर रखा गया।

1 जनवरी 1982 को, नई दिल्ली के निगमबोध घाट पर पूर्ण पुलिससम्मान के साथ उनका दाहसंस्कार हुआ। उनकी अन्त्येष्टि में, अनेकों नागरिक, के०रि०पु० के सेवीजन तथा सभी पुलिस संगठनों के वरिष्ठ अधिकारीगण उपस्थित थे। जिन्होंने उनके पार्थिव शरीर पर पुष्पाञ्जलियां चढ़ायीं, उनमें थे ज्ञानी जैलसिंह, केन्द्रीय गृहमन्त्री, श्री योगेन्द्र मकवाना, गृह राज्य मन्त्री तथा टी. एन. चतुर्वेदी; गृह सचिव।

श्री शिवपुरी 57 वर्ष के थे और वह अपने पीछे पत्नी, तीन पुत्र तथा दो पुत्रियाँ छोड़ गये हैं।

के० रि० पु० बल से श्री शिवपुरी का दीर्घ सम्बन्ध रहा था। जब 1960 में उन्होंने के०

रि० पु० बल की 2 बटालियन का कमान संभाला था, तब से यह प्रारम्भ हुआ था। तदुपरान्त, श्री कनेतकर, प्रथम महानिदेशक, के० रि० पु० बल के वरिष्ठ स्टाफ अफसर तथा नीमच और आगरा रेंजों के उपमहानिरीक्षक के समेत विविध पद उन्होंने ग्रहण किये। सातवें दशक के आरम्भ में, के. रि. पु. बल का भाग्य निदेशन करते हुये; उन्होंने उपनिदेशक (प्रशासन) की महत्वपूर्ण भूमिका निबाही।



'के०रि०प० बल भवन' पर ज्ञानी जैल सिंह गृहमंत्री द्वारा श्रद्धांजलि

वह सन् 1980 था, जब वह के०रि०पु० बल के महानिदेशक बने। उससे पूर्व, वह भारत-तिब्बत-सीमा पुलिस के महानिदेशक थे।

शोक सभा

दिनांक 2 जनवरी 1982 को क्षति का शोक मनाने के लिए एक सभा हुई, जिसमें महानिदेशालय के कर्मचारी और अधिकारी तथा पुलिस महानिरीक्षक से III और पुलिस उप महानिरीक्षक नई दिल्ली तथा श्री बी. वर्मा, आन्तरिक सुरक्षा अकादमी के निदेशक, उपस्थित थे।

उस अवसर पर बोलते हुये, श्री खंडलवाल, पुलिस महानिरीक्षक (मुख्यालय) ने कहा कि श्री शिवपुरी जैसे कर्त्तव्य परायण तथा अपने संगठनों से इतनी लगन रखने वाले व्यक्ति उन्होंने बहुत कम देखे हैं। उनके कथनानुसार, श्री शिवपुरी इस बल के लिए इतने समर्पित थे कि उसके आगे अपने स्वास्थ्य और परिवार की भी चिन्ता नहीं करते थे। जब वह अस्पताल में भी थे, तब भी वह इस बल और इसके कल्याण के विषय में चर्चा करते थे।

इससे पूर्व श्री जे. एम. कुरैशी, उपानेदेशक (प्रशासन) ने कहा कि श्री शिवपुरी ने एक महान कमांडर होने के नाते, थोड़े ही समय में जब वह के.रि.पु. बल में रहे, बड़ी सफलता पाई। वह इस बल से घनिष्ठ रूप से संलग्नित थे और जीवन के अन्तिम दिनों तक, के. रि. पु. बल के पुनर्गठन के काम में व्यस्त थे।

दिवंगत आत्मा को श्रद्धांजलि-हेतु, सभी उपस्थित जनों ने एक मिनट के लिए मौन धारण किया। पुलिस महानिरीक्षक के इस शोक प्रस्ताव का सब ने अनुमोदन किया, जिसका अविकल रूप निम्नलिखित है।

"के.रि.पु. बल के महानिदेशालय का सेवीवर्ग, जिसको श्री शिवपुरी जैसे स्तर के नेता के नीचे काम करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है, यहां उनकी स्मृति को श्रद्धांजलि अर्पित करने हेतु एकत्र हुआ है। श्री शिवपुरी पिता-तुल्य थे, जिनमें वह उदार कमान था, जिससे प्रशासन को कुशल तथा तथा दृढ़ गति ही नहीं मिली, बल्कि उसमें व्यक्तिगत तथा कृपालु पुट भी मिला। इस बल की समस्याओं को सुलझाने तथा अन्तिम व्यक्ति तक के समेत, सभी सदस्यों के कल्याण को सुनिश्चित करने में, उन्होंने सारी शक्ति लगा दी थी। वह अपनी धारणा में दृढ़ तथा स्पष्ट रहते थे, परन्तु साथ ही थे वह पितृ-तुल्य अत्यधिक उदार, जिन गुणों ने उनको सारे बल का कंठहार बना दिया था।

श्री शिवपुरी इतने दारुण रूप से इस बल के प्रति समर्पित थे कि उनके पास अपने परिवार की चिन्ता को समय ही नहीं था। क्रूर काल के हाथों से इतने अचानक उन्हें छीने जाने पर, इस बल को भीषण क्षति पहुँची है और उनके परिवार को मिला है नितांत वंचन-बिछोह । हमारा हृदय, शोक-संतप्त परिवार के सदस्यों के प्रति द्रवीभूत होता है, मुख्यकर नन्हें मुन्ने बच्चों के प्रति, जिनके सर्वाधिक ज़रूरी हितों की दु.खद उपेक्षा, इस कारण केवल हुई कि श्री शिवपुरी इस बल के भाग्य तथा कल्याण के लिए अहर्निशि चिन्तित रहते थे।

"इस अवसर पर गृहमंत्री ज्ञानी जैल सिंह, गृह राज्य मंत्री श्री योगेन्द्र मकवाना तथा गृह सचिव श्री टी. एन. चतुर्वेदी के प्रति, हम भारी आभार प्रकट करते हैं, जिन्होंने श्री शिवपुरी को यथाशक्य श्रेष्ठ चिकित्सा-व्यवस्था सुनिश्चित करने के लिए अत्यधिक उपकारी प्रयास किये तथा इस संकट के समय शोकसंतप्त तथा वंचित परिवार को साहाय्य करने का कारुणिक आश्वासन भी दिया है। श्री शिवपुरी के परिवार की सुख समृद्धि की कामना और प्रार्थना करते हुए, इस बल के सभी पदाधिकारी भी इस ओर अपना क्षुद्र अंशदान करने का निश्चय करते हैं।

"के. रि. पु. बल के सभी सदस्य, अन्य केन्द्रीय पुलिस संगठनों के उन अध्यक्षों और उनके स्वसृ प्रतिष्ठानों के उन सहयोगियों के प्रति भी कृतज्ञता व्यक्त करते हैं, जो दिवंगतात्मा को श्रद्धांजलि देने के लिए हमारे क्षोभ में सम्मिलित हुए थे।

"के.रि.पु. बल के हम सब, उनकी आत्मा की शान्ति के लिए प्रभु से प्रार्थना करते हैं । प्रभु, श्रीमती शिवपुरी और उनके कुटुम्बजनों को इस दुःखद क्षति को सहन करने की हिम्मत और ढाढ़स दे। हम यह भी प्रार्थना करते हैं कि इस बल के लिए श्री

शिवपुरी द्वारा इतनी संलग्नतापूर्वक बनायी हुई सौम्य नीतियों को आगे बढ़ाया जाये और सरकार द्वारा फलान्वित किया जाये।"

अन्य शोक संदेश

भारत-तिब्बत-सीमा पुलिस द्वारा पारित शोक-प्रस्ताव का यह अविकल रूप है—

"भारत-तिब्बत-सीमा पुलिस के महानिदेशक, अधिकारी तथा अन्य कर्मीजनों को, श्री आर० एन० शिवपुरी, भारतीय पुलिस सेवा, महानिदेशक, के.रि.पु० बल के 31.12.81 के अचानक और असमय निधन पर गहरा क्षोभ हुआ है।

"श्री आर. एन.. शिवपुरी, भारतीय पुलिस सेवा के प्रख्यात सदस्य थे और विभिन्न पदों पर वरेण्यताओं के साथ उन्होंने सेवाभार उठाया था। उनके निदेशन तथा प्रोत्साही नेतृत्व पाने का सौभाग्य, भारत- तिब्बत-सीमा पुलिस को सात वर्ष तक मिला और उनके ही सेवाकाल में, उसकी शक्ति तथा कुशलता में बढ़ोतरी हुई।

"इस शोक के समय, के.रि.पु. बल के सभी अधिकारियों तथा अन्य कर्मियों को उनके गतिशील नेता के सहसा निधन पर, भारत-तिब्बत-सीमा-पुलिस अपनी भावभीनी श्रद्धाञ्जलि भेज रही है।

"प्रभु से हमारी प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को वह शान्ति दे।"

श्री इमदाद अली और श्री एस. एम. घोष, भूतपूर्व महानिदेशक के.रि.पु. बल; आंध्र पुलिस के महानिदेशक; मेघालय के पुलिस महानिरीक्षक; एफ. सी. आई के निदेशक; पुलिस महानिरीक्षक, त्रिपुरा; पुलिस महानिरीक्षक प्रशिक्षण तथा गुप्तचर विभाग, बेंगलूर; महानिदेशक, असम पुलिस, भारतीय पुलिस सेवा परिषद, राजस्थान और भारतीय पुलिस सेवा परिषद (म०प्र० शाखा) उनमें से हैं, जिन्होंने शोक सन्देश तथा प्रस्ताव भेजे हैं।

श्रीमती शिवपुरी ने पुलिस महानिरीक्षक (मुख्यालय) को उनके प्रति हृदय से आभार प्रकट किया है, जिन्होंने उनके दु:खद संताप में अपनी सम्वेदनायें भेजी हैं। उनके कथनानुसार, उनके और उनके परिवार की अपूर्यक्षति के भार को इससे बहुत हद तक हल्का करने में सहायता मिली है।

एक ही दोष अनेक गुणों को खा जाता है।

—चाणक्य

"विज्ञान के चढ़ते चरण"

चीनी सेना के एक डॉक्टर ने एक महिला की कैंसरग्रस्त जिह्वा को काटकर उस महिला की बाँह से माँस निकाल कर नकली जिह्वा बना दी और वह महिला सामान्य ढंग से बोलती है।

ज्वर जानने के लिये ऐसे (पोवर) **ज्वर मीटर** का विकास हुआ है जिससे शिशुओं, वृद्धों और मानसिक रोगियों के मुंह या बगल में थर्मामीटर लगाने की ज़रूरत नहीं रह गई है। फीवर मीटर एक लम्बी तरल क्रिस्टल की पट्टी है, जिसके माथे पर लगा कर ताप मापा जा सकता है। इस के टूटने का डर नहीं है। पतले और लचकदार इस मीटर में देह का तापमान हरे रंग में साफ़ दिखाई पड़ता है, जिसे हर कोई पढ़ सकता है।

ब्रिटेन के एक डॉक्टर ने ऐसे कैमरे का विकास किया है, जिसकी मदद से हृदय रोग और कैंसर का पता शुरू में ही लगाया जा सकेगा।

अलीगढ़ के प्रोफेसर एस. ऐ. रिजवी ने मिट्टी से जलने वाला स्टोव बनाया है, जो रसोई गैस से बेहतर है। इससे 30% ऊर्जा की बचत होगी। इससे न तो धुओं और न ही दुर्गन्ध आती है ।

॥ पहेलियाँ ॥

(प्रस्तोता-दफ्तरी गणेश प्रसाद)

नागिन लम्बी ऐंठ गई जब ।
एक ठूंठ पर बैठ गई तब ।
ठंड धूप से सदा बचाती ।
मान सभा में वह दिलवाती । 1 ।
चलती-चलती, गुर्राती है ।
नाच घूम कर दिखलाती है ।
पूजा भी उसको है जाता ।
जग उसकी उगलन है खाता ॥ 2 ॥
जब मैं पैदा खेत में,
सारी दुनिया खाय ।
घर में जब पैदा हुई,
सब घर दिया मिटाय ॥ 3 ॥

उत्तर— (1) पगड़ी (2) चक्की (3) फूट

श्रद्धांजलि :

एक कर्मयोगी का महाप्रयाण

[ले०—श्री रामकृष्ण खडेलवाल

वर्ष 1981 का अन्त हम लोगों के लिए दुःखद रूप में हुआ जबकि 31 दिसम्बर की साँझ को हमारे डायरेक्टर-जनरल, श्री राजेन्द्र नाथ शिवपुरी ने पदासीन रहते ही, अपने प्राण त्याग दिये। इस पार्थिव जगत को छोड़ने से कुछ ही दिन पूर्व, अपने नव-वर्ष के अभिनन्दन में, हम सबके लिए सुखमय नव-वर्ष की मंगल-कामना करना, वे नहीं भूले थे। यह कहने की आवश्यकता नहीं कि इस बल के कल्याण तथा संगठन-सम्बन्धी अनेक सुधारों के लिए भरसक प्रयास करना ही उनका उद्देश्य था।

दिसम्बर 1981 के तीसरे सप्ताह में, श्री शिवपुरी के रोग की उग्रता के लक्षण अचानक दिखाई दिए, लेकिन वे जब तक रोग-शैय्या पर लेटने को बाध्य नहीं हो गये, तब तक बरावर सरकारी कामकाज में पूर्णतया लगे रहे। अपनी प्रबल आत्मशक्ति के कारण वे स्वयं कष्ट सहते रहे और अपनी बीमारी को साधारण ही मानते रहे, जबतक कि उनको गम्भीर अवस्था में 25 दिसम्बर को पन्त नर्सिंग होम में नहीं ले जाया गया। अनुभवी डाक्टरों की एक टीम ने उनकी प्राण-रक्षा के लिए यथाशक्ति पूर्ण प्रयास किया। माननीय गृहमंत्री ज्ञानी जैलसिंह, गृह राज्य मंत्री श्री योगेन्द्र मकवाना एवं गृह सचिव के उदार प्रयत्नों के कारण, सरकार ने दिल्ली के बाहर से भी विशेष उपचार की व्यवस्था के समुचित आदेश दे दिए थे, परन्तु हमारे सभी प्रयत्नों के बावजूद, नया साल शुरू होने के 6 घण्टे पूर्व 1981 की अन्तिम रात्रि के 18:20 बजे, उन्होंने शरीर छोड़ दिया। उन्हें फेफड़े की तकलीफ़ थी, जो अन्त में गुर्दे की खराबी के रूप में उभरी। अपनी बीमारी से वे स्वयं ही यथाशक्ति जूझते रहे, किन्तु परमात्मा की इच्छा के सामने झुकना पड़ा और दिल के दौरे के कारण, अचानक उनका प्राणान्त हो गया।

नव वर्ष के पहले दिन बल के सदस्यों को अपने डी. जी. को अश्रुपूर्ण विदाई देनी पड़ी। बड़ी संस्था में बल के सदस्य निगम बोध घाट दिल्ली पर, सेरीमोनियल वर्दी में उमड़ पड़े, अपने उस सेनानी को श्रद्धाँजलि अर्पण करने के लिए, जिसने अपनी पदावधि में इस बल को दिये जा सकने वाले हर-सम्भव लाभ दिलवाने में में कभी कोई कमी नहीं छोड़ी। मृत्यु के समय भी शौर्य, उनके चेहरे पर झलक रहा था। जो सामारोहिक सम्मान एक उदार-हृदय अध्यक्ष को देना चाहिये था, वह सब उन्हें दिया गया। उनके पार्थिव शरीर को सी. आर. पी. ध्वज से लपेटा गया और उनके विशाल-वक्ष पर, उनके पद की द्योतक पीक-कैप एवं निस्वार्थ सेवा के फलस्वरूप उनके द्वारा अर्जित मेडल रखे गये थे।

नहीं वक्ष पर उसके हमने,
ढका कफ़न बिलकुल बेकार।
नहीं लपेटा हमने उस पर,
मृत-पट या कोई प्रावार ॥
किन्तु शूर-सा था वह लेटा,

मानों करता हो विश्राम।
समरोचित कंचुक फैला था,
उसके चहुँ दिश अब अविराम॥

अपने बल के सदस्यों तथा अन्य गण्यमान्य व्यक्तियों द्वारा अर्पित अनेकों पुष्पांजलियाँ, श्री शिवपुरी के प्रति प्रेम एवं श्रद्धा को प्रकट करती थीं। माननीय केन्द्रीय गृहमंत्री, गृह सचिव तथा केन्द्रीय पुलिस संगठनों के सभी प्रमुखों ने दिवंगत आत्मा के प्रति अपनी श्रद्धांजलियाँ अर्पित की। इस बल के सदस्यों की, जिन्हें वे बहुत प्यार करते थे, उनके प्रति अनुराग की सहज अभिव्यक्तियाँ, वास्तव में, हृदय को छूने वाली थीं। यह क्षति, हमारे लिए उतनी ही आकस्मिक और विचलित करने वाली थी, जितनी कि उनके परिवार को।

लगभग 15 मास के समय में, जब वे इस बल के सर्वेसर्वा रहे, अपनी फोर्स के के लिए उन्होंने जो उपलब्धियां प्राप्त की; वह चिर-स्मरणीय रहेंगी। थोड़े से समय में, इस बल की मूल-भूत समस्याओं को समझने में, उन्होंने अपनी विलक्षण क्षमता दिखाई और उनका समाधान खोजा। अपनी पदावधि में, उन्होंने इस बल तथा इसके सदस्यों के लिये 21 लाभकारी प्रस्ताव सरकार को भेजे और अन्त समय तक उन्हें पारित करवाने के प्रयत्नों में लगे रहे।

डायरेक्टर-जनरल के रूप में, इतनी थोड़ी-सी पदावलि में, जिन अनेकों सफलताओं का श्रेय श्री शिवपुरी को है, उनमें से एक है मिनिस्ट्रियल स्टाफ को वर्दी दिलवाकर उन्हें सबके साथ मुख्य धारा में शामिल करना। इससे स्टाफ को लगभग 20 लाख रुपये प्रतिवर्ष का लाभ हुआ।

"कन्ट्रोल रूम", जो अभी नार्थ-ब्लाक में कार्य कर रहा है, श्री शिवपुरी की परिचालन के क्षेत्र में दूरदर्शिता का प्रतीक है। इसके समूचे सुधार से गृह मंत्रालय के लिये इसकी उपयोगिता बढ़ी है और महा- निदेशालय तथा मंत्रालय के बीच पारस्परिक सम्पर्क बढ़ जाने के कारण परिचालन के मामलों में आने वाली बाधाओं में कमी हुई है। यह प्रयास, अनावश्यकताओं के चक्रव्यूह से निकल कर आवश्यकताओं पर एकाग्र होने वाले श्री शिवपुरी की प्रतिभा की छाप छोड़ता है।

परिचालन आवश्यकताओं को देखते हुए, इस बल के अधिकारियों को डी. आई. जी. के पदों पर अवैतनिक पदोन्नतियाँ दिलवाने के प्रस्ताव को गहराई से समझकर सरकार को भेजना, और उनके लिए निरन्तर प्रयास करके पदोन्नतियां दिलाना, उनकी अन्य अनेक सफलताओं में से दूसरा महत्वपूर्ण कार्य है। अधिकारी कॉडर में वरिष्ठता के प्रश्न को सफलता-पूर्वक सुलझाना, उनका एक दूसरा चिर-स्थायी योगदान है, जिसके परिणाम-स्वरूप इस बल का अधिकारी-वर्ग, देश-सेवा के लिये, एक बड़े परिवार के सदस्यों की तरह एक हो गया है। इसके अतिरिक्त, उन्होंने अपनी मृत्यु-शैय्या पर, अपने जीवन के अन्तिम क्षणों में सी० आर० पी० एफ० के पुनर्गठन की योजना को अन्तिम रूप दिया, जिससे वह इस बल की संगठन-शक्ति को सुधारना और मजबूत करना चाहते थे, क्योंकि आजकल के संकट-काल में, देश के भीतर

आन्तारेक सुरक्षा एवं शान्ति बनाये रखने के लिये, यह बल, एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।



नीमच में नवम्बर 1981 के दौरान परिवार कल्याण केन्द्र का उद्घाटन करते हुये श्री आर० एन० शिवपुरी

अपने द्वारा भेजे हुये विभिन्न प्रस्तावों को, सन् 1982 में सरकार से स्वीकृत करवाने का लक्ष्य श्री शिवपुरी का था, लेकिन परमात्मा की इच्छा कुछ और ही थी। उन सभी प्रस्तावों पर सरकार सहानुभूति पूर्वक विचार कर रही है। श्री शिवपुरी के प्रति, जिन्हें इस बल के सदस्यों का कल्याण ही प्रिय था, अन्तिम श्रद्धान्जलि के रूप में हमारा यह ध्येय रहेगा कि उनके द्वारा भेजे गये प्रस्तावों को पारित करवायें।

विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्य करके आम लोगों के प्रयत्नों द्वारा इस बल के लिए अनेक जय-पत्र पाकर जब हम नववर्ष में प्रवेश कर रहे हैं, इस बल की उच्च परम्पराओं के अनुरूप, हमें देश-सेवा के लिए पुनः समर्पित होना चाहिए। स्वर्गीय श्री शिवपुरी की स्मृति तथा पदासीन महानिदेशक के प्रति हमारी निष्ठा इसी में निहित है कि हम देश-सेवा में ईमानदारी और सत्य-निष्ठा से कार्य करने के लिए कृत-संकल्प रहें। इस बल के अधिकारियों और जवानों का संगठित रूप में रह कर कार्य करना ही राष्ट्र व अपने दिवंगत व अपने वर्तमान डायरेक्टर-जनरल के प्रति सच्ची वफादारी होगी।

श्रद्धांजलि 30-9-1980 से 31-12-1981 तक

श्री के. दादा भाई

अध्यक्ष आते हैं और चले जाते हैं, किन्तु नेता विरले ही होते हैं—यही हमारी पद्धति है। और उससे भी विरला होता है नेताओं के लिए सीमित समय के ढांचे में अपने उद्देश्य को पूरा करना। यह अत्यन्त ही विचित्र बात है कि 3-9-80 से 31-12-81 तक के इतने कम समय में श्री आर० एन० शिवपुरी ने इतना सारा दूर वीक्षण कर लिया। वह समय रोशनाई का अणु विन्दु था, जिससे उन्होंने सचमुच के० रि० पु० बल के इतिहास में एक सर्वाधिक मौलिक पाठ लिखा। निश्चय ही, अन्त तक, वह एक देवकाय मूर्ति की भांति के. रि. पु. बल पर हावी रहे।

कार्यभार सँभालने के समय, जब साम्प्रदायिक आग की चिनगारियाँ अभी भी सुलग रही थीं, उन्होंने मंत्रालय को यह सलाह देने में तुरत निर्णय लिया कि उस समय क्या ज़रूरी है ? उनके निर्णयों ने मंत्रालय को इस बल की उपस्थिति का आभास कराया, जिनकी सार्थक प्रतिक्रियास्वरूप दीर्घ प्रतीक्षित फल प्राप्त हुए।

उनकी विशेष उपलब्धियाँ ये थीं—ज्येष्ठता की समस्या को सुलझाना, एक गुम्फित दल बनाना, के० रि० पु० बल के सभी कार्मिकों का सैन्यीकृत के लाभ दिलवाना, अनेकों को स्थिरी करण तथा पदोन्नतियां, कॉडर अधिकारियों को पदवृद्धि, आठ बटालियनों का गठन तथा प्रशिक्षण और कमान तथा नियंत्रण की ज़रूरी मांगों को पूरा करने के लिए परिचालन सेक्टरों एवं रेन्जों का निर्माण। नेत्र-परिधि से कहीं आगे, उनकी दृष्टि इस बल के लिए जाती थी। के० रि० पु० बल की प्रशासकीय तथा संभारिकी स्नायुओं को एक संहत परिचालक मांस पेशी के रूप में पुनर्गठित करने

वाली उनकी विचार धारा का सार, कॉडर की सोद्देश्य परीक्षा पर उनके निधारणों में और बल की संगठन-शक्ति को सुधारने के लिए विचार में, पाया गया था।

दयालु, सौम्य तथा शिष्ट होते हुए, उन्होंने एक वह इच्छा तथा संकल्प दिखाया था, जो अत्यधिक साहस से दृढ़ हो गया था। संक्षेप में, वह एक अति आतन्य इस्पात थे—वह बड़ी-बड़ी जिम्मेदारियों को अपने चौड़े कन्धों पर सहने के योग्य थे और फिर भी अपने अधीनस्थों के लिए वह गद्दे (सुरक्षा) का काम करते थे। उनको भुला देने में अधिकांशों को बहुत समय लगेगा; किन्तु उनकी बहुत सी सफलतायें सदा उनकी याद दिलाती रहेंगी। कुछेक उनसे सहमत नहीं हुये हों, परन्तु कोई भी उन्हें पूर्ण रूपेण सज्जन नहीं होने का दोष नहीं दे सकता। के०रि०पु० बल भवन, से निगमबोध तक उनकी अन्तिम यात्रा को (जो 1982 के प्रारंभ से तादात्म्य खा रही थी) देखकर ही कोई विश्वास कर सकता था।

गणतंत्र दिवस पर स्वर्गीय श्री शिवपुरी पुरस्कृत

गणतन्त्र दिवस 1982 के अवसर पर, श्री आर एन. शिवपुरी, महानिदेशक; के. रि. पु. बल को मरणोपरान्त राष्ट्रपति विशिष्ट सेवा पुलिस पदक प्रदान किया गया। श्री रघुवीर नाथ सिंह, पुलिस उपअधीक्षक, 4 बटालियन को भी श्री राष्ट्रपति विशिष्ट सेवा पुलिस पदक दिया गया।

के. रि. पु. बल के इन 17 सदस्यो को पुलिस सराहनीय सेवा पदक प्रदान किये गये—1. श्री एम. वधवा, उपनिदेशक (प्रशिक्षण); 2. श्री पी. वी. सुब्बाराव, कमांडैंट, ग्रुप केन्द्र, गांधी नगर; 3. श्री वी. एस. नेगी, सहायक कमांडैंट, 12 बटा०; 4. श्री बलबीर सिंह, पुलिस उपाधीक्षक; 5. सू० मे० (लिपिक वर्गीय) आर. एस. शर्मा, महानिदेशालय; 6.इ० राजिन्दर सिंह, 1 सिग० बटा०; 7. इ० दुर्गासिंह, 45 बटा०; 8. स० इ० गोपाल दास, 18 बटा०; 9 स० इ० रामप्रकाश, 31 बटा०, 10. स० इ० भजनसिंह एसवाल, 47 बटा०; 11. स० इ० वख्तावर सिंह, ग्रुप केन्द्र, नीमच; 12. स० इ० शंकर लाल, 33 बटा०, 13. हे० कां० किशोरीलाल, ग्रुपकेन्द्र, भुवनेश्वर; 14. हे० कां० प्रह्लाद सिंह, 4 बटा०; 15 ला० ना० गुरमेज सिंह, 32 बटा०; 16. ना० गुरमेलसिंह, 54 बटा० और 17. कां० तोप्पो, 55 बटा० ।

सूक्ति-सुधा

पुरुषार्थ के बिना भाग्य सिद्ध नहीं होता।

शुक्र ।

मनुष्यों के गुण और गौरव तभी तक सुरक्षित रहते हैं, जब तक वह दूसरों के आगे हाथ नहीं फैलाता है।

- ब्रह्मपुराण ।

उत्तम और अधम पुरुष से विरोध नहीं करना चाहिये।

-विष्णु पुराण ।

आशा सर्वोत्तम प्रकाश है और निराशा घोर अंधकार है।

-रश्मिमाला।

अन्तिम यात्रा

दिवंगत महानिदेशक शिवपुरी को श्रद्धांजलि

(रचयिता–श्री मुरारीलाल यादव सत्य' पुलिस अधीक्षक)

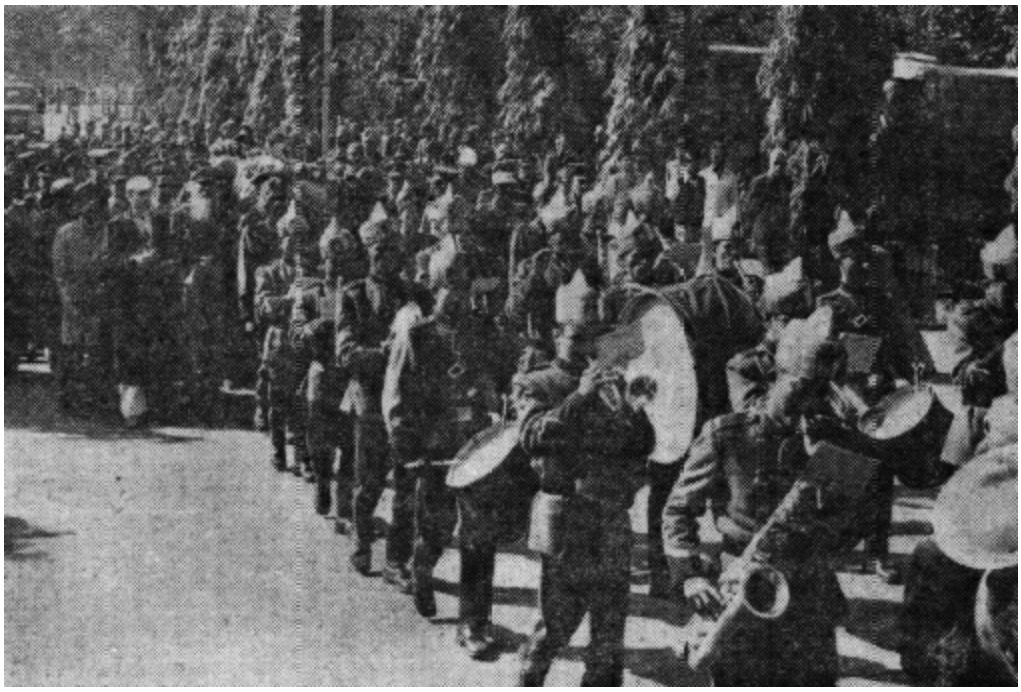
नव्य वर्ष के अरुणोदय में, खड़े मूर्तिवत् हम नत-मस्तक।
हन्त! पूर्व सन्ध्या पर आकर, क्रूर काल ने दी दृढ़ दस्तक।
अमर रहेगी उसकी संस्मृति, पल्टा जिसने बल का पासा।
गया शीश हट इस बल का जब, गई धूलि में मिल सब आशा ॥
बल पर जीवन बलि कर डाला, मुखरित है हर मुख से यह स्वर ।
'शिवपुरि' को प्यारकथा यह बल, ज्यों शिव को प्यारी है सुरसरि ॥
सदा रहेंगे हम आभारी, उपकृति थी उनकी अति भारी।
अंधकार से ला बाहर बल, की उसकी पथि जगमग सारी॥
रुद्ध हुए हैं कंठ सभी के, करें गुणावलि हम क्या तेरी?
काया थी कल्याणमयी तुव, सब में सदा भलाई हेरी॥
तथ्यों से था किया प्रमाणित, तूने–'यह बल सबसे ऊपर'।
न्याय-व्यवस्था-निष्ठा द्वारा, लहराया था बलध्वज अम्बर ॥
हे पथ दर्शक ! सदा चलेंगे, हम दिखलाये तेरे मग पर।
श्रद्धा-सुमन सजल नेत्रों से, 'सत्य' चढ़ाता तेरे पग पर ॥



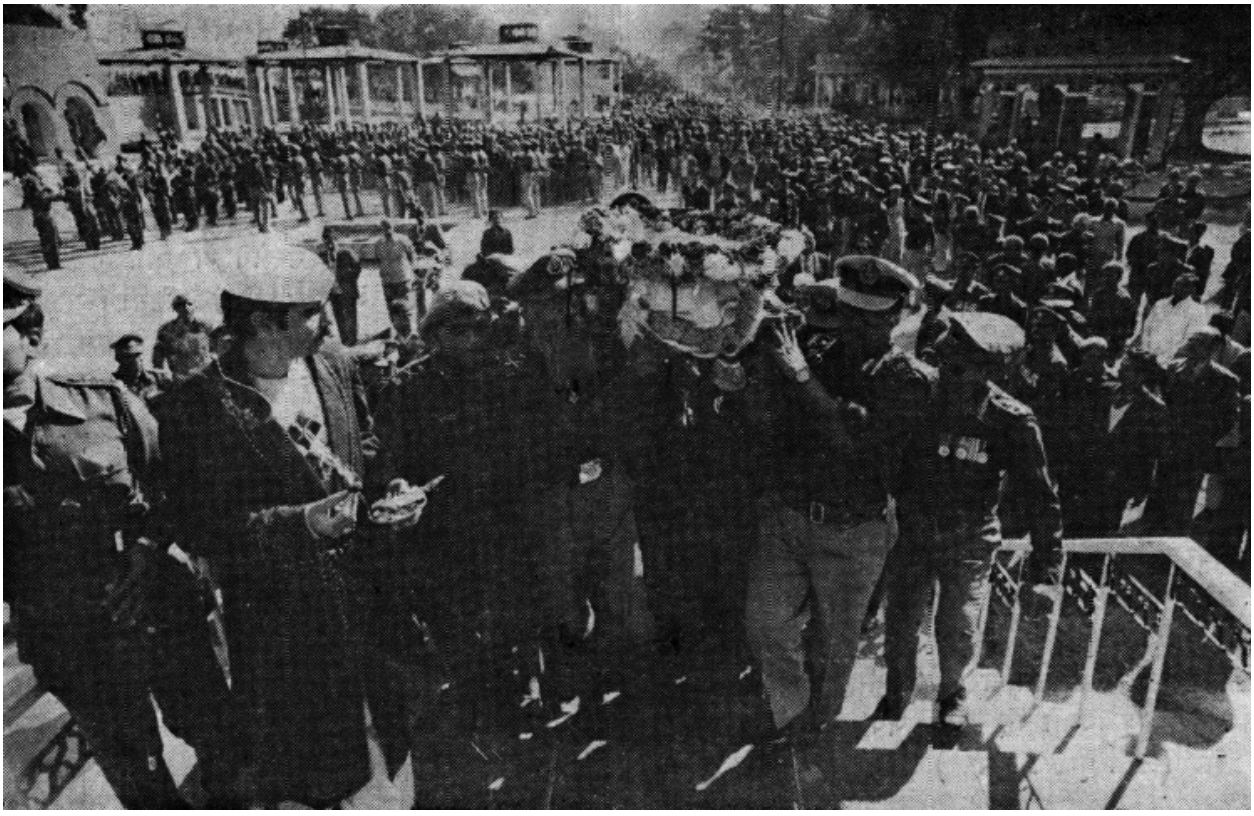
‘के०रि०पु० बल भवन’ से अन्तिम विदाई



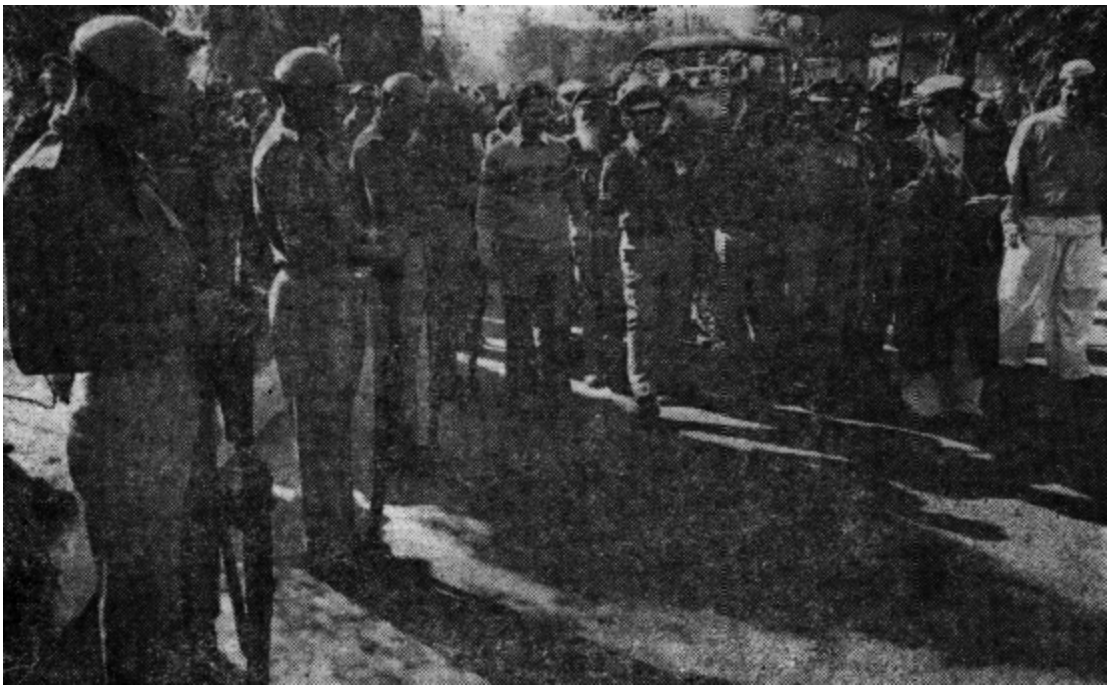
निगमबोध घाट की ओर



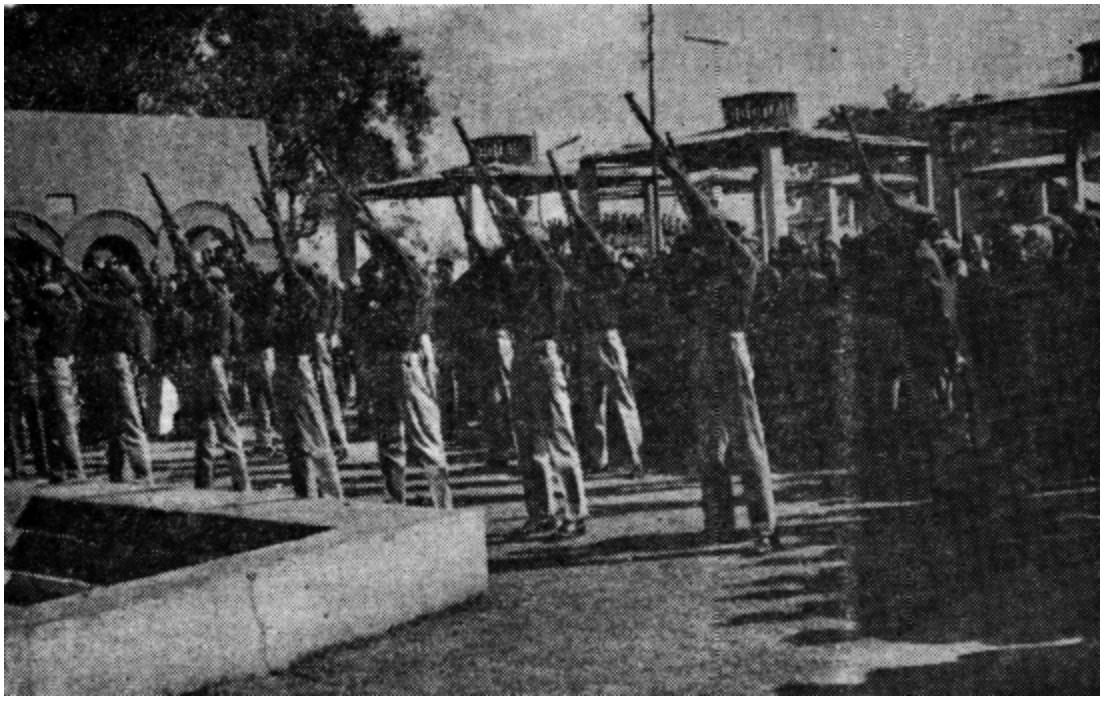
महानिदेशक को वादकों की श्रद्धांजलि



चिता की ओर अर्थी पर



विदाई में उल्टे कियें हथियार



अन्तिम सलामी देती हुई बन्दूकें



श्रद्धाञ्जलि हेतु महानिदेशालय में मौन धारण

स्वर्गीय श्री आर० एन० शिवपुरी के प्रति श्रद्धांजलि

श्री जे० एस० कुरैशी

श्री आर. एन. शिवपुरी, महानिदेशक के० रि० पु० बल ने 31 दिसम्बर 1981 के सायंकाल को, इस पार्थिव जगत को तिलांजलि दी । अपने दुर्बल शरीर पर सहस्रों घातक प्रहारों के सम्मुख स्वयं को समर्पित करने से पहले, उन्होंने निरन्तर वीरतापूर्वक सामना किया। वह उस समय भी अविजेय दिखाई देते थे, जब विशेषज्ञों ने सर्वाधिक बुरे लक्षण घोषित कर दिये थे। उन्होंने तब भी यह मानने से इन्कार कर दिया कि उन्हें कोई रोग है और हरेक को यह विश्वास दिलाया कि उन्हें कोई भी बीमारी नहीं है और अन्यजन बेकार को उनके लिए परेशान हो रहे हैं। सुइयों से बिधीं, बूंद-बुंद द्वारा खिलायी जाती हुयीं और अम्पियर मापी यंत्र की भाँति तारों से घिरी हुयीं, उनकी | धमनियां खट-खट चल रहीं थीं । अन्तिम कई दिनों में वह अर्द्धमूछित अवस्था में हो जाते थे; किन्तु अन्त समय तक, वह अपनी इन्द्रियों पर नियंत्रण रखने का यत्न करते रहे, जो दृढ़ निश्चयता का एक अन्य उदाहरण है।

जैसे 31 दिसम्बर का सूर्य अस्त हुआ, उसी प्रकार इस बल का भाग्य भी थोड़ी देर को डूब गया। इसके संरक्षक और निर्माता, देशभक्त और सैनिक, सन्त तथा

दार्शनिक अब नहीं रहे थे। यहाँ इकबाल का यह शेर अनायास मुख पर आता है—

हजारों साल नरगिस
अपनी बेनूरी पर रोती है।
बड़ी मुश्किल से होता है
चमन में दीदावर पैदा”

[नरगिस अपनी भव्य सुन्दरता पर सहस्रों वर्ष रोती रहती है। बड़ी कठिनता से कभी कोई पारखी पैदा होता है]

मानव : वह कौन मानव था; उसने इस बल के लिये क्या-क्या किया और वह लोगों के लिये क्या चाहता था? ये सब स्वाभाविक प्रश्न हैं; किन्तु हम उनके इतने निकट रहे हैं कि हम उनके साथ न्याय नहीं कर सकते हैं । एक हृष्ट पुष्ट व्यक्ति , एक भव्य मुखाकृति, एक वशीकरण मुस्कान, साथ में चटकीला बुद्धि-चातुर्य तथा जगमगाती हाज़िर जवाबी, वह वास्तव में इस बल के शिशु थे और अत्यधिक ही मानवीय । वह इस बल के साथ ही बढ़े थे, जिसने उनको आदर दिया और अपने में से ही एक उन्हें निर्विरोध स्वीकार किया। वह इस बल के सभी लोगों को स्वीकार्य थे। वे उनको और उनके दृढ़ दृष्टिकोण को, इच्छायें और अनिच्छायें को, उनके ऊचे क़द, साहस, बलिदान तथा सभी स्थितियों से निपटने की क्षमता को जानते थे।

अधिकारी: वह किस प्रकार के अधिकारी थे? वह सबको सुलभ, ग़लती मानने में विनीत, सीधे सादे, बुद्धिमान, पाखंड-आडम्बर से दूर ओर सचमुच में एक लम्बे तगड़े व्यक्ति थे। वह स्नेही पिता और प्रेमी पति थे। के० रि० पु० में बल कोई भी ऐसी बात नहीं थी, जिसे वह नहीं जानते हों या जिसे वह सुलझा नहीं सकते हों तथा कोई भी ऐसी वस्तु नहीं थी, जो उनके स्पर्श से जगमगा नहीं उठी हो। वह सर्वोत्तम शिल्पकार थे। अपनी स्पष्ट लेखनी से वह आपके ड्राफ्ट (प्रारूप) में चार चाँद लगा देते थे, जिसमें वह तलवार के स्थान पर जादू की छड़ी का काम लेते थे।

वह किसी दृश्यक्रम को अपनी जनसुलभ स्पष्टवादी टिप्पणियों से जगमगा देते थे। अन्तिम दिनों तक वह कार्य करते रहे; उन्होंने अन्तिम नोट लिखे; पुनर्गठन के प्रस्तावों को संभाला-सुधारा तथा गृह मंत्री को एक अन्तिम श्रद्धं सरकारी पत्र का मसौदा बनाया, जो मानों उनका अपना मृत्युलेख था। तब वह गतिशून्य होने लगे।

वेदना—वह बुरी तरह खाँस रहे थे और वह उनकी हड्डियों तक हिलाने वाली, झकझोरने वाली खांसी थी, जिससे उनके पास खड़े लोगों को भय लगता था और तब हमने उन्हें शम्याग्रस्त देखा । थोड़ा सहारा लिये हुये; वह अब भी खांस रहे थे और आगन्तुकों के प्रति मुस्का रहे थे। किन्तु वह अपनी चाय के प्वाले की चुस्कीलेते थे और सर्वत्र मुस्कान की गर्म रश्मियां फैलाते हुये, दूसरों को चाय पेश करते थे।

उन्हें तीव्र वेदना थी। उनके विरोध करने पर भी उन्हें गोबिन्द बल्लभ पन्त अस्पताल ले जाया गया। गुर्दे के विफल काम करने की सूचना स्थिरचित्त से सुनी। सर्व श्रेष्ठ डाक्टरों के निरीक्षण में प्रति दुखदायी डालयसिस में बारम्बार रखने पर, उन्होंने

अपने चारों और बिजली के पुर्जों व स्तम्भ को देखकर मुझ पर दृष्टि डाली और बोले "देखो, वह नकाबपोश (यमदूत) आता है।"

अन्तिम यात्रा : इससे पूर्व कि उनका पार्थिव शरीर 95,लोधी स्टेट छोड़े, जहाँ वह वर्षों रहे थे, वहाँ उनके सम्बन्धियों, मित्रों, अधीनस्थों तथा वरिष्ठों, सिपाही तथा कर्मचारी लोगों की उत्सुक और क्षुब्ध भीड़ इकठ्ठी थी। जो उनसे पहले महानिदेशक रह चुके थे, उनमें से भी कुछ वहां उपस्थित थे। गृह मंत्री, गृहराज्य मंत्री तथा गृह सचिव भी दुःखी और सौम्य मुद्रा में मौजूद थे । सशस्त्र सहयोगियों ने जब अरथी उठायी, तब कोई भी आँख ऐसी नहीं थी, जो गीली न हुयी हो । पूर्ण पुलिस सम्मान के साथ उन्हें घाट ले जाया गया। सभी केन्द्रीय पुलिस संगठनों के अध्यक्ष तथा अधिकांश अधिकारी और जवान भी सम्मिलित हुये थे। गेंदे, गुलाब इत्यादि के फूलों से वह सुसज्जित थे। निगमबोध घाट पर उनके पुत्र रवि ने चिता प्रज्वलित की और फिर 'शोकशास्त्र' का परायण हुआ–वही अन्त्येष्टि थी।

'ऐ दाग क्या कहूँ शबे-फुरकत की वारदात । जो मेरे हाथ से मेरे दिल पर गुज़र गये।' ।

(ए दाग, वह बिछुड़ने की रात घटना का क्या वर्णन करू ? मैंने ही जिसे बनाया था, उसको मुझे ही सहन करना होगा)

अपने परिवार के स्वार्थों तक को महत्व नहीं देते हुये, वह इस बल के प्रति अत्यधिक समर्पित थे तथा वह पद्धति और अपने चारों ओर के लोगों के हितों की निष्ठा में आश्वस्त थे।

सुन्दर मनोविनोद पर सदैव विचारशील : निश्चित मृत्यु के सम्मुख, वह शान्त और सौम्य रहे। अन्तिम क्षण तक बाहरी सहायता से वह बचते रहे और जब कि वह गंभीर प्रकार से रोग ग्रस्त थे, तब भी वह यही सुनिश्चित करते कि पास खड़े हुए व्यक्तियों को वह कम से कम कष्ट दें।

हम एक बार जब उनकी गम्भीर रुग्णता के समय बहुत रात तक उनके पास थे, वह बोले "महानुभावों, घर जाओ और अपनी पत्नियों से मिलो। वरंच वे तुम्हें तलाक़ देंगी।"

जब वह मरणासन्न तक थे, उन्हें इस बल का ध्यान था और गृह मंत्री को सन्देशे भेजते रहे। उस मुर्छावस्था में जाने से पूर्व, जिससे वह कभी चेतना में नहीं आये, उन्होंने पूछा था "मुझे विश्वास है कि आपने सन्देश भेज दिया होगा।"

"जी हुज़ूर" मैंने उत्तर दिया "मैं 31 दिसम्बर को दूँगा; किन्तु वह बहुत दूर है।" इस बल को नव वर्ष मंगलमय रहने का सन्देश विधिवत भेजा गया। हन्त, जिस व्यक्ति ने उसे भेजा था, वह इस लोक में नहीं रहा था। इस प्रकार के तत्वों पर ही, उन्होंने अपना आत्मबल बनाया था। ऐसे ही उपकारी लोगों के विषय मैं 'हाली' ने कहा है—

'यादगारें ज़माना है ये लोग।

याद रखना फसाना हैं ये लोग ।

(ये मनुष्य इतिहास के स्मारक के नाम स्तभ हैं; किन्तु यह याद रखना कि इनमें उपन्यास के से गुण हैं।)

> दूसरों को उपदेश देने वाले बहुत होते हैं; परन्तु स्वयं पर अनुशासन पाने वाले विरले हैं।
>
> **—तुलसी दास**

कहानी

ठो क र

ले०–श्री दुर्गा माधव मिश्र

गृह रक्षा और अग्निशमन विभाग के अध्यक्ष श्री दर्प दलन मिश्र आई. पी. एस. चक्करदार कुर्सी पर कमरे के एक छोर से दूसरे छोर तक चक्कर लगा रहे हैं। अनुचर के समान, बायीं तरफ़ से एयरकूलर बरावर ठंडी हवा उन्हें पहुंचा रहा है। सामने मेज़ पर रखे हुये हैं क़लमदान और गुलदस्ते, जिनमें कुछ थोड़े से फूल लगे हैं मुरझाये रजनीगंधा और सबजिया। टेविल-डायरी में लिखा दीखता है—दिसम्बर 23, सुबह 11 बजे भुवनेश्वर में बजट पर बहस होगी। दोपहर 3 बजे, आग बुझाने वाली सामग्रियों की खरीद के लिए, पर्चेज़ कमेटी की मीटिंग हैं।

ओफ ! कितना काम है? निश्वास लेते हुए, लाल प्रिवर्दानी टेलीफोन का बटन दवाया मिश्र साहब ने। उधर से स्टेनो कुमार ने चोगा उठाया 'गुड मार्निंग, सर।' गुडमार्निंग ! ग्यारह बजे मीटिंग है, जबकि अब दस बज चुके हैं। फिर भी फाइल का पता नहीं। भुवनेश्वर जाने में तो कम से कम पैंतालीस मिनट लगेंगे ही।"

'अभी लेकर आया, सर !'

'इतनी देर क्यों हुई ?

'सारी सर— — —'

स्टेनो कह नहीं पा रहा है कि वजट की फाइल वह नहीं देख पाता है। पर वह बात बता देने से तो प्रलय मच जायेगी। लिहाज़ा 'सारी' कह कर माफ़ी मांग लेने से क्यों न काम खत्म किया जाये। कुमार भागा भागा राम बाबू के पास जाता है।

'अरे भई; अच्छे आदमी हो । बजट की फाइल क्यों नहीं साहब पर ले जाते । वह मेरे ऊपर आग-बबूला हो रहे हैं।'

‘अभी ले चलता हूँ’—निरीह आवाज़ थी राम बाबू की। पान के डिब्बे से एक गिलोरी निकाल कर उन्होंने मुंह में डाली। पहले का पान अधपचा मुँह में पहले ही है, इस मोर उनका ध्यान ही नहीं गया।

निहायत मामूली-सीधे सादे आदमी हैं राम बाबू । कभी बिगड़ते ही नहीं देखा किसी ने। सबसे-हँस हँस कर बात करने वाले हैं वह। जब कभी कभार उनका माथा गर्म हो भी जाता है, तब वह एक ‘बीड़ा पान मुँह में रख लेते हैं, सुवासित षान की गिलौरी के पिपरमेंट से मिजाज फिर ठंडा हो जाता है।

‘इस फाइल से ही क्या होगा, कुमार बाबू? कितने ऐसे अध्यक्ष आये और चले गये। सभी का वही ढंग—आग लगने पर कुआँ खोदना । आज वजट पर अवश्य बहस है; पर आज तक वह कहां थे? आखिर कल वह क्या कर रहे थे।’

‘कल तो गृह-रक्षियों की बैठक थी’

“बस बैठक, सभा, समिति, मीटिंग—

क्या मिलता है इनसे ? कौन पूछता है भूसा कूटने को? इतनी सभायें हो चुकी हैं। परन्तु गृहरक्षियों का भाग्य कभी क्या पलटा है ? उसी अंधेरे में ही तो वे पड़े हैं।’

‘राम बाबू’ बातें छोड़िये । ज़रा फाइल तो उठा कर साहब के पास ले चलिये।’

राम बाबू ! वेमन से हल्की मुस्कान के साथ उठे और ले ली हाथ में एक मोटी फाइल । थोड़ी दूर जाकर, वह फिर मेज के पास लौटे । अब तो कुमार का पारा चढ़ चुका है। परन्तु रामबाबू बड़े इत्मीनान के साथ पान का डिब्बा उठाकर जेब में रखने लगे।

‘जानते हो कुमार बाबू, अभी पान का डिब्बा छोड़ कर पाँच मिनट के लिये बाथरूम को गया था कि यह जो लड़का मानिवेन्द्र है ना। खपाक् खपाक् तीन चार बीड़े मुंह में डाल अब फाइलों के स्वर्गीय आनन्द में ऐसा डूबा है, जैसे कुछ जानता ही न हो। कितना कष्ट उठा कर तो, श्रीमति जी ने डिब्बे में पान भर कर दिये थे। आफिस में कितना समय लगेगा, उसका हिसाब लगा कर ही तो उन्होंने इसे भरा होगा, लेकिन यह मान-वेन्द्र– –’

मन्द-मन्द मुस्काते मानवेन्द्र की तरफ़ वात्सल्यपूर्ण नज़र डालते हुये, कुमार के पीछे राम बाबू चलने लगे।

‘क्यों इतनी देर हुई राम बाबू ?

मिश्र साहब कुर्सी छोड़ कर कमरे में टहल रहे हैं, शायद उनका निम्न रक्तचाप 60 से 110 हो गया है। लेकिन रामबाबू से नाराज़ नहीं हुआ जा सकता। पुराने आदमी हैं; सब कुछ जानते हैं; उनको नाराज़ कर देने से काम नहीं चलेगा। मिश्र साहब ने काल-बेल बजायी और पूछा— ‘गाड़ी लगी है।

‘हां साहब ।

“चलिये, चलिये, फ़ाइल के साथ गाड़ी की अगली सीट पर बैठिये”

“सर, मैं–मैं भी आपके साथ–”

इस अप्रत्याशित परिस्थिति के लिये तैयार नहीं थे रामबाबू; तब तक ड्राइवर गाड़ी स्टार्ट कर चुका था। गाड़ी निकल पड़ी पोर्च से । “राम बाबू जरा चुटकी बजाते मुझे बता तो दीजिये कि क्या बहस होगी वजट पर ? मीटिंग में मेरे पीछे की सीट पर बैठ जाइयेगा। वक्त पर मुझे ज़रा सा प्राम्टिंग करते रहियेगा’

राम बाबू के मुँह से शब्द नहीं निकल रहे हैं। ऐसे समय मन को ढाढस बंधाने को एक बीड़ा पान का खा लेना ज़रूरी है। पर साहब के सामने ! चपके-चुपके जेब में “हाथ डाल कर, नाखून से पान का डिब्बा धीरे से खोलते हुये पान का बीड़ा निकाला राम बाबू ने; चेहरे से पसीना पोंछने के बहाने पान के बीड़े को, उन्होंने मुँह में ठूस लिया पी. सी. सरकार के जादू की भाँति। पान को दो बार चबा लेने पर राम बाबू के सन में धीरज पाया; मुँह के अन्दर महक खिल उठी।

‘सर, आप क्या नहीं जानते, जो मैं बताऊँ। फिर सब कुछ फाइल में नोट किया रखा है।’

एक नज़र...

‘ओफ़, फाइल पढ़ने के लिए वक्त कहाँ है ? आप जरा बोलते चलिये न ।’

गाड़ी भाग रही थी नब्बे किलोमीटर प्रति घण्टे की रफ्तार से । अचानक उसकी गति धीमी पड़ी। रास्ते में ठोकरों की क़तार–बाँध । गाड़ी धीमी गति से उस पर रिंगी।

‘ओफ़, यूज़लेस ; पता नहीं किस के दिमाग में ऐसे गतिरोधक बनाने की सूझी। इस सम्बन्ध में एक अर्द्ध-सरकारी पत्र लिखना होगा। कुमार निकालो तो नोट-बुक ।’

यदि कुमार साथ में न रहे, तो गाड़ी नहीं चल सकती, वह ठीक ड्राइवर के पास वाली अपनी सीट पर बैठा हुआ है । तुरन्त आशुलेखन की नोट बुक और पेंसिल हाथ में लेकर, वह उद्ग्रीव होता हुआ साहब का मुंह ताकने लगा। साहब के होंठों पर चुरुट इधर से उधर नाच रहा है ; वह भी उसी तरफ ताक रहा है—कब चुरुट हटेगा और कब मुखारविन्द से.....

‘लिखो—’

‘मेरे प्रिय महापात्र,

‘ना, ऐसे नहीं । जो भी हों, हैं तो सरकार के सेक्रेटरी, चाहे मुझ से उम्र में छोटे ही क्यों न हों, लिखो —

‘प्रिय श्री महापात्र ।’

‘हाँ, सर।’

‘किसी मध्य युगीन रीति के अनुसार, कटक-भुवनेश्वर के राजपथ पर कई गति-रोधक बना दिये गये हैं। उससे गुजरते हुये चढ़ने वालों का समय बेकार नष्ट होता है। क़ानूनन्, यह बड़ा अन्याय है; क्योंकि किसी की गतिरोधन करना उसके संविधान-अधिकार में दखल देना है। राजपथ खास तौर पर राष्ट्रीय राजपथ पर, किसी भी प्रकार

का प्रतिबन्ध पैदा करना कानून विरोधी कारवाइ है। यदि इन गतिरोधकों का निर्माण दुर्घटना रोकने के लिये हुआ है तो भी वह सही नहीं है; दुर्घटना करने वाले ट्रक और बस इत्यादि इनका ज़रा भी ध्यान नहीं देतीं । वे तो वैसे ही तेज चली जाती हैं और दुर्घटनायें घटती रहती हैं। केवल छोटी गाड़ियों के चालक ही इन से परेशान होते हैं।

'इसलिये, आप से अनुरोध है कि आप तुरन्त सरकार के समक्ष ये असुविधायें बतायें और इन ठोकरों को जल्द निकाल देने की व्यवस्था करें। सम्मान सहित, । इति ।'

तब तक गाड़ी, बालिकुदा, तेलगापेंड और पाहाल के बाँधों को पार कर, बमीखाल तक पहुँच गई है। राम बाबू फ़ाइल को प्राधा खोलकर बैठे हुये हैं—यह बताने को कि किस विषय पर बहस होगी।

'हाँ, तो राम बाबू बोलिये'

'सर, बात यह है कि हमारी सीलिंग पिछले साल से इस साल थोड़ी बढ़ानी होगी। बात यह है कि हुक्म दिया गया है कि अग्नि शामक बाहिनी को फुलपैंट और दरी देनी होंगी। उसके लिये ज्यादा रुपये चाहिये । आग बुझाने वाली मशीनें पुरानी पड़ गई हैं; गृह रक्षियों का भत्ता भी बढ़ गया है : कम से कम और दस लाख रुपये । आप कहेंगे तो सर, दस लाख कुछ भी नहीं हैं । कितना तो सोते के मुँह से पानी की तरह बह रहा है।'

गाड़ी के बोनेट पर 'सत्यमेव जयते' कहते हुये झंडी लहरा रही है। मालूम नहीं सेक्रेटेरियट का संतरी उस झंडी को सलाम कर रहा है या दर्प दलन मिश्र को।

ग्यारह बजने में केवल दो मिनट हैं। जल्दी-जल्दी दर्प दलन मिश्र, राम बादू और कुमार गाड़ी से उतरे। लिफ्ट से होकर, तितल्ले के सम्मेलन कक्ष में पहुँचते-पहुँचते ग्यारह बजकर पांच मिनट हो गये। बातानुकूलित कक्ष में अपनी सीट ढूढ कर बैठ गये दर्पदलन मिश्र। कुमार और रामबाबू भी उनके पीछे जगह लेकर बैठ गये। मस्तकपट से पसीने की बूंदों को सोखता जा रहा है वातानुकूलित यंत्र। कई विभागों के बजटों पर बहस होगी। क्या जाने कब उनकी बारी आयेगी? जरा देर में ही नींद सताने लगेगी।

लो, राम बाबू तो पान का एक बीड़ा मुँह में डाल कर आराम से ऊँघने भी लगे हैं। कुमार गृद्ध-दृष्टि से साहब को देख रहा है । कब बैठक शुरू होगी ???

तामिलनाडु द्वारा हमारे जवानों को घर

तमिलनाडु सरकार अपने पुलिस कर्मियों के लिए आवासीय योजना बना रही है। के.रि.पु. बल का महानिदेंशालय, इस योजना में के. रि. पु. बल के उन जवानों को शामिल करना चाहता है, जो तमिलनाडु के निवासी हैं ।

के० रि० पु० बल का परिचालन सेक्टर मुख्यालय

पूर्वोत्तर में के० रि० पु० बल की भारी तैनाती के कारण, एक नया सामरिक

परिचालन सेक्टर मुख्यालय स्थापित किया गया है, जिसमें त्रिपुरा, मिज़ोरम, असम के कच्छार जिला और मणिपुर परिचालन-अधिक्षेत्र सम्मिलित हैं।

अन्य प्रबन्ध होने तक, पुलिस महानिरीक्षक से० I के० रि० पु० वल हैदराबाद से इस नये मुख्यालय स्थापित करने को कहा गया है।

पूर्वोत्तर के शेष परिचालन अधिक्षेत्र का भार, सभी प्रयोजनों के लिये पुलिस महानिरीक्षक से० II पर रहेगा।

इसी प्रकार तेज़पुर, नौगांग, हो जाई और लमडिंग समेत, पूर्वी क्षेत्रों में जहाँ 12, 16, 25, 33, 39, 47, 50 और 62 बटालियनें इस समय कार्यरत हैं, जोरहाट और दुलीजान पर मुख्यालयों के साथ के० रि० पु० बल की एक अस्थायी अतिरिक्त परिचालन रेज मानी जायेगी।

अन्य व्यवस्था होने तक, पुलिस उपमहा-निरीक्षक, के० रि० पु० बल कलकत्ता से परिचालक मुख्यालय स्थापित करने तथा इस रेंज की देखरेख करने के आदेश दिये गये हैं।

जवानों द्वारा पारिवारिक क्वार्टरों का निर्माण

दीमापुर हवाई अड्डे पर, 23 बटालियन के जवानों ने अपने आप 100 क्वार्टरों का आवासीय क्षेत्र बनाया है। हर क्वार्टर में एक रहने का कमरा, बरामदा और संलग्न रसोई घर तथा शौचालय है। परिसर में बालोद्यान भी है।

इस बटालियन में, एक पारिवार कल्याण केन्द्र है; जहां देश के विभिन्न भागों की 100 महिलायें काम सीखती हैं। जवानों की इन पत्नियों को वर्दी सीने और पापड़-साबुन बनाने की सुविधायें, पतियों की माय बढ़ाने के लिये दी जाती हैं।

मनोरंजन-कक्ष के लिये. जवानों ने - एक 'वासा' भी बनाया है।



बायें से दायें : ऊपरी पंक्ति : स०इ० रामचन्दर, स० इ० राधेश्याम, इ० रघुवीर सिंह राठी, ना० बाबू लाल व का० चन्द्र शेखर द्विवेदी निम्नपंक्ति : का० विजय सिंह, का० नाजिर हुसैन, का० रामफल सिंह, का० बीरेन्दर कुमार व हे० का० अवधेश तिवारी।

गौरव गाथा :

के.रि.पु. बल के 11 कर्मचारियों को प्रधान मंत्री जीवन रक्षा पदक

जीवन रक्षा के लिये प्रधानमन्त्री के पुलिस पदक केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के 11 कर्मचारियों को प्रदान किये गये हैं।

इनमें एक का० चन्द्रशेखर है, जिसने 28 सितम्बर 1980 को गंगतोक (सिक्किम) पर रानीपूल नदी की उमड़ती तेज धारा से दो महिलाओं को बचाने के लिये बारम्बार डुबकियाँ लगाई।

पिछले वर्ष अक्टूबर में, बारपेटा (असम) पर मोरानदी में अचानक फिसल कर गिरने वाले एक 12 वर्षीय बालक को, हे. का. अवधेश तिवारी बाहर निकाल कर लाया।

गत वर्ष 2 फरवरी को, मेलथाम गाँव (एजल) के एक भस्मीभूत होते हुये घर से अकेले ही ना० बाबूलाल ने दो नन्हीं बालिकाओं के प्राण बचाये।

3 जनवरी, 1981 को, विष्णुपुर (गोहाटी) में एक जलते घर की लपटों में घुस कर का० बीरेन्द्र कुमार और का० विजयसिंह ने चार फँसे हुये व्यक्तियों को निकाल कर बचाया।

गतवर्ष 23 अप्रैल को तिरप ज़िले (अरुणाचल), में देवमाली नदी के भँवर में फँसे दो बालकों को का० रामफलसिंह ने डूबने से बचाया।

17 दिसम्बर 1980 को, ज़ारा गाँव (अरुणाचल) में एक जलते हुए मकान से एक वृद्धा और एक बच्चे को, स० इ० राधेश्याम और का० नाज़िर हुसैन ने निकाल कर जीवनदान दिया।

7 नवम्बर, 1980 को, मारघेरिटा (असम) में एक जलते हुए घर से क्षतिग्रस्त व्यक्ति का जीवन इ० रामचन्दर ने बचाया।

16 नवम्बर 1980 को, मुकामेघाट (बिहार) में, गंगा में डूबती हुई एक 10 वर्षीय बालिका के प्राण, हे० का० बाबूसिंह ने बचाये।

12, अप्रेल 1980 को, मुज़फ्फरपुर (विहार) में एक जलते मकान से एक वृद्धा को निकाल कर जीवन दान दिया।

प्रशंसा

श्री ए. बी. ए. ग़नीखान चौधरी, केन्द्रीय उर्जा मंत्री ने 26 अक्टूबर 1981 को पश्चिमी बंगाल के खेजरीघाट पर एक सभा को सम्बोधित करते हुये, फरक्का में के०रि०पु० बल द्वारा किये गये काम की बड़ी सराहना की।

उसी प्रकार, उपराज्यपाल, अरुणाचल प्रदेश और मिजोरम के पुलिस महानिरीक्षक ने क्रमश: अरुणाचल प्रदेश और मिज़ोरम में के०रि०पु० बल द्वारा उठाये गये उत्तम सेवाभारों की भूरि भूरि सराहना की है।

राजपत्रित पदोन्नतियाँ

अक्टूबर 1981 में 13 पुलिस उपाधीक्षकों की सहायक कमांडेंट तथा 100 इन्सपेक्टरों की पुलिस उपाधीक्षक बनाया गया।

प्रदर्शनी

ग्रुप केन्द्र, झड़ौदा कलां में के० रि० पु० बल के परिवार कल्याण केन्द्रों की प्रर्दशनी में ग्रुप केन्द्र झड़ौदा कलां ने प्रथम, ग्रुप केन्द्र नीमच ने द्वितीय तथा ग्रुप केन्द्र गौहाटी ने तृतीय स्थान पाया। xx

गौरव गाथा

के० रि० पु० बल के जवानों ने मूल्यवान सम्पति बचाई

अग्निशमन

राजौरी (जम्मू कश्मीर) में निरत 14 बटालियन के जवानों ने 10 अक्टूबर 1981 को

राजकोय रोजिन एन्ड टरपेन्टाइन फैक्ट्री, फतहपुर को भस्मीभूत होने से बचाकर 50 लाख रुपये की सम्पत्ति की रक्षा की। सूचना पाते ही इ० भरतसिंह 36 जवानों को लेकर अग्निशमन उपकरणों के साथ, अग्नि स्थल पर पहुँच गया। फैक्ट्री का बॉयलर (वाष्पपात्र) अनुभाग: गगनचुम्बी लपटों में, फँस गया था। आग काबू से बिल्कुल बाहर दीखती थी, और राजौरी में दमकलें मौजूद नहीं थीं; और जो दमकलें नागरिक अधिकारियों के पास थीं, वे अपर्याप्त थीं। के० रि० पु० के जवानों ने मिट्टी खोद-खोद कर अग्नि पर फेंकना शुरू किया। उन्होंने तारपीन के बहुत से ड्रम और राल के टीन, फैक्ट्री से हटा कर एक सुरक्षित स्थान पर रख दिये। यह प्रक्रिया तीन घंटों तक चलती रही, तब जाकर जवानों ने भाग पर काबू पाया। उपायुक्त, पुलिस अधीक्षक और राजोरी की साधारण जनता ने इस टुकड़ी की सामयिक तथा बहुमूल्य सहायता की प्रशंसा की। रोंज़िन फैक्ट्री के प्रबन्धक ने जवानों के प्रति इस उत्तम काम के लिये, सच्ची कृतज्ञता प्रकट की।

अक्टूबर 27, 1981 को दिवाली के अवसर पर, रोहतक मार्ग पर स्थित भाखरा बेस के मैनेजमेंट बोर्ड बिजली घर में लगी आग को 34 बटालियन के का. दुर्ग सिंह ने अकेले ही बुझाया। बोर्ड के अधिशासी अभियन्ता, श्री एस.सी. माट्टा ने कमांडेंट को लिखे अपने पत्र में अपनी सराहना तथा धन्यवाद लिखा है।

अमृतसर में कम्बल और ऊन के एक थोक व्यापारी की दुकान में, बिजली के शार्ट-सर्किट होने से 7 नवम्बर 1981 को आग लग गयी। 48 बटालियन के जवान तुरन्त घटनास्थल पर जा धाये और अग्निशमन में उन्होंने सहायता की, जिसके कारण 1.80 लाख रुपये के ऊनी वस्त्र बच गये तथा दूसरी दुकानें भी आग लगने से बच गयीं। x

आकाशवाणी भवन बचाया

आकाशवाणी भवन, पासीघाट में 5 सितम्बर 81 को बिजली के 'शार्टसर्किट' होने से आग लग गयी। निरत गार्ड कमांडर 31 बटालियन तत्काल घटनास्थल पर पहुँच गया, अन्य सभी गार्डों को सतर्क किया तथा एक बाँस से बिजली के कनेक्शन को अलग कर दिया।

यदि गार्ड कमांडर और जवानों ने फुर्ती से काम न किया होता, तब आग ने सारा आकाशवाणी भवन भस्मीभूत कर दिया होता। आकाशवाणी के तथा स्थानीय अधिकारियों ने इन जवानों के साहस तथा तुरन्त कार्रवाई की बड़ी प्रशंसा की।

इससे पूर्व उसी दिन, परसीघाट में श्री बी. वरुआ की झोपड़ी में आग लगने पर, इसी बटालियन के जवानों ने अग्निकांड होने से बचा लिया।

अरुणाचल के उपराज्यपाल द्वारा प्रशंसा

श्री हरि शंकर दुबे, उपराज्यपाल, अरुणाचल प्रदेश, ने 16-17 सितम्बर 1981 को लेखाचाली की यात्रा की। उनके प्रवास के समय, 31 बटालियन का एक आवासीय

गार्ड सांकेट हाउस पर नियुक्त किया गया। उप-राज्यपाल ने गार्ड-जवानों के चुस्त प्रदर्शन की सराहना की तथा उन्हें 100 रु० का नक़द पुरस्कार दिया। x

असम के उपराज्यपाल द्वारा सराहना

असम के राज्यपाल के सलाहकार ने राज्य में के० रि० पु० बल द्वारा की गईं उत्तम सेवाओं के प्रति राज्यपाल की प्रशंसा प्रेषित की हैं। असम के महानिदेशक ने भी के० रि० पु० बल के कामों की सराहना की है तथा के० रि० पु० के कर्मचारियों को 9,500 रु० का नक़द पुरस्कार दिया है। मेघालय और मिज़ोरम के पुलिस महा-निरीक्षकों ने भी के० रि० पु० बल की उत्तम कार्रवाई का गुणगान किया है। X

उद्योगों की रूपरेखा

श्रीमति, आर. एन. शिवपुरी की अध्यक्षता में 1981 में शिखर केन्द्रीय परिवार कल्याण मंडल की दो बैठकें हुईं।

नवम्बर, 1981 को हुयी एक बैठक में, परिवार कल्याण केन्द्रों द्वारा अनेक प्रायोजनायें-छोटे और मंझोले उद्योगों-को चलाने के विषय में श्री पी. वी. सुब्बाराव, कमांडैंट ग्रुप केन्द्र, गांधीनगर द्वारा तैयार कार्यपत्र पर विचार-विमर्श हुआ । उद्योगों को चलाने की रूपरेखा बनाने के लिये, एक तदर्थ समिति गठित की गई।

शिखर मंडल ने संकट प्रीमियम कोष के ब्योरे की भी जाँच की। मंडल को बताया गया कि इस कोष ने भारत हेवी इलेक्ट्रिल्स पर 86 लाख रुपये सावधि जमा कर रखे हैं और मासिक वसूली लगभग 12 लाख रुपये की हो जाती है। अक्टूबर तक, कोष को ब्याज और कमीशन के रूप में लगभग 2.83 लाख रुपये मिले और मृत्यु के 89 मामलों में, अशक्तता के 50 मामलों तथा 398 अन्य मामलों में कुल मिला कर 7.42 लाख रुपयों का अनुदान दिया गया।

अन्य चर्चित विषय ये थे-दुर्गापुर में लोहे के सन्दूक और बाल्टी की एक फैक्ट्री को, भुवनेश्वर में फोम चमड़े के जूते और थैलों के उत्पादन को; रामपुर में पट्टीवस्त्र के उत्पादन को; आवडी में ब्रेड (डवलरोटी), तकिये, कुर्सी की गद्दी और प्लास्टिक थैलों के निर्माण को तथा पल्ली-पुरम में बेंत और नारियल-जटा के उत्पादन को स्थापित करना । यह तय हुआ कि पहले ये प्रायोजनायें तदर्थ समिति द्वारा स्वीकृत होनी चाहिये।

मंडल की 11 नवम्बर 81 वाली बैठक में, प्रायोजित अर्द्धयन्त्रचालित ब्रेड और आवडी में निर्यात-उन्मुख सिले-सिलाये कपड़ों के उद्योग स्थापित करने की योजना के पत्रों पर विचार-विन्मय हुआ। xx

सभी लोग दूसरों को धन खर्च कराने में राजा विक्रादित्य की भांति उदार हो जाते हैं।



गौरवगाथा :

गणतंत्र दिवस परेड में के.रि.पु. बल की टुकड़ी

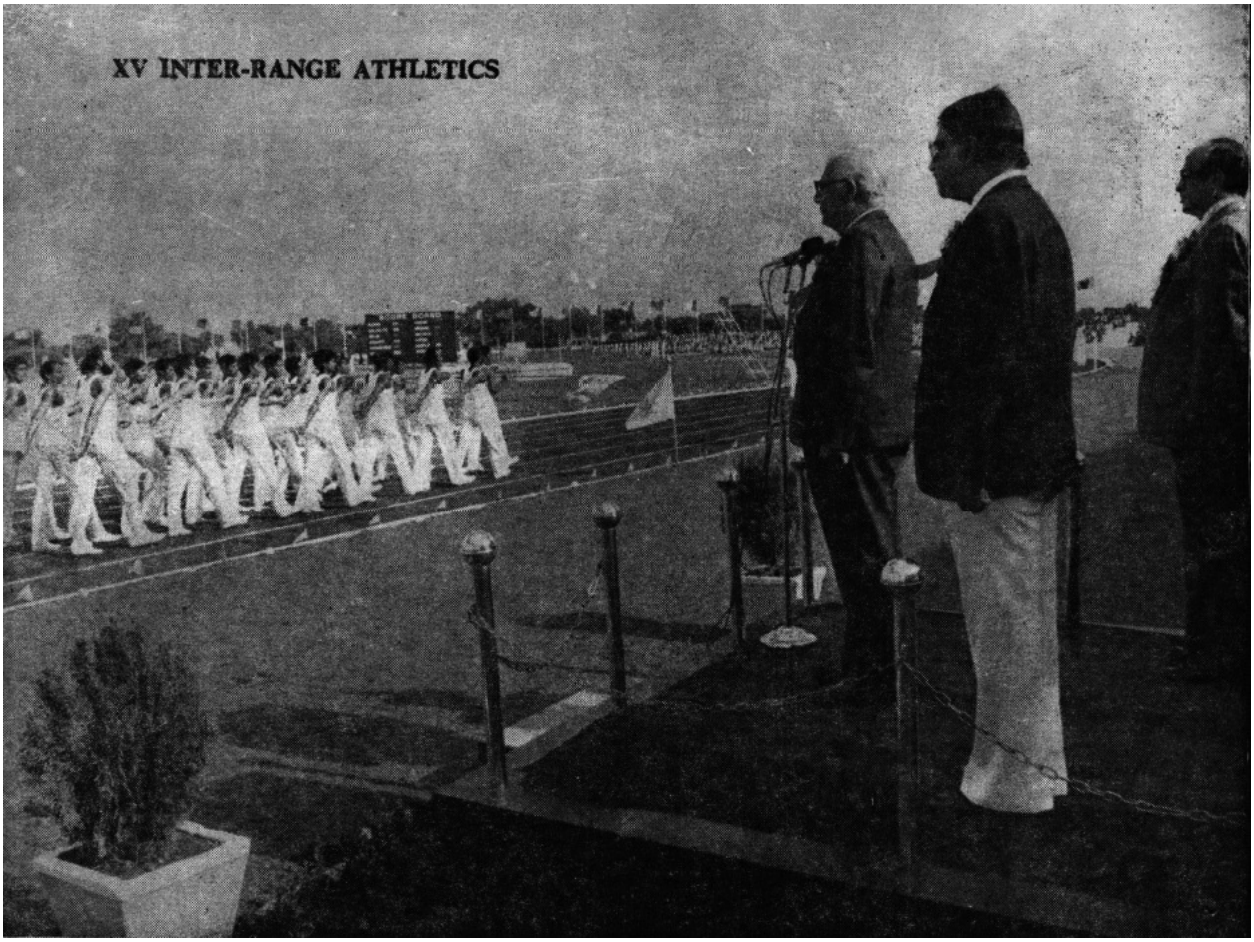
इस वर्ष के गणतंत्र दिवस परेड में भाग लेने वाली के०रि०पु० बल की टुकड़ी में, नवगठित बटालियनों के लिए 1979 और 1980 में भर्ती किये गये नये जवान

अधिकांश रूप में थे, किन्तु उसमें अन्य बटालियनों के तथा देश के सब भागों से आये हुए जवान भी थे। 75 जवानों और 3 अधीनस्थ अधिकारियों वाली इस टुकड़ी का नेतृत्व, श्री रविन्दर तोमर, उपाधीक्षक, ग्रुप केन्द्र II अजमेर ने किया था। टुकड़ी के जवानों की औसत लम्बाई छः फुट से ऊँची थी। निकल चढ़ी किरचों वाली 7.62 मि० मी० रायफल, बे हाथ में लिये थे।

वह टुकड़ी रंग-विरंगी थी। जवान नीली पट्टी के साथ खाकी वर्दीं धारे और । आसमानी तुर्रा लगाये थे तथा सुनहरी झालर से अलंकृत थे। के०रि०पु० बल के गुम्फाक्षर से अंकित नीला रुमाल उनकी गर्दन पर सुशोभित था। स्कन्ध-नाम के नीचे

नीली सज़ का पट्टा वाली अंगोला का कमीज़ और बायीं बांह पर आसमानी के० रि० पु० बल बटालियन का संकेत, शरीर के ऊपरी भाग की शोभा बढ़ा रहा था। कमर में एक नीले कमरबन्द पर भूरे चमड़े की पेटी कसी थी। वह टुकड़ी "कदम बढ़ाये जा" की धुन पर कदम बढ़ा रही थी। भारत-तिब्बत-सीमा पुलिस और के० रि० पु० बल का मिला जुला वादक-वन्द था।

30 जनवरी 82 को, इस टुकड़ी को आदर देने के लिए एक स्वागत समारोह हुआ। इस अवसर पर बोलते हुये, श्री आर. के. खंडेलवाल, पुलिस महानिरीक्षक (मुख्यालय) ने टुकड़ी के सदस्यों को 'शाबाशी' दी। श्री एम. वधवा, उपनिदेशक (प्रशिक्षण) ने इस टुकड़ी में भाग लेने वालों को निम्नलिखित दर से पुरस्कार घोषित किये-कान्स्टेबल 35 रु०; अवर अधिकारी 50 रु० और अधीनस्थ अधिकारी 75 रु०।



<u>क्रीड़ा क्षेत्रे :-पन्द्रहवीं अन्तरेंज खेल कूद प्रतियोगिता :</u>

श्रीनगर रेंज ने ट्राफी छीनी

नीमच में 4 नवम्बर 81 को सम्पन्न हुई, के० रि० पु० बल की पन्द्रहवीं अन्तर्रेंज

दौड़कूद प्रतियोगिता में, श्रीनगर रेंज ने अजमेर रेंज से टीम चैम्पियनशिप ट्राफी छीन ली। अंकगणना इस प्रकार रही श्रीनगर रेंज 213; हैदराबाद रेंज 172 और अजमेर रेंज 140।

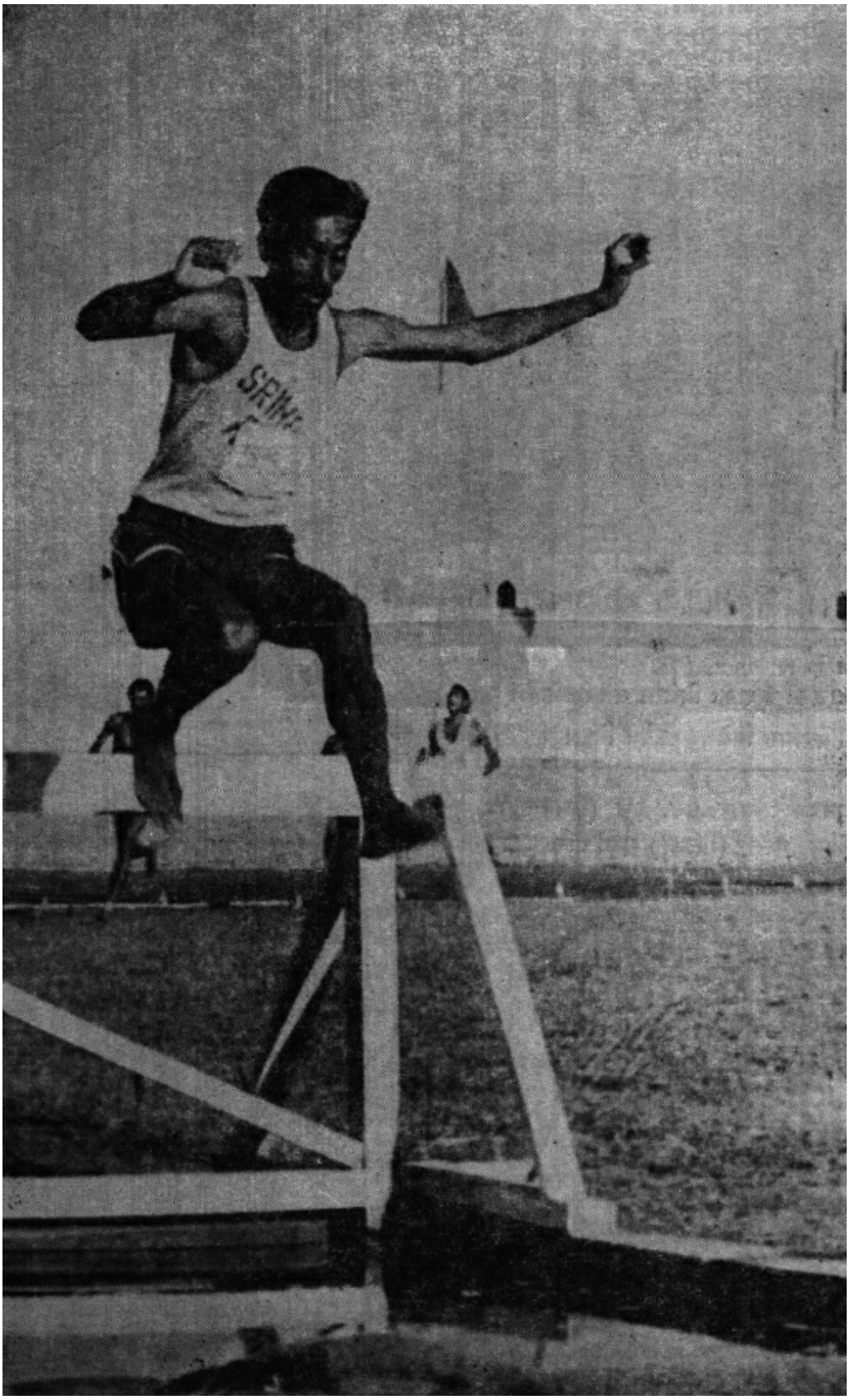
प्रभात सिंह (श्रीनगर) प्रतियोगिता का "सर्वश्रेष्ठ एथ्लीट" घोषित हुआ। उसने डिकॅथलॅन में स्वर्णपदक तथा चौड़ी कूद और 400 मी० (वाधा) दौड़ में रजत पदक पाये।

भारी तूफानी वर्षा के कारण, भूमि स्थितियाँ आदर्श नहीं थीं। अतएव, केवल 3000 मी० स्टीपल चेज दौड़ में, अन्तर्राष्ट्रीय एथ्लीट प्रदीप कुमार का ही कीर्तिमान भंग हुआ। भूमि गीली होने पर भी, प्रदीप कुमार ने शेर की भांति दौड़कर 8 मि. 53.2 से० में दौड़ पूरी की और इस प्रकार, उसने अपने ही पुराने रिकार्ड को 9 मि० 9 से० से सुधारा। प्रसंग वश, वह अखिल भारतीय कीर्तिमान पर भी 9 मि. 1.4 से० का सुधार था।



प्रभातसिंह को सर्वश्रेष्ठ एथ्लीट ट्राफी प्रदान करते हुए श्री टी०जी०एल० अय्यर।

चक्का फेंक और शाटपुट—इन दो प्रतिस्पर्द्धाओं में, हैदराबाद रेंज के ए० पी० एस० मान ने प्रथम स्थान पाया।



3,00 मी० स्टीपल चेज की एक बाधा को पार करते हुए प्रदीप कुमार ।

100 मी० दौड़ को 10.9 से० में पूरी कर, अजमेर रेंज का नइमुद्दीन सबसे तेज धावक के रूप में उभर कर आया।



ए. पी. एस. मान ।

हैदराबाद रेंज का कुंजूमोहन, 200 मी० दौड़ तथा 800 मी० दौड़ में द्वितीय तथा 1,500 मी० दौड़ में तृतीय रहा।

अजमेर रेंज के हरीचन्द ने 10,000 मी० दौड़ को 30 मि0 33 से० में पूरा कर, प्रथम स्थान पाया; किन्तु यह गति उसकी सामान्य गति से बहुत नीचे रही।

रिले दौड़ों में श्रीनगर के चौगड्डे ने सबका सफ़ाया किया, जब उसने 4x100 दौड़ को 45-3 से० में और 4x400 मी० दौड़ को 3 मि० 23.6 से० में जीता।

अन्तिम परिणाम इस प्रकार रहे—

100 मी० दौड़ :-नइमुद्दीन (अजमेर) I; पी० कुजम्बू (अजमेर) II व सुरेन्द्र सिंह (श्रीनगर) III.

200 मी० दौड़ :-दया सिंह (श्रीनगर) I; पी० कुजम्बू(अ०) II व आर० एस० मार्या (है०) III.

400 मी० दौड़ :-दया सिंह (श्रीनगर) I; गुरुदेव सिंह (श्रीनगर) II व पीटर (पटना) III.

800 मी० दौड़ :-एम० एम० पाटिल (श्रीनगर) I; टी० कुंजू मोहन (है.) II व जगन्नाथ (इम्फाल) III.

1,500 मी० दौड़ :-गुरुमुख सिंह (गौहाटी) I; एम० एम० पाटिल (श्रीनगर) II व टी० कुंजूमोहन (है.) III.

5,000 मी० दौड़ : शशिधरन (है०) I; प्रदीपसिंह (श्रीनगर) II व शशिधरन (मद्रास) III.

10,000 मी० दौड़ : हरी चन्द (अ०) I; शशिधरन (है०)II व शशीधरन (मद्रास) III.

100 मी० ऊंची बाधा : तरनजीतसिंह (श्रीनगर) I; नज़रसिंह (अ०) II व आर. के. बुधानिया (अ०) III.

400 मी० बाधा : डी. तालुकेदार (पटना) I; प्रभातसिंह (श्रीनगर) II व नज़रसिंह (अ०) III.

3000 मी० स्टीपल चेज : प्रदीपकुमार (श्रीनगर) I; चन्दरभानु (है०) II व प्रेमचन्द (है०) III.

4X100 मी० रिले दौड़ : श्रीनगर I; हैदराबाद II व अजमेर III

4x400 मी० रिले दौड़ : श्रीनगर I; अजमेर II व हैदराबाद III.

ऊँची कूद : सतबीरसिंह (अ०) I; प्रभातीलाल (श्रीनगर) II व मणिकनन्दन (मद्रास) III.

लम्बी कूद : बलदेवसिंह (श्रीनगर) I, प्रभातसिंह (श्रीनगर) II व राजपाल (पटना) III.

त्रिकूद; इक़बालसिंह (पटना) I; रघुबीरसिंह (दिल्ली) II व आर. वोराह (है०) III.

पोलवाल्ट : प्रेमचन्द्रन (म०) I; रामगोपाल (कोहिमा) II व मंगलसिंह (इ०) III.

शाटपुट : ए. पी. एस. मान (है०) I; आर. एस. भुल्लर (दिल्ली) II ब एस. एस. बल (है०) III.

चकाफेंक : ए. पी. एस. मान (है०) I; एस. एस. बल (है) II व आर. एस. राई (अ०) III.



ऊंची कूद का विजेता सतबीरसिंह ।



मैराथन विजेतो रसदेव सिंह ।

घनफेंक : आर. एस. बल (कलकत्ता) I; जे. एस. भुल्लर (दिल्ली) II आर. एस. राई (अ०) III.

नेजाफेंक : के. नदराजन (है०) I; बी सुशीलम (क०) II व रामशंकर (अ०) III.

मँराथॉन दौड़ : रसदेवसिंह (है०) I; रामभगत (गौ०) II व के. सी. बी. नायर (है०) III.

डिकँथलँन : प्रभातसिंह (श्रीनगर I;) आर. के. बुधानिया (अ०) II; जनकचन्द (है०) III.

टेनिस में एम. आइ. दास

माहो (म०प्र०) में कनिष्ठ कमांडो कोर्स करते हुये, **श्री एम आई दास** सहायक कमांडैंट, 58 बटालियन ने माहो टेनिस टूर्नामेंट में भाग लिया, जिसका आयोजन रोटरी क्लब ने नवम्बर 1981 में किया था। उन्होंने उक्त टूर्नामेंट में **'सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी'** का पुरस्कार जीता तथा पुरुष मुगल (डबल) में विजेता पुरस्कार भी पाया।

क्रीड़ा क्षेत्रे :

बल के मलयोधा 18वीं राष्ट्रीय कुश्ती चैम्पियनशिप के विजेता

कलकत्ते में 11 से 15 नवम्बर 1981 तक आयोजित 18वीं राष्ट्रीय कुश्ती चैम्पियनशिप में के रि० पु० बल के दंगली दल ने भाग लेकर चैम्पियनशिप ट्राफी जीती।

रघुबीर सिंह, सुरेश कुमार, रामराज तस्वीर सिंह और राजनाथ ने अपने-अपने भारों में स्वर्ण पदक जीते। कुलदीप सिंह और धर्मपाल ने अपने अपने भारों में रज़त पदक पाये।

शतरंज में के० रि० पु० बल चमका

नई दिल्ली में दिसम्बर 1981 में आयोजित रेम्फी रेटिंग शतरंज प्रतियोगिता में, के०रि०पु० बल के नासिर अली और प्रवीन थिप्से 10.5 अंक पाकर क्रमशः II और III रहे। नौ खेल चक्र तक नासिर अली ने अपना वर्चस्व कायम रखा; परन्तु नवें चक्र में अन्तर्राष्ट्रीय रवि शेखर से पराजित हो गया।

कानपुर में 1 मार्च 82 को सम्पन्न हुई राष्ट्रीय शतरंज प्रतियोगिता में अन्तर्राष्ट्रीय मास्टर मैनुअल आरों को हरा कर, के०रि०पु० बल के प्रवीण माधवथिप्से ने चैम्पियनशिप जीती। उसने राष्ट्रीय खिताब के साथ मिलिन्द स्वर्ण पदक और 1400 रु० का इनाम भी पाया। इसी बल का नासिर अली शुरू में बहुत चमका, परन्तु अन्त में वह केवल सातवाँ स्थान पा कर उस भारतीय टीम से बाहर हो गया, जो इस वर्ष स्विटज़र लैण्ड में शतरंज ओलिम्पिक में खेलने जायेगी।

मार्च 15, 1982 को माउंट आबु में सम्मपन्न हुयी अन्तर्रेंज शतरंज प्रतियोगिता में नासिर अली लगातार दूसरे वर्ष विजेता घोषित हुआ, जब कि पूर्वाण विप्से द्वितीय स्थान पर पाया।

रेफरी कोर्स में श्री कौशिक

सिंगापुर में 18 से 24 दिसम्बर 81 तक आयोजित बाइसवें अन्तर्राष्ट्रीय वॉलीबॉल

रेफरी (निर्णायक,) कोर्स में श्री डी. सी. कौशिक, पुलिस उपअधीक्षक, ने उपस्थित होकर 99% अंक पाये और द्वितीय स्थान प्राप्त किया। इस कोर्स में विभिन्न देशों के 26 अभ्यार्थियों ने भाग लिया था।

31वीं अखिल भारतीय पुलिस खेल प्रतियोगिता (विहगदृष्टि)

त्रिवेन्द्रम के चन्द्रशेखरन नायर स्टेडियम में 14 फरवरी 82 को सम्पन्न हुयी 31वीं अखिल भारतीय पुलिस दौड़कूद प्रतियोगिता में, बालीबॉल, बास्केटबाल, जिम्नास्टिक और कबड्डी में टीम सिरमौर जीतकर, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल ने 287.50 अंक और 11 स्वर्णपदक, लेकर एथ्लेटिक चैम्पियनशिप इस वर्ष भी जीती सीमा सुरक्षा बल (144.50 अंक)II और पंजाब पुलिस (144 अंक) III रही।

पुलिस खेलों में पहली बार महिलाओं ने भाग लिया; तमिलनाडु ने महिला वर्ग टीम चैम्पियनशिप जीती, जबकि केरल II और महाराष्ट्र III रहे।

पंजाब के चरण जीत सिंह सर्वश्रेष्ठ एथ्लीट घोषित हुआ।

(विस्तृत विवरण अगले अंक में पढे)

जूडो

इन्दौर में 13 से 15 नवम्बर 1981 तक ओयोजित तृतीय अखिल भारतीय ज़ूडो प्रतियोगिता में, के० रि० पु० बल की जूडो टीम ने भाग लिया। कलकत्ता ज़ूडो क्लब, नासिक जूडो क्लब पूणे क्लब दिल्ली जूडो फॉडरेशन और विद्यार्थी जूडो टीम जैसी शिखिर टीमों ने इस प्रतियोगिता में भाग लिया।

के रि० पु० बल की टीम ने तृतीय स्थान पाया। है० का० रामसिंह और का० सारुब खाँ व्यक्तिगत स्पर्धाओं में प्रथम रहे, जबकि का० कुँवरलाल द्वितीय रहा। का० वेदप्रकाश, ना० राधेश्याम और का० एम. आर. मधुलकर ने तृतीय स्थान पाये।

इस से पूर्व, ग़ाज़ियाबाद में 24-25 अक्टूबर 81 को खेली गयी IIप्राय जिगारों कानो कम जुडो प्रतियोगिता में के. रि. पु. बल की 'बी' टीम उपविजेता रही। ना० राधेश्याम ने इस प्रतियोगिता में 2 स्वर्ण दक अर्जित किये।

कनिष्ठ राष्ट्रीय तैराकी

कलकत्ते में 2 से 6 तक दिसम्बर 81 तक आयोजित कनिष्ठ राष्ट्रीय तैराकी प्रतियोगिता में तैराकी दल के हे० कां० महिन्द्र कुमार ने भाग लिया। उसने 400मी० और 800मी० फ्रीस्टाइल में स्वर्ण पदक जीते और 400 मी० तथा 100 मी० व्यक्तिगत मेडले रिले दौड़ों में क्रमशः द्वितीय तथा तृतीय स्थान पाये एवं 200 मी० और 100 मी०

फ्रॉ इस्टाइल में क्रमशः चतुर्थ तथा षष्ठ स्थान पाया।

x **कबड्डी** x

दिल्ली में 18 से 20 नवम्बर 81 तक आयोजित दिल्ली राज कबड्डी चैम्पियनशिप में, के० रि० पु० वल कबड्डी की टीम ने भाग लिया तथा दिल्ली पुलिस को फाइनल में 14-7 से हरा कर चैम्पियनशिप जीती।*

के. डी. बाबू आमंत्रण हॉकी टूर्नामेंट

नई दिल्ली में 23 फरवरी 1982 को सम्पन्न हुये के. डी. बाबू आमंत्रण हॉकी टूर्नामेंट के फाइनल में; के० रि० पु० बल ने आर्मी सप्लाई कोर को 3-0 से हरा कर चैम्पियनशिप जीती। x x

हमारी बास्केट बॉल टीम

नवम्बर 1, 1981 को खेले गये गखारे पेंटस बास्केटबॉल टर्नामेंट के फाइनल में सेना सिगनल्स को 94-77 से हरा कर, के० रि० पु० बल ने सिरमौर फिर अपने पास रखा। के० रि० पु० बल के वी एन. कुट्टी को 44 अंकों का योगदान रहा तथा जगजीत सिंह (21) और पी.सी. सिह (19) ने अच्छी मदद की।

खन्ना में 3 से 6 दिसम्बर 81 तक खेलें गये अ० भा० शहीद भगतसिंह स्मारक बास्केटबाल टूर्नामेंट में, के० रि० पु० बल के फाइनल में बी. ई. जी. रुड़की को 70-48 से हरा कर सिरमौर जीता। 17 से 20 दिसम्बर 81 तक खेली गई रोपड़ शेर-ए-पंजाब स्वर्णकप बास्केट बॉल प्रतियोगिता में, हमने चैम्पियनशिप जीती।

नवम्बर 1, 1981 को गरवारे पेंट्स बास्केट बॉल प्रतियोगिता के खेले गये फाइनल में थलसेना सिगनल्स को 94-77 से हराकर, के० रि०पु० बल ने सिरमौर इस बार भी अपने पास ही रखा। वी. एन. कुट्टी ने 44 अंक का योगदान किया और जगजीतसिंह तथा पी. पी. सिंह ने क्रमशः 21 और 19 अंकों से मदद की।

के० रि० पु० बल के जिम्नास्टों की रूस यात्रा

राष्ट्रीय खेल संस्थान, पटियाला में 1 से 10 नवम्बर 1981 तक वरिष्ठों के लिये खेली गयी पच्चीसवीं राष्ट्रीय जिम्नास्टिक प्रतियोगिताओं में के० रि० पु० बल के 9 जिम्नास्ट ने त्रिपुरा और मध्य प्रदेश की ओर से भाग लिया। इन्हीं जिम्नास्टों के कारण ही, त्रिपुरा ने चैम्पियनशिप जीती, जब कि मध्य प्रदेश ने पाचवाँ स्थान पाया। त्रिपुरा की ओर से खेलने वाले के० रि० पु० बल के बलरामशील को तीसरा सर्वांगीण श्रेष्ठ जिम्नास्ट माना गया।

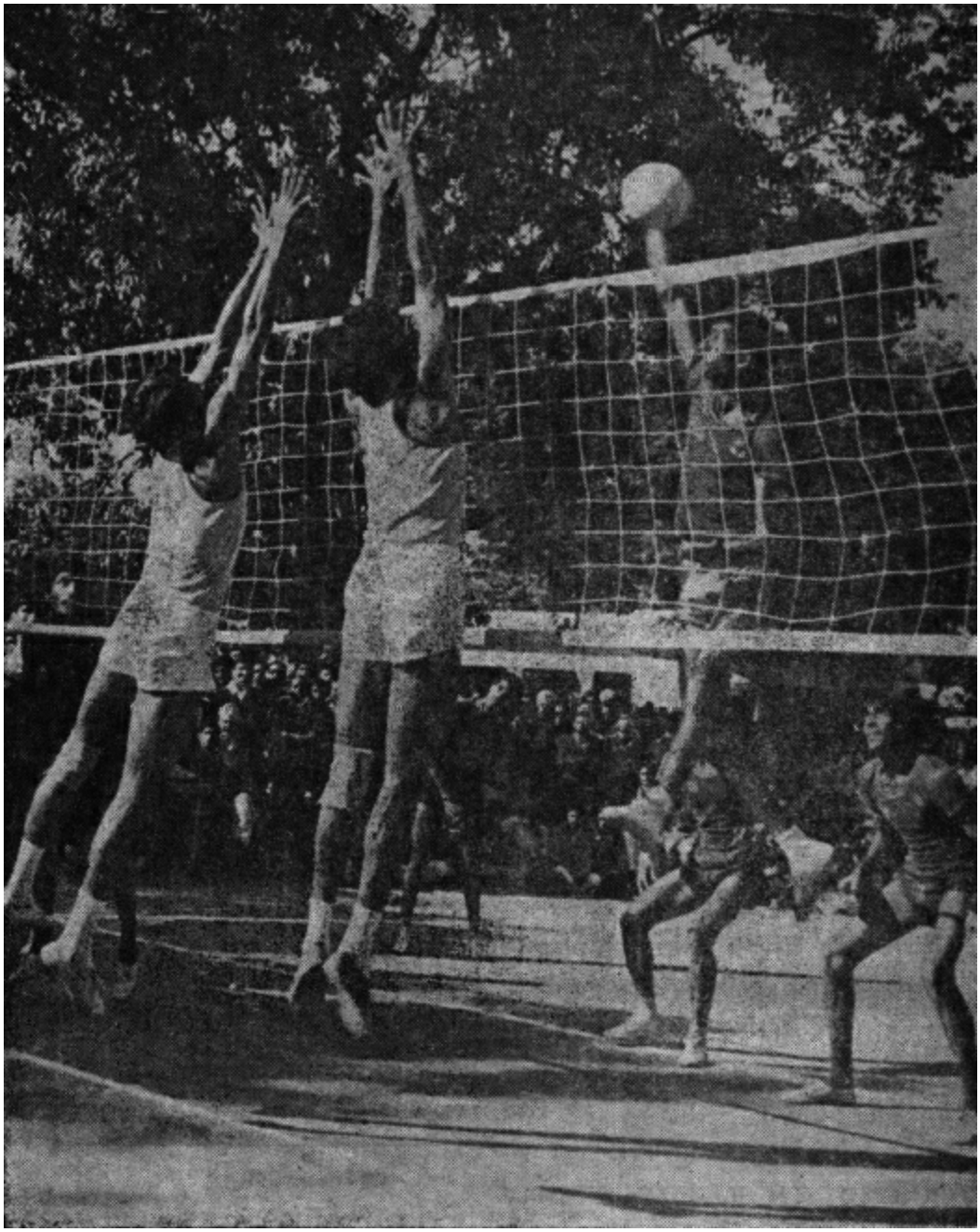
पटियाला के राष्ट्रीय खेल संस्थान के प्रशिक्षण शिविर में 1982 से एशियाई खेलों के लिये, 12 नवम्बर से 14 दिसस्बर तक इन पांच जिम्नास्टों को शिक्षित किया गया : एन. बी भोंसले, बलरामशील, शरणजीत सिंह, के. रावनन और के० राजेन्द्रन ।

भारत जिम्नास्टिक संघ ने उस भारतीय जिम्नास्टिक दल के लिये, के. रि. पु. बल के

2 खिलाड़ियों को चुना, जो 10 जनवरी 82 को मास्को (रूस) प्रशिक्षण और प्रतिस्पर्द्धा के लिये गया है। वे हैं—बलराम और शरणजीतसिंह ।

सतना वॉलीबॉल टूर्नामेंट

सतना में 8 से 10 जनवरी 82 तक खेले गये अखिल भारतीय बॉलीबॉल टूर्नामेंट में के० रि० पु० बल उपविजेता रहा। । इसी प्रकार, चित्तौड़गढ़ में 22 से 25 दिसम्बर 81 तक प्रायोजित अ. भा. वॉली बॉल प्रतियोगिता में पहले भी के० रि० पु० बल उपविजेता रहा था। x



दिल्ली में भा०ति०सी० पुलिस की गंद रोकते हुये हमारे जवान

हमारी वॉलीबॉल टीम की धाक

दिल्ली में 21-22 नवम्बर 1981 को आयोजित खुली वॉलीबॉल प्रतियोगिता में भाग लेकर के०रि०पु० बल ने 'विजेता ट्रॉफी' जीती; किन्तु दिल्ली राज्य वॉलीबॉल चैम्पियन शिप के फाइनल में भारत-तिब्बत सीमा-पुलिस से 5 दिसम्बर 1981 को यह बल पराजित हो गया।

शिलांग में 17 से 27 जून 81 तक खेले गये अखिल भारतीय खुले वॉलीबॉल टूर्नामेंट में, के० रि० पु० बल की बॉलीबॉल , टीम ने उपविजेता ट्राफी पायी।

उज्जैन में 21 से 27 नबम्बर 81 तक आयोजित अ० भा० वॉलीवॉल प्रतियोगिता में, के० रि० पु० बल ने सिरमौर जीता। इस प्रतियोगिता का सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी स० इ० रोहतास सिंह माना गया और उसे 100 रु० का नक़द पुरस्कार प्रदान किया। गया। X

मनुष्य की अन्तरात्मा का सन्तोष ही असली धन है।

-मंगलदेव



दिल्ली के नियंत्रण कक्ष में स्व० श्री शिवपुरी महानिदेशक तथा श्री दादाभाय, उपनिदेशक (परिचालन) के साथ गृह सचिव श्री टी. एन. चतुर्वेदी

के. रि. पु. बल का तंत्रिका केन्द्र

लेखक—श्री सुनील कपूर

नार्थ ब्लाक के इस भाग में बेतार प्रापक (रिसीवर) सेट पर ऊँची चटचटाती ध्वनि ही सामान्य स्वर रहा है। चालक (प्रापरेटर) के कुशल हाथ इन ध्वनियों को अक्षरों और शब्दों में बदल देते हैं। (मार्कोनी को धन्यवाद) मिज़ोरम के दूर कोने में कहीं स्थान को कम्पनी गई । दूसरे ही पल में, डयूटी अधिकारी के हाथ में यह सन्देश पहुँच जाता है, जो विषय-वस्तु की पढ़ने की श्रृंखला को, के० रि० पु० बल के परिचलन निदेशालय के सभी स्तरों पर शुरू करता है।

निश्चय ही, नार्थ ब्लाक में के० रि० पु० बल के तंत्रिका-केन्द्र—दिल्ली के नियंत्रण कक्ष या सी० आर० डी० में आप मौजूद हैं। सप्ताह के सातों दिन और दिन में 24 घंटे-नार्थ ब्लाक के इस गोलाकार ऊँची गुम्बद वाले कमरे में दायित्व क्षेत्र में यूनिट की गतिविधियों की, करी गई कार्रवाइयों की, बन्दीकरणों और दुर्घटनाओं इत्यादि-इत्यादि की सूचना तथा राज्यों से जानकारी—प्राप्त होती है। यह काम करना बन्द नहीं करता है।

"एक शिक्षाप्रद निरीक्षण, धन्यवाद" —यह थी अभ्युक्ति प्रभावित श्री टी०एन० चतुर्वेदी, गृह सचिव की, जिन्होंने 24 अक्टूबर 1981 को नियंत्रण कक्ष का निरीक्षण किया था। साथ में, श्री आर० एन० शिवपुरी, महानिदेशक, के० रि० पु० बल थे, जिन्होंने यह टिप्पणी की थी—'इस नियंत्रण कक्ष को नार्थ ब्लाक में देख कर प्रसन्नता हुई है, जहाँ यह था भी अपेक्षित और जिसने दिन-प्रति दिन इस बल के प्रारब्धों के निदेशन करने का और भारत सरकार के विविधि मंत्रालयों तथा कई राज्यों और केन्द्र-शासित क्षेत्रों से फलदायक सम्पर्क स्थापित करने का अत्यन्त लाभदायक लक्ष्य पूरा किया है।"

यह श्री शिवपुरी ही थे, जो इस नियंत्रण कक्ष को के० रि० पु० बल के परिचालन में तेजी लाने के लिए रामकृष्णपुरम के पच्छिमी खंड से नार्थ ब्लाक में सितम्बर 1980 में लाये थे। जो कमरा कभी केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग का धूलिभरा पूराना भंडार कक्ष था, अब इसमें नवीनतम सूचनाप्रद चार्ट और प्रागन्तुकों में आतंक-भावना भरने वाले मानचित्रों के साथ, सौन्दर्यमयी तथा कार्यात्मक उपयोगिता का मिलन है। हमारे स्वर्गीय महानिदेशक के नेतृत्व से प्रोत्साहित सचेष्ट भावना ने ही सभी पक्षों को मिलाकर, यह सफलता प्राप्त की है।

देश के कोने-कोने में के० रि० पु० बल की यूनिटों का सेक्शन स्तर तक के विस्तार की जानकारी देने के अतिरिक्त, इस पर राज्य सशस्त्र पुलिस तथा आन्तरिक सुरक्षा सेवा में निरत सीमा सुरक्षा बल के देशव्यापी प्रविस्तारण की भी सूचना होती है ।

के० रि० पु० बल के इस नियंत्रण कक्ष में एक सेल भी काम कर रहा है, जो जिन राज्यों में के० रि० पु० बल की यूनिटें काम करती हैं, उनकी कानून तथा व्यवस्था की समस्याओं की सूचना से यह मंत्रालय को अवगत कराने में मदद करता है और

प्रावेस्तारण की शैली में भी योगदान करता है। के० रि० पु० बल के विभिन्न परिचालन सेक्टरों और रेंजों में तालमेल, युनिटों की गतिविधियों में सहयोग तथा विभिन्न मंत्रियों से सम्पर्क—ये इस सेल के कुछ काम हैं।

इस देश और संसार की नवीनतम घटनाओं से अवगत रहने के लिए, दूरदर्शन और आकाशवाणी के साथ-साथ, यूनाइटेड न्यूज ऑफ़ इण्डिया और प्रेस ट्रस्ट ऑफ़ इण्डिया जैसी समाचारी एजेन्सियों से यह नियंत्रणकक्ष, टेलीप्रिंटर (तारलेखी) सम्पर्क रखता है।

बटालियनों के बदलने से उत्पन्न गतिविधियों की मिनट-मिनट वाली इसकी जानकारी सही होती है।

हॉकी प्रतियोगितायें

दिसम्बर 27,1982 को, बेंगलूर में महाराजा स्वर्ण कप हॉकी प्रतियोगिता के खेले गये फ़ाइनल में सिगनल्स, जालंधर को, उत्तरार्ध में केवल एक गोल से हरा कर सिरमौर जीता।

इन साइड-लेफ्ट एस. एस. मान से गेंद पा कर, उत्तरार्ध के 8 मिनट बाद उस महत्वपूर्ण गोल को सेन्टर-फॉरवर्ड रणबीर सिंह ने किया।

कोटा में नवम्बर 81 के पहले सप्ताह में खेले गये श्रीराम अखिल भारतीय हॉकी टूर्नामेंट के अर्द्ध-फाइनल में यही टीम हॉकी संघ क्लब से हार गयी तथा आगरे में 14 नवम्बर 81 को अखिल भारतीय ध्यानचन्द प्रतियोगिता में इसी टीम से फाइनल में पराजित हुयी। x

अखिल भारतीय हॉकी टूर्नामेंट

अमलोह पटियाला में 12 से 15 नवम्बर 81 तक खेले गये अखिल भारतीय हॉकी टूर्नामेंट में, के० रि० पु० की 'बी' टीम ने सिरमौर जीता।

हॉकी का हमारी 'बी' टीम

राजनन्दगांव में दिसम्बर 81 में आयोजित महन्त सर्वेश्वरदास स्मारक हॉकी टूर्नामेंट में हॉकी की हमारी 'बी' टीम ने भाग लेकर चैम्पियनशिप ट्रॉफी जीती।

इसी टीम ने 6 से 13 दिसम्बर 81 तक खेली गयी अखिल भारतीय कैप्टन रूपसिंह स्वर्ण कप टूर्नामेंट सिरमौर जीता।

राष्ट्रीय दौड़ कूद (एथ्लेटिक्स)

लखनऊ में 29 से 23 अक्टूबर 81 को आयोजित 28वीं खुली अखिल भारतीय दौड़ कूद (एथ्लेटिक्टस) की प्रतियोगिता में पुलिस टुकड़ी के अंगरूप में, के० रि० पु० बल के 5 खिलाड़ियों ने भाग लिया।

आर. एस. बल ने घन फेंक में स्वर्णपदक जीता। प्रदीप कुमार ने 3,000 मी०

स्टीपल चेज़ में, रसदेव सिंह ने मेरॉथन में और सतबीर सिंह ने ऊँची कूद में रजतपदक जीते, जब कि प्रभातसिंह डेकॅथलैन ने कांस्य पदक पाया। एम. पी. पाटिल 1,500 मी० दौड़ में और के० नट्राजन नेजा फेंक में चौथे स्थान पर आये।

महिला कल्याण केन्द्र नई दिल्ली की गतिविधियाँ

जब 1973 में ग्रुप केन्द्र, दिल्ली में महिला कल्याण केन्द्र स्थापित हुआ था, तब इसकी गतिविधि कटे कटाये कपड़े सीने तक सीमित थी। आज यहाँ कपड़े काटने-सीने, पापड़ बनाने, जुर्राव बुनने प्रादि में लगभग 283 महिलायें कार्यरत हैं; जो धन अर्जित कर अपने परिवार की आय की वृद्धि करती हैं। महिलाओं के बच्चों के लिये क्रैचरूम का प्रवन्ध है, जिसमें पालने और आया की व्यवस्था है।

सिलाई शाखा में अनेक प्रकार के गर्म व सूती कपड़े (खाकी ऊनी कमीज़, पैंट ग्रेट कोट, निकर, डाँगरी आदि) लगभग डेढ़ लाख रुपये के सिले हैं। यहाँ सीने और काटने के प्रशिक्षण के लिये महिला अध्यापिका भी है।

केन्द्र में 10 ऊनी जुर्राब संभरण और निपटान द्वारा स्वीकृत दरों से सस्ती पड़ती है ।

इस समय ग्रुप केद्र, संलग्न बटालियनें I बेतार वाहिनी महानिदेशालय, महानिरीक्षक व उपमहानिरीक्षक दिल्ली के कार्यालयों की मांग पूरी करने में यह सक्षम है ।

लिज़्जित पापड़ बनाने में लगभग 70 महिलाये कार्यरत हैं। गत वर्ष 33,600 किलो लिज्जत पापड बने, जिसके लिये 67,200 रु० का धन महिलाओं ने कमाया।

नर्सरी स्कूल - बच्चों की प्रारंम्भिक शिक्षा तथा कैंप के केन्द्रीय स्कूल की प्रथम

कक्षा पाने के लिये, यहाँ एक नर्सरी स्कूल भी खुला है, जिसमें 200 बच्चे शिक्षा पा रहे हैं। प्रति बच्चे 5 रु० की दर से 11,770 रु० की फीस मिली और 12,960 रु० अध्यापिकाओं एवं आया के वेतन का भुगतान हुआ। बच्चों के लिये, इसमें एक लघु पुस्तकालय भी स्थापित है।

सामुदायिक डिब्बाबन्दी एवं प्रशिक्षण केन्द्र : केन्द्रीय मंत्रालय के खाद्य एवं मोणाहार मंडल द्वारा एक केन्द्र हमारे महिला कल्याण केन्द्र भवन में कार्य कर रहा है। इन खाद्य पदार्थों को बनाने की यहाँ सुविधा प्राप्त हैं—1. स्क्वैश, शर्बत व जूस 2. जैम व जेली 3. मुरब्बा-आचार 4. साँस चटनी 5. फ्रूट बटर व चीज़ 6. सिरका और 7. फल सब्जियों की डिब्बा-बन्दी इत्यादि।

फल सब्जियों के परिरक्षण में दो सप्ताह का प्रशिक्षण दिया जाता है। अब तक 300 महिलायें यह प्रशिक्षण ले चुकी हैं, जिनमें हमारे कल्याण केन्द्र की 138 महिलायें हैं।

मार्च 30, 1982 को ग्रुप केन्द्र झड़ौदा कलां में केन्द्रीय गृह मंत्री ज्ञानी जैल सिंह ने 71 बटालियन की दीक्षान्त परेड की सलामी ली।

पन्द्रहवीं अ०भा० पुलिस ड्यूटी प्रतियोगिता

बेंगलूर में 17 से 24 दिसम्बर 81 तक पन्द्रहवीं अखिल भारतीय पुलिस ड्यूटी प्रतियोगिता आयोजित हुई। के० रि० पु० बल की प्राथमिक चिकित्सा टीम ने द्वितीय स्थान पाया। ना० रघुबीर सिंह ने स्वर्ण तथा का० गुरचरणसिंह ने रजत पदक व्यक्तिगत स्पर्द्धा में पाये । हमारी गोली चालक टीम ने तृतीय स्थान पाया। श्री टी. एस. ढिल्लों पुलिस उपाधीक्षक ने द्वितीय स्थान पाया। हमारी मोटर परिवहन टीम ने पांचवां स्थान पाया।

कल्याण प्रदर्शनी में के रि० पु० बल ने पांच योग्यता प्रमाणपत्र के साथ सर्वप्रथम तीन स्थान पाये। के.रि.पु० की प्रदर्शनी III. रही।



झड़ोदा कलां में आयोजित 42वें वार्षिकोत्सव पर एक बालक से प्यारभरी वार्ता करते हुये श्री जैलसिंह, गृहमंत्री।



उनका अन्तिम संदेश

मेरी श्रीमती और मैं, के० रि० पु० बल के सभी सदस्यों को शुभकामनायें भेज रहा हूं कि आगामी वर्ष सुखी, समृद्ध तथा परिपूरक सिद्ध हो। यह बल, पूर्णसंघ भावना के अनुरूप एक मनुष्य की भांति काम करे और राष्ट्र सेवा में गौरव और सफलता के सभी स्तरों को पार कर जाये। प्रभु, दया करे !

आर० एन० शिवपुरी

31.12.81

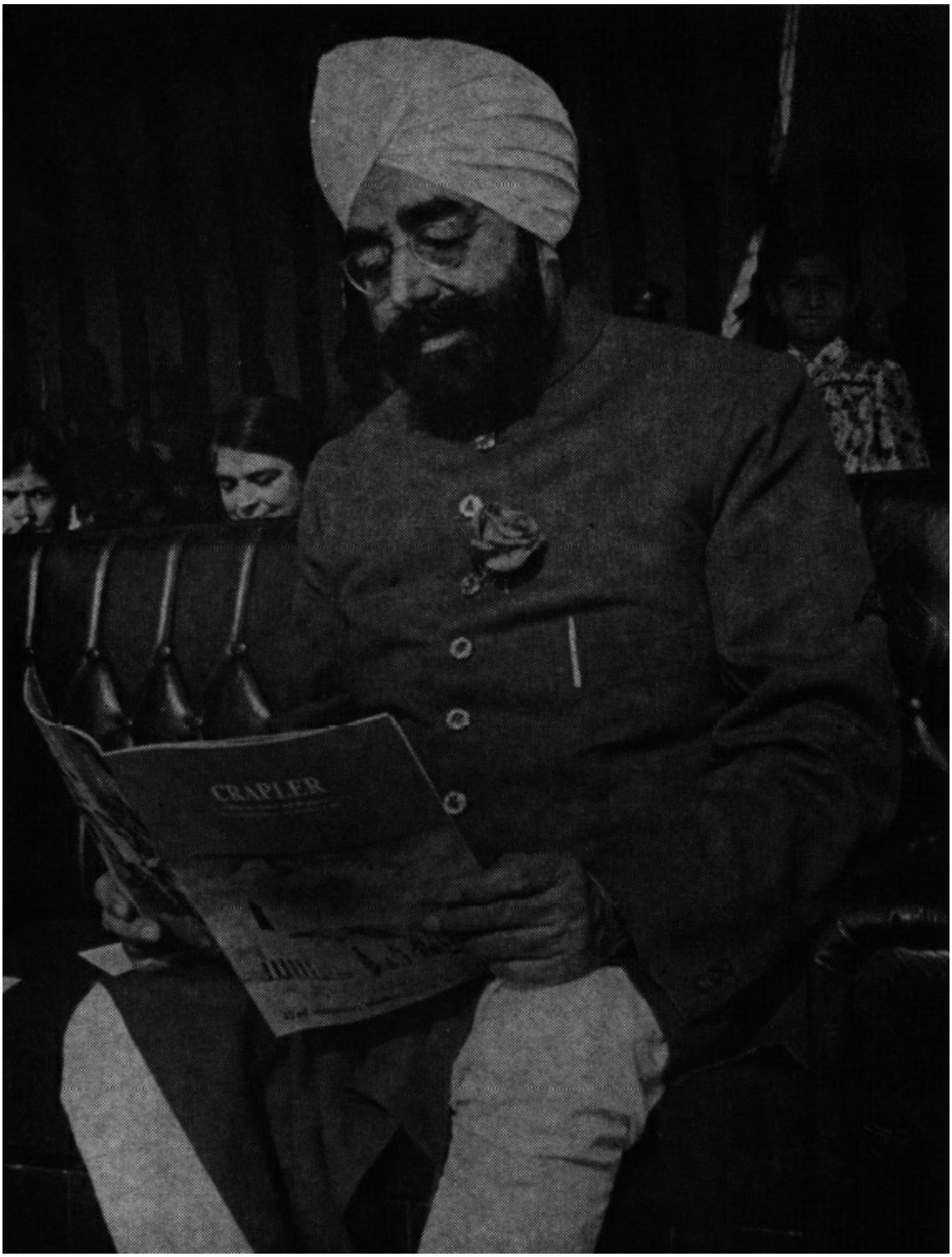


क्रैपलर

केन्द्रीय रिज़र्व पुलिस बल
की
पत्रिका

खंड XI अंक 2 30 जून, 1982 [9 आषाढ़, 1904]




CRAPLER

क्रैपलर

केन्द्रीय रिज़र्व पुलिस बल की सचित्र पत्रिका

[हिन्दी संस्करण–त्रैमासिक]

खण्ड XI

अंक 2

30 जून, 1982

9 आषाढ़, 1904

मुख्य सम्पादक :

एच० एस० सेठी

हिन्दी सम्पादक :

जे० एस० शर्म्मा

मुखपृष्ठ : ग्रुप केन्द्र, नई दिल्ली में 71 बटालियन की दीक्षान्त । परेड की सलामी लेते हुये गृह मंत्री ज्ञानी जैलसिंह **[छाया : सतीश खन्ना]**

सम्पादकीय कार्यालय :

द्वारा महानिदेशालय, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल, पूर्वीय खंड 10, रामकृष्णपुरम, नई दिल्ली-110066 ।

मुद्रक—सी० आर० पी० एफ० प्रेस, नई दिल्ली-110072 ।

प्रकाशक—महानिदेशक, के० रि० पु० बल की ओर से **एच० एस० सेठी**।

सम्पादकीय

'क्रैपलर' का हिन्दी संस्करण जून 1973 में प्रथम बार अलग से प्रकाशित हुआ था । पाठकों की विभिन्न रुचियों को ध्यान में रखकर, 'सूक्तिसुधा' 'स्वास्थ्य-सन्देश', 'विज्ञान के चढ़ते चरण', 'यह भी खूब रही', 'कविता' और 'कहानी' जैसे विविध स्तभों का समावेश तब किया गया था। ये स्तम्भ अब भी लगभग चालू हैं।

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल देश के कोने-कोने में निरत होने के कारण, यह पत्रिका कभी-कभार दूर-दराज़ की चौकियों पर देर से पहुँची है; फिर भी, जवानों ने इसका स्वागत किया है, क्योंकि यही एक माध्यम हैं जिसके द्वारा मनोरंजन के साथ-साथ, उन्हें अपने सेवा भविष्य के बारे में भी संचित जानकारी मिलती है।

इस पत्रिका के अतिरिक्त, कमांडैंटों को लिखा महानिदेशक का मासिक पत्र भी निकलता है, जिसमें विविध विभागों की ही चर्चा अधिकतर रही है। महानिदेशक श्री एस० दत्ता चौधरी ने जन-कल्याण के लिये, व्यावहारिक सुझाव मांगे हैं। उनके शब्दों में, 'यदि हमारे उत्पादन, हमारी ज़रूरतों को पूरी कर देते हैं; और साथ ही साथ) उत्पादन कार्यों में लगे परिवारों की आय थोड़ी सी भी यदि बढ़ जाती है, तब हमें खुश होने की बात है । यदि हम अपने जवानों में यह धारणा पैदा कर सकते हैं कि अधिकारियों को उनके लिये चिन्ता है, तब प्राप्त ठोस लाभ की सही मात्रा के बावजूद, कल्याण के मोर्चे में हमने अपना लक्ष्य पा लिया है।"

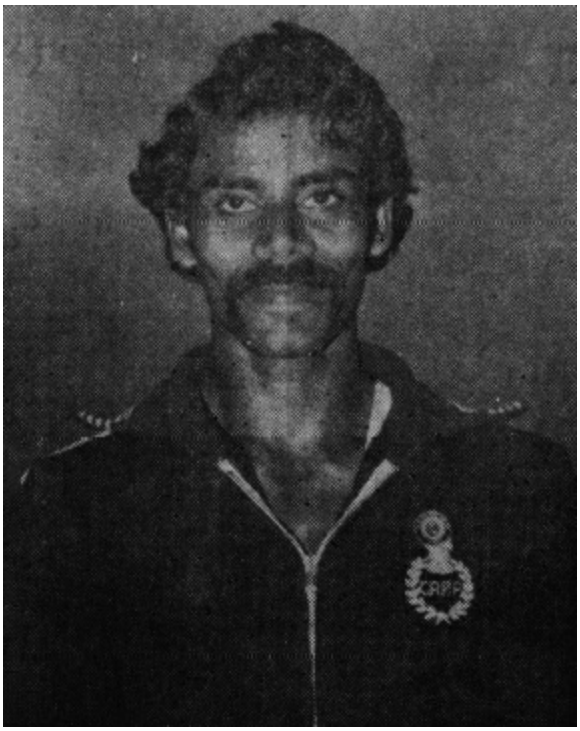
इस बल के अनुशासन की प्रशंसा करते हुये, महानिदेशक ने सेक्शन-स्तर की चौकी के स्तर तक पर, निरन्तर प्रशिक्षण देते रहने पर जोर दिया है।

इस संस्करण में शान्ति रक्षिणी बटालियनों और अखिल भारतीय पुलिस खेलों का विशेष उल्लेख है। अगले अंक में, परिवार-कल्याणकेन्द्रों की चर्चा करने का विचार है । अन्त में, आपसे इस पत्रिका में सुधार के लिये अपने सुझाव और रोचक प्रकाशन-सामग्री भेजने का अनुरोध है।

क्रैपलर अंग्रेजी में भी प्रकाशित होती है। इसमें प्रकाशित सामग्री के प्रयोग के लिए, कृपया मुख्य संपादक को लिखें। इसमें प्रकाशित सामग्री का आधिकारिक दृष्टिकोण के सर्वथा । अनुरूप होना आवश्यक नहीं है।

अखिल भारतीय पुलिस खेल 1982

जिम्नास्टिक्स में के० रि० पु० बल पुनः विजयी



जिम्नास्ट चैम्पियन के० राजेन्द्रन

इस वर्ष फरवरी में त्रिवेन्द्रम में आयोजित अखिल भारतीय पुलिस खेलों में के०रि०पु० बल ने टीम चैम्पियनशीप सरलता से जीत कर जिम्नास्टिक्स के क्षेत्र में अपनी सर्वोच्चता कायम रखी। अंक इस प्रकार रहे—के० रि० पु० बल 611.50, भारत-तिब्बत सीमा पुलिस 576.05 और सी० सु० बल 515.821

1979 को छोड़कर (जब उत्तर प्रदेश ने सिरमौर जीता था), के०रि०पु० बल 1975 से टीम चैम्पियनशिप ट्राफी निरन्तर जीतता चला आ रहा है।

के०रि०पु० बल के के० राजेन्द्रन ने | 105.80 अंक पाकर व्यक्तिगत चैम्पियनशिप जीती, जबकि भा० ति० सी० पुलिस के तपस देव (103.35) द्वितीय और के०रि० पु० बल का एन० बी० भोंसले (102.30) तृतीय रहा।

होराइजन्टल बार में, के०रि०पु० बल ने तीनों पदक प्राप्त किये : एन० बी० भोंसले प्रथम, सरनजीत सिंह द्वितीय तथा अब्दुल हुसैन और के. राजेन्द्रन दोनों संयुक्त रूप से तृतीय रहे।

वाल्टेग हास में भी, के० रि० पु० बल ने सबको हराया और सर्वप्रथम तीनों स्थान क्रमशः के० राजेन्द्रन, जगन्नाथ तथा एन. बी. भोंसले ने पाये।

रोमन रिंग में, भा०ति०सी० पुलिस का तपस देव I, के० राजेन्द्रन (के० रि० पु० बल) II तथा बलरामशील (के० रि० पु० बल) III रहा।

पोमेल्ड हार्स में, सरनजीत सिंह (के० रि० पु० बल) और तपस देव (भा०ति०सी० पुलिस) संयुक्त विजेता रहे । बलरामशील (के०रि०पु० बल) II और टी. के. मोदक । (भा०ति०सी०पु०) III रहे।

पैरेलल बार में, एन. बी. भोंसलें (के० रि० पु० बल) I, मनजीत सिंह (सी०सु० बल) II तथा तपस देव (भा० ति० सी० पु०) III रहा।

के० रजेन्द्रन ने फ्लोर एक्सरसाइज़ में प्रथम स्थान जीता, जबकि एन. बी. भोंसले और बलरामशील दोनों द्वितीय स्थान पर आये तथा तीसरा स्थान टी. के. बौनिक (भा०ति०सी० पुलिस) ने पाया।

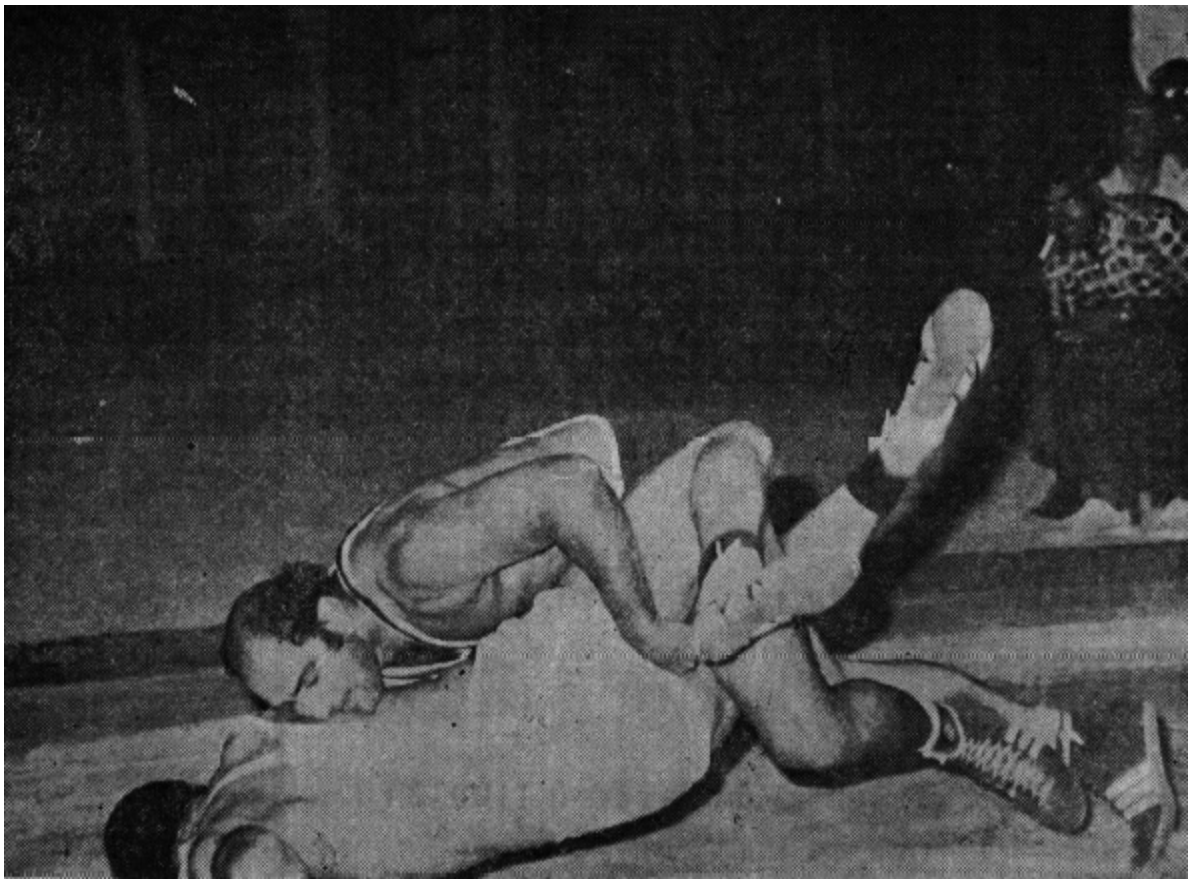
कबड्डी में शानदार विजय

त्रिवेन्द्रम के केन्द्रीय स्टेडियम में खेली गयी 31वीं अखिल भारतीय पुलिस खेल प्रतियोगिता में के० रि० पु० बल ने 7-5 से पंजाब को हरा कर, कबड्डी का सिरमौर जीता। दोनों टीमें होशियारी से खेलीं और अन्त तक, काँटे का संघर्ष चलता रहा।

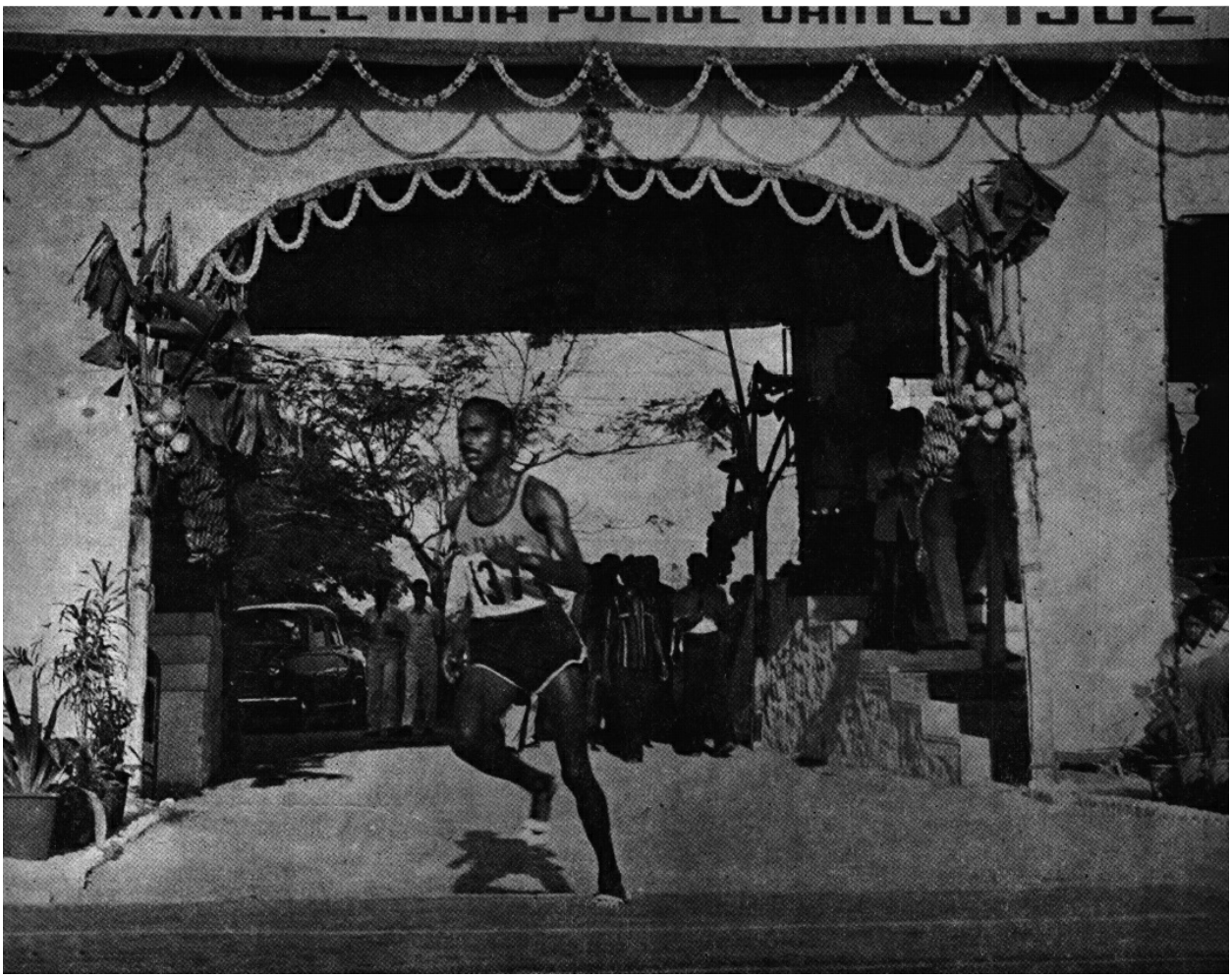
इससे पहले, तमिलनाडु ने सी० सु० बल को 24-10 हरा कर, तीसरा स्थान पाया।

कुश्ती में दूसरा स्थान

त्रिवेन्द्रम में फरवरी 1982 में खेली गई अखिल भारतीय पुलिस खेल प्रतियोगिता में, के० रि० पु० बल 40 अंक पाकर उपविजेता के रूप में उभरा। सी० तु० बल 47 अंकों की सहायता से विजेता रहा। ईश्वर सिंह (अतिभारी वज़न) और रघुबीर सिंह (भारी वजन) ने स्वर्ण पदक जीते। पतिराम ने फेदर वजन में रजत पदक पाया, जबकि जीथन यादव (पिन वज़न), धरमपाल (फ्लाई वज़न), कुलदीप सिंह (वेल्टर वज़न) और यशपाल सिंह (मिडिल वज़न) को, कास्य पदक मिले।



कुश्ती में विजयी रघुबीरसिंह (ऊपर)



मैराथुन दौड़ में नया रिकार्ड बनाते हुए के० रि० पु० बल का रसदेवसिंह

31वें अखिल भारतीय पुलिस खेल, 1982 :

शानदार जीत

त्रिवेन्द्रम में, 14 फरवरी 1982 को चन्द्रशेखर स्टेडियम में 31वें अखिल भारतीय पुलिस खेलों की विभिन्न प्रतियोगिताओं में विजय- वैजयन्ती फहराते हुये, के० रि० पु० बल ने एथ्लेटिक्स के सिरमौर को फिर से पाने में भारी विजय पाई।

के० रि० पु० बल की यह सचमुच एक शानदार जीत थी; इसका सदा का प्रतिद्वन्द्वी सी० सु० बल (जो पिछली प्रतियोगिताओं में डट कर मुकाबला किया करता था) इस बल का कहीं भी सामना नहीं कर सका। सी० सु० बल की हार, पंजाब की जीत बनी, जिसने प्रथम बार सी० सु० बल की शक्ति को गम्भीर चुनौती दी। अंकगणना इस प्रकार रही—के० रि० पु० बल-287.5, सी० सु० बल-140.5 और पंजाब-134 । पिछले वर्ष से इस वर्ष की अंक-तुलना (के० रि० पू० बल 288, सी० सु० बल 218 और पंजाब

66) स्वयं ही बदलते भाग्य की कहानी बताती है।

ट्रैक की स्थिति अच्छी नहीं थीं; तो भी चार नये रिकार्ड बनाये गये।

इस प्रतियोगिता की सर्वश्रेष्ठ दौड़ थी मॅराथॉन, जिसमें बड़ा संघर्ष रहा। रसदेव (के० रि० पु० बल) ने इस कठिन दौड़ को 2घं० 17मि० 55से० में पूरा कर नया कीर्तिमान स्थापित किया तथा पंजाब के विनोद कुमार वाले 2घं० 22मि० 5से० के पिछले रिकार्ड को भंग किया। वास्तव में, ठीक पीछे के दो धावक—सी० सु० बल के मुरलीधर और म० प्र० के विजय कुमार तिवारी— ने भी क्रमश 2घं० 20मि० 8से० और 2घं० 21मि० 10से0 में दौड़ कर प्रतियोगिता के दूसरे-तीसरे स्थानों के समयों को भी सुधारा।



त्रिवेन्द्रम के चन्द्रशेखर स्टेडियम में श्रीमती ओंमेन चंदी से एथ्लीट चैम्पियनशिप ट्राफ़ी पाते हुये श्री टी० जी० एल० आयर, पुलिस महानिरीक्षक सेक्टर-I,के० रि० पु० बल

के० रि० पु० बल के राष्ट्रीय विजेता प्रदीप कुमार ने 3,000मी० की स्टीपल-चेज़ की बड़ी दौड़ को 8मि० 59.2 से० में पूरी कर, केवल अपना ही नेशनल्स में पिछला रिकार्ड नहीं सुधारा; बल्कि पिछली इसी प्रतियोगिता का गोपाल सनी वाला भी कीर्तिमान (9:14) तोड़ा। किन्तु, लखनऊ में हुये पिछली खुले दौड़ कूदों में 8 मि० 41.48से० वाले अपने ही रिकार्ड से यह कम रहा।

शॉटपुट में, हृष्ट-पुष्ट बलविन्दर सिंह (पंजाब) ने 17.7 मीटर का एक नया कीर्तिमान स्थापित किया, जिसमें सी० सु० बल के गुरदीप सिंह के 16.88 मी० वाले 1978 के रिकार्ड को सुधारा।

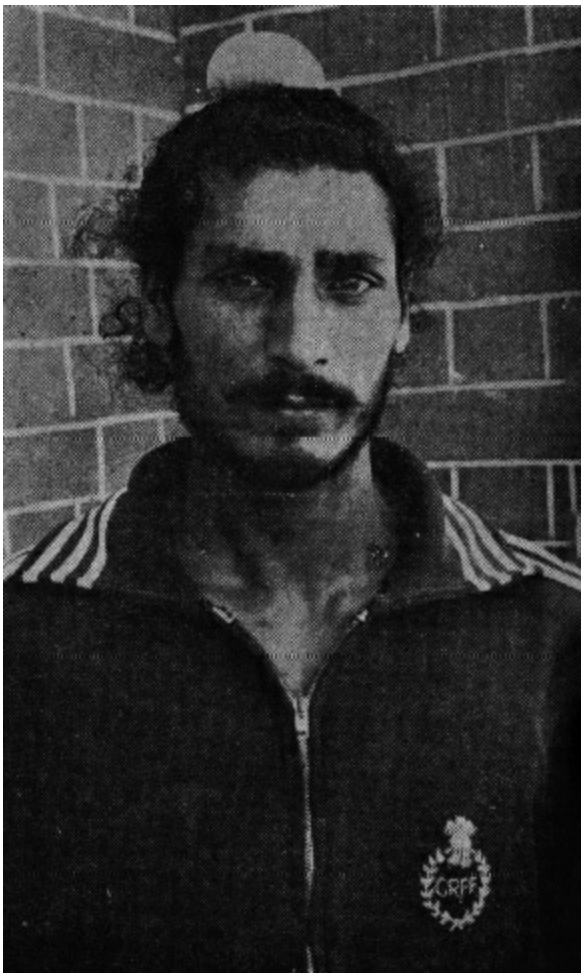
चौथा रिकार्ड पोलवॉल्ट में हरियाणा के मोहिन्दर सिंह ने 4.40 मी० का स्थापित किया। पिछला कीर्तिमान 1979 में उ० प्र० के आर. एल. पांडेय ने 4.20 मी० का बनाया था।

100 मी०, 200 मी० और 400 मी० दौड़ों में स्वर्ण पदक पाकर, पंजाब का चरणजीत सिंह सब से तेज धावक के रूप में उभरा और 'प्रतियोगिता का श्रेष्ठ पुरुष' घोषित हुआ।

बौने ओलिम्पिक धावक, के० रि० पु० बल के हरीचन्द ने पिछले सात वर्षों की तरह "सर्वश्रेष्ठ एथ्लीट" की ट्राफ़ी जीती। इस वर्ष वह 1,500 मी० नहीं दौड़े, जिसे उनके ही टीम के धावक गुरमुख सिंह ने जीता। बहरहाल, 5,000 मी० और 10,000 मी० दौड़ों में भाग लेकर, उन्होंने सरलतापूर्वक जीत लिया।

इस प्रतियोगिता में पहली बार, 1000 मी. दौड़, 100 मी० बाधा, 4x100 रिले और लम्बी कूद में— महिलाओं की स्पर्द्धायें खेली गयीं। तमिल नाडु की मतिल्दा "सर्वश्रेष्ठ महिला एथ्लीट" घोषित हुयी; किन्तु चैम्पियनशिप के लिये इन्हें सम्मिलित नहीं किया गया और कोई संघर्षमय स्पर्द्धा भी नहीं हुयी। 110 मी० बाधा में बालिकायें बाधाओं को पार करने के स्थान पर उन्हें गिरा कर आगे बढ़ गयीं, यह इसका ज्वलन्त उदाहरण है।

स्टेडियम दर्शकों से भरा रहा; इससे खेलों के प्रति केरल राज्य की अभिरुचि का पूरा-पूरा पता लगता है।



1,500 मी० दौड़ का विजेता गुरुमुख सिंह

दौड़-कूद प्रतियोगिता के परिणाम इस प्रकार रहे :—

100 मीटर दौड़ : चरणजीतसिंह (पंजाब) I; पी. सी. अजीज़ (तमिलनाडु) II, और पी. सी. कृष्णास्वामी (तमिलनाडु) III.

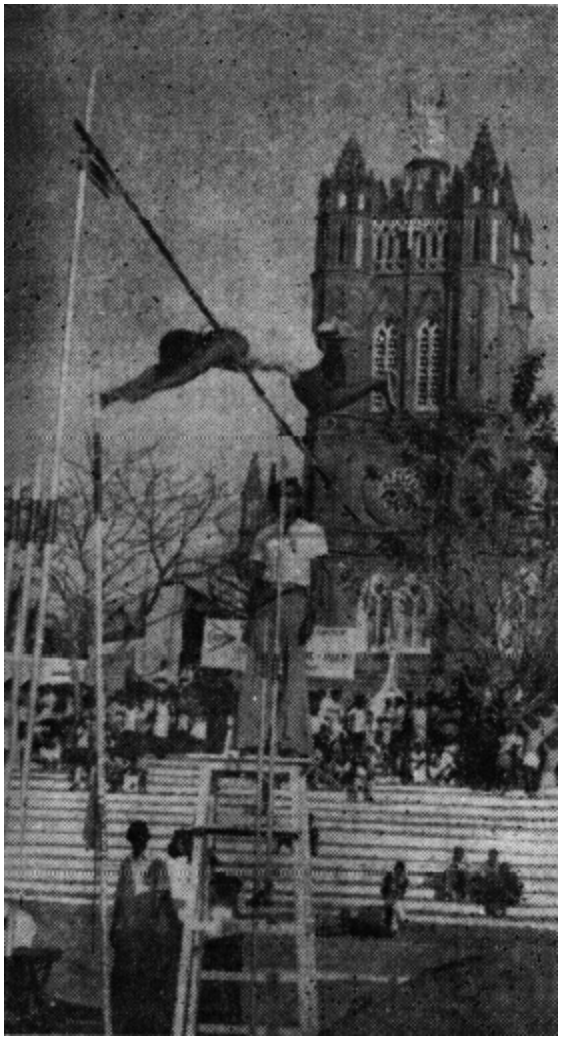
200 मीटर दौड़ : चरणजीत सिंह (पंजाब) I; लखबीर सिंह (पंजाब) II और अजायब सिंह (सी. सु. बल) III.

400 मीटर दौड़ : चरणजीत सिंह - (पंजाब) I; दया सिंह (के: रि. पु. बल) II और गुरदेव सिंह (के. रि. पु. बल) III.

800 मीटर दौड़ : अमरसिंह (पंजाब); एम. एम. पाटिल (के. रि. पु. बल) II और टी. कुंजूमन (के. रि. पु. बल) III.

1,500 मीटर दौड़ : गुरमुख सिंह (के. रि. पु. बल) I; एम. एम. पाटिल (के.रि. पु. बल) II और विसेंट मिन्ज। (म० प्र०) III.

5,000 मीटर दौड़ : हरी चन्द (के. रे. पु. बल) I; एन. शांशेधरन नायर (के. रे. पु. बल) II और मौजीराम (उ. प्र.) III.



पोलवॉल्ट में सक्रिय प्रेमचन्दर



(बायीं से दायीं ओर) 4x400 मी० रिले दौड़ के विजेता के. जी. जोजेफ़, पी. कंजम्बू, मठाई लाल और आर. एस. मौर्य

10,000 मीटर दौड़ : हरी चन्द (के. रि. पु. बल) I; एम. शशिधरन नायर (के. रि. पु. बल) II और मौजी राम (उ०प्र०) III.

110 मीटर (बाधा); आफ़ताब खां (बिहार) I; तरनजीत सिंह (के०रि०पु० बल) II और हरबंश सिंह (उ०प्र०) III.

400 मीटर (बाधा); वी. नागेश्वर राव (आंध्र प्रदेश) I; ताल्लुक़दार (के०रि० पु० बल) II और रछपालसिंह (पंजाब) III.

3,000 मीटर स्टीपल चेज : प्रदीप कुमार (के.रि.पु० बल) I; ईश्वरसिंह (सी० सु० बल) II और चन्द्रभानु (के.रि.पु०बल) III.

मॅराथॉन : रसदेव सिंह (के.रि०पु० बल) I, मुरलीधर (सी०सु० बल) II और विजय कुमार तिवारी (म०प्र०) III.

डेकॅथलॅन : प्रभात सिंह (के.रि.पु० बल) I; जनक चन्द (के.रि०पु० बल) II; और बलविन्दर सिंह (सी०सु० बल) III.

चौड़ी कूद : राम गोविन्द (म० प्र०) I; बलमिन्दर सिंह (सी०सु० बल) II और शशिधरननायर (सी०सु० बल)III.

ऊँची कूद : सतबीर सिंह (के० रि० पु० बल) I; एच. एन. वेंकटाचलम (कर्नाटक) II और सी. आर. सी. नायर (सी०सु० बल) III.

पोलवॉल्ट : मोहिन्दर सिंह (हरियाणा) I; एल. एक्का (सी० सु० बल०) II और प्रेम चन्दर (के.रि.पु० बल) III.

त्रिकूदः अजमेर सिंह (सी०सु० बल) I; रघुनन (के० रि० पु० बल) II और जी० सत्यनारायनन (आ० प्र०) III.

शॉटपुट : बलविन्दर सिंह (पंजाब) I; विजय बहादुर सिंह (सी० सु० बल) II और गुरदीप सिंह (सी० सु० बल) III.

भाला फेंक : राम शंकर (के० रि० पु० बल) I ; एस. सुशीलम (के० रि० पु० बल) II और मणिबाबू सिंह (सी०सु० बल) III.

घन फेंक : आर० एस० बल (के० रि० बल) I; सुखवन्त सिंह (पंजाब) II और प्यारे लाल (हरियाणा) III.

चक्का फेंक—ए. पी. एस. मान (के० रि० पु० बल) I; बलकार सिंह (सी० सु० बल) II और एस. एस. बल (के० रि० पु० बल) III.

4X100 मीटर रिले : के० रि० पु० बल I; पंजाब II और सी०सु० बल III.

4x400 मीटर रिले : पंजाब I; के०रि०पु० बल II और बिहार III.

अखिल भारतीय पुलिस खेलः

वालीबालः के० रि० पु० बल फिर विजयी

त्रिवेन्द्रम में 10 फरवरी 1982 को केरल राज्य बिजली बोर्ड के पूर्ण प्रकाशित स्टेडियम में रात को खेले गये रोमांचित फाइनल में सी० सु० बल को हरा कर, के० रि० पु० बल ने वॉलीबॉल चैम्पियनशिप फिर अपने पास रक्खी। अंक गणना इस प्रकार रही— 15-13, 7-15, 15-11 और 15-13 ।

पहले सेट (स्पर्द्धा) में, 0-7 से सी० सु० बल के पीछे होने पर, के० रि० पु० बल ने 13-13 की बराबरी की और फिर 15-13 से जीत लिया। दूसरे सेट में, सी० सु० बल (7-15) सरलतापूर्वक जीत गया। तीसरे सेट में, के० रि० पु० बल 4-11 से आगे होकर 15-11 से विजयी हुआ । चौथे सेट में, हर अंक पर कांटेदार संघर्ष रहा। इसमें भी फिर पीछे से आ कर, के० रि० पु० बल ने 13 पर बराबरी की और (15-13) फिर विजयी हुआ।



पुलिस खेलों में वॉलीबॉल के फाइनल में के० रि० पु० बल का सुन्दर खेल-प्रदर्शन

सी० सु० बल में दो अन्तराष्ट्रीय खिलाड़ी—बलवन्त सिंह (बल्लू) और अमर सिंह थे। बल्लू के जोरदार हाथ सदा की भांति देखते ही बनते थे। किन्तु, जैसे खेल बढ़ा, वैसे के० रि० पु० बल के अद्भुत तालमेल से सी० सु० बल के धावे विफल कर दिये गये। के० रि० पु० बल की ओर से रोहतास सर्वांगीण श्रेष्ठ रहा। आगस्टियन और स्वतेन्दर ने रोकने में कमाल दिखाया, जयपाल और दूसरे खिलाड़ी जम के खेले तथा फूलचन्द और ठिगने बेवी के हाथ बड़े जोरदार पड़े।

इससे पहले, के० रि० पु० बल ने सेमी फाइनल में पंजाब पुलिस को तीनों सीधे संघर्षों में हराया-15-11, 15-6, 15-3.

हॉकी : तीसरा स्थान

त्रिवेन्द्रम में फरवरी 1982 में आयोजित 31वें अखिल भारतीय पुलिस खेलों में, के० रि० पु० बल ने हॉकी में तीसरा स्थान पाया।

क्वार्टर फाइनल में, के० रि० पु० बल ने बिहार को 5-1 से हराया। गोलों को करने का श्रेय बी० एस० मान (3) एस० टोपनो (1) और एस० एस० मान (1) को गया। सेमी फाइनल में, के० रि० पु० बल, सी सु० बल से हार गया।

फुटबॉल

फुटबॉल में तीसरा स्थान निश्चित करने वाली मैच में, के० रि० पु० बल राजस्थान से 3-5 से हार गया। के० रि० पु० बल ने गेंद की अच्छी अदला-बदली का प्रदर्शन किया; किन्तु गोल करने के अच्छे अवसर खो दिये । फलस्वरूप, पेनाल्टी किकों ने भाग्य निर्धारित किया। इससे पहले, के० रि० पु० बल केरल पुलिस से 1-2 से हार गया था।

अखिल भारतीय पुलिस खेल :

बास्केट-बॉल : के.रि. पु. बल की भव्य सफलतायें

त्रिवेन्द्रम के पूर्ण रूपेण जगमगाते हुए केन्द्रीय स्टेडियम में 10 फरवरी 82 की रात को खेले गये अखिल भारतीय पुलिस खेलों के फाइनल में, के० रि० पु० बल की बास्केट बॉल टीम ने सीमा सुरक्षा बल को 54-49 से हराकर, प्रतिष्ठित सिरमौर जीता।

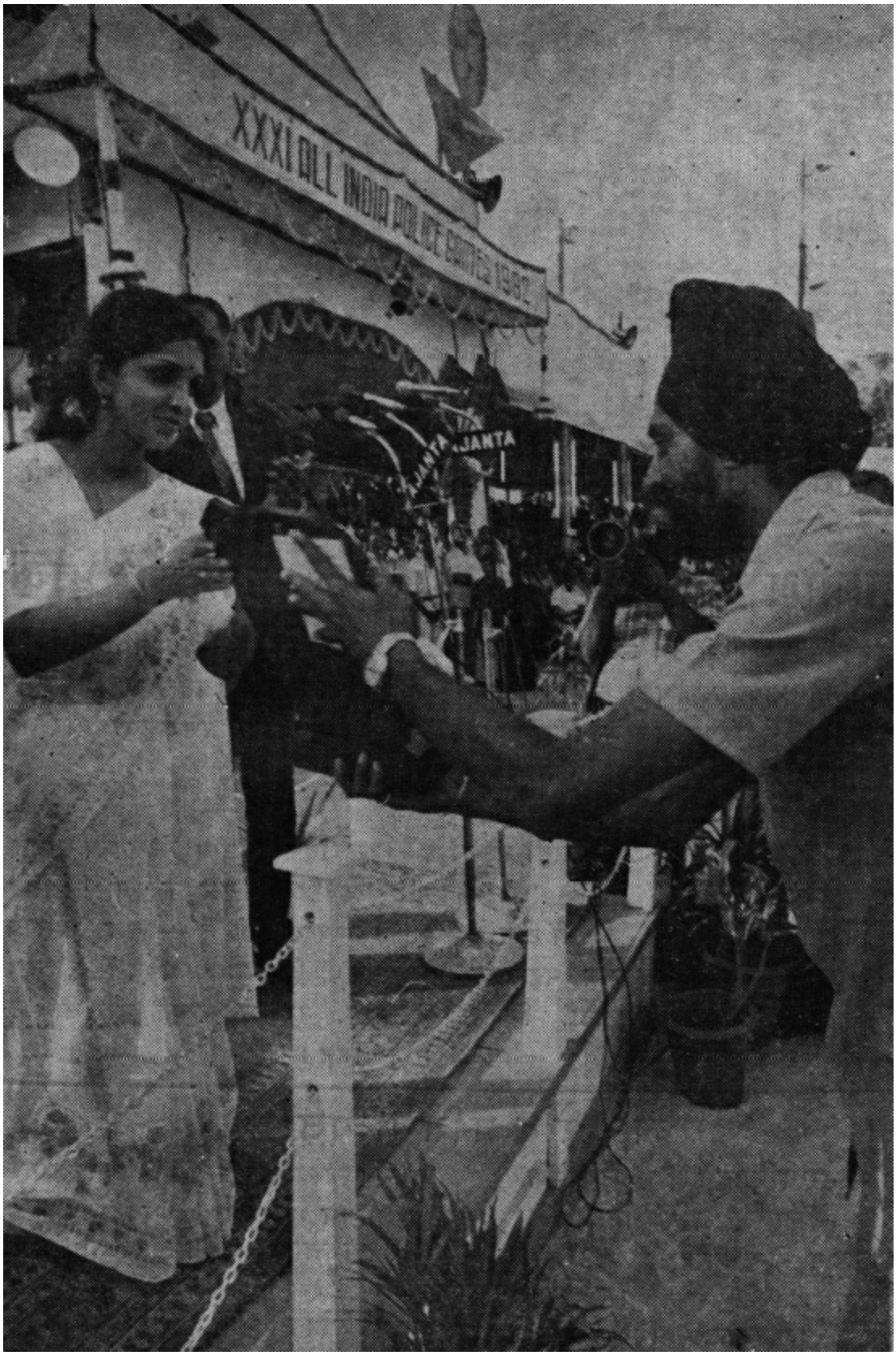
इससे पहले, देश के अन्य प्रमुख टूर्नामेंट के फाइनलों में इस टीम ने विजय-श्रृंखला पायी थी। दिल्ली में गरवारे पेंट्स टूर्नामेंट में सर्वजेता थलसेना सिगनल्स कोर को हरा कर, कपूरथला में बास्केटबाल के पूर्ण प्रकाशित अखिल भारतीय शहीद भगतसिंह टूर्नामेंट में केन्द्रीय रेलवे को नीचा दिखाकर, (के० रि० पु० बल और केन्द्रीय रेलवे दोनों ने पहले सीमा सुरक्षा बल को हराया था) बी. ई. जी. रुड़की को (जिससे सी० सु० बल अर्द्ध फाइनल में हार गया था) पराजित कर और रोपड़ में

आयोजित महाराजा रणजीत सिंह स्वर्ण-कप टूर्नामेंट में सी० सु० बल को परास्त कर, इस टीम ने विजय-श्रृंखला का श्रीगणेश किया था।

इस वर्ष पुलिस खेलों में, सी० सु० बल की टीम में अर्जुन-पुरस्कार-विजेता अनिल कुमार और निर्मल चौधरी, श्यामलाल, अजीतकुमार, कुलदीप सिंह जैसे अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के खिलाड़ी थे। सी० सु० बल की शुरूआत तो अच्छी रही। बहरहाल, जब के० रि० पु० बल 10-18 से पीछे था, उसने रणनीति बदली और पी. पी. सिंह के नेतृत्व में खुले आम एक-से-एक वाली सुरक्षा शुरू कर दी। इससे सी० सु० वल को रोकने में उसने सफलता पाई। मध्यांतर के समय, अंक-सारिणी. इस प्रकार थी—सी० सु० बल 29, के०रि०पु० बल 25।

उत्तरार्ध में, के० रि० पु० बल हावी हो गया। उसने 32-32 की बराबरी पा ली और फिर पीछे मुड़ कर नहीं देखा। लम्वे-दुबले कुट्टी का कोई मुकाबला नहीं कर सकता था। के० रि० पु० बल के लिए व्यक्तिगत योगदान यों रहा—कुट्टी बीस, जगजीत और पी. बाबू दस-दस, सुखदेव सिंह छः और एस. पी. यादव दो।

इससे पहले, के० रि० पु० बल ने उत्तर प्रदेश पुलिस को 80-54 से हराया था।


XXXI ALL INDIA POLICE GAMES 1982
AJANTA
AJANTA

श्रीमती ओमेन चंदी से बास्केटबाल चैम्पियनशिप ट्राफ़ी पाते हुए के० रि० पु० बल के टीम कप्तान पी. पी. सिंह

विदेशों में के० रि० पु० बल के एथलीट

पेशावर में, अप्रेल 1982 में खेले गये पाकिस्तान राष्ट्रीय खेलों में प्रदीप कुमार डोगरा ने भाग लिया और 9मि० 4.34से० में 3,000 स्टीपल चेज़ दौड़ पूरी कर, दूसरा स्थान पाया।

मार्च 28, 1982 को आयोजित सियोल अन्तर्राष्ट्रीय मॅराथॉन दौड़ में के० रि० पु० बल के शीर्षस्थ एथ्लीट रसदेव सिंह ने भाग लिया। थल सेना के सरूप सिंह की अपेक्षा, उसने दौड़ पूरा करने में कम समय लगाया।



श्री राजीवगांधी, संसद सदस्य के साथ 30वीं राष्ट्रीय कबड्डी टीम चैम्पियनशिप की विजेता टीम, जिसमें के० रि० पु० बल के 5 सदस्य भी हैं

राष्ट्रीय कबड्डी में के०रि०पु० बल की धाक

लखनऊ में 9 से 14 जनवरी, 1982 तक, 30वीं राष्ट्रीय कबड्डी चैम्पियनशिप खेली गयी। के०रि०पु०बल के खिलाड़ियों के बल पर, दिल्ली राज्य टीम ने सिरमौर जीता। इस टीम में, के०रि०पु० बल के 5 खिलाड़ी थे और सिर्फ़ 2 खिलाड़ी और संगठनों से

थे।

सिरमौर पाने से पहले, दिल्ली टीम ने मध्य प्रदेश, भारतीय रेलवे और महाराष्ट्र के सहित 9 टीमों को हराया, जिनमें खिलाड़ी-सितारे थे।

यह प्रतिष्ठित चैम्पियनशिप, देश की कबड्डी-सर्बोच्चता की प्रतीक है और दिल्ली टीम ने 30 वर्षों में इसे पहली बार जीता है।

इस विजेता टीम के सदस्य होने के नाते, के०रि०पु० बल के इन खिलाड़ियों को स्वर्णपदक मिले हैं — स.इ. लाल चन्द (कप्तान), हे० का० अमर सिंह, नायक रूप राम, ना० जसबिन्दर और ला० ना० सागर सिंह।

खिलाड़ी सम्मानित

दिनांक 27 फरवरी 1982 को, जिस दिन श्री एस. दत्ता चौधरी ने के०रि०पु० बल के महानिदेशक का पदभार संभाला, उसी दिन रबीन्द्र रंगशाला, नई दिल्ली में खिलाड़ियों और एथ्लीटों को सम्मानित करने के लिये एक स्वागत-समारोह आयोजित हुआ।

इस अवसर पर बोलते हुये, श्री एम. बधवा, उपनिदेशक (प्रशिक्षण) के बताया कि इस बल के इतिहास में प्रथम बार अखिल भारतीय पुलिस खेलों में, इस बल ने पाँच स्पर्द्धाओं में चैम्पियनशिप जीती है। इस बर्ष, कुछ खेलों में दूसरे बलों का एकाधिकार टूटा है और के० रि० पु० बल ने सबसे अधिक पदक पाये हैं।

श्री एस. दत्ता चौधरी, महानिदेशक, के०रि०पु० बल ने खिलाड़ियों और एथ्लीटों को उनके उत्तम खेलों के लिये बधाई दी और राष्ट्रीय तथा एशियाई खेलों में और भी अधिक सफलतायें पाने की आशा प्रकट की। उन्होंने यह भी आशा प्रकट की कि नेहरू स्वर्ण कप हॉकी टूर्नामेंट में के०रि०पु० बल एक बार फिर सिरमौर जीतेगा।

महानिदेशक ने कहा कि बाहर खोजने के बजाय, के०रि०पु० बल में ही उपलब्ध प्रतिभानों का विकास करना चाहिये । उन्होंने यह भी कहा कि वह इस बल में खेलों को प्रोत्साहन देंगे।

अन्तर्रेंज प्रतियोगितायें

मोटर परिवहन और प्राथमिक चिकित्सा प्रतियोगितायें

ग्रुप केन्द्र गौहाटी में 2 से 19 फरवरी, 1982 तक, 16वीं अन्तर्रेंज मोटर परिवहन और प्राथमिक चिकित्सा की प्रतियोगिताये खेली गईं।

मोटर परिवहन प्रतियोगिता में, गौहाटी रेंज I. नीमच रेंज II तथा पटना रेंज III

प्राथमिक चिकित्सा प्रतियोगिता में, हैदराबाद रेंज I, गौहाटी रेंज II तथा अजमेर रेंज III रही।

लक्ष्यभेदन

केन्द्रीय प्रशिक्षण कॉलेज I, नीमच में 16 से 20 फरवरी 1982 तक, 16वीं अन्तर्रेंज लक्ष्यभेदन प्रतियोगिता खेली गई।

नीमच रेंज ने चैम्पियनशिप जीती और कलकत्ता रेंज II तथा दिल्ली रेंज़ III रही।

व्यक्तिगत टीम चैम्पियनशिप में, रायफल में नीमच रेज ने, हल्की मशीनगन में श्रीनगर रेंज ने और पिस्तौल में दिल्ली रेंज, ने प्रथम स्थान पाया।

क्रास कन्ट्री दौड़

नीमच में के० रि० पु० बल की अन्तर्रेंज क्रास कंट्री प्रतियोगिता फरवरी 82 में हुयी। श्रीनगर I, अजमेर II, और हैदराबाद III रहा । ए. एस. योहनान (श्रीनगर) ने 47मि० 55 से० में पूरा कर प्रथम स्थान पाया ।

हाँकी 'बी' टीम विजयी

उज्जैन में हुये कप्तान रूप सिंह अखिल भारतीय हॉकी टूर्नामेंट को के० रि० पु० बल की 'बी' टीम ने जीता। इस टीम ने म्यूनिसिपल कोपोरेशन को (7-0) स्टील प्लांट राउरकेला को (2-0) और मध्यप्रदेश पुलिस को (1-0) हराया। यह टीम विजेता रही, जबकि म. प्र. पुलिस उपविजेता हुयी।

बलरामपुर (उ० प्र०) में खेले गये महाराजा सर भगवती प्रसाद अखिल भारतीय हॉकी टूर्नामेंट में, के० रि० पु० बल की 'बी' टीम ने भाग लिया। हरियाणा पुलिस और लखनऊ होस्टल को हरा कर, वह लखनऊ टीम से हार गयी। लखनऊ टीम विजेता और हमारी 'बी' टीम उपविजेता रही।



ग्रुप केन्द्र, नई दिल्ली में 71 बटालियन की दीक्षान्त परेड की सलामी लेते हुये गृहमंत्री, ज्ञानी ज़ैल सिंह

शान्ति रक्षिणी बटालियनें:

"आप से आकांक्षायें पूरी होने का विश्वास"

—ज्ञानी ज़ैल सिंह

ग्रुप केन्द्र, नई दिल्ली में 30 मार्च 1982 को, तीन शान्ति रक्षिणी बटालियनों में सबसे पहले प्रशिक्षण पूरा करने करने वाली 71 बटालियन की दीक्षान्त परेड की सलामी ज्ञानी ज़ैलसिंह, गृह मन्त्री, ने ली।

एक शानदार साक्ष्यांकन समारोह में, हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख और ईसाई मतों के चार 'धर्मगुरुओं' ने बटालियन के सदस्यों को राजनिष्ठा की शपथ दिलाई। श्री एम. एस. वोपाराय, कमांडैंट ने दीक्षान्त परेड का नेतृत्व किया।

देश के सभी भागों में केवल दंगों और उथल-पुथल के अवसरों पर ही नहीं, बल्कि

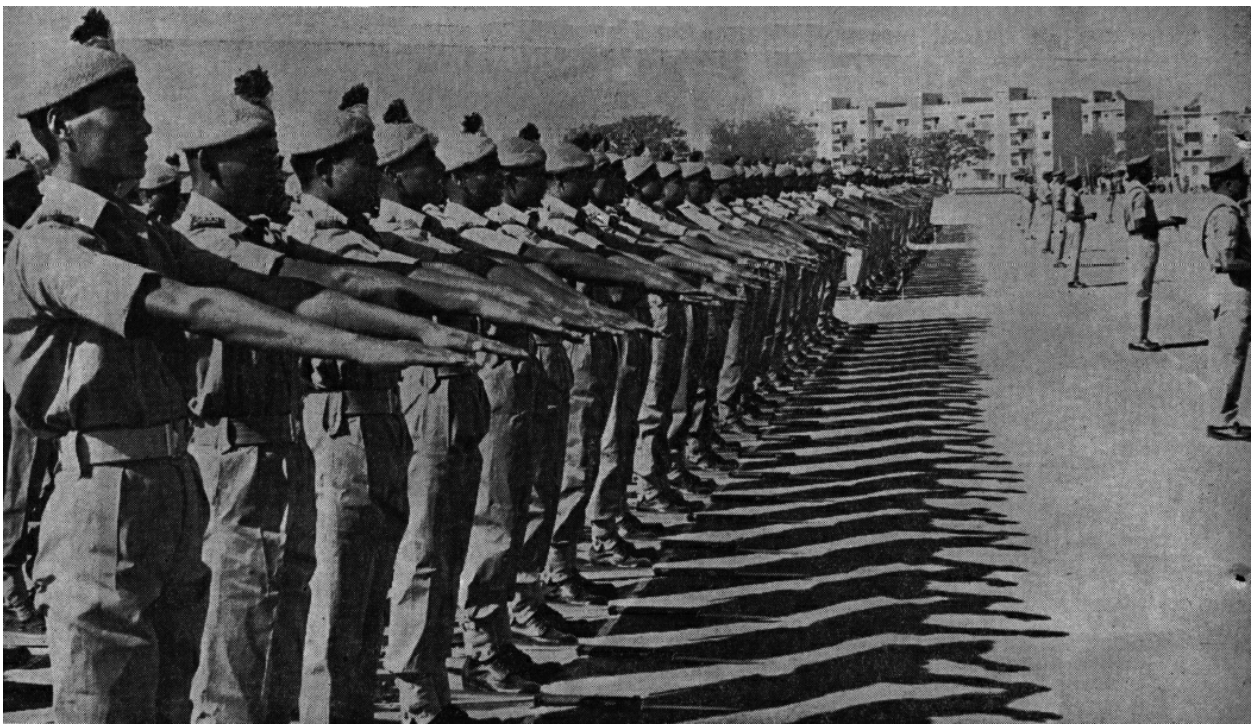
प्राकृतिक संकटों में भी केन्द्रीय रिज़र्व पुलिस द्वारा किये गये उत्तम कामों की प्रशंसा, ज्ञानी ज़ैलसिंह ने की। उन्होंने कहा कि व्यवस्था बनाये रखना सरकार की एक बड़ी जिम्मेदारी है, क्योंकि शान्ति के बिना, कोई विकास का काम नहीं हो सकता । बहरहाल, बाढ़ों, तूफ़ानों, अग्नि आदि से उत्पन्न स्थितियों से सुलझने के लिये भी कोई साधन चाहिये । उन्होंने बताया कि आजकल के उपद्रवियों की गुन्डागर्दी से निपटने के लिये, पुलिस बलों का आधुनिकीकरण करना और के०रि०पु० बल की जनशक्ति को बढ़ाना ज़रूरी है। उन्होंने कहा कि 71 बटालियन का गठन इस दिशा में ही एक क़दम हैं ।

के०रि०पु० बल की निष्पक्षता के लिये, ज्ञानी ज़ैलसिंह ने बड़ी सराहना की। इसी से इस बल को जनता का प्यार मिला है। उन्होंने के०रि०पु० बल की धर्म निरपेक्षता की भी प्रशंसा की। उन्होंने यह इच्छा प्रकट की कि सभी राज्यों और अन्य बलों के पुलिसजन, केरिपु० बल द्वारा की जा रही सेवा का अनुकरण करें।

गृहमंत्री ने राष्ट्रीय अखण्डता के लिये ज़ोरदार अपील की और कहा कि कोई किसी क्षेत्र या मत का हो, यह देश मानव प्रतिष्ठा में विश्वास करता है।

परेड में जवानों के चुस्त प्रदर्शन की भी गृह मंत्री ने सराहना की। उनके शब्दों में--"आपकी परेड को देखकर, जिसने मुझे बहुत ही प्रभावित किया है, मुझे यह विश्वास हो गया है कि देश को जो आप से आकांक्षायें हैं, उन्हें आप पूरा करेंगे।"

केन्द्रीय गृह मंत्री ने कान्स्टेबल गोपाल दास (सर्वांगीण श्रेष्ठ प्रशिक्षार्थी), का. पम्यू भाटिया (बहिरंग श्रेष्ठ प्रशिक्षार्थी) और का० अखिलेश सिंह (अन्तरंग श्रेष्ठ प्रशिक्षार्थी) को पदक प्रदान किये।



झड़ौदा कलां दिल्ली में 30 माच 1982 को दीक्षान्त परेड में 'सेवा और भक्ति' की शपथ लेते हुये 71 बटालियन के जवान

"शान्ति-रक्षिणी बटालियन क्या है ?

भारत-सरकार ने नवम्बर 1980 में तीन शान्ति-रक्षिणी बटालियनों को बनाने का निर्णय लिया था और उनको खड़ा करने की ज़िम्मेदारी के०रि०पु० बल को सौंपी थी। मोटे तौरपर, हिंसा की स्थितियों से निपटना और हिंसा तथा प्राकृतिक संकटों से प्रभावित मनुष्यों का बचाव करना और सहायता देना, इनका उद्देश्य है।

फलस्वरूप, 69, 70 व 71–ये तीन शान्ति रक्षिणी बटालियनें क्रमशः हैदराबाद, दुर्गापुर और नई दिल्ली के ग्रुप केन्द्रों में, गठित की गयीं।

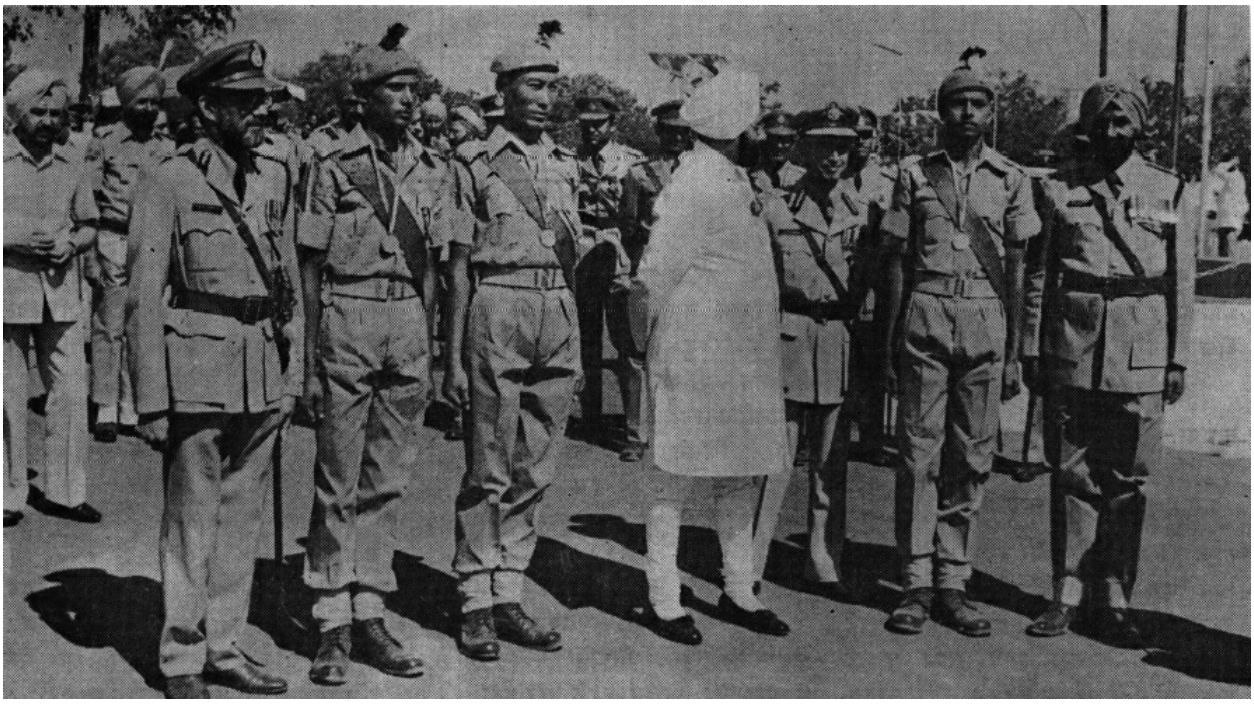
के.रि.पु. बल के सहित, पुलिस के अर्थ ही शांति रखने के हैं। अतएव, (किसी विशेष बटालियन को शांति रक्षिणी यूनिट कहने से यह तात्पर्य नहीं है कि दूसरे पुलिस बल शांति नहीं स्थापित करते हैं; किन्तु शांति रक्षिणी बटालियनों में कुछ अधिक अंग हैं। ये शान्ति रक्षिणी बटालियनों के विशेष लक्षण हैं और दूसरी बटालियनों से ये भिन्न हैं।

इन अधिक अंगों के कारण, एक शान्ति रक्षिणी बटालियन में एक साधारण बटालियन की जनशक्ति (974) से 244 कर्मी अधिक होते हैं। ये अधिक अंग क्या हैं ? हरेक ऐसी बटालियन में 45 कर्मियों की एक पॉयनियॅर (अग्रणी) प्लाटून होती है। सहायता शिविर लगाने के लिये इस पर अतिरिक्त तम्बू होते हैं और अस्थायी शरण-स्थल बनाने की, अस्थायी बिजली कनेक्शन देने की तथा मकानों, मार्गों और पुलियों की मरम्मत करने की क्षमता, इस में होगी।

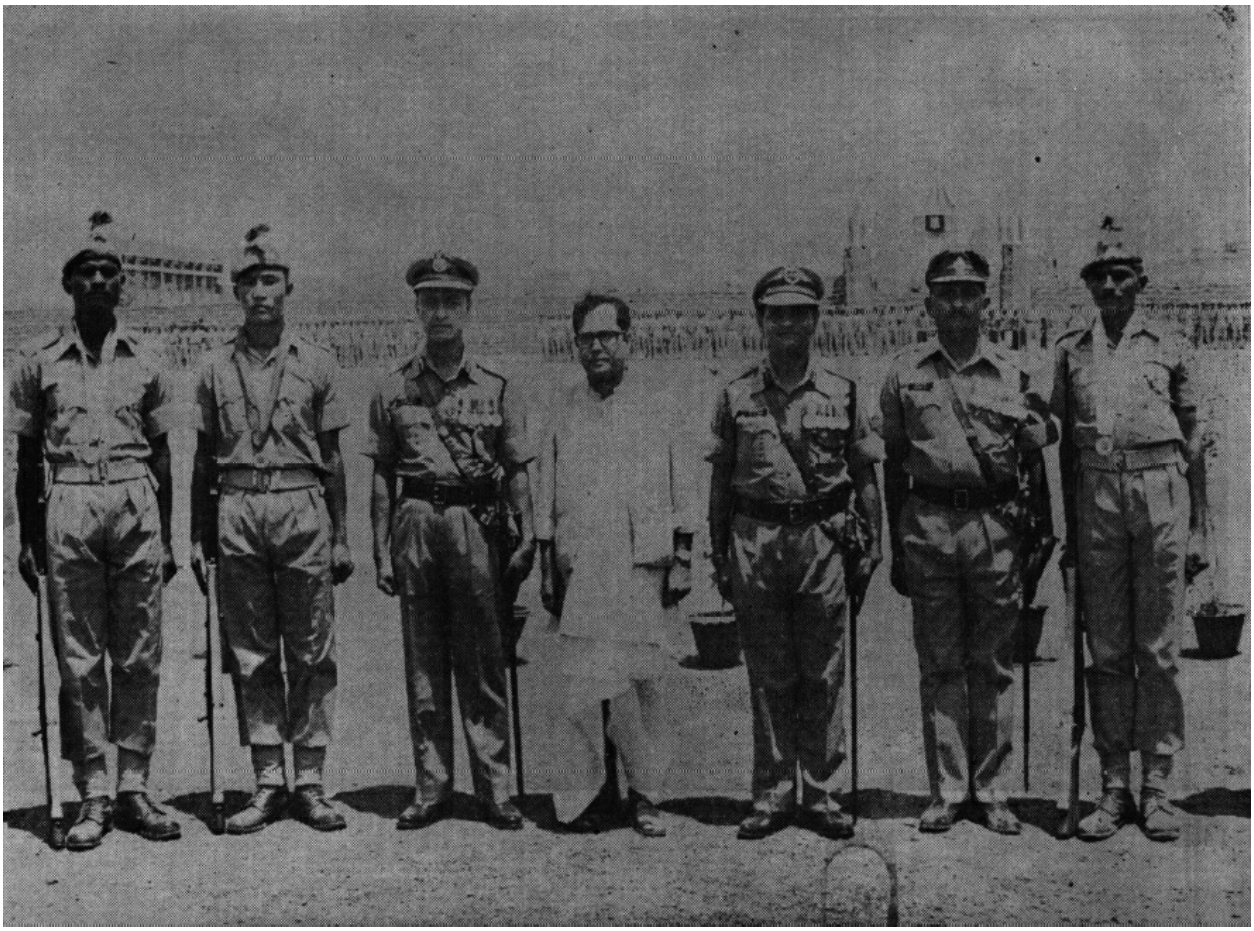
ऐसी हरेक बटालियन में अग्नि बुझाने वाले यंत्रों से सज्जित प्रशिक्षित 22जवान होते हैं। दुर्घटनास्थल पर ही, ये बटालियन चिकित्सा प्रदान करेंगी। एक बटालियन के चार जवानों की सामान्य जनशक्ति के मुकाबले में, दो चिकित्सा अधिकारियों,5 कम्पाउंडरों, नर्सों और अन्य सहायक कर्मचारियों के सहित, ऐसी प्रत्येक यूनिट में 37 कार्मिक होते हैं।

परिवहन के विषय में हरेक ऐसी बटालियन आत्मनिर्भर होगी। 108 वाहनों के इसके बेड़े में, 4 रोगी वाहन और एक रिकवरी गाड़ी होगी।

इस बटालियन के कर्मी, अन्य बातों के अलावा, निहत्थे युद्ध (जूडो) में और सहायता तथा बचाव की कार्रवाईयों में, प्रशिक्षित किये गये हैं।



गृहमंत्री ज्ञानी जैलसिंह, महानिदेशक, महानिरीक्षक (मुख्यालय) तथा कमांडेंट 71 बटालियन के साथ पदक पाने वाले जवान



वित्तमंत्री श्री प्रणव मुखर्जी, महानिदेशक, पुलिस महानिरीक्षक से० II और कमांडेंट 70 बटालियन के साथ पदक पाने वाले जवान

शान्ति रक्षिणी बटालियन:

दुर्गापुर में भव्य परेड

ग्रुप केन्द्र, दुर्गापुर में 10 अप्रेल 1982 को, श्री प्रणव मुखर्जी ने 70 बटालियन की दीक्षान्त परेड की सलामी ली।

वित्तमंत्री ने उसको "सुन्दर परेड" बताया, जिसने बटालियन का उत्तम अनुशासन और तालमेल दिखाया।

श्री प्रणव मुखर्जी ने के०रि०पु० बल द्वारा की गई सेवा की बड़ी प्रशंसा की। 'जब एक केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के रखने का प्रश्न उठा, तब अनेकों ने यह सन्देह किया कि कहीं इससे राज्य सरकार के कार्यक्षेत्र में तो अतिलंघन नहीं होगा। किन्तु अपने अनुभव से इन तमाम वर्षों में हमने देखा है कि तनाव कम करने में, व्यवस्था फिर से

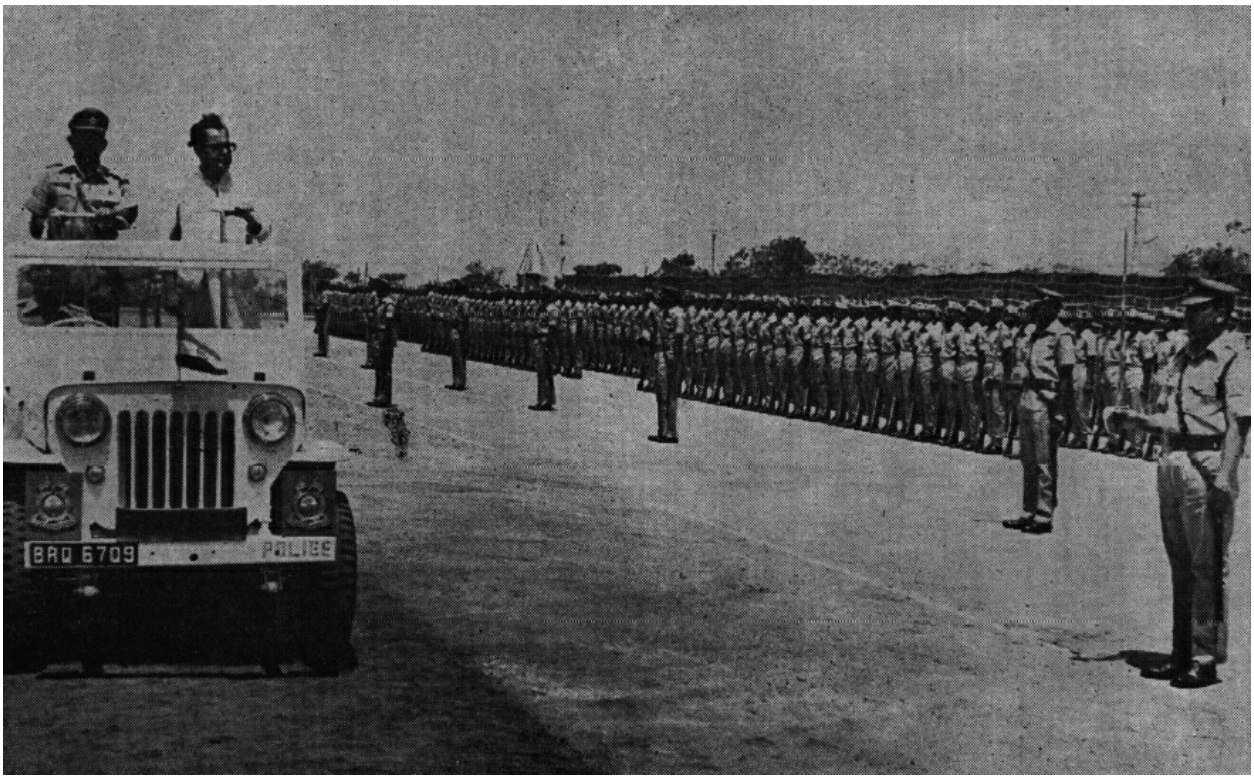
लाने में और जनता के मन में विश्वास जमाने में राज्यों को सहायता कर, के०रि०पु० बल ने खूब नाम कमाया है। जब कभी कोई साम्प्रदायिक या जाति सम्बन्धी तनाव होता है या ऐसी स्थिति पैदा होती है, जिससे जनता का विश्वास डांवा-डोल होने लगता है, तब के०रि०पु० बल को निरत करने की मांगें तुरन्त होने लगती है।'

प्राकृतिक प्रकोपों के समय, इस बल के कर्मचारियों द्वारा निबाही गयी मानवीय भूमिका की वित्तमंत्री ने सराहना की। उनके कथनानुसार चाहे बाढ़ हो, या कोई तूफ़ान हो या कोई दूसरी विपदा हो-किसी भी प्राकृतिक संकट में, प्रभावित क्षेत्र में के०रि०पु० बल के कर्मचारी संकटग्रस्त जनता की सेवा करते मिलेंगे।'

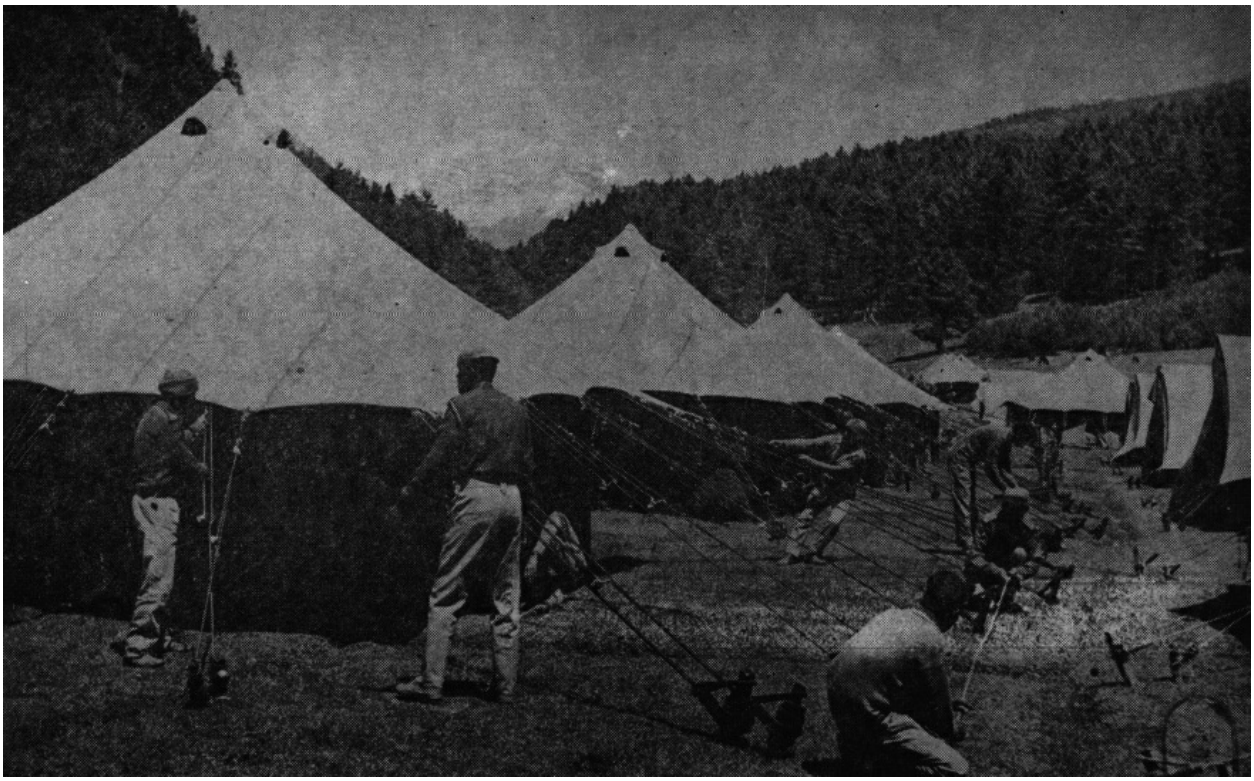
इस तथ्य के संदर्भ में कि इस बल के कर्मचारी देश के विभिन्न भागों से आते हैं और विविध मतों के होते हैं, श्री मुखर्जी ने कहा कि ऐसा होने पर भी, उनकी केवल निष्ठा होती है-मातृभूमि के प्रति, कर्तव्य के प्रति।

वित्तमंत्री ने का० नरहरिदास (सर्वां-गीण श्रेष्ठ), जी० टी० लपचा (वहिरंग श्रेष्ठ) और जयराम (अन्तरंग श्रेष्ठ) प्रशिक्षार्थियों को पदक प्रदान किये।

परेड का नेतृत्व श्री नरेन्द्रपाल, कमांडेंट, 70 बटालियन ने किया था।



70 बटालियन की दीक्षान्त परेड का निरीक्षण करते हुये वित्त मंत्री श्री प्रणव मुखर्जी



चलते रहो

लेखक-एच० एस० सेठी

वर्दी से किसी संगठन से सम्बन्ध होने का पता लगता है: किन्तु उससे भी अधिक वह आने-जाने व कार्रवाई करने में तत्परता, का बोध कराती है। वर्दीधारी मनुष्य से कर्तव्यपालन के लिये एक स्थान से दूसरे स्थान को जाने की आशा की जाती है।

बहरहाल, एक ऐसा भी संगठन है, जिसमें कर्तव्य की ऐसी मांगें बहुत ज्यादा और बहुत ही अचानक होती हैं और वह है--केन्द्रीय रिज़र्व पुलिस बल। छः वर्ष पहले, के०रि०पु० बल के माउंट आबू अकादमी से उत्तीर्ण एक युवा अधिकारी ने यह शिकायत की थी "मैं एक फुटबॉल की तरह हूँ और सारा देश एक क्रीड़ा क्षेत्र (प्लेफील्ड) है। अनेकों बार, मैं एक स्थान से दूसरे स्थान को लतियाया गया है।"

इस बल का मुख्य कर्त्तव्य, देश के सभी भागों में शान्ति और आन्तरिक सुरक्षा बनाए रखना है। वर्तमान न्याय-व्यवस्था जैसी भी है, उसके लिये के०रि०पु० बल की मांगें भारी हैं और उसके जवानों को तुरन्त सूचना पाते ही देश के किसी भी भाग को बहुधा जाना पड़ता है।

छै वर्ष पूर्व, जब पुलिस उप-अधीक्षक गुरिन्दर का विवाह हुआ, तभी कश्मीर को

जाने के लिये तैनाती के आदेश उन्हें मिले। उनकी पत्नी सरकारी खर्च पर सोहागरात मनाने पर बड़ी खुश हुई, किन्तु गुरिन्दर खूब जानते थे, और उनकी पत्नी भी जल्द समझ गयी। उनकी पत्नी के शब्दों में-'अनजाने स्थानों पर हमारे तबादले हुए। कहीं कहीं तो मुझे कोई भी संगी-साथी नहीं मिला। दूसरे स्थानों पर जैसे ही अपने पसन्द का साथ मिला, तभी हमें वहाँ से जाना पड़ा।"

इस बल में चलते रहना ही इसका प्रमाणांक है। आदेश पाने के छै घंटों के भीतर ही, किसी यूनिट को वहां से चल देना पड़ता है। यही इस बल की की पहचान है और कार्यसाधकता का आधार है।

हर कहीं तीन वर्ष में एक तबादले का सेवा-नियम है और के०रि०पु० बल कोई अपवाद नहीं है; किन्तु के०रि०पु० बल में किसी एक व्यक्ति का तबादला नहीं बल्कि एक बटालियन का स्थानांतरण होता है, यही तो सारा अन्तर है। कोई मनुष्य एक बटालियन से तीन वर्षों में एक बार स्थानांतरित हो सकता है। परन्तु उसकी यूनिट तो हर समय स्थानांतरित होती रहती है। जैसे ही कोई बटालियन उपद्रव ग्रस्त स्थान पर व्यवस्था फिर से स्थापित करती है, तभी दूसरी चुनौती से निपटने के लिये उसे किसी दूसरे स्थान को जाना पड़ता है।

क़ानून और व्यवस्था की स्थिति कभी कभी तो इतनी जल्द बदलती है कि किसी यूनिट को ले जाने वाली विशेष रेलगाड़ी को उसके मूल मार्ग से मोड़ना पड़ता है और बहुत बार तो गन्तव्य स्थान पर पहुँचने से पूर्व, ऐसा फेरना पड़ जाता है। शायद उसे 'गन्तव्य स्थान' कहना ही ग़लत होगा। इसी लिये, के०रि०पु० बल के जवान उसे "दूसरे आदेश आने तक का विश्राम स्थल" पुकारते हैं।

एक ऐसी बटालियन (44 वीं) को जोरहाट में एक विशेष रेलगाड़ी से बाहर जाने के आदेश मिले । चलती हुयी रेल गाड़ी के प्रविस्तार में आदेश बदलते रहे। इसका गन्तव्यस्थान नागपुर से बरेली और फिर लखनऊ तथा अन्त में वाराणसी हुआ। सशस्त्र पुलिस के विद्रोह से निपटने के बाद, उसे जयप्रकाश आन्दोलन से सुलझने को पटना जाना पड़ा—ऐसा हर बटालियन के साथ होता है।

जब विशेष रेलगाड़ी चलरही होती है, तब अचानक घटनायें हो सकती हैं। एक बार जब 47 बटालियन दीमापुर से गौहाटी जा रही थी, उसने लमडिंग (असम) के बाज़ार में एक भीषण आग देखी। रेलगाड़ी रोकी गई, क्षेत्र में घेरा डाला गया और जलती टुकानों में फँसे लोगों को बचाया गया और जब रेलगाड़ी ने फिर अपनी यात्रा शुरू की, लमडिंग के हजारों नागरिकों ने भावभीनी विदाई दी। बाद को, उस बटालियन के गर्वीले कमांडैंट ने बताया 'मेरे धूमन्तू जीवन में वह सुनहरा क्षण था।

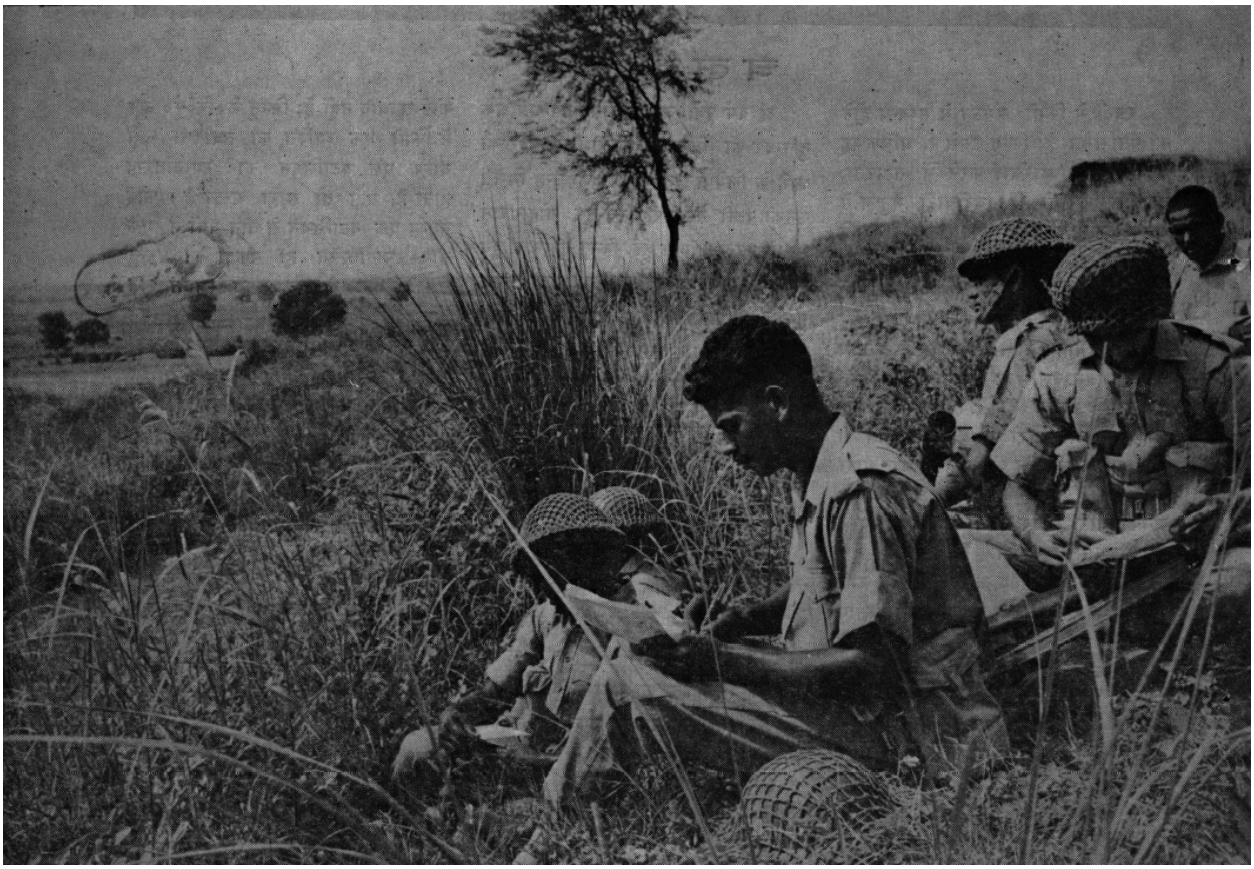
कोई पूछ सकता है कि विशेष रेलगाड़ी की क्या विशेषता है ? यह गाड़ी अपनी इच्छा पर रुक जाती है और एक बार रुकने पर उसका आगे बढ़ना कठिन हो जाता है। इस लोहे के घोड़े पर, कोई बागडोर नहीं होती और न ही होता है इसका पूर्व निश्चित मार्ग । अगरचे गृह मंत्रालय तक इसके मार्ग से उसे नहीं मोड़ता है, तो भी, रेलवे उसे बदल देती है—"प्रशासनिक कारणों के लिये।" के.रि. पु. बल के एक

अधिकारी, जो एफ़ डी. सुयेजा, का कहना है "जहाँ तक स्वच्छता, जल-सुविधाओं और विद्युत उपकरणों का सम्बन्ध है, अधिकतर एक विशेष रेलगाड़ी की तुलना मालगाड़ी से की जा सकती है । अजमेर, डिब्रुगढ़ और दीमापुर-कोयमबटूर की विशेष रेलगाड़ियों द्वारा यात्राओं के अपने अनुभवों से, मैं यह कह रहा हूँ,"

शायद रेलवे अधिकारी जानते हैं कि ये वर्दीधारी बंजारे समय से जूझते हुये किसी भी बात को मान लेंगे। लम्बी दूरियों के लिये कर्मीसमूह के आने जाने के लिये सचमुच में विशेष गाड़ी के अतिरिक्त, कोई दूसरा चारा नहीं है।

सभी खानावदोशों के सामान, इन घूमन्तू जवानों को गर्व करने के लिये बहुत बने-बनाये सुरम्य स्थल 'चिकेन नेक' से चिट्ठी लिखता एक जवान आवास भी नहीं हैं। जहाँ कहीं वे जाते हैं, अपने तम्बू ले जाते हैं। कुछ घंटों में ही, बटालियनें तम्बुओं का नगर बना लेती हैं। तिनके और नरकुल, बाँस, नारियल या ताड़ के पत्ते और काठ, जो कुछ भी सामान उन्हें मिलता है, उससे घर से दूर, वे अपना घर बना लेते हैं। एक वार को तो वे यह भूल जाते हैं कि वे बंजारे हैं और जितना भी सुविधाजनक घर बना सकते हैं, उसे बनाते हैं। एक जवान ने बताया 'चिकेन नेक क्षेत्र में सुन्दर अमराइयों में हमने शिविर लगाया और पकिस्तानियों के लिये उसे । छोड़ने पर, हमें सचमुच दुःख हुआ ।"

अपनी घूमन्तु विशिष्टता के कारण, इस बल के जवानों को अनेक कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है। वे अपना परिवार साथ में नहीं रख सकते हैं। बच्चों की देखरेख नहीं हो सकती है और उनका पढ़ना-लिखना भली भाँति नहीं हो पाता है; किन्तु केन्द्रीय रिर्जव पुलिस के जवानों ने अपने बल का नाम 'चलते रहो प्यारे' दिया है। अन्य बातों के अतिरिक्त, जवानों को अपने ही ऊपर हँसने की क्षमता का इससे पता लगता है।



सुरम्य स्थल 'चीकेन नेक'से चिट्ठी लिखता एक जवान

विकलांगता पर विजय

वह 10 दिसम्बर, 1980 को चमचमाती धूपवाली सुबह थी। माउंट आबू में, आन्तरिक सुरक्षा अकादमी के लम्बे चौड़े परिसर में भाषण के साथ-साथ प्रदर्शन चल रहा था। जब कि कमांडो छात्र उसमें लीन थे, कोर्स के प्रभारी अफसर काली राम शर्मा चिन्तित दिखाई दे रहे थे। शेक्सपीयर के नाटक 'मचेंट आफ वेनिस' के वेसनियों की भांति (जिसे यह नहीं पता था कि वह क्यों उदास है) कालीराम को खुद यह नहीं। मालूम था कि उनकी चिन्ता का क्या कारण है? किन्तु निश्चय ही उनकी चिन्ता किसी अप्रिय दुर्घटना की पूर्व सूचना देती दिखाई देती थी। इस चिन्ता को दूर करने के लिए, इन्स्पेक्टर (अब पुलिस उप-अधीक्षक) प्रताप सिंह द्वारा दिये जा रहे भाषण-प्रदर्शन में दत्तचित्त होने की, उन्होंने कोशिश की।

उसी समय, एक जोर के विस्फोट ने कालीराम को हक्का-बक्का सा कर दिया। एक क्षण के बाद, इ० प्रताप सिंह को झुकते देखा गया तथा उनका सीधा हाथ खून से लथपथ और छिन्न भिन्न हो रहा। था। तब छात्र अत्यधिक अचम्भे में मुंह फाड़े देखते रह गये थे। किसी ग़लत कलपुर्जे के कारण, इ० प्रताप सिंह के हाथ में गोला फट गया

था, यद्यापे उन्होंने अभी लीवर छोड़ा भी नहीं था। फलस्वरूप, वह अपना सीधा हाथ खो बैठे।

दुबलेपतले छै फुटी जवान, प्रताप सिंह जयपुर के स्नातक हैं और 1969 में वह इस बल में सब-इन्स्पेक्टर के रूप में भर्ती हुये थे। उनके साहसी स्वभाव ने उन्हें विस्फोटकों के संसार में पहुंचा दिया। रामपुर में विस्फोटक-कोर्स करने के बाद, उन्होंने अपना सीधा हाथ खो देने पर भी, उस | साहसी अफ़सर ने विकलांगता से समझौता कर लिया और वह बायें हाथ से सब कुछ | करने की कोशिश करने लगे। तीन मास । में ही, वह सीधे हाथ की तरह, बायें हाथ से | लिखने का काम करने लगे। मानो यह | काफ़ी नहीं था, उन्होंने अकादमी के वरिष्ठ | सूबेदार के पुनश्चर्या पाठ्यक्रम में प्रथम स्थान पाया। पिछले सितम्बर में, पुणे से | उन्हें कृत्रिम हाथ मिल गया।



प्रताप सिंह

हजारी बाग़ में सीमा सुरक्षा बल के केन्द्र में प्रशिक्षण पाया। वहां उन्होंने विस्फोटकों के उच्च कोर्स में प्रथम स्थान पाया। टेकनपुर में सी० सु० बल के केन्द्र में अश्रु गैस का दूसरा कोर्स भी उन्होंने किया।

विस्फोटकों की विशेष जानकारी के कारण ही, आन्तरिक सुरक्षा अकादमी में उन्हें चुना गया। वहां वह विस्फोटकों पर भाषण और प्रदर्शन किया करते थे।

अपना सीधा हाथ खो देने पर भी, उस साहसी अफ़सर ने विकलांगता से समझौता कर लिया और वह बायें हाथ से सब कुछ करने की कोशिश करने लगे। तीन मास में ही, वह सीधे हाथ की तरह, बायें हाथ से लिखने का काम करने लगे। मानो यह काफ़ी नहीं था, उन्होंने अकादमी के वरिष्ठ सूबेदार के पुनश्चर्या पाठ्यक्रम में प्रथम स्थान

पाया। पिछले सितम्बार में, पुणे से उन्हें कृत्रेम हाथ मिल गया।

23 अक्टूबर, 1981 को, उनकी पुलिस उप-अधीक्षक के पद पर उन्नति हो गयी और के० रि० पु० बल की 27 बटालियन में वह नियुक्त हुये । क्योंकि वह माउण्ट आबू में स्थित एक कम्पनी का कमान कर रहे हैं, अपने उस अनुभव से बिना डरे, वह अब भी उसी विषय पर भाषण और प्रदर्शन देते हैं।

दो वर्षीय पुत्री के पिता, प्रताप सिंह उस सहायता के लिये इस बल के आभारी; हैं, जो संकट के समय उन्हें दी गयी थी।

—एम. पी.नयनियल

परिवार कल्याण मास

कलकत्ता में निरत 2 बटालियन (के. रि. पु. बल) के कर्मचारियों ने फरवरी | 1982 को परिवार कल्याण मास के रूप | में मनाया। उन्हें एक सुनियोजित छोटे परिवार के लाभ के विषय में बताया गया। इस विषय में उनकी शंकाओं का समाधान किया गया और चार्टी तथा भाषणों से उन्हें प्रशिक्षित किया गया। फलस्वरूप, 2 बटालियन के जवानों और 4 संलग्नित कर्मियों ने नसबन्दी कराई। अस्पताल के अधिकारियों ने नियमों के अधीन स्वीकार्य अन्य छूटों के साथ-साथ, उनको पन्द्रह-पन्द्रह रुपये दिये। उनको नकद पुरस्कार भी मिले।

अनुग्रहपूर्वक अनुदान

मिज़ोरम की सरकार ने स्वर्गीय हेड कान्सटेबल जगन्नाथ राव, 28 बटालियन और कां० महादेव ओरन के निकटतम सम्बधियों को दस-दस हजार रुपये के तथा स्वर्गीय का० रामाराव और के. रवीन्द्रन के निकटतम सम्वधियों को पांच-पांच हज़ार रुपये के अनुग्रहपूर्वक दान की घोषणा की । है। 9 दिसम्बर 1981 को, मिज़ोरम में | बैवेकान और क्यूलीकान पर, के० रि० पु० बल की चौकियों पर मिज़ोरम राष्ट्रीय मोर्चे द्वारा की गयी गोलाबारी में, 32 बटालियन, के ये जवान मारे गये थे।

ग्रुप केन्द्र जम्मू द्वारा विकलांग बच्चों की सहायता

जम्मू-कश्मीर राज्य के सामज कल्याण सलाहकार मंडल की अध्यक्ष श्रीमती शोभा | नेहरू ने कमांडैंट, ग्रुप केन्द्र बनतालाब को लिखे अपने पत्र में मन्दबुद्धिवाले बच्चों के भवन के टिकट बिकवाने में जो सहायता के० रि० पु० बल ने की थी, उसके लिये धन्यवाद दिया है। दाल इत्यादि के पैकटों को बेचने के लिये, वहाँ कमांडैंट ने एक स्टाल लगाई थी।

कहानी :

मं ज़ि ल

ले०—ए० एस० आई० हंसराज ओझा

मेजर राधा बाबू ने अपनी इकलौती पुत्री कंचन का विवाह एक फ़ौज़ी से यह सोचकर किया था कि पाने वाली पीढ़ियों में भी उनकी तरह देश प्रेम की भावना पनपती रहेगी। उन्होंने सेवाकाल में, जिस वीरता से देश सेवा की थी, उसके कारण ही, सेना में उदाहरण के रूप में उनका नाम लिया जाता था।

कंचन अपनी डोली में बैठी अपने मधुर सपने सजो रही थी कि जितने दिन पतिदेव छुट्टी पर हैं, उतने दिन वह दिन ईद और रात दिवाली मनायेगी। आखिर, सुहाग रात का समय जो हुआ। परन्तु यह क्या ? उसने सुसराल में जाकर हाथ के कंगन भी नहीं खोले थे, कि उसकी चिर-प्रतीक्षित घड़ियां धरी की धरी रह गयीं । उसने देखा कि एक डाकिया पाया और पति के नाम की आवाज़ लगाई। उनके द्वार पर पहुँचने पर, एक काग़ज़ का टुकड़ा थमाते हुये कहा—'रणधीर जी, यह एक्सप्रेस तार है।'

रणधीर ने तार को उलटा पुलटा और और मस्तक-पट पर बल डाले। फिर वह लगा बुदबुदाने "कमबख्त इमरज़ैंसी भी इसी समय को पाने को रह गई थी, जिसने छुट्टी तक हमारी रद्द कर दी।'

रणधीर अपने नाम के अनुसार एक धैर्यवान सैनिक था, किन्तु आज उसके धीरज का बाँध टूट रहा था। उसके सब सलोने स्वप्न उसके नेत्रों के आगे जल कर राख हो रहे थे ; उसकी अपनी मंज़िल पर पहुँचने की कसमें टूटी जा रही थीं।

एक क्षण उसके नेत्रों के सामने सेवाभक्ति की सौगन्ध खाने के और पूर्वांचल में शत्रु के आक्रमण करने के दृश्य घूम गये, पर तभी उसे कंचन की सुधि आयी। ओफ़! कैसी क्लेशमयी द्विविधा थी; उसका मस्तिष्क चकराने सा लगा। तभी, उसे किसी वीरांगना का तीक्ष्ण स्वर कर्णपुट में पड़ा। मुड़कर देखा, तब कंचन काली का रूप धारण किये कहे जा रही थी 'मैंने सुना था, मेरे पतिदेव कहने को ही रणधीर नहीं, हैं, बल्कि सचमुच में रणधीर हैं। तभी तो मेरे पिता ने ऐसे वीर-बाँकुरे के हाथ में मेरा हाथ पकड़ाया था, किन्तु आज तो मैं ठीक उसके विपरीत उनका रूप देख रही हूँ। प्राणनाथ, एक सच्चे वीर की पहचान तब होती है, जब वह विघ्न-बाधाओं को पार कर देशप्रेम की मंज़िल पर पहुँचता है। यह चरणदासी स्वयं को तब सौभाग्यवती समझेगी, जब आप शत्रु से दो-दो हाथ कर, अपनी मातृभूमि की लज्जा बचायेंगे।'

अपनी अर्धांगिनी के वाण समान तीक्ष्ण वाक्य सुनकर, रणधीर उद्वेलित हो उठा, मानों किसी स्वप्न से जागा हो। वह बिना कुछ उत्तर दिये, अपनी माता के पास गया ; उसके चरण स्पर्श किये और सारी | बात सुनाकर विदा मांगी। माता प्रथम तो विह्वल हो उठी; किन्तु वह भी रणधीर की जननी थी, मातृभूमि की रक्षा का प्रश्न था । वह क्यों कर गद्दार बनती? पुत्र के सिर पर आशीर्वाद का हाथ रखती हुयी बोली—'ईश्वर सब

भलो करेंगे।'

उसने रणधीर के तिलक किया तथा दूर खड़ी वधू को समझाने लगी "बहू । सैनिक जीवन ही—"

वाक्य पूर्ण भी नहीं हुआ था कि रणधीर बोला "मां, नानी के घर ननिहाल की बातें। आपको पता है कि आपकी पुत्रबधु मेजर की पुत्री है, उसी की प्रेरणा से मैं रणभूमि को जा रहा हूँ।"

माता ने कंचन को गले लगा लिया "वीर बच्ची, तू सचमुच में वीरांगना है। केवल तू कंचन ही नहीं, साथ में, शौर्य की सुगन्ध भी है।"

कंचन ने भी पति की आरती उतारी; उसकी चरणधूलि माथे से लगाई और सास के सम्मुख संकोच से अधिक नहीं बोलकर केवल इतना कहा 'मंज़िल बड़ी कठिन है, पर पार जाना होगा।'

रणधीर ने मुस्का कर उसे आश्वस्त किया और विदा ली।

रणभूमि में पहुँच कर, कंचन के अन्तिम वाक्य रणधीर के कानों में गुँजते रहे । प्रहरी दल अपनी चौंकी के नायक को पाकर फूले नहीं समाये। रणधीर की कुशल रणनीति से शत्रुओं को मुँहतोड़ उत्तर दिया जाने लगा। सब ओर तोपों की गड़गड़ाहट से भूमि फटी जा रही थी; आकाश भिदा जा रहा था। कुछ ही समय में शत्रुओं के पैर उखड़ने लगे। परन्तु यह क्या? तुरन्त ही शत्रुओं पर सैन्य-साहाय्य आ गई। उन्होंने नई मशीनगनों और टैंकों से भीषण चढ़ाई की। ऐसा प्रतीत हुआ कि । शत्रुओं ने उस छोटी सी टुकड़ी पर पूरे ब्रिगेड से घावा किया था। फिर भी वीर सिपाही रणधीर के संकेतों और समादेशों पर आगे बढ़-बढ़ कर वार कर रहे थे । और थोड़े ही समय में, शत्रुओं को उन्होंने । मुंह की खिलाई। रणधीरके सैनिकों ने उन्हें तीन तरफ़ से घेर लिया और लगे बमगोले बरसाने। कितने ही सैनिक वीरगति को प्राप्त हुये; परन्तु रणधीर के सुनियोजित परिचालन के कारण, शत्रु बहुत देर टिक न सके। उनके टैंक नाकामयाब हो गये। उनकी तोपों ने मह बन्द कर लिये।

शीघ्र ही, हमारी विजय-वैजयन्ती आकाश में फहराने लगी; किन्तु इस घमासान युद्ध में, रणधीर कई जगह बुरी भाँति घायल हो गया था; उसकी सीधी टांग तो छरों से छलनी हो गयी थी।

विजय-दुन्दभि सुन कर, बड़े बड़े अधिकारियों का ताँता वहां लग गया; परन्तु विजयी सेनानी रणधीर को रक्त से लहुलुहान देख कर, शीघ्र ही प्राथमिक चिकित्सा की गई और रोगवाहन द्वारा, उसे अस्पताल पहुँचाया गया। वहां अनेक उपचार करने पर भी जब टाँग ठीक ही नहीं हुई, तब उसे कटवाना पड़ा। परन्तु कृत्रिम टांग से वह चलने योग्य हो गया।

प्राण की चिंता नहीं कर, जो शूरवीरता रणधीर ने दिखाई थी, उसके उपलक्ष्य में, उसे 'वीर चक्र' प्रदान किया गया। साथ में, पदोन्नति भी उसकी हुई; किन्तु उसे परम सौभाग्य यह लगा कि उसकी कंचन ने उस विकलांग को सौ-सौ प्राणों से स्वीकार कर

लिया। यही उसकी विजय लक्ष्मी थी; यही उसकी मंज़िल थी।

विज्ञान के बढ़ते-चरण

1. 'नयू इंगलैंड जर्नल' के अनुसार, डॉक्टर लिचस्टोन और उनके सहयोगियों ने यह पता लगाया है कि जिन रोगियों को दिल का दौरा पड़ने का खतरा होता है, उनके कानों की लोरों में झुर्रियां पड़ जाती हैं। अब डाक्टर हृदय रोग का पता लगाने के लिये कान की लोरों को भी देखा करेंगे।

2. श्रीलंका के डॉक्टर विमलावंस के अनुसार, पके पपीते का लेप, जख्मों, और नासूरों को ठीक करने में परामपरागत प्रतिजीवाण (एंटीवायोटिक) औषधियों की अपेक्षा अधिक लाभकारी है। ज़ख्मों में इसके लेप से नई स्वस्थ मांसपेशियाँ बनती हैं और दर्द शीघ्र दूर होता है। यह इलाज सस्ता और सुलभ है।

3. भारतीय मिरगी चिकित्सा संस्थान के डॉक्टर बलदेवसिंह के अनुसार, यदि मिरगी के रोगी का विवाह कर दिया, तब दौरे की आशंका कम होती है।

4. भारतीय प्रौद्योगिक संस्थान (आई० आई० टी०) दिल्ली ने एक ऐसा फ्रिज़ का डिज़ायन बनाया है, जो बिना बिजली के सौर ऊर्जा को संग्रह करके चलाया जाता है।

सूक्ति सुधा

जो काम उपाय से किया जा सकता है, वह पराक्रम से नहीं होता।

—पंचतंत्र

जिसमें उद्यम है, साहस है, धैर्य है, बुद्धि है, शक्ति है तथा है, पराक्रम, परमात्मा। उसकी सहायता करता है।

—संकलित

सब प्राणियों के उपकार से अधिक और क्या बड़ा पुण्य है ?

—कथा सरित सागर

पहेलियाँ

[प्रस्तोता—स० इ० महेश नारायण माथुर]

त्रैमासिक जो है कहलाता।
नई-नई खबरें जो लाता।
सब का जो है ज्ञान बढ़ाता।
चतुर वही जो नाम बताता ॥1॥
आदि देख कर सुमरे 'साई'।
'किल' फिर पढ़ कर दिल मुरझाई।
उसका जो दे नाम बताय।

बैठा बैठा दौड़ लगाय ॥2॥
आदि कटे तो प्यास बुझाय।
मध्ये कटे तो मौत दिखाय।
अन्त छटे तौ काम दिलाय।
अखियन की वह ज्योति बढ़ाय ॥3॥
[उत्तर—1.क्रैपलर 2.साइकिल 3.कागज

कविता :

हम तुम्हें भूल नहीं पाते हैं

-रे० आ० नायक राजनाथ पांडेय

केन्द्र रिजर्व पुलिस का यह दल।
सदा राष्ट्र का दृढ़ साहस-बल।
कण्ठहार यह है जनता का,
गंगा की धारा सा निर्मल।
तुमको हम शीर्ष नवाते हैं।
हम तुम्हें भूल नहिं पाते हैं।
इसमें पाते सब मत समता।
हर भाषा को पूरी क्षमता।
हिन्दू-मुस्लिम-सिक्ख-इसाई,
है सभी जातियों में ममता।
वे सभी एक हो जाते हैं।
हम तुम्हें भूल नहिं पाते हैं।
'सेवा-भक्ति' जवानों का प्रण।
'शान्ति-न्याय' दिलवाते ये जन।
पाठ प्रेम का पढ़ा रहे ये,
दिखा रहे जीवट भी हर क्षण।
सुख-जय-यश सदा दिलाते हैं।
हम तुम्हें भूल नहिं पाते हैं।
लौह-पुरुष ने जन्मा जिसको।

आज इन्दिरा पालें उसको।
नाम कर रहा रोशन जग में,
परख रखी है जनता इसको।
सब इसके गुण नित गाते हैं।
हम तुम्हें भूल नहिं पाते हैं।
करते मांग राज्य सब जिसकी।
चाह कर रही जनता उसकी ।
अरिजन काँप रहे हैं थर-थर,
जयध्वज लहरे नभ में इसकी।
ये जीवन-ज्योति जगाते हैं ।
हम तुम्हें भूल नहिं पाते हैं ।
नहीं कामना कुछ इनकी नव ।
नहीं चाहना रखते ये अब ।
देश-प्रेम की वेदी पर चढ़,
हँस-हँस प्राण गवाते ये सब ।
सुख-शान्ति सदा सरसाते हैं ।
हम तुम्हें भूल नहिं पाते हैं।

---

36 बटालियन

असम के बारपेटा कस्बे में निरत 36 बटालियन के जवानों ने उस ट्रक के चालक और खलासी को पकड़ लिया, जिससे 10 दिसम्बर 1981 को एक दुर्घटना हो गयी थी। इस दुर्घटना में एक साइकल सवार मर गया था और दूसरा घायल हो गया था।

31 दिसम्बर 1981 को पाठशाला कालेज के पास लकड़ी के एक पुल को ए.ए. स.यू. और ए.ए.जी. एस.यू.के समर्थकों ने आग लगा दी। इसकी सूचना पाते ही, 36 बटालियन के जवानों ने तुरन्त घटना-स्थल पर पहुँच कर, दमकल विभाग को आग बुझाने में सहायता दी।

पदोन्नतियाँ

इस वर्ष की जनवरी में, अराजपत्रित अधिकारी वर्ग में, 74 पदोन्नतियों के आदेश दिये गये। 36 नायकों को हेडकान्सटेबल बनाया गया; शेष पदोन्नतियाँ तकनीकी क्षेत्र में हुयीं।

सेक्टरों का पुनर्गठन

सिलचर में पूर्वगामी मुख्यालय समेत अस्थाई परिचालन सेक्टर को 10 मार्च 1982 से बन्द कर दिया गया। बाकी चारों सेक्टरों का इस प्रकार पुनर्गठन हुआ है :—

सेक्टर I-मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश, तमिल नाडु, केरल, कर्नाटक, पांडीचरी, गोआ, उड़ीसा और लक्षद्वीप।

सेक्टर II–पच्छिमी बंगाल, बिहार, त्रिपुरा, मिज़ोरम और अण्डेमान-निकोवार दीप समूह।

सेक्टर III-दिल्ली, जम्मू-कश्मीर, राजस्थान, हरियाणा, पंजाब, हिमाचल प्रदेश, गुजरात, दमन-दियू और उत्तरप्रदेश।

सेक्टर IV-असम, मणिपुर, मेघालय, अरुणाचल प्रदेश, नागालैंड, सिक्किम।

प्रशासी नियंत्रण में, यथापूर्व स्थिति चालू रहेगी।

जो दूसरे के धन, रूप, बल, कुलीनता, सुख, सौभाग्य, और सत्कार से ईर्ष्या करता है, उसकी यह बीमारी असाध्य है।

-विदुर नीति



का० इशाक़ मुहम्मद को ट्रांजिस्टर प्रदान करते हुये गृहराज्य मंत्री, श्री एन. आर. लस्कर

एक सा राशन भत्ता विचाराधीन

श्री एन. आर. लस्कर, गृह राज्य मंत्री ने 27 फरवरी 1982 को नई दिल्ली में यह बताया कि भारत सरकार सारे देशभर में निरत के० रि० पु० बल के सदस्यों को एक सा राशनभत्ता देने का विचार कर रही है।

राजधानी में महरौली पर आयोजित के० रि० पु० बल की तीन बटालियनों (24, 27 व 34 बटालियनों) के एक सैनिक सम्मेलन की अध्यक्षता, वह कर रहे थे। उन्होंने जवानों को यह यक़ीन दिलाया कि राजधानी में आवासों की कमी और विश्राम के घंटे —जो कठिनाइयाँ वे झेल रहे हैं, उनको दूर करने के यत्न किये जायेंगे। इससे पहले, जवानों ने सम्मेलन में यह बताया था कि राजधानी में सेवा करने के समय, उन्हें सप्ताह में दर असल कोई विश्राम नहीं मिलता है और अपने वस्त्रों आदि पर ध्यान देना कठिन होता है। हवलदार आर. एस. शर्मा (34 बटालियन) ने यह कहा कि यद्यपि दिल्ली में वीस वर्षों से सात-आठ बटालियनें तैनात रह रही हैं, उनके लिये कहीं भी कोई पक्के आवास निर्मित नहीं हुये हैं।

गृह राज्य मंत्री ने ट्रांजिस्टर और दूसरे उपहारों के रूप में, के० रि० पु० बल के उन जवानों को पुरस्कार दिये, जिन्होंने परिवार नियोजन अभियान में, नसबन्दी करायी थी। उन्होंने जवानों को परिवार नियोजन करने की सिफारिश की, क्योंकि उनके कथनानुसार, इससे केवल उनके परिवार का ही नहीं, बल्कि सारे देश का भी कल्याण होगा।

बाद को, उन्होंने प्रशिक्षण पाते हुये जवानों का निरीक्षण किया। जो व्यक्ति इस समारोह में सम्मिलित हुये थे, उनमें से थे श्री एस. दत्ता चौधरी, महानिदेशक, के० रि० पु० बल तथा श्री आर. के. खंडेलवाल, पुलिस महानिरीक्षक (मुख्यालय)।

श्री एस. दत्ता चौधरी द्वारा महानिदेशक का पद ग्रहण

श्री एस. दत्ता चौधरी पुलिस महानिरीक्षक, के० रि० पु० बल, ने 27 फरवरी 1982 को इसी बल के महानिदेशक के रूप में पदभार संभाला।

भारतीय पुलिस सेवा के बम्बई कॉडर में 1948 में प्रवेश कर, श्री एस. दत्ताचौधरी ने गुजरात और महाराष्ट्र के राज्यों में विभिन्न पदों पर काम किया। 1978 में के० रि० पु० बल में आने से पहले, आप लगभग पाँच वर्ष तक क्रमशः सिक्किम और त्रिपुरा राज्यों के महानिरीक्षक रहे।

राष्ट्रीय रक्षा कॉलेज के आप स्नातक हैं और राष्ट्रपति का पुलिस-विशिष्ट-सेवा पदक आपने पाया है।

अपने प्रथम सन्देश में, महानिदेशक ने सभी सेवीवर्गों को कठिन परिश्रम, समर्पण, अनुशासन और ईमानदारी के द्वारा, इस बल की प्रतिष्ठा बढ़ाने के लिये अनुरोध किया है।

उस सन्देश का अविकल रूप इस प्रकार है—

'दुःखदायी पारिस्थितों में पदभार ग्रहण करने पर, आप मेरे साथ अपने दिवंगत अध्यक्ष को श्रद्धाञ्जलि और उनके शोक संतप्त परिवार को सान्त्वना देने में सम्मिलिम होइये।

'इस गंभीर अवसर पर, आइये कठोर परिश्रम, समर्पण, अनुशासन तथा ईमानदारी द्वारा इस बल की कार्यकुशलता और प्रतिष्ठा को और अधिक बढ़ाने का फिर से संकल्प करें।'

51 बटालियन द्वारा वृक्षारोपण

येलाहांका (बेंगलूर) में, 51 बटालियन के परिसर में 700 छायादार, फल-फूल वाले वृक्ष लगाये गए हैं। इस काम में, येलाहांका के लायन्स क्लब और बेंगलूर के कृषि विज्ञान विश्वविद्यालय के बन विभाग ने इस बटालियन की मदद की है। इन वृक्षों में कटहल, आम और इमली की 18 मुख्य किसमें हैं।

अगली वर्षा ऋतु में, यहां लगभग 5000 वृक्ष (5 वृक्ष प्रति मनुष्य) लगाने की योजना है।

प्रशंसायें

श्री योगेन्द्र मकवाना, तत्कालीन गृह राज्यमंत्री, ने 19 दिसम्बर 1981 को ग्रुप केन्द्र हैदराबाद का निरीक्षण किया और एक 'सम्मेलन' में भाषण दिया। उन्होंने देश के विभिन्न भागों में के.रि. पु. बल की उत्तम कार्रवाई की प्रशंसा की।

श्रीमती मकवाना ने हैदराबाद में परिवार कल्याण केन्द्र, नर्सरी स्कूल और बेस अस्पताल II का निरीक्षण किया तथा उनके कार्यों से प्रभावित हुयीं।

असम में निरत के.रि.पु. बल की उत्तम सेवाओं के उपलक्ष्य में, असम सरकार ने वहां की विभिन्न यूनिटों के कल्याण-कोष के लिये 73,500 रु० का नक़द पुरस्कार दिया।

बिहार और त्रिपुरा के पुलिस महानिरीक्षकों ने भी अपने-अपने राज्यों में के. रि. पु. बल द्वारा की गई उत्तम कार्रवाई की सराहना की।

पुलिस आयुक्त, हैदराबाद, ने 51 बटालियन के अधिकारियों तथा कर्मचारियों के उत्तम काम की प्रशंसा की।

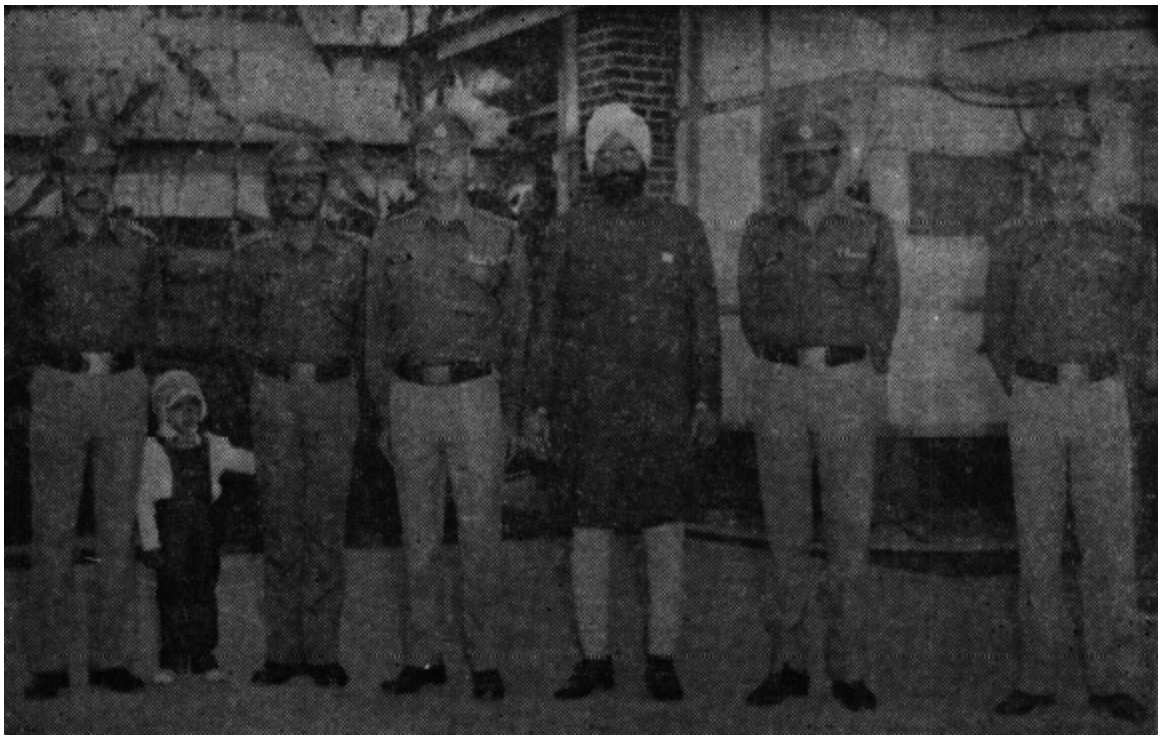
दिसम्बर 1981 में अराजपत्रित कर्मचारियों और शिक्षकों की हड़ताल के समय, 19 बटालियन के जवानों द्वारा की गई सेवाओं के उपलक्ष में, मुख्य मंत्री बिहार की तरफ से महानिरीक्षक बिहार ने एक स्मारक उस बटालियन को प्रदान किया।

डकैत-विरोधी आन्दोलन में, 27 दिसम्बर 1981 को, इस बटालियन की 'सी' कम्पनी के जवानों ने जोगा पट्टी पुलिस थाने के अन्तर्गत काम्ता क्षेत्र के खर हाटिया ग्राम में स्थानीय पुलिस के साथ डाकुओं से मुटभेड़ की थी। डाकुओं और के० रि० पु० बल ने एक दूसरे पर गोलाबारी की, जिसमें का० हरि किशन घायल हो गया। एक 12

बोर की पाइपगन, बारूद का एक थैला और लगभग 100 लोहे की गोलियाँ बरामद की गई।

पुलिस उप-महानिरीक्षक, त्रिहुत रेंज ने हमारे जवानों को बधाई दी और हारे किशन को 200 रु० का नक़द पुरस्कार दिया।

31 दिसम्बर 1981 को, इसी कम्पनी के एक टुकड़ी ने एक दूसरे छापे में, कुख्यात डाकू के एक सम्बन्धी के घर से एक देशी बन्दूक बरामद की।



नागालैंड में मोकाकचंग पर 50 बटालियन के अफसरों के साथ, गृहमंत्री, ज्ञानी जैलसिंह

के० रि० पु० बल 'क़ौमो एकता' का प्रतीक

नागालैंड और मणिपुर की अपनी पिछली यात्रा में, गृहमंत्री ज्ञानी जैलसिंह ने 14 जनवरी 1982 को मोकोकचंग पर 50 बटालियन के मुख्यालय का निरीक्षण किया। उन्होंने क्वार्टर गारड की सलामी ली और गार्ड जवानों के चुस्त प्रदर्शन और ड्रिल से वह प्रभावित हुये।

दरबार में अधिकारियों और जवानों को सम्बोधित करते हुये, ज्ञानी जैलसिंह ने सामान्य न्याय-व्यवस्था बनाये रखने और मुख्यकर राजद्रोह से निपटने में, के० रि०, पु० बल की भूमिका की सराहना की। उन्होंने यह विश्वास दिलाया कि के० रि० पु० बल की समस्याओं पर सरकार यथोचित ध्यान दे रही है।

जब उन्होंने इस बटालियन द्वारा निर्मित सभी धर्मों के संयुक्त प्रार्थनाभवन का निरीक्षण किया, तब उन्होंने के. रि. पु. बल की 'कौमी एकता' का जीता-जागता

उदाहरण बताया।

गृह मंत्री ने इस बटालियन के कल्याण कोष के लिये 5,000 रु० स्वीकार किये।

अग्निशमन

दीमापुर के आद्योगिक राजसंपदा के निकट 17 जनवरी 1982 को एक भीषण आग लग गयी। पूर्व इसके कि आग ज्यादा हानि पहुँचाये, तैनात सन्तरी का खतरे-संकेत पाते ही के. रि. पु. बल के आवाजाही शिविर के जवान घटना स्थल पर जाधाये । तुरन्त आग बुझा दी गई। जवानों की इस तुरन्त कार्रवाई से, मनुष्यों के अतिरिक्त, 15,000 रु० की सम्पत्ति बच गयी।

मार्च 21, 1982 को, ताइदू उच्च स्कूल (दक्षिणी त्रिपुरा) में अचानक आग लग गई। ताइदू पर निरत 63 बटालियन के जवानों ने जैसे ही उसे देखा, वे घटना स्थल पर जा धाये। अग्निशमन के प्रशिक्षण को सद्पयोग में लाते हुए, उन्होंने तुरन्त ही आग पर काबू पा लिया।

उनकी सामयिक कार्रवाई ने आग को फैलने से रोक दिया और स्कूल के फर्नीचर को बचा लिया। जनता तथा समाचार-पत्रों ने इस कार्य की बड़ी प्रशंसा की।

मार्च 24, 1982 को, (दक्षिणी त्रिपुरा) के गंदाचेरा बाज़ार में सहसा आग लग गई। 63 बटालियन के जवान फ़ौरन अग्निस्थल पर पहुँच गये और आग को बुझा दिया, जिससे बहुत से मकानों और दुकानों को जलने से बचा लिया गया।

बालक : एक अलौकिक छवि

ले०—रवीन्द्रन नायर

“मम्मी, मैं कहाँ से आया ?” इस प्रश्न की प्रतिध्वनि समय के गलियारे में गूँजती रहती है। शायद ही कोई माता या पिता बच्चे को कोई इसका विश्वासनीय उत्तर दे सका है।”

बालक कामना के रूप में अविवाहित महिला के हृदय में छिपा था; वह नन्हीं मुन्नी की गुड़ियों में गुप्त था; वह यौवन की मकरन्द था तथा था वह युगों की अमर आत्मा।

रवीन्द्र नाथ टैगोर ने बच्चे में दिव्यता की अभिव्यक्ति देखी; हरेक वालक की ओस की भाँति ताजा आते हुये देखा, जो यह सन्देश सुनाता है कि ‘प्रभु अब भी मनुष्य से निराश नहीं हुआ है।” टैगोर की भाँति, किसी अन्य ने शायद ही बचपन की प्रसन्न उन्मुक्तता देखी हो; बचपन में टैगोर ने मानव-आत्मा की आज़ादी देखी, जिसने पथविहीन आकाशों को पंख लगा कर पार किया। यह बह कल्पना थी, जो बाद में

कवि के शान्ति निकेतन विश्वविद्यालय के रूप में मूर्तिवन्त हुई।

सूक्ष्म निरीक्षक और स्वतन्त्रता के प्रेमी होने के नाते, हरेक बालक "यह करो, यह नहीं करो" की रोकटोक से घृणा करता है। कन्धे पर थैला लटकाये, वह स्कूल जाता है और दूर से घंटी की ध्वनि सुनते ही अपनी गति तेज करता है; किन्तु वह देखो, मार्ग में फेरीवालाजाता है, जो समय, से नहीं बँधा है "कोई जल्दी नहीं है, कोई भी ऐसा पथ नहीं, जिस पर उसे अवश्य जाना हो, कोई ऐसा स्थान नहीं, जहाँ उसे पहुँचना लाजिमी हो और कोई ऐसा समय नहीं, जब उसे घर पर ज़रूर पहुँचना हो।" बालक एक फेरी वाला बनना चाहता है, जिसके पास सारे संसार का समय दिन भर रहे। जब शाम को बालक स्कूल से लौटता है, वह माली को भूमि खोदते, अपने फावड़े को मन चाहा चलाते, मैला और धूलि धूसरित स्वयं को करते, धूप में तपते या स्वयं को भीगते देखता है। उसे कोई भी डाटता-डपटता नहीं है। बच्चा माली बनना चाहता है।

प्रौढ़पुरुष प्रायः संसार को अल्प दृष्टि से देखने का दोषी होता है। बच्चे की भाँति आप क्यों नहीं संसार को देखते ? जितना प्रौढ़ जगत श्रेय लेता है, इससे कहीं, गम्भीरतापूर्वक बालक संसार को समझता है और विश्लेषण करता है। बेचारा बालक बहुधा अचरज में रह जाता है कि जिन कामों को प्रौढ़ लोग बड़ी निर्द्वन्द्वता से करते हैं, उन्हीं को उसके द्वारा करने पर उसे क्यों धिक्कारा या दंडित किया जाता है। "जब मैं पिता जी की लेखनी या पेन्सल लेकर उन्हीं की भाँति अ,आ,इ,ई उनकी कापी पर लिखता हूँ, मम्मी, तब आप क्यों मुझ से रुष्ट होती हैं; पर जब पिता जी लिखते हैं, तब कभी एक शब्द भी उनसे नहीं कहतीं।"

युगों से सभी महा पुरुषों ने बालक को देवत्व का अवतार माना है। "बच्चे की भाँति सौभाग्यशाली !" बच्चे की मांगें बहुत कम होती हैं और वह प्रेम, प्रेम के लिये करता है। राजसत्ता का अधिकार और ऐश्वर्य तथा यौवन तक-हरेक चीज़ क्षणभंगुर है; किन्तु बच्चे की दिव्य मन-मोहक मुस्क्यान देर तक रहती है; वह संसार को जीत लेती है। मनुष्य के अपने बनाये हुये अन्धकार में, बालक एक ज्योति-पुंज की तरह आता है।

अमिट अभिलाष : प्रियवियोग के घाव अपूर्णीय होते हैं; मुख्यकर उस माता के, जिसकी अकेली सन्तान का निधन हो जाता है। किन्तु प्रभु शोकसंतप्त का परित्राण करते हैं; और वेदना को दिव्य प्रेम में बदल देते हैं। माता को "मैं पवन का मृदुल झौंका बनूँगा और तुमको प्रेम करूँगा और जिस जल में तुम स्नान करोगी, उसमें मैं लहर बन जाऊँगा और तुम्हें बारम्बार चूमूँगा।"

"यदि बहुत रात गये तक तुम अपने शिशु की सुधि में जागती रहोगी, तो मैं सितारों में से तुम को यह गाना सुनाऊँगा "सो जा, मम्मी, सो जा।"

नन्हा बालक सितारों और सड़कों के प्रकाशों में कोई अन्तर नहीं समझ पाता। सामान्य मस्तिष्क को यह व्यवहार बेतुका और बचकाना सा लगता है; परन्तु किसी योगी के लिये शिशु उस दिव्यता की अभिव्यक्ति के सिवाय कुछ भी नहीं है, जो प्रभु की कृतियों में कोई भेदभाव नहीं पाती है। इसी कारण, जब बच्चे कंकड़ खाने का खेल खेलते हैं, तब नन्हा मुन्ना उनको सचमुच में भोजन समझ बैठता है और उन्हें मुँह

में रखने का यत्न करता है। जब बड़ी बहन नन्हें बालक के सामने कोई पुस्तक खोलती है और उससे अ, आ, इ, ई, सीखने को कहती है, नन्हा बच्चा अपने हाथों से पन्ने फाड़ देता है और बेकार को खुशी से उच्च अट्टहास करता है। बच्चा तोड़ता है और फिर बनाता है।

टैगोर उनको बहुत बुराभला कहते हैं, जो नन्हें बच्चे पर बेकार का दोष लगाते हैं। अश्रुओं से गीली आँखों वाले बेचारे बच्चों को देखो। बच्चे को हर समय बन्धन में रखने वाले कैसे क्रूर और कर्कश होते हैं ? बच्चे ने यह लिखते हुये अपनी अँगुलियें और मुंह मैला कर लिया हैं—'क्या इसी कारण वे तुम्हें गन्दा पुकारते हैं ? क्या वे पूर्णचन्द्र को गन्दा कहने का साहस कर सकते हैं, क्योंकि उसने अपना मुँह रोशनाई से मैला कर लिया हैं ?'

चाहे बच्चे को कुछ भी दूसरे कहें, लेकिन उसकी माता, अपने बच्चे में सभी कमियों के होते हुये भी प्यार करती है। कारण सहज है। मैं इस लिये उसे नहीं "प्यार करती कि यह मेरा नन्हा मन्ना है — जब मैं उसे दंण्ड देती हूँ, तब वह और भी मेरा अन्तरंग अंग बन जाता है; जब मैं उसके नेत्रों से आँसू टपकवाती हूँ, तब उसके साथ मेरा हृदय भी रोता है। उसे दोषी ठहराने और दंड देने का अधिकार केवल सुझे ही है; क्योंकि वही पीट सकता है, जो प्यार करता है।"

"बालक रंगीन खिलौने क्यों चाहता है ? क्योंकि मनुष्य फूलों और बादलों में रंगों की बहार पसन्द करता है। बच्चा क्यों मिठाइयाँ प्रसन्द करता है ? क्योंकि परमात्मा ने फलों की प्यालियों में शहद, और फलों में रस जैसी अपनी मिठास से संसार को परिपूर्ण कर रखा है।"

किन्तु उनको अलग करने वाली वह दिब्य धूप छाँह है, जिसे टैगोर ने अपनी अमर पंक्तियों में अनुपम रूप से खेंचा है।



ग्रुप केन्द्र, दुर्गापुर में 70 बटालियन की दीक्षान्त परेड़ की सलामी लेने के समय वित्त मंत्री श्री प्रणव मुखर्जी



त्रिवेन्द्रम में 1982 के अखिल भारतीय पुलिस खेलों के समापन पर श्री टी. जी. एल. आयर, पुलिस महानिरीक्षक के साथ के० रि० पु० बल के एथ्लीट, खिलाड़ी और जीती हुयी ट्राफ़ियों की विपुल राशि

क्रैपलर

केन्द्रीय रिज़र्व पुलिस बल
की
पत्रिका

खण्ड XI अंक 3 सितम्बर 30, 1982 [आश्विन 8, 1904]





ग्रुप केन्द्र गांधीनगर के परिवार कल्याण केन्द्र की 'अम्बर-चर्ख़ा' शाखा

ग्रुप केन्द्र गांधीनगर

मुफ्त दूध और भोजन

एक पक्के भवन में, ग्रुप केन्द्र गांधीनगर का परिवार कल्याण केन्द्र स्थापित है। इस केन्द्र का मुख्य धंधा, ग्रुप केन्द्र और संलग्न बटालियनों के लिये वस्त्रनिर्माण करना है। प्रक्षालक (डिटेरजैंट), वस्त्रधोने का पाउडर, फीनॉइल, मोमबत्ती, मोज़े, स्वेटर, प्लास्टिक बेंत बनाना और कढ़ाई, इस केन्द्र के अन्य धंधे हैं। 200 के लगभग महिलायें, यहाँ काम करती हैं और उनकी औसत आय 200 रु० प्रति मास हो जाती है।

दो वर्ष पूर्व, सौराष्ट्र रचनात्मक समिति और खादी ग्रामोद्योग मंडल द्वारा यहां चलाई गई अम्बर-चर्खी परियोजना में, महिलायें 55 चर्खे चलाती हैं और 280 रु० प्रतिमास कमा लेती हैं। अप्रेल 1980 तक, महिलाओं को वेतन के रूप में 2,07,000

रु० वितरित किये गये थे।

गुजरात सरकार के 'केयर' (रक्षा) और स्वास्थ्य विभाग के शिशु-स्वास्थ्य कार्यक्रम के अन्तर्गत, तैयार भोजन और दूध परिसर के बच्चों और गर्भवती महिलाओं को दिया जाता है। यही एक केन्द्र है, जहाँ 'केयर'-भोजन और दूध मुफ़्त बाँटा जाता है।

क्रैपलर

केन्द्रीय रिज़र्व पुलिस बल की सचित्र पत्रिका

[हिन्दी संस्करण–त्रैमासिक]

खण्ड XI

अंक 3

30 सितम्बर, 1982

18 आश्विन, 1904

मुख्य सम्पादक :

एच० एस० सेठी

हिन्दी सम्पादक :

जे० एस० शर्म्मा

[छाया : सतीश खन्ना]

मुखपृष्ठ : परिवार कल्याण केन्द्र दिल्ली में खेल-खेल में बच्चों की शिक्षा।

अन्तिम पृष्ठ : नीमच के परिवार कल्याण केन्द्र में सिलाई शाखा।

सम्पादकीय कार्यालय :

द्वारा महानिदेशालय, केन्द्रीय रिज़र्व पुलिस बल, पूर्वीय खंड 10, रामकृष्णपुरम, नई दिल्ली-110066

मुद्रक—सी० आर० पी० एफ० प्रेस, नई दिल्ली-110072

प्रकाशक—महानिदेशक, के० रि० पु० बल की ओर से **एच० एस० सेठी**।

सम्पादकीय

केन्द्रीय रि०पु० बल के ग्रुप केन्द्रों में परिवार कल्याण केन्द्र के निर्माण और क्रियाशीलता सचमुच में, सफलता की, एक गाथा है। परिवार-कल्याण केन्द्रों में, जवानों के परिवारों की महिलायें, विभिन्न धन्धो में काम सीखती हुयी कमाती हैं, जबकि उनके बच्चे नर्सरी स्कूलों या शिशु-पालन गृहों (क्रेचों) में पालित-पोषितं होते हैं और उनके प्राणपति, उनके द्वारा सिली हुयी ख़ाकी वर्दियाँ पहने, देश-सेवा के लिये कर्त्तव्यों की जोखिम उठाते हैं।

अपनी कार्यक्षमता और जानकारी के अनुसार, एक परिवार 100 रु० से 450 रु० तक की अधिक आय प्रति मास कमा लेता है। यह कहने की आवश्यकता नहीं कि महंगाई के इन दिनों में, यह आय, मुख्यकर एक जवान को कोई कम नहीं है। इस अतिरिक्त प्राय से, जीवन को सुखमय बनाने के लिये, बहुत से जवान कुछ सुविधा-साधन जुटा लेते हैं और अधिक देर काम कर, यदि अच्छी धनराशि पा ली, तब कुछ स्वप्न भी साकार कर सकते हैं जैसे— कन्या का उत्तम विवाह, गाँव के पुश्तैनी घर की मरम्मत, बच्चों की उच्च शिक्षा।

यद्यपि ये महिलायें अपने और अपने परिवारों के लिये काम करती हैं, वे सारे बल की भी मदद करती हैं, क्योंकि परिवार कल्याण-केन्द्रों द्वारा उत्पादित पदार्थ, बाजार में उपलब्ध पदार्थों से सस्ते ही नहीं बल्कि उत्तम भी होते हैं। इन पदार्थों ने कितने ही बार, विभिन्न प्रतियोगितात्रों और प्रदर्शिनियों में अपनी गुणवत्ता और रचनात्मक कारीगरी के लिये नाम कमाया है।

परिवार-कल्याण केन्द्र एक वह अंतर्बीज है, जहाँ जवानों के परिवारों के कल्याण के लिये, अधिकारी गण और उनकी पत्नियाँ भरसक प्रयत्न करती हैं। अपने सुनहले भविष्य के लिये, अधिकारियों और जवानों की भार्यायें मिलजुल कर यत्न करती हैं। कुछ ग्रुप केन्द्रों के परिवार कल्याण केन्द्र, देश में स्थित कुछ दूसरे ग्रुप केन्द्रों के सदस्यों के प्रयोग के लिये भी वस्तुयें उत्पादित करते हैं। इस प्रकार, के० रि० पु० बल के महान परिवार में अच्छे तालमेल के लिये, ये केन्द्र एक महत्वपूर्ण श्रृंखला और उपकरण हैं।

कभी कभार,मनुष्य जीवन के प्रति लापरवाह होने लगते हैं। इन केन्द्रों में सेवारत सैनिकों को अंशदान नहीं मिलते, बल्कि उनके परिवारों को लाभदायक काम मिलता है और यही खाकी वर्दीधारियों की आकांक्षा होती है।

इस संस्करण में, परिवार कल्याण केन्द्रों की रिपोर्ताज में बल के इसी महत्वपूर्ण कार्यकलाप का उल्लेख किया गया है।

क्रम संख्या

विषय

I. शिकायतों का समाधान ले०— स्व० श्री आई. एस. डागर

II. पहेलियाँ—प्रस्तोता—दफ्तरी गणेश प्रसाद ग्रुप केन्द्र, वनतालाब

III. ऑसबोर्न अब नहीं रहे—ले०—श्री जे. एम. कुरेशी

IV. कहानी—संयोग—ले०—ए. एस. आई. (एम) देशराज ग्रुप केन्द्र, दीमापुर

V. कविता—प्रहरी खड़ा हुआ पहरे पर—रचयिता—स० उ० नि० हंसराज, ओझा ग्रुप केन्द्र, गौहाटी

क्रैपलर अंग्रेजी में भी प्रकाशित होती है। इसमें प्रकाशित सामग्री के प्रयोग के लिए, कृपया मुख्य संपादक को लिखें। इसमें प्रकाशित सामग्री का आधिकारिक दृष्टिकोण के सर्वथा अनुरूप होना आवश्यक नहीं है।



मुख्यालय को नया भवन

सन् 1970 से, भारत सरकार केन्द्रीय पुलिस संगठनों के भवन निर्माण के लिए, कुछ भूमि पाने की चेष्टा करती रही थी। अशोक रोड पर मिली भूमि भारी यातायात के कारण उपयुक्त नहीं पाई गई। साथ ही, वहाँ भविष्य में नये संसद आवासों के बनने के कारण, सरकार ने उस भूमि को देना मंज़ूर नहीं किया। अन्त में, लिंक रोड और लोदी रोड के बीच की कुछ भूमि रक्षा मंत्रालय से प्राप्त की गयी।

भवन-निर्माण का उद्देश्य केवल कार्यालय-वासस्थान की कमी को ही कम नहीं करना था, बल्कि ग़ैर सरकारी लोगों के किराये से भी खुद को बचाना था, जिन्हें 12½ लाख वर्ग फीट का वार्षिक किराया 6 करोड़ रुपये देना पड़ता था। इसके अतिरिक्त, छतों बाले पंखे, ट्यूबें आदि अन्वायुक्तियों के बग़ैर, बड़े-बड़े कमरों के रूप में निजी आवासों को साधारणतया बनाया जाता है।

इसलिये, सी. पी. ओ. कम्पलेक्स (I चरण), लोदी मार्ग, नई दिल्ली में, विभिन्न केन्द्रीय पुलिस संगठनों को कार्यालय स्थान बनाया तथा आवंटित किया गया है।

के० रि० पु० बल को 44,854 वर्ग फीट का एक पूरा ब्लाक (क्रमसंख्या I) मिला है। इसमें वेतन और लेखा यूनिट के सहित, सारे महानिदेशालय को स्थान देने की व्यवस्था है।

मिज़ोरम में के० रि० पु० बल के काम की अमृतबाजार पत्रिका द्वारा प्रशंसा

'अमृत बाज़ार पत्रिका' के 8 अप्रेल 1982 वाले संस्करण में, 'मिजोरम में

'कौन बेहतर दिन लाये' नामक एक वृत्त में, के० रि० पु० बल की भूमिका की इस प्रकार सराहना की है—"मिजोरम में निरत, साधारणतया सुरक्षा बलों ने और मुख्य कर, के० रि० पु० बल ने पास के ग्रामीणों को मुफ्त मनोरंजन और अन्य अत्यावश्यक सेवायें प्रदान कर, जनता में उत्तम नाम कमाया है। उदाहरणार्थ, लुंगलाई, छिम्तुईपुई और एज़ल के जिलों में अक्टूबर 1977 से निरत रहने के समय, के०रि०पु० बल की 32 बटालियन ने अभी तक राजद्रोह ग्रस्त क्षेत्रों तक में सैकड़ों रोगियों की चिकित्सा देने के साथ-साथ, वहां के युवकों को कल्याणप्रद तथा खेलों की गतिविधियों की ओर उत्साहित कर, जनता से सहयोग पाया है।

'इसके अर्थ ये नहीं हैं कि सतर्कता और राजद्रोह विरोधी कार्रवाइयों को धीमा व ढीला कर दिया है। इसके विपरीत, गुमराह उग्रपंथियों द्वारा प्रायः की गयी घातों और संघातों से बिना रुके डरे हुये, के०रि०पु० बल की बटालियनों ने राजद्रोह के सभी पहलुओं से, साहस और दृढ़ता के साथ, निपटा है।'

स्वाधीनता दिवस पर सत्रह सराहनीय सेवा पदक

स्वाधीनता दिवस 1982 के अवसर पर, के० रि० पु० बल के इन 17 अधिकारियों/ कर्मचारियों को पुलिस सराहनीय सेवा पदक प्रदान किये गये :-सर्व श्री बी. चक्रवर्ती, सहायक निदेशक, से III; के.एम. माथूर, कमांडैंट 21 बटा०; आर. संथानम, कमांडैंट, ग्रुप केन्द्र, नई दिल्ली; एस.के. महिन्द्रु, कमांडैंट, 1 बटा०; - कर्नल (सेवानिवृत्त) जी. एस. सोडी, कमांडैंट, 1 सिग० बटा०; देवा सिंह, सहायक कमांडैंट, 37 बटा०; डी. डी. मिश्र, सहायक कमांडैंट, 3 बटा०; आर. के. सिंह, सहायक कमांडैंट, 55 बटा० ; अवतार सिंह, पुलिस उपाधीक्षक, 20 बटा०; राम चन्द्र यादव, पुलिस उपाधीक्षक, 32 बटा०; बी. एस. नेगी, सूबेदार मेजर, 45 बटा०; दलीप सिंह, सूबेदार, 1 बटा; जीत सिंह, सू० (रेडियो आपरेटर), 1 सिग० बटा०; ए. डी. जांगले, स० इ०, ग्रुप केन्द्र, नागपुर; धन सिंह, हे० का०, 36 बटा; भीम बहादुर का०, 24 बटा० और बी. के. कौल, सूबेदार मेजर (लिपिक वर्ग) महानिदेशालय।

गृहराज्यमंत्री श्री लस्कर द्वारा प्रशंसा

श्री एन. आर. लस्कर, गृहराज मंत्री ने 10 अप्रेल, 1982 को ग्रुप केंद्र बनतलाब जम्मू का निरीक्षण किया। उन्होंने क्वार्टर गार्ड, परिवार-कल्याण-केन्द्र और अस्पताल का भी दौरा किया, जहाँ उन्होंने रोगियों को मिठाइयाँ बाँटीं। उन्होंने 'सैनिक सम्मेलन' में भी भाषण दिया।

श्री आर. एन. लस्कर, गृह राज्य मंत्री ने 16 अप्रेल 1982 को अलांग पर 31 बटालियन का निरीक्षण किया। जवानों को सम्बोधित करते हुये, उन्होंने कहा कि के०

रि० पु० बल की प्रतिष्ठा ऊंची है। फलस्वरूप, के० रि० पु० बल के लिये राज्यों की मांग बढ़ रही है। उन्होंने यह भी बताया कि वह इस बल की समस्यानों और कठिनाइयों को भलीभाँति जानते हैं और के० रि० पु० तथा अन्य बलों के विविध प्रस्तावों पर स्वयं विचार कर रहे हैं।

रक्त और नकद दान

भारतीय रेडक्रास सोसाइटी के अनुरोध पर, 8 जून 1982 को किंग्ज़वे कैम्प में स्थित 1 बटालियन के मुख्यालय में आयोजित एक विशेष शिविर में, दिल्ली में निरत के०रि०पु० बल के अधिकारियों और जवानों ने 16,750 सी० सी० रक्त दान किया।

रुग्ण मानवता की सहायता के लिये, के० रि० पु. बल रेड क्रास की यथाशक्ति सभी मदद करता रहा है। 1978 में थल सेना, जलसेना, वायुसेना, राष्ट्रीय केडेट कोर, पुलिस, के० रि० पु० बल, सी० सु० बल, भा० ति० सी० पु०—सभी बलों में सब से अधिक रक्त दान करने के उपलक्ष्य में, भारतीय रेड क्रास सोसाइटी की दिल्ली राज्य शाखा की संस्थित ट्राफी, के० रि० पु० बल ने जीती थी।

1980 में, वार्षिक रक्तदान के साथ, के० रि० पु० बल ने 1,600 कम्बल भी रेड क्रास सोसाइटी को दिये थे। पिछले वर्ष, के० रि० पु० बल ने 348 यूनिट रक्तदान किया था।

वारपेटा (असम) की भारतीय रेड क्रास सोसाइटी को, 36 बटालियन ने 2 अप्रेल, 1982 को, एक हज़ार रुपये का दान किया। यह धनराशि उस बटालियन ने एक समारोह के आयोजन द्वारा अर्जित की थी।

बहिरों की सहायता

डॉ० डी. के. नंदी, अवैतनिक मंत्री, अखिल भारतीय बधिर संगठन, दिल्ली ने, संगठन की ओर से के०रि०पु० बल के सभी सदस्यों को बहरों के लिये 28, 277 रु० का दान देने के लिये, धन्यवाद दिया है।

जल पम्प उद्घाटन

पुलिस उपमहानिरीक्षक अगरतला, जिला मजिस्ट्रेट, पच्छिमी त्रिपुरा और पुलिस उपमहानिरीक्षक, मद्रास ने अधिकारियों और जवानों द्वारा किये गये कार्य की प्रशंसा की है। श्री एस. एन. माथुर, पुलिस उपमहानिरीक्षक द्वारा स्वीकृत एक जलपम्प का उद्घाटन 11 मार्च, 1982 को श्री के. एल. दुबे, पुलिस उपमहानिरीक्षक मद्रास ने किया।



रक्तदान देते हुये के० रि० पु० बल के सदस्य

एक पुरुष को जीवनदान

कान्स्टेबल महेन्द्रनाथ सिंह (4 बटालियन) ने 9 जून 1982 को रंगपो (सिक्किम) के

निवासी, श्री माणेराम राय को टीस्टा नदी में डबने से बचाया। नदी पर गये हुये इस सिपाही ने वहाँ किनारे पर खड़ी भीड़ की आर्त पुकारें सुनीं। बस वह तुरन्त कपड़े उतार कर, नदी में कूद पड़ा। उसने श्री मणिराम राय के बाल पकड़ लिये और 20 गज तक धारा के विरुद्ध तैर कर किनारा पकड़ा। जनता ने प्राथमिक चिकित्सा की।

स्थानीय-प्रशासन और जनता ने इस जनसेवा की प्रशंसा की है।

अग्निशमन

रंगपो (सिक्किम) में 28 मई, 1982 को, 4 बटालियन के जवानों ने एक बीड़ी की फैक्ट्री को भस्मीभूत होने से बचा लिया। फ़ैक्ट्री से 500 ग़ज़ दूर पर खड़े एक सन्तरी ने आग को देखा और ख़तरे की घंटी बजाते हुये कम्पनी कमांडर को सूचित किया। तुरन्त कम्पनी कमांडर और जवानों ने पहुँच कर, निकटवर्ती भवनों में आग को फैलने से रोका और बहुत सारी सम्पदा को बचा लिया।

शिकायतों का समाधान

मिज़ोरम के बाउबत ग्राम में, मिज़ो राष्ट्रीय मोर्चे के राजद्रोहियों द्वारा लगाई घात में, श्री आई. एस. डागर, पुलिस उपअधीक्षक, 38 बटा० का स्वर्गवास हो गया।

22 जून, 1982 की शाम को, उस ग्राम में एक स्वयंभू लेफ़्टीनेंट की उपस्थिति की सूचना श्री डागर को मिली। खबरगीर और 12 जवानों के साथ, वह रात में 30 कि. मी. चले और राजद्रोही को पकड़ने प्रातः 4 बजे ग्राम में पहुँचे। पहुँचते ही, श्री डागर ने विशेष घेरा डाल दिया और दरवाजा खटखटाया। दरवाजा खोलने वाले को दबोच लिया गया। वही वाँछित व्यक्ति था।

उस बंदी को साथ लेकर लौटते हुए, पुलिस दल पर ग्राम से 2.5 कि. मी. दूर घात लगाई गई, जिसमें केवल श्री डागर ही का निधन हुआ। गड़बड़ी का लाभ उठाकर, बंदी बच भागा।

लगभग तीन वर्ष पूर्व, जम्मू बाजार की जलती दुकानों में, धनजन बचाने के वीरोचित मानवीय कार्य के लिये, श्री डागर बारम्बार कूदे थे। इस शौर्य के लिए, उन्हें वीरता के पुलिस पदक से विभूषित किया गया था।

श्री डागर अपने पीछे पत्नी और दो कन्यायें छोड़ गये हैं।

श्री डागर, "क्रैपलर" में नियमित रूप से लिखा करते थे। उनकी श्रद्धाञ्जलि-स्वरूप व्यापक-हित का, यह लेख प्रस्तुत है।

किसी अधीन कर्मचारी की शिक़ायतों को निपटाने के लिये सही व्यक्ति, उसका आसन्न पर्यवेक्षण-अधिकारी होता है। शिकायतों को उत्पात नहीं समझना चाहिये; बल्कि एक प्रत्यक्ष असंतोषजनक स्थिति के सुधारने का अवसर मानना चाहिये। अतएव, पर्यवेक्षण अधिकारी को शिक़ायत, एक सुझाव के रूप में लेना चाहिये । आखिरकार, बहुत से मामलों में शिक़ायत और सुझाव में फर्क़, सिर्फ़ उनको प्रकट करने के तरीक़े का होता है।

बुरी भाँति निपटाने पर, शिक़ायत या फ़रियाद बिगड़ जाती है। कारग़र रूप से शिक़ायतों को निबटाने पर, एक अच्छा अधिकारी नेता बन सकता है। एक अच्छा नेता जानता है कि उसे तुच्छ दीखने वाली शिक़ायत, अन्तर्ग्रस्त मनुष्यों को गम्भीर मामला होता है।

शिक़ायत से असंतोष फैलता है और वह उस काम के ख़िलाफ़ होती है, जिसे कर्मचारी, अनुचित, बेजा और न्याय-विरुद्ध सोचता है, विश्वास करता है और समझता है । कोई शिक़ायत बताई गयी है या वाजिब है—यह कोई बात महत्त्वपूर्ण नहीं है और यह भी बात कोई सार नहीं रखती कि कर्मचारी ग़लत या सही है; किन्तु वह किस भाँति महसूस करता है, यही मुख्य बात है।

कारण निवारण—यहाँ भी चिकित्सा से पूर्वोपाय उत्तम है। शिक़ायतों का हटाने की तुलना में, उनकी रोकथाम ज्यादा ज़रूरी है। रोष और उससे उत्पन्न शिक़ायत के कारणों को दूर करने की हरेक रोकथाम करनी चाहिये। जब कोई शिक़ायत ख़ुद-ब-खुद प्रकट हो, तब पर्यवेक्षण-अधिकारी को उपद्रव के मूल कारण को तुरन्त जानना चाहिये। उसे मामले की और उसके कारणों की पूरी छानबीन करनी चाहिये और तब बुद्धिमानी से कार्रवाई करनी चाहिये।



स्व. आई. एस. डागर

प्रकट करने के अवसर खुले रहने और नेता बने रहने के वास्ते, पर्यवेक्षण अधिकारी में कर्मचारियों का विश्वास होना चाहिये, ताकि वे निडर उसके पास आकर अपनी शिक़ायतें बता सकें और उसे वे शिकायतें बिना दग़ाफसली और दया के बगैर, निपटाना चाहिये । नेता के उत्तर दृढ़ निश्चयी होने चाहिये । स्वयं को असमर्थ पा कर, उसे अपने वरिष्ठ अधिकारी को मामला बताना चाहिये। ऐसे अधिकारी को अच्छे सम्बन्ध बनाये रखने के लिये, यह जानना जरूरी है कि कब और कैसे 'ना' करे। उसे दूसरे अधिकारी पर अपनी ज़िम्मेदारी नहीं टालनी चाहिये और कभी ग़लती करने पर, उसे बिना न नकुच के, स्वीकार करनी चाहिये। सुधारने की कार्रवाई उसे तुरन्त करनी चाहिये। ऐसा अधिकारी कभी तर्क नहीं करता और ना ही अपने अधीनों से गाली खाता है।

कार्रवाई की योजना—शिक़ायतों और फ़रियादों से निपटने के लिये, कार्रवाई की योजना बनाना ज़रूरी है। कार्रवाई की विधि सोचे बिना, समस्याओं को उभरने नहीं देना चाहिये। अच्छी प्रविधि तो यह है कि विभिन्न समस्याओं का वह पूर्व अनुमान करे और फिर उनमें से हरेक के निपटने की तरकीब सोचे।

इस विषय में, प्राथमिक साक्षात्कार स्वीकार करने के मौलिक ध्येय अधिकारी को सदा ध्यान में रखना चाहिये। साक्षात्कार के समय, ये सुझाव उपयोगी हो, सकते हैं : साक्षात्कार एकान्त में करना चाहिये और उसमें कम से कम रोकटोक होनी चाहिये । यदि कर्मचारी भावावेश में उद्विग्न हो तब अधिकारी को शान्त रहना चाहिये और धीरे

धीरे धीमे और मैत्रीपूर्ण स्वर में बोलना चाहिये। मामले के सारे तत्व नहीं मिलने पर उसे प्रथम सम्मेलन में, कोई निर्णय नहीं लेना चाहिये। उसे शिक़ायतकर्ता को बता देना चाहिये कि वह फिर उससे मिल कर वार्तालाप कर सकता है; क्योंकि कर्मचारी के हो-हल्ला मचाने की संभावना को नज़र-अन्दाज़ नहीं करना चाहिये।

मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध स्थापित करना ज़रूरी है, जिससे साक्षात्कार के बाद, कर्मचारी में संगठन के सक्रिय सदस्य बने रहने की भावना बनी रहे।

निर्णय-व्यवस्था—शिक़ायत पर निर्णय लेने के लिये, अधिकारी को तथ्य इकट्ठे कर अध्ययन करना पड़ता है और सभी संभव समाधानों की सूची बनानी पड़ती है। और वह प्रत्येक समाधान को इन कसौटियों पर कसता है—(क) क्या वह विभागीय नीतियों, नियमों और क़ानूनों के अनुरूप है ? (ख) व्यक्तियों के अनुशासन, कार्यकुशलता और मनोबल पर उसका असर क्या होगा? (ग) संगठन को सरलतापूर्वक चलाने में उसका क्या अंशदान होगा ?

पर्यवेक्षण अधिकारी को वर्तमान स्थितियों में यथावश्यक और यथासंभव परिवर्तन करना चाहिये। उसको कर्मचारियों से मशवरा करना चाहिये और यदि आवश्यक हो, तब समाधान के औचित्य के बारे में उन्हें बता देना चाहिये।

शिक़ायतों के प्रति आसन्न पर्यवेक्षण अधिकारी के रवैये से या तो स्थिति बिगड़ेगी या मधुर समाधान और काम करने के लिये उपयुक्त वातावरण बनेगा। शिकायतें दूर करने वाला अधिकारी, अधिकतर उनसे कुछ लेता है, न कि उनसे कुछ धर दबोचता है। वह अपना काम कर रहा है। आखिर, वह एक नेता बनने जो जा रहा है।

त्रिपुरा राज्य से शिविर भूमि

त्रिपुरा राज्य में अपनी बटालियनों के लिये एक शिविर स्थल के रूप में विकसित करने के वास्ते, चम्पक नगर (पच्छिमी जिलों) में, के०रि०पु० बल ने इन्हीं दिनों 189.18 एकड़ भूमि वहाँ की सरकार से प्राप्त की है। आगे विकास की जिम्मेदारी, पुलिस उपमहानिरीक्षक अगरतला ने 63 बटालियन को सौंपी है, जिसने भूमि को चौरस कर दिया गया है।

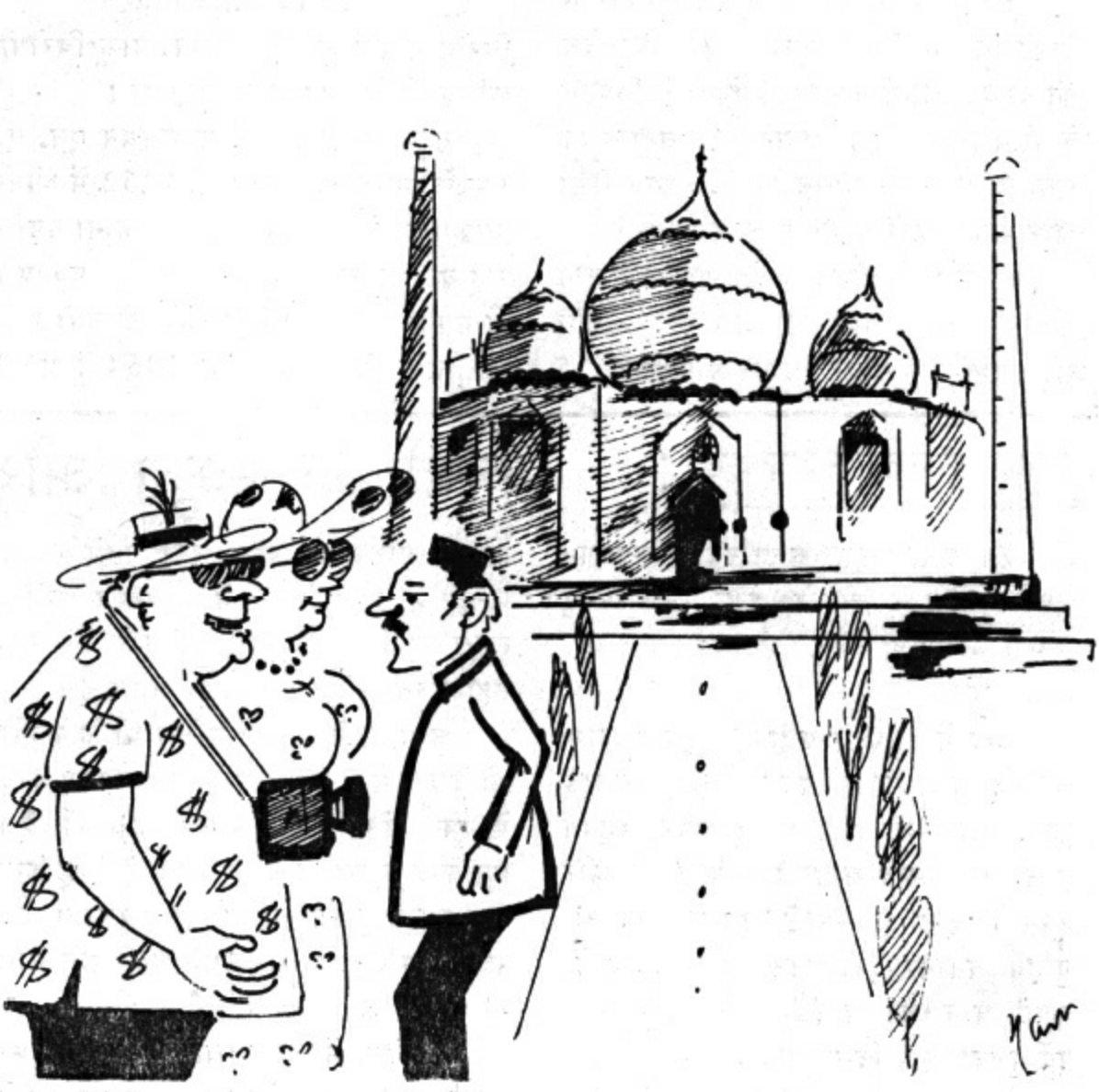
विधान सभाओं के चुनाव में के०रि०पु० बल का योगदान

महानिदेशक, के०रि०पु० बल को लिखे अपने पत्र में, श्री टी. एन. चतुर्वेदी, गृह सचिव ने 1982 के विधानसभाओं वाले चुनाव में के०रि०पु० बल के कार्य की प्रशंसा की है। निम्नलिखित उसका अविकल रूप है—

'पश्चिमी बंगाल, केरल, हरियाणा और हिमाचल प्रदेश में मई 1982 में हुये विधान सभाओं के चुनावों में, के० रि० पु० बल पर बड़ा दवाब पड़ा, क्योंकि पूर्वोत्तर अंचल, पंजाब और साम्प्रदायिक दृष्टि से कुछ राज्यों के

नाजुक क्षेत्रों में वर्तमान प्रबन्धों को बिना छेड़े हुए, लगभग 14 बटालियनों की जनशक्ति निरत की गयी। इस जनशक्ति को पाने के लिए, प्रशिक्षण संस्थानों और ग्रुप केन्द्रों जैसे स्थिर प्रतिष्ठानों तक से जनशक्ति लेकर लगानी पड़ी। परिचालन योजना के अनुसार, बल को अपने सेवास्थलों पर अविलम्ब जाना पड़ा।

'के. रि. पु. बल के मुख्यालय द्वारा प्रबन्धों के उत्तम समन्वय और के.रि.पु. बल के क्षेत्रीय अधिकारियों की मुख्यतः दिलचस्पी लेने के कारण ही, एक विस्तृत क्षेत्र में के.रि.पु. बल को निर्विघ्न निरत किया जा सका। एक से अधिक राज्यों ने निर्वाचन काल में के.रि.पु. बल द्वारा निभाई नई भूमिका की सराहना की है। के० रि० पु० बल के उन सभी सम्बद्ध अधिकारियों और जवानों को, जिन्होंने चुनाव-प्रबन्धों में सहयोग दिया था, यदि आप मेरी प्रशंसा पहुँचा सकेंगे, तब मुझे प्रसन्नता होगी।"



और ताज बनाने की तकनीकी तुमने कहाँ से आयात की ?

नये पुलिस महानिरीक्षक (मुख्यालय)

श्री शिव मोहन सिंह ने के० रि० पु० बल के मुख्यालय में 12 जुलाई 1982 को महानिरीक्षक (मुख्यालय) का पदभार ग्रहण किया।

मध्यप्रदेश, पूर्वोत्तर और जम्मू-कश्मीर के क्षेत्रों में, डाकू-विरोध अभियान में आपने बड़ा नाम कमाया है।

1928 में उत्पन्न, आप विज्ञान के स्नातक हैं। 1949 में सागर (म० प्र०) में पुलिस उपधीक्षक के रूप में प्रशिक्षण पाकर, 1950 में तत्कालीन विध्य प्रदेश में आपने सेवा आरंभ की। पुलिस उपअधीक्षक और अधीक्षक दोनों पदों पर, डाकू-विरोधी अभियानों में आपने छतरपुर में भाग लिया, जिसको डाकुओं के तीन गिरोहों के सक्रिय होने के कारण, उपद्रव ग्रस्त जिला घोषित किया गया था।

1960 में, आपको नागालैंड सरकार में डेप्यूटेशन पर भेजा गया, जहाँ मध्यप्रदेश की दो बटालियनें नागा विद्रोहियों से निपटने के लिये निरत थीं। आपने 12 बटालियन एस. ए. एफ. का कमान लिया, जिसने सेमा और आओ क्षेत्रों में उत्तम काम किया।

डेप्यूटेशन से लौटने पर, आपभिंड में ज़ोन कमांडर बनाये गये, इस क्षेत्र में भी, रूपा और लाखन के सहित, प्रमुख डाकुओं के 15 गिरोह सक्रिय होने के कारण, डाकू-विरोधी अभियानों में आपको जुटना पड़ा।



श्री शिव मोहन सिंह

तदुपरान्त, आप 4 बटालियन एस. ए. एफ. के कमांडर बने, जिसको 1962 में चीनी आक्रमण के पश्चात् असम में जाना पड़ा। यह बटालियन बाद को के० रि० पु० बल में नवयांग (असम) में विलीन हो गयी।

असम से निवृत्त होकर, 1964 में आपने जबलपुर के पुलिसधीक्षक के रूप में, म० प्र० राज्य की सेवा की।

1965 में आपने 20 बटालियन एस. ए. एफ. का कमान संभाला, जिसे सशस्त्र

पाकेस्तानेयों को घुसपैठ के बाद श्रीनगर में वायुयान द्वारा भेजा गया। वहां उसने श्रीनगर-लेह मार्ग पर वयालपुल को बचाकर और 'मुजाहिदों' को खग तथा गंधारवाल क्षेत्र से निकाल कर उत्तम काम किया। जम्मू-कश्मीर लौटने पर, आप भोपाल में 7 बटालियन एस. ए. एफ. के कमांडैंट नियुक्त हुये और तदनन्तर, पुलिस उपमहानिरीक्षक एस. ए. एफ. और पुलिस उपमहानिरीक्षक जबलपुर रहे।

1978 में, आप दिल्ली में केन्द्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल के पुलिस उपमहानिरीक्षक, पच्छिमी रेंज, बन कर आये। 1980 में, आप मध्यप्रदेश को लौटे और जनवरी 1982 में, अतिरिक्त पुलिस महानिरीक्षक एस. ए. एफ. के रूप में आपने पदोन्नति पाई।

विभिन्न अभियान क्षेत्रों से सम्बद्ध अन्य पदकों के सहित, राष्ट्रपति के विशिष्ट सेवा पुलिस पदक से आपको विभूषित किया गया है।

ग्रुप केन्द्र नागपुर :

बच्चों को स्कूल और शिशुपालन गृह

ग्रुप केन्द्र नागपुर का परिवार-कल्याण-केन्द्र 1972 में स्थापित हआ था; किन्तु उसको उपयुक्त स्थान छै वर्ष बाद ही, मिल पाया।

केन्द्र में 100 से अधिक महिलायें काम कर रही हैं। साधारणतया, यहाँ सिलाई उच्च स्तर की होती है और पहनने वालों को पसन्द आती है। केन्द्र में और काम ये होते हैं—मोज़े बुनना, काढ़ना, गुड़िये बनाना, प्लास्टिक बेंत की चीजें, कपड़े धोने का पाउडर, निकल पॉलिश, पर्दे बुनना इत्यादि-इत्यादि।

शिशु विहार नर्सरी स्कूल, परिवार-कल्याण-केन्द्र का अभिन्न अंग है। उसमें किंडर गार्टन की छोटी-बड़ी दोनों कक्षायें लगती हैं। परिसर में स्थिति केन्द्रीय स्कल की I कक्षा में प्रवेश पाने के लिए, यहाँ बच्चों को तैयार किया जाता है।

काम करने वाली महिलाओं के बच्चों की देख-रेख को परिवार-कल्याण-केन्द्र में एक 'क्रेच' (शिशु पालन गृह) भी है। ग्रुप केन्द्र के अस्पताल की मदद से, यह केन्द्र रोग-प्रभाव-मुक्ति का अभियान चलाता है। प्रत्येक महिला को 100 रु० प्रति मास की औसत आय हो जाती है।

ग्रुप केन्द्र में महिलाओं को वस्त्रों को काटने-सीने, फल-परिरक्षण, अचार-मुरब्बे बनाने, मोजे बनाने, कढ़ाई और बुनाई में प्रशिक्षण दिया जाता है। समय-समय पर, परिवार-नियोजन, स्वास्थ्य और सफाई, तथा नवजात शिशु की रक्षा पर भाषण दिलवाये जाते हैं।

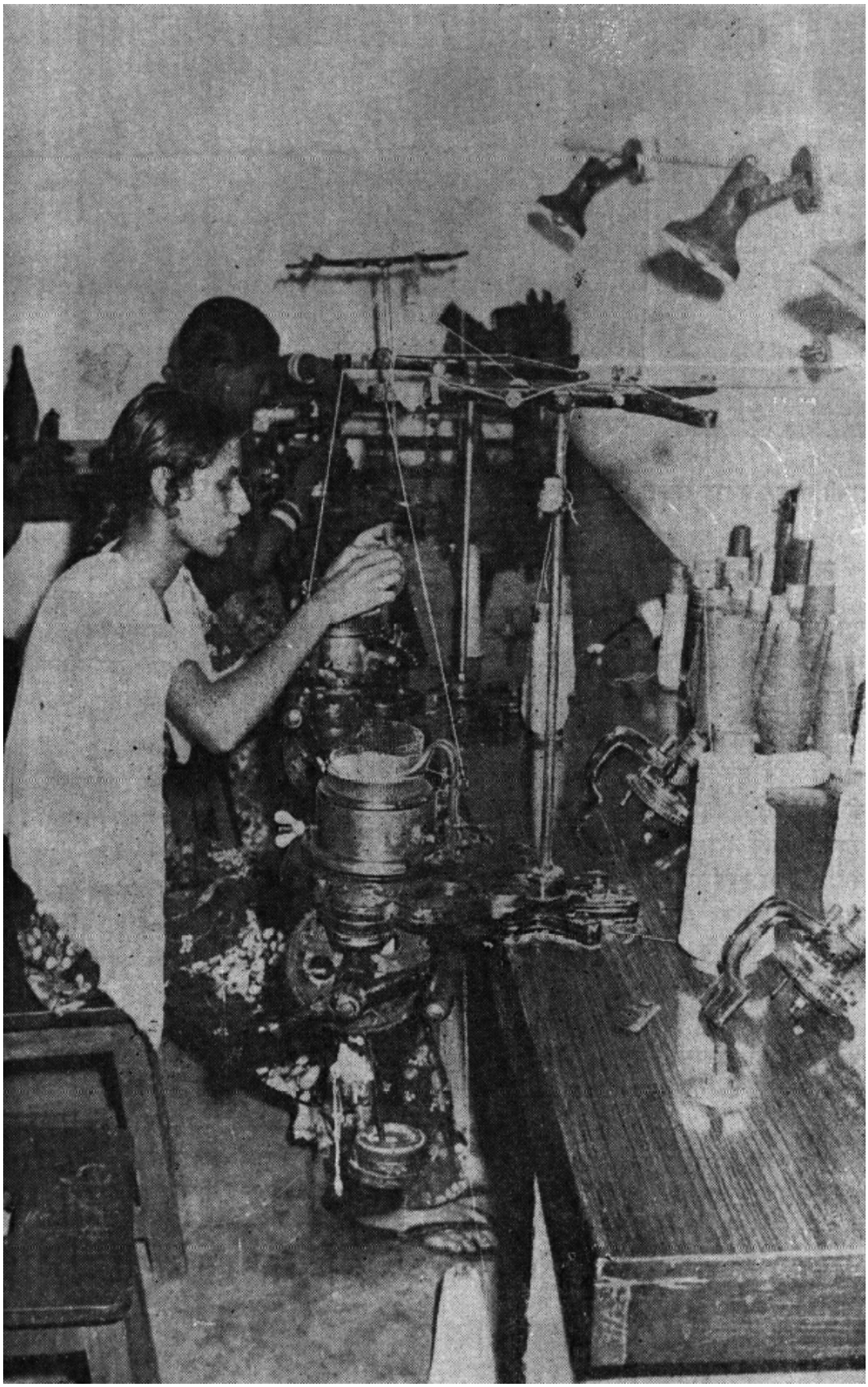
भावी योजनाये—अधिकांश महिलाओं को रोजगार 50% अधिक आय दिलाने के लिए, परिवार कल्लाण केन्द्र की भावी योजना लघुउद्योगों की स्थापित करने की है।

इन उद्योगों में अगरबत्तों, दर्जीचाक, मोमबत्तों, तरल साबुन और पापड़ बनाने को शामिल किया जायेगा। निरक्षर तथा अर्द्धशिक्षित महिलाओं के लिए, प्रौढ शिक्षा देने की भी परियोजना है।

दिल्ली ग्रुप केन्द्र—नकद राशि और सोना दोनों की प्राप्ति

ग्रुप केन्द्र, नई दिल्ली का परिवार-कल्याण केन्द्र 1973 में स्थापित हुआ था। शुरू में, उसकी गतिविधियां, जवानों के परिवारों द्वारा कटे-कटाये कपड़ों के सीने तक सीमित थीं। समय बीतने पर, खाद्य-परिरक्षण और डिब्बा-बन्दी की शाखा, मौज़े-बुनने की शाखा, और लिज्ज़त पापड़ की शाखा को लाभदायक काम और बच्चों को स्कूल जाने से पूर्व की शिक्षा देने के लिये, एक नर्सरी स्कूल चलाया गया। पिछले वर्ष इन परियोजनाओं से लगभग 200 महिलाओं और 200 बच्चों को लाभ हुआ।

वर्दी की सिलाई के लिए, केन्द्र ने 10 हाथ और 50 पैर से चलानी वाली मशीनों को, सरकारी कीमत पर खरीदा है। शेष महिलायें अपनी मशीने लाती हैं, जिनको सिंगर कम्पनी और भारतीय स्टेट बैंक के द्वारा आसान क़िस्तों पर खरीदा गया है। महिलायें अपने बच्चे 'क्रेच' (शिशुगृह) में काम करने के समय, छोड़ देती हैं। एक सिलाई शिक्षिका भी नियुक्त की गयी है। महिलायें 100 से लेकर 125 रु० तक प्रतिमास कमा लेती हैं।



मोज़ों की बुनाई—इस शाखा में 10 ऊनी और 2 नाईलॉन मोज़ों के बुनने की मशीनें हैं। परिवारों को प्रशिक्षण तथा इन मशीनों की देख-रेख के लिये, एक सिपाही (मौज़े निर्माता) नियुक्त किया गया है।

ग्रुप केन्द्र, उसकी संलग्न बटालियनों, I सिगनल बटालियन, महानिदेशालय तथा पुलिस महानिरीक्षक और उपमहानिरीक्षक दिल्ली के कार्यालयों की आवश्यकताओं को, यह शाखा पूरी करती है। एक दिन में एक महिला 18 से 24 मौजों के जोड़े तक ओसतन बुन सकती है और इस प्रकार, कोई महिला भी 350 से 450 रु० तक प्रतिमास औसतन कमा लेती है।

लिज्जत पापड़ शाखा—लिज्जत पापड़ शाखा में, 40 महिलायें काम करती हैं। उन्हें एक किलो ग्राम पापड़ बेलने में 2 रु० मिलते हैं। कोई भी महिला अपने फ़ालतू समय में 5 किलो ग्राम पापड़ आसानी से बेल सकती है और इस प्रकार 10 रु० प्रतिदिन कमा सकती है। लिज्जत पापड़ वालों ने इस परिवार-कल्याण-केन्द्र को 10,001 रु० प्रति वर्ष दान करना स्वीकार किया है।

इस शाखा में वर्ष में 300 दिन काम करने वाली महिलाओं को 5 से 10 ग्राम सोना या उसके बराबर नकद रुपये का बोनस मिलता है।

नर्सरी स्कूल—परिवार-कल्याण-केन्द्र के भवन में एक नर्सरी स्कूल चल रहा है। उसमें छोटी नर्सरी, बड़ी नर्सरी और किंडरगार्टन की तीन वृक्षाये हैं। पिछले सत्र में, लगभग 200 बच्चों ने शिक्षा पायी। पिछले सत्र से ही, बच्चों के लिये एक पुस्तकालय भी खोला गया है।

सामूहिक डिब्बा बन्दी और खाद्य परिरक्षण शाखा—यह शाखा भारत सरकार के खाद्य और पोषाहार मंडल के अधीन चल रही है। विशेष देख-रेख में सस्ते भावों पर उच्च पौष्टिक तत्व वाले पदार्थों को बनाने की यहाँ सुविधाये हैं।

फलों और सब्जियों के परिरक्षण के लिए, यहां दो सप्ताह का कोर्स भी चलाया जाता है । कोर्स के पूरे होने पर, छात्रों को कृषि मंत्रालय का प्रमाण-पत्र प्रदान किया जाता है। अब तक, लगभग 350 महिलाओं ने इस कोर्स को किया है।

सफलतायें—निरन्तर पिछले तीन वर्षों से, के० रि० पु० बल की वार्षिक कल्याण प्रदर्शनियों में, इस परिवार-कल्याण-केन्द्र को प्रथम स्थान पाने का गौरव है।



ग्रुप केन्द्र II अजमेर के परिवार केन्द्र की स्वेटर बुनाई शाखा में राजस्थान के मुख्य मंत्री श्री एस. सी. माथुर

ग्रुप केन्द्र II अजमेर—

मोजों का उत्तम भण्डार

ग्रुप केन्द्र II अजमेर का परिवार-कल्याण-केन्द्र जब 1968 में खुला, तब कटे-कटाये वस्त्रों की सिर्फ़ सिलाई होती थी। अब 150 महिलायें वस्त्र सीने, स्वेटर-बुनने, कपड़े के थैले बनाने और कढ़ाई के काम में लगी हुयी अपनी आय बढ़ाती हैं।

माताओं के काम करते समय, उनके बच्चों के पढ़ने के लिये, परिवार-कल्याण-केन्द्र में नर्सरी (शिशुगृह) है। केन्द्र में ये चार शाखायें हैं :

कटाई शाखा में,—वर्दी के सभी स्तरों के नमूने रखे रहते हैं। इन नमूनों की मदद से, महिलायें वस्त्र काटती हैं; एक प्रशिक्षित दर्ज़ी भी उनकी सहायता करता है। कम से कम 20 महिलाओं ने इस काम में निपुणता पा ली है।

सिलाई शाखा में—हाथ और पैर दोनों की मशीनों पर महिलायें काम करती हैं। खाकी वर्दी की क़मीज़ें और पतलूने, निकरें, मफ्ती (सादी) पतलूनें और क़मीज़े, सफ़ेद निकरें, ऊनी क़मीज़ें व पतलूनें, वे सी लेती हैं।

मोजे बुनने की शाखा में—सफ़ेद और खाकी मोज़े बुने जाते हैं। बाज़ार के मोज़ों

के मुकाबले, यहां के बुने मोज़े सस्ते और ज्यादा चलने वाले होते हैं। इन मोज़ों की ज़्यादा मांग होने के कारण, महिलाये यहाँ लगभग 250 रु० प्रति मास कमा लेती हैं। इस ग्रुप केन्द्र से संलग्न बटालियनों की आवश्यकतायें, यह शाखा पूरी कर देती है।

विविध शाखा में-स्वेटर, जर्सी, कढ़े हुये थैले, महिला-पर्स, सन के थैले, टी-कोज़ी, चित्र, कढ़े हुये वस्त्र जैसी वस्तुयें बनाई जाती हैं।

परिवार कल्याण केन्द्र में एक मांटेसरी स्कूल है, जहाँ बच्चे शिक्षा पाकर परिसर में स्थित प्राथमिक स्कूल की प्रथम कक्षा में, प्रवेश पाते हैं।

ग्रुप केन्द्र दीमापुर प्रारंभिक कठिनाइयाँ

ग्रुप केन्द्र दीमापुर (नागालैंड), 1 जुलाई, 1981 को स्थापित हुआ । इस समय दीमापुर के आवाजाही कैम्प में इस केन्द्र को स्थान मिला हुआ है।

अपर्याप्त स्थान होने के कारण, कोई अलग परिवार-कल्याण-केन्द्र स्थापित नहीं हुआ है। बहरहाल, इस ग्रुप केन्द्र और इसकी संलग्न बटालियनों की जरूरतें पूरी करने के लिए इस केन्द्र के परिवार, वर्दियों के सीने में भाग लेते हैं और यूनिट के दर्जियों की मदद करते हैं।

परिवारों की आय बढ़ाने लिए, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् की सहायता से, सिलाई, कढ़ाई, बिस्किट-निर्माण, खाद्य पदार्थों के परिरक्षण इत्यादि में प्रशिक्षण देने के लिये, दो सप्ताह का एक कोर्स चलाया गया है, जिसका लाभ 18 महिलाओं ने उठाया है। x

ग्रुप केन्द्र आवडी

1981 में गतिविधियों में वृद्धि

ग्रुप केन्द्र आवडी के परिवार-कल्याण केन्द्र ने 1975 में काम करना शुरू किया था। जो सिलाई विभाग 23 महिलाओं से शुरू हुआ था, उसमें 1981 तक 76 महिलायें हो गई थीं और सिलाई के प्रशिक्षण की सुविधायें मिलने पर, यह संख्या पिछले छ मासो में 156 पहुँच गई है। इसी समय, तकियों, खिलौनों, हिना (मेंहदी) चूर्ण, पिसी मिर्च और अगर बत्ती के सहित अन्य उत्पादन शुरू किये गये।

1981 में, वर्दी के ये वस्त्र सिले गये—12,821 पतलूने (खाकी जीन); 4,488 क़मीजे (ख़ाकी जीन); 10,837 खाकी कमीजें; 5,493 सफ़ेद पतलूनें; 3,494 सफ़ेद क़मीजें; 1,200 अंगोला कमीज़ें 984 पतलूनें (खाकी ज़ीन) और 599 सफेद निकरें।

यह केन्द्र, ग्रुप केन्द्र पल्लीपुरम के लिये भी सिलाई करता है और उसके लिये, 4,000 पतलूनों (खाकीज़ीन) और 4,000 खाकी कमीज़ों की सिलाई यहाँ हुई है।

पारेवार कल्याण-केन्द्र में काम करने वाली महिलाओं को 1981 में 1,49,693 रु० से अधिक की धनराशि दी गई।

यह केन्द्र, एक नर्सरी और किंडर —गार्टन स्कूल चला रहा है। जब मातायें परिवार कल्याण केन्द्र में काम पर होती हैं, तब यह स्कल, उनकी सन्तानों की देख-रेख करता है।

हरेक महिला 150 रु० से 250 रु० मासिक कमा कर, जवानों की आय में वृद्धि करती है।

कितने ही स्थानीय निर्माताओं ने थोक - मेंहदी खरीदने के लिये, केन्द्र से नमूने - और भाव मांगे हैं।

दिल्ली में स्थित अपेक्स (उच्च) कल्याण समिति को, 55,000 रु. की लागत पर अर्द्ध-स्वचालित बेकरी चलाने की एक परियोजना स्वीकृति के लिये भेजी गयी है।

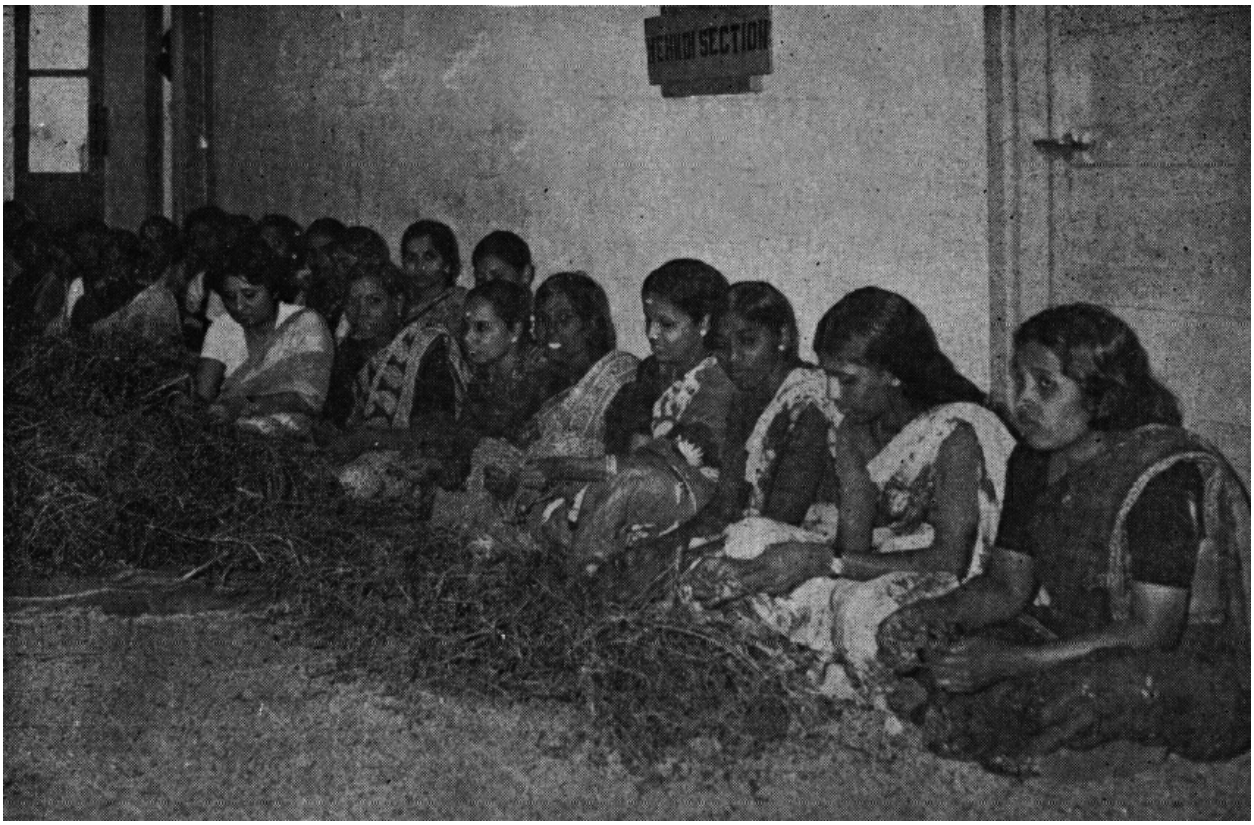
ग्रुप केन्द्र मुकामेघाट : प्रगति के पथ पर

ग्रुप केन्द्र मुकामेघाट का परिवार कल्याण केन्द्र 1969 में स्थापित हुआ। भारत सरकार द्वारा निर्धारित भावों पर, यहाँ महिलायें वर्दीवस्त्र की सिलाई करती हैं। वे कढ़ाई, बुनाई, मौज़े, जर्सी, निकॅल पॉलिश और। मोमवत्ती बनाने का काम करती हैं।

पटना जिले के उद्योग विभाग में यह केन्द्र, लघु उद्योग के रूप में पंजीकृत हो चुका है। 10 फरवरी 1982 को, श्री डी. पी. मिश्रा, पुलिस महानिरीक्षक से. II ने यहां एक सिलाई-कढ़ाई के स्कूल का उद्घाटन किया।

14 मार्च 1982 को, ग्रुप केन्द्र में एक समारोह हुआ। मुद्रिकारेल में बच्चों के मटरगश्ती का प्रबन्ध किया गया।

परिवार कल्याण केन्द्र में तीन वर्ष के बच्चों तक की शिशु स्वास्थ्य प्रदर्शनी भी लगाई।



ग्रुप केन्द्र आवडी के परिवार कल्याण केन्द्र की मेंहदी शाखा

ग्रुप केन्द्र गौहाटी

विविध धंधों में 550 महिलायें प्रशिक्षित

सहकारी भंडार से, 7,000 रु० की प्राथमिक वित्तीय सहायता से ग्रुप केन्द्र गौहाटी में, 1 जून 1975 को एक परिवार-कल्याण-केन्द्र स्थापित हुआ। 1981-82 में, जवानों के परिवारों को 98,581 रु० का पारिश्रमिक देकर, इसने 32,672.89 रु० का लाभ कमाया।

शुरू-शुरू में, परिवार कल्याण-केन्द्र का काम केवल वस्त्र सीना ही रहा। अधिक अवसर प्रदान करने के लिये, निकॅलपॉलिश का निर्माण और मोजों का बुनना भी शुरू किया गया और इन धन्धों में परिवारों को प्रशिक्षण दिया गया। अब तक, 550 महिलायें प्रशिक्षण पा चुकी हैं।

ग्रुप-केन्द्र में, परिवारों की कार्य-कुशलता सुधारने के लिये, विविध कोर्स चलाये गये हैं । खाद्य परिरक्षण विभाग के निदेशन में 50 महिलाओं को खाद्य परिरक्षण और डिब्बाबन्दी की क्रिया में प्रशिक्षित किया गया। कढ़ाई का एक कोर्स भी चलाया गया

और 70 महिलायें प्रशिक्षित की गइ।

ग्रुप केन्द्र की स्थापना के समय, आवास की बहुत कमी थी। अतएव, अपनी मदद से ही परिसर में कुटीर बनाने की कल्याण-योजना आंरभ की गई। कुल 98 कुटीर निर्मित किये गये, जिनको क्वार्टरों के बनने पर तोड़ दिया गया।

परिवार-आवासों में एक पार्क भी बनाया गया। इस पार्क का नाम ग्रुप केन्द्र के उस सिपाही के नाम पर 'सिपाही रोहतास सिंह पार्क' रखा गया, जिसने जल-वितरित करते हुये, इस ग्रुप केन्द्र के जवानों और परिवारों के लिये, प्राण बलिदान कर दिये थे।

इस ग्रुप केन्द्र ने परिवारों के रसोई घरों में गैस दिलवाने का प्रबन्ध किया है। उसके सिलेंडर सहकारी भंडार बदल देता है। जवानों को व्यावसायिक गैस, शुरू-शुरू में, परिवार-कल्याण-केन्द्र द्वारा अर्जित लाभ से लगायी जा रही हैं।



ग्रुप केन्द्र गौहाटी की सिलाई शाखा

ग्रुप केन्द्र I अजमेर : सीखते काम, पावें दाम

ग्रुप केन्द्र I अजमेर का परिवार-कल्याण-केन्द्र सबसे पुराने प्रतिष्ठानों में से एक है। यह 1969 में स्थापित हुआ था और अब 85 महिलाओं को रोजगार दे रहा है।

इस परिवार-कल्याण-केन्द्र की ये मुख्य गतिविधियाँ हैं—

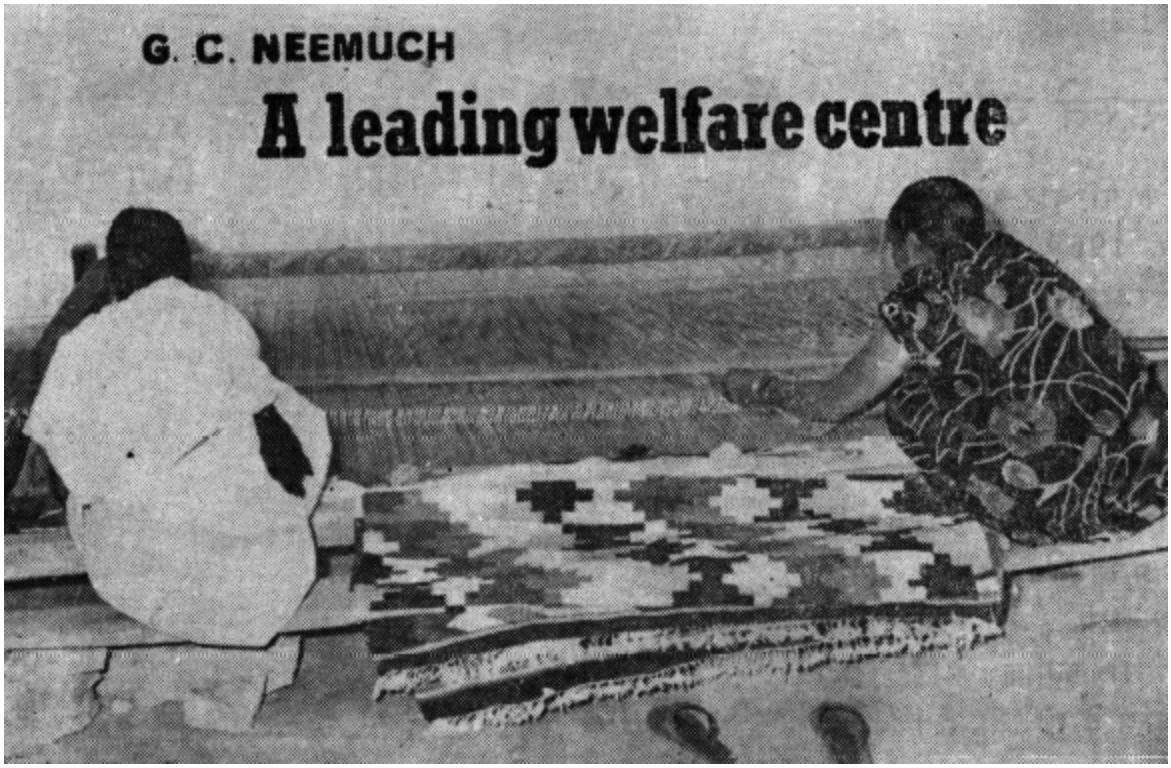
सिलाई—खाकी पतलूनें, निकरें, सादी कमीजें इत्यादि वर्दी के वस्त्र सिले जाते हैं। 150 से 200 रु० तक प्रतिमास की वृद्धि, महिलायें अपने पतियों की आय में करती हैं।

कढ़ाई और बुनाई–एक महिला प्रशिक्षिका को कढ़ाई-बुनाई के प्रशिक्षण के लिए नियुक्त किया गया है। विभिन्न प्रदर्शनियों में, यहां की महिलाओं के कढ़े वस्त्र, उच्च अधिकारियों से सराहे गये हैं।

इस समय, मोजे बुनने की दो मशीनें हैं। एक प्रशिक्षित सिपाही, महिलाओं को मोज़े बुनने का प्रशिक्षण देता है।

विविध—जल्द ही, परिवार-कल्याण-केन्द्र रूमाल और फाइल कवर बनाने की सोच रहा है। ऐसी आशा है कि सारे के० रि० पु० बल के लिए फाइल कवरों की ज़रूरत को, यह केन्द्र पूरा कर सकेगा।

परिवार-कल्याण-केन्द्र मनोविनोद के कार्यक्रम भी आयोजित करता है, जिनमें महिलाओं के लिए खेल-तमाशे भी शामिल हैं। बालकों की बुद्धि-विकास के लिए, बारह वर्ष से कम आयु के बच्चों की चित्रकारी-प्रतियोगितायें, यह केन्द्र प्रायोजित करता रहा है।



ग्रुप केन्द्र नीमच- सब ग्रुप केन्द्रों का मार्ग दर्शक

केन्द्रीय प्रशिक्षण कॉलेज के अन्तर्गत नीमच का परिवार-कल्याण-केन्द्र 1966 में स्थापित हुआ। इसको जवानों के परिवारों के कल्याण के लिये, आत्मसाहाय्य के

आघार पर, एक छोटे संस्थान के रूप में चलाया गया।

1968 में, ग्रुप केन्द्र के बनने पर, परिवार-कल्याण-केन्द्र, ग्रुप केन्द्र, नीमच के कमान में चला गया। लगातार प्रयत्नों से, परिवार-कल्याण-केन्द्र में भाग लेने वाले परिवारों की संख्या बढ़ी।

इस समय, परिवार-कल्याण-केन्द्र में, ऊनी मोज़ों, स्लैक्सों, (खाकी ज़ीन), निकरों (ख़ाकी ज़ीन), मुफ्ती वस्त्रों (सारे), बड़े कोटों, अंगोला क़मीज़ों, जसियों, निकल पॉलिशों, सावुनों, नाईलोन मोजों, विस्किटों, अचार-मुरब्बों के बनाने और कढ़ाई, कुर्सी में बेंत लगाने तथा दरी बुनने का काम हो रहा है। चित्रकारी जैसी ललित कलाओं का भी प्रबन्ध है।

आजकल, अपनी रुचि के कामों में यहां लगभग 200 परिवार लगे हुये हैं और अपनी कुशलता और कार्यों के प्रकार के अनुरूप, उनमें से हरेक 150 रु० से लेकर 300 रु० तक प्रतिमास कमा लेता है।

उत्तम स्तर और गुणवत्ता पाने के लिये परिवारों के मार्गदर्शन और देखरेख के वास्ते, नौ पूर्णकालिक महिला प्रशिक्षकों को नियुक्त किया गया है। सिलाई स्तरों को बनाये रखने के लिये, कुछ पेंशन पाने वालों को, सिले वस्त्रों के पड़तालियों और काटने वालों के रूप में, लगाया गया है।

परिवार-कल्याण-केन्द्र की वर्तमान सम्पन्नता, इस तथ्य से प्रकट होती है कि उस पर 91,489.80 रु० का वस्तुभण्डार तथा 1,26,942 रु० की परिसम्पदायें हैं।

सिलाई मशीनों की कम्पनियों से व्यक्ति गत सम्पर्कों द्वारा बैकों से ऋणों लेकर, जवानों के परिवारों को सिलाई मशीनें बाँटी गयी हैं। इसी प्रकार, परिवार-कल्याण केन्द्र के लिये भी, 40 सिलाई मशीनें प्राप्त की गई हैं।

परिवार-कल्याण-केन्द्र नीमच, केवल ग्रुप केन्द्र नीमच और उससे संलग्न बटा लियनों की ही नहीं, बल्कि सिगनल ग्रुप केन्द्र, केन्द्रीय प्रशिक्षण कॉलेज I, रंगरूट प्रशिक्षण केन्द्र I तथा के० रि० पु० बल की और अधिक ज़रूरतमन्द यूनिटों की भी मांगों को पूरा करता है। अनेकों बार, इसने सैनिक स्कूल चित्तौड़गढ़ तथा नीमच के केन्द्रीय तथा माध्यमिक स्कूल की भी ज़रूरतों को पूरा किया है।

के० रि० पु० बल की प्रतियोगिताओं में इस परिवार कल्याण-केन्द्र ने 1966 से 1976 तक, प्रथम स्थान और 1977 से 1981 तक, द्वितीय स्थान पाया है।

ग्रुप केन्द्र भुवनेश्वर :
'170' महिलाओं को रोजगार

ग्रुप केन्द्र भुवनेश्वर के परिवार-कल्याण केन्द्र में 170 महिलायें काम कर रही हैं। वर्दी के वस्त्रों के अतिरिक्त, सिलेसिलाये कपड़ों, ऊनी वस्त्रों, चमड़े के काम इत्यादि के निर्माण का प्रशिक्षण महिलाओं को दिया जा रहा है।

इस केन्द्र में, लकड़ी के खिलौने बनाने वाला एक हस्त शिल्प विभाग भी है।

कढ़ाई-सिलाई शाखा- मेसर्ज़ सिंगर एन्ड कम्पनी से अनुबद्ध एक सिलाई-कढ़ाई का विद्यालय 15.4.82 से आरंभ हो गया है। उसी कम्पनी की एक प्रशिक्षित अध्यापिका को सिलाई, कढ़ाई और बुनाई में प्रशिक्षण देने को नियुक्त किया गया है।

अब तक, 50 महिलायें इस विद्यालय में भर्ती हो चुकी हैं। यह पाठ्यक्रम 6 मास की अवधि का है, जिसके अन्त में, परीक्षा ली जायेगी। सफल महिलाओं को डिप्लोमा दिया जायेगा, जो सिलाई अध्यापिका की नियुक्ति के लिये मान्यता प्राप्त माना जायेगा। इस समय, 39 सिलाई मशीनें और 1 बुनाई मशीने उपलब्ध हैं। इन मशीनों और कक्षामों को चलाने के हेतु आवासीय सुविधा ग्रुप केन्द्र से प्राप्त है।

बेकरी शाखा– परिवार कल्याण केन्द्र में, एक बेकरी शाखा भी चल रही है। उसमें ब्रेड, बन, केक और नमकीन बिस्किट नियमित रूप से बनाये जाते हैं।

यह परिवार कल्याण-केन्द्र, श्री योगेन्द्र मकवाना समेत, अनेक विशिष्ट आगन्तुओं से प्रशंसा पाता रहता है।

ग्रुप केन्द्र हैदराबाद :

उत्तम चीजें-सस्ते दाम

ग्रुप केन्द्र हैदराबाद का परिवार-कल्याण केन्द्र एक छोटे पैमाने पर 1969 में प्रारंभ हुआ था। अब इसकी चार शाखायें, के०रि०पु० बल के जवानों की कम आय की बढ़ोत्तरी करने में, बड़ा योगदान कर रही हैं।

सिलाई शाखा- इस शाखा में, जवानों की 131 पत्नियां और निकट सम्बन्धिनियाँ भर्ती हैं। साधारणतया, प्रतिदिन दो वस्त्र एक महिला को सीने के लिये दिये जाते हैं। बड़े, कोट, पैन्टें, अंगोला कमीजें, और डांगरियां सहित, सभी वस्त्र वे सीलेती हैं। प्रत्येक महिला की ओसत मासिक कमाई 127.55 रु० बैठ जाती है।

मोजे बुनाई शाखा- पाँच बुनाई मशीनों के साथ, 1980 में यह शाखा खोली गई। जवानों की पत्नियों को बुनाई का प्रशिक्षण दिया गया। इस समय पाँच महिलायें काम कर रही हैं।

एक महिला सरलता से 9 जोड़े प्रतिदिन बुन सकती है और 136 रु. प्रतिमास औसनतन कमा लेती है।

इसमें, चार और ऊनी मोज़ों की और एक नाईलोन मोज़ों की बुनाई की मशीने लगने वाली हैं। निपटान और आपूर्ति विभाग से प्राप्त मोज़ों की तुलना में यहाँ के बुने मोज़े उत्तम गुणवत्ता के साथ, सस्ते, भी होते हैं।



सुन्दर स्वेटरों का निर्माण परिवार कल्याण केन्द्र हैदराबाद

स्वेटर बुनाई शाखा- जनवरी 1982 में, स्वेटर बुनने की एक मशीन खरीद कर लगाई गयी है; एक प्रशिक्षित व्यक्ति को शाखा में सिखाने हेतु नियुक्त किया गया है। अब तक, विभिन्न डिजायनों के 68 स्वेटर बुने जा चुके हैं।

साबुन-निर्माण शाखा- ग्रुप केन्द्र सिनेमा कोष से ऋण लेकर 1979 के अप्रेल में, यह शाखा खोली गई। इसमें दो सिपाही और कुछ महिलायैं काम कर रही हैं।

पिछले वर्ष, 6,400 कि० ग्रा० साबुन (12,800 बारें) निर्मित हुआ। यहां का बना साबुन गुणवत्ता में उत्तम और दाम में सस्ता है। पिछले वर्ष, इस शाखा ने 11,993 रु० का लाभ कमाया।



इम्फाल कल्याण केन्द्र में पुरस्कार देती हुयी श्रीमती बी० एन० प्रसाद

ग्रुप केन्द्र इम्फाल :

परिवारों को समुचित आय

पूणे से इम्फ़ाल को ग्रुप केन्द्र चले जाने पर, 1976 में तुलीहाल हवाई अड्डे पर एक तम्बू में परिवार-कल्याण केन्द्र खोला गया, जो 1980 में लंगजिंग, में, ग्रुप केन्द्र के स्थायी स्थल को स्थानांतरित किया गया। तब ही समुचित ढंग से कार्य शुरू हुआ। के०रि०पु० बल के जवानों की आठ पत्नियों के सम्मिलित होने पर, इसकी छोटी शुरूपात हुई और उन्होंने पतलूनों की सिलाई प्रारंभ की। तदुपरान्त, एक स्थानीय व्यापारी के सम्पर्क से, फरवरी 1981 में परिवारों के लिये, 42 मशीने आसान किश्तों पर खरीदी गई। इससे, वर्दी के और भी वस्त्र सीने की प्रेरणा मिली।

पिछले वर्ष, परिवार कल्याण-केन्द्र में, 10,752 खाकी कमीज़ें 4,000 कमीजें (खाकी ज़ीन), 3,050 सफ़ेद कमीजें, 700 सफ़ेद पतलूने, 500 डांगरी और खाकी ज़ीन की 12,800 पतलूने सिली गई।

इसके कारण, परिवार कल्याण-केन्द्र ने संलग्न बटालियनों की मांग ही पूरी नहीं की, बल्कि ग्रुप केन्द्र दीमापुर की मांग को पूरा करने के लिये भी, सिलाई की।

इन वस्त्रों के सीने से धन कमा कर, महिलाओं ने अपने पतियों की आर्थिक

सहायता की। 1 अप्रेल 1982 तक, 1,09,067 रु० की धन राशि वितरित की गई। हरेक महिला की औसत आय 200-300 रु. तक प्रति मास रही।

अन्य विभाग- सिलाई के अतिरिक्त (I) कढ़ाई (II) मेज की चटाइयों और रुमालों पर चित्रकारी (III) नागा शालों की बुनाई (IV) बाँसों की हस्तकला और (v) प्लास्टिक थैलों की बुनाई भी जवानों के परिवार कर रहे हैं। स्थानीय हस्तकलाओं में, और अधिक महिलाओं को प्रशिक्षण दिया जा रहा है।

स्थानीय पदार्थों की उपलब्धि के आधार पर अन्य वस्तुओं के निर्माण के भी प्रयत्न जारी हैं।

स्थानीय प्रशासन के विशेषज्ञों को बुलाकर, अन्य उपयोगी वस्तुओं के बनाने के लिये, 1981 में निम्नलिखित कोर्स चलाये गये - (1) खाद्यपरिरक्षण (2) विभिन्न कपड़ों के काटने का प्रशिक्षण (3) स्कैश और मुरब्बा बनाना (4) कागज-पुष्प-निर्माण और (5) मशीनों से कढ़ाई करना।

सब्ज़ी फ़ार्म

ग्रुप केन्द्र नागपुर के जवानों ने सात एकड़ की पत्थर की खान को खेती के लिए फार्म में बदल दिया है। 7 मई 1982 को; श्री वाई. एन. सक्सेना, तत्कालीन उप - महानिरीक्षक हैदराबाद ने फार्म के सिंचन के लिए एक जल पम्प-स्टेशन का उद्घाटन किया। इस फार्म में सब्ज़ी उगाई जायेगी, जो के. रि० पु० बल के कर्मचारियों को बेची जायेगी। फार्म से प्राप्त आय, कल्याणकारी कार्रवाइयों में लगाई जायेगी।



ग्रुपकेन्द्र पल्लीपुरम :

विविध वस्तुओं का उत्पादन

त्रिवेन्द्रम के निकट पल्लीपुरम के ग्रुप केन्द्र का परिवार कल्याण केन्द्र 1975 से चल रहा है। शुरू में समुचित आवास व्यवस्था नहीं होने के कारण, वर्दी वस्त्रों की सिलाई ही केवल वहाँ होती थी। 1978 में, पक्की इमारत बनने पर, एक पूरे पैमाने पर परिवार कल्याण केन्द्र स्थापित हुआ।

आजकल 60 महिलायें (जिनमें अधिकांश जवानों की पत्नियां हैं) विविध धन्धों में लगी हैं। उनकी आय 200 से 250 रु० तक प्रतिमास हो जाती है। वहाँ अब साबुन, मोज़ें, वर्दी वस्त्र,निजी वस्त्र, पिंडली रक्षक (शिनगॉर्ड), लाठी, अचार, काग़ज़ की लुगदी के खिलोने आदि बनाये जाते हैं। साथ ही, राज्य खादी ग्रामद्योग मंडल ने 'अम्बर चर्खा' योजना प्रारंभ की है। उसने 25 अम्बर चर्खे प्रदान किये हैं और महिलाओं के प्रशिक्षण का प्रबन्ध भी किया है। कच्चा माल देकर बने वस्त्र भी, वही खरीदता है। परिवारों में यह परियोजना बहुत प्रिय है।

अन्य यूनिटों की आवश्यकतायें पूरी करने के लिये, लाठी और शिन गार्ड (पिंडलीरक्षक) बड़ी मात्रा में बनाने का प्रस्ताव है।

साबुन बनाना भी लोकप्रिय है। वस्त्र धोने का साबुन उत्तम गुणवत्ता का और स्थानीय बाजार भाव से 30% सस्ता होता

है। इस धन्धे में बढ़ोत्तरी हो रही है और दो अन्य साबुन मशीनें खरीद कर चार मशीनें हो गयी हैं। 8 महिलायें काम कर रही हैं। मद्रास रेंज के लिये, साबुन और मोज़ों की सारी मांगे पूरी करने की संभावना है।

इस ग्रुप केन्द्र में कोई भी अन्य स्थिर यूनिट नहीं होने के कारण, यहाँ परिवारों की संख्या अपेक्षाकृत कम है।

प्रसिद्ध समाचार पत्रों में, इस केन्द्र के कामों की बड़ी सराहना छपी है। +

पहेलियाँ

[प्रस्तोता-दफ्तरी गणेश प्रसाद]

इक पिंज़ड़े में चालिस तीतर,
चुंच सभी का काला।
पूँछ पकड़ पिंजड़े से मारो,
मुख से उगले ज्वाला ॥ ॥
पूरा हो कानों को भाये।
सिर काटो तो गीत सुनाये,

पूँछ कटे, संगी बना जावै।
पेट कटे, तब संत कहाये ॥2॥

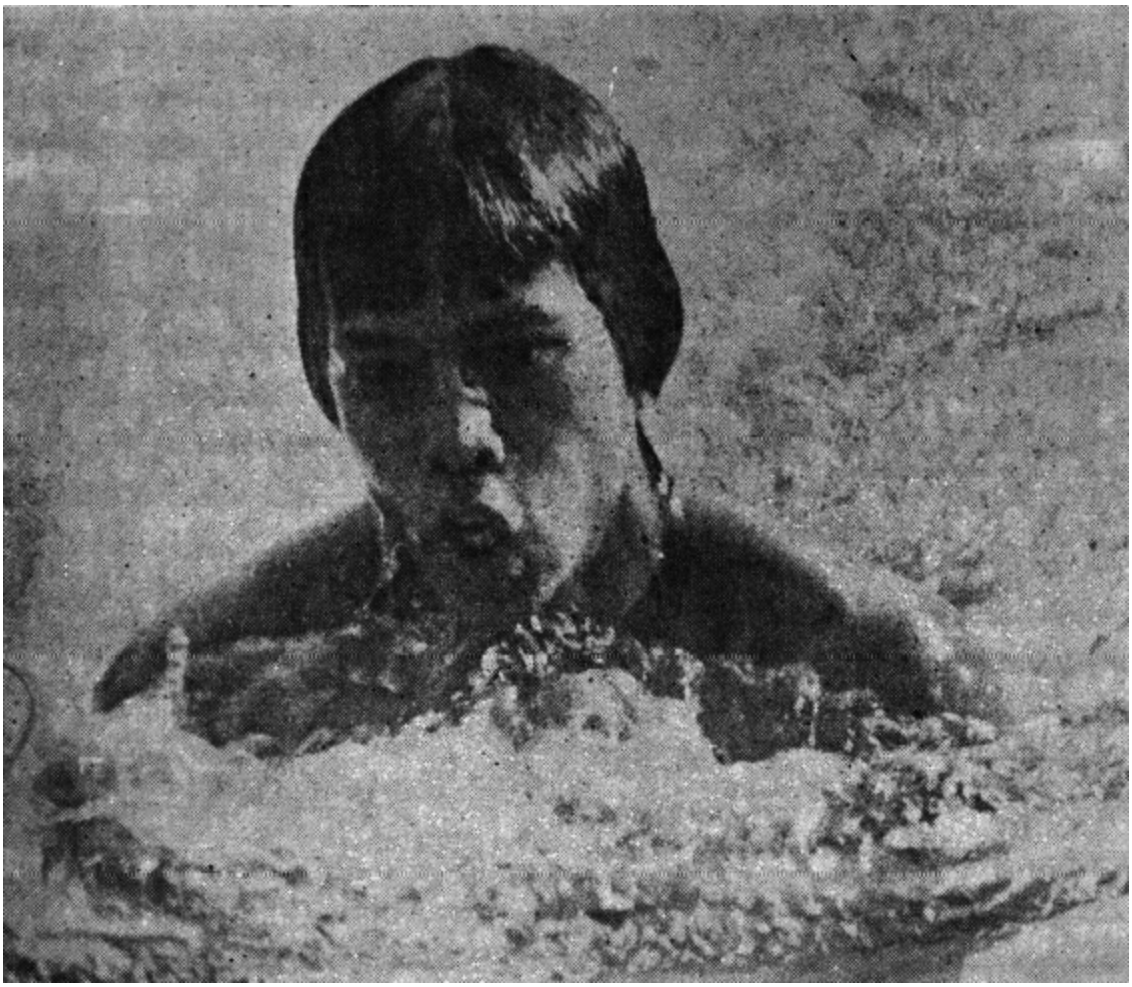
उत्तर- 1. दियासलाई की डिब्बी 2. संगीत

<u>अखिल भारतीय पुलिस तैराकी प्रतियोगिता</u> :

निरन्तर छठे वर्ष केरि०प० बल की विजय

त्रिवेन्द्रम में 30 जून से 4 जुलाई 1982 तक आयोजित अखिल भारतीय पुलिस तैराकी प्रतियोगिता में, निरन्तर छठे वर्ष के.रि.पु. बल ने चैम्पियनशिप जीती। के.रि.पु. बल और सी.सु. बल में इस बार पिछले वर्ष वाली दारुण प्रतिद्वन्द्वता नहीं थी। जब कि गत वर्ष अन्तर बहुत कम था (के. रि. पु. बल-217 अंक और सी. सु. बल-206 अंक), इस वर्ष के.रि.पु. बल (249 अंक) ने सी. सु. बल को 174 अंकों से बुरी तरह से हराया।

11 नये प्रतियोगिता रिकार्ड (जिन में छै राष्ट्रीय कीर्तिमान) स्थापित हुये। सी.सु.बल के धर्मपाल टोकस ने 56 अंक पाकर व्यक्तिगत चैम्पियनशिप जीती। उसने 400 मी. फ्रीस्टाइल को 4:36.7 से० में तैर कर नया रिकार्ड कायम किया।

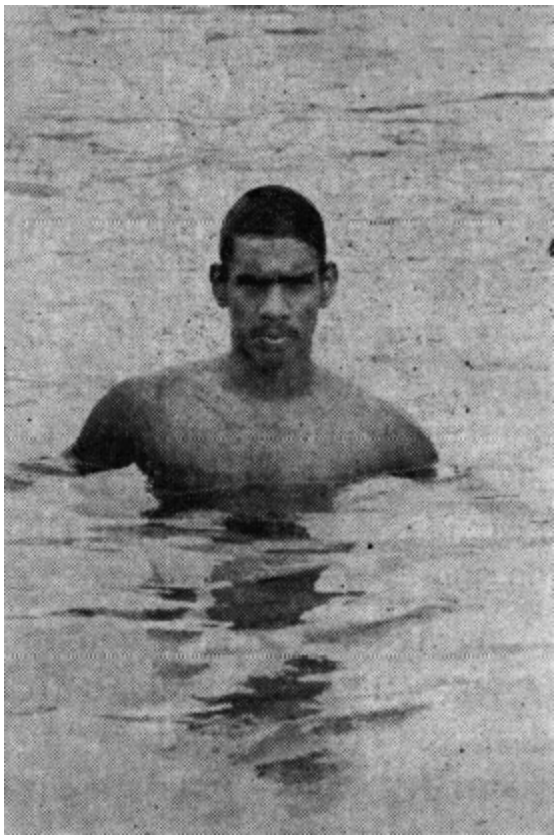


थौबा सिंह

नये छै राष्ट्रीय रिकार्डों में, पाँच के.रि. पू. बल ने बनाये और एक सी. सु. बल ने। थोबा सिंह (के. रि. पु. बल) अपने ही कीर्तिमान 100 मी० और 200 मी० ब्रेस्ट स्ट्रोक में भंग किये। इस बार, उसका समय 100 मी० ब्रेस्ट स्ट्रोक में 1:11.3 से० और 200 मी० ब्रेस्ट स्ट्रोक में 2:39.5 से० रहा। टी. जैकब (के.रि.पु. बल) ने तीन अपने ही राष्ट्रीय रिकार्ड (200 मी० बटर फ्लाई (2:21.6 से०), 200 मी० व्यक्तिगत मेडले (2:28.0 से०) और 400 मी० व्यक्तिगत मेडले 5:17.2 से० के सहारे)—सुधारे।

प्रतियोगिता वाले 5 नये कीर्तिमानों में, धर्मपाल टोकस (सी. सु. बल) को तीन स्थापित करने का बड़ा श्रेय रहा। उसने 200 मी. फ्रीस्टाइल को 2:11.0 से०, 1500 मी. फ्रीस्टाइल को 18:24.8 से० और 200 मी० बैक स्ट्रोक को 2:30.8 से० में तैर कर पार किया।

अन्तिम 2 नये प्रतियोगिता वाले रिकार्ड, के. रि. पु. बल के चौगड्डे ने 4x100 मी० मेडले रिले 4:24.0 से० में और 4x200 मी० फ्रीस्टाइल रिले 9:05.4 से० में जीते।



टी० जैकब

पद्मनाभन की धाक

दिल्ली खेल परिषद द्वारा जुलाई 1982 में आयोजित अन्त: तरण ताल तैराकी प्रतियोगिता में, के.रि.पु० बल का पी० पद्मनाभन पुरुष वर्ग में खूब चमका। उसने 100 मी० बैकस्ट्रोक में 1 मि० 14.2 से० वाला रिकार्ड भंग कर, 1 मि. 11.6 से० का नया कीर्तिमान बनाया। उसी ने 200 मी० बैक स्ट्रोक 2 मि० 36.8 से० में तैर कर पुराना कीर्तिमान पोंछ डाला, जबकि 200 मी० फ्री स्टाइल में पिछले रिकार्ड 2 मि० 35.3 से० को तोड़ कर 2 मि० 21.8 से० का नया रिकार्ड कायम किया।

वाई० एम० सी० ए० तैराकी में के०रि०पु० बल की ख्याति

राष्ट्रीय खेल संस्थान के तरणताल दिल्ली में 6-8 अगस्त 1982 को आयोजित नई दिल्ली वाई. एम. सी. ए. तैराकी में, के. रि. पु. बल खूब चमका। मुख्यकर, पी. पद्मनाभन ने बैक स्ट्रोक में दो रिकार्ड बनाये। उसने 100 मी. बैक स्ट्रोक में 1:8.1 से० और 200 मी. बैक स्ट्रोक में 2:39.0 से० के नये कीर्तिमान बनाये। उसको व्यक्तिगत रूपसे भी सम्मान मिला। के. सोमशेखरन ने न केवल सब से तेज तैराक, बल्कि 100 मी० फ्री स्टाइल में 58.9 से० के नये रिकार्ड का श्रेय पाया। प्रेम सिंह 100 मी. बटर फ्लाई में प्रथम आया। साथ ही, पीतम्बरदास, बिनोदसिंह की भी अच्छी धाक रही।

तैराक पुरस्कृत

राष्ट्रीय तैराकी में अपने तैरने की उत्तमता के आधार पर, के० रि० पु० बल के इन 7 धुरन्धर तैराकों को 6,000 रु० प्रदान किये गये—1. टी. थोबा सिंह (1,500रु०); 2.पी. पद्मनाभन (1,200रु.) 3. के. सोमशेखरन (1,100 रु०); 4. टी. जे. जैकब (1,000रु०) 5. महिन्दर कुमार (500 रु०); 6. कपूर सिंह (400 रु०) और 7. महाबीर सिंह (300 रु०)।

कुप्पू स्वामी हॉकी टूर्नामेंट

मई 28 से जून 6, 1982 तक कोविल पट्टी में खेले गये जी. कुप्पू स्वामी नायडू स्मारक अखिल भारतीय हॉकी टूर्नामेंट में, के०रि०पु० बल ने भाग लिया और तीसरा स्थान पाया।

स्वर्ण कप हॉकी टूर्नामेंट में, के०रि०पु० बल विजयी

बम्बई में 23 मार्च से 7 अप्रेल 1982 तक खेले गये बम्बई स्वर्णकप हॉकी टूर्नामेंट में, के० रि० पु० बल की केन्द्रीय टीम ने भाग लिया। टीम अर्द्धफाइनल में हार गयी; इससे पूर्व, उसने खिलाड़ी— सितारों से भरी पंजाब पुलिस टीम को हराया था।

अन्तर्राष्ट्रीय खेलों में के० रि० पु० बल खिलाड़ी

• पेशावर में अप्रेल 1981 में खेले गये पाकिस्तान राष्ट्रीय खेलों में प्रदीप कुमार ने भाग लेकर 3,000 मी० स्टीपल-चेज़ में रजत पदक जीता।

• एशियाई खेलों के लिये श्री एच. सी. एस. चीमा, सहायक कमांडैंट और प्रबंधक सह-शिक्षक, केन्द्रीय दौड़ कद टीम के.रि.पु. बल, को आगामी 'जजश्रो' अनन्तिम-रूप से भारत के अमेच्यूर एथ्लेटिक फेडेरेशन ने चुना है।

• प्यांगयांग (उत्तरी कोरिया) में 25 अप्रेल 1982 को आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय मैराथॅन दौड़ के लिये, अमेच्यूर एथ्लेटिक फेडरेशन ने हरीचन्द को मनोनीत किया था; किन्तु चीन में दुर्घटनाग्रस्त होने से, वह दौड़ में होड़ नहीं कर सके।

• सियोल (दक्षिणी कोरिया) में 28 मार्च 1982 को आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय मॅराथॅन दौड़ में भारत की ओर से रसदेव सिंह दौड़ा और 35 देशों के 8,000 धावकों में वह 13वें स्थान पर आया।

• क्यूबेक (कनाडा) में 30 अप्रेल से 2 मई 1982 तक 'कनाडा गोतेखोरी प्रतियोगिता' में भाग लेने वाली भारतीय टुकड़ी में कपूर सिंह (के. रि. पु. बल) को शामिल किया गया।

अन्तरेंज खेल प्रतियोगितायें

I. तैराकी—त्रिवेन्द्रम में 26 से 29 अप्रेल 82 तक ग्रुप केन्द्र पल्लीपुरम द्वारा

आयोजित XVI अन्तर्रेंज तैराकी प्रतियोगिता में, के. रि. पु. बल के दो धुरन्धर प्रतियोगी अजमेर और मद्रास रेजों में कड़ी प्रतिद्वन्द्वता रही। इस बर्ष, अजमेर रेंज ने मद्रास रेंज से पिछले वर्ष की हार का बदला चुकाया। उसने मद्रास रेंज को 191-171 से हराया। नीमच रेंज 99 अंक पाकर III रही।

प्रतियोगितावाला केवल एक रिकार्ड, मद्रास रेंज के के. सोमशेखरन ने पिछले वर्ष के 0.59 से. वाले अपने कीर्तिमान को को 0.58 से० में तैर कर सुधारा।

नीमच रेंज के प्रेम सिंह ने आठ व्यक्तिगत और तीन टीम स्पर्धाओं में भाग लिया और 65 अंक कर 'प्रतियोगिता के सर्वश्रेष्ठ तैराक' का खिताब पाया।

II. जिम्नास्टिक्स—केन्द्रीय प्रशिक्षण कॉलेज-I नीमच में 12 से 17 अप्रेल 1982 तक खेली गयी अन्तर्रेंज जिम्नास्टिक प्रतियोगिता में, अजमेर रेंज [, हैदराबाद रेंज II और दिल्ली रेंज III रही।

बख्तावर सिंह और डी. बी. केल्लापा (दोनों अजमेर रेंज) और एस. साथीसन (हैदराबाद रेंज) प्रतियोगिता के तीन सर्वश्रेष्ठ जिम्नास्ट माने गये।

मुरुगप्पा हाँकी

मद्रास में 21 जून, 1982 को खेले गये मुरुगप्पा स्वर्ण कप हॉकी के फाइनल के अवरोधभंजक में के०रि०पु० बल की हॉकी टीम पूर्वी रेलवे से हार गयी।

इससे पूर्व, के०रि०पु० बल की टीम ने पीछे से आकर पूर्वी रेलवे को हराया था। अतिरिक्त समय के दस मिनट विफल मनोरथ रहने पर, अवरोध-भंजक का सहारा लिया गया, जिसमें दुर्भाग्य से के० रि० पु० बल 2-4 से हार गया।

शतरंज प्रतियोगिताओं में के०रि०पु० बल की जीत ही जीत

• माउन्ट आबू पर, 1982 की अन्तर्रेंज शतरंज प्रतियोगिता 8 से 13 मार्च 1982 तक खेली गयी।

श्रीनगर रेंज का नासिर अली ने राष्ट्रीय चैम्पियन टी.थिप्से (दिल्ली रेंज) को फाइनल हरा दिया। आर. ए. अजीम (दिल्ली रेंज) तृतीय स्थान पर आया। रेंज चैम्पियनशिप दिल्ली रेंज को गई, जब कि श्रीनगर रेंज II और अजमेर रेंज III रही।

• सांगली में 12 मई 1982 को के० रि० पु० बल के राष्ट्रीय चैम्पियन प्रवीण थिप्से ने सुन्दर राजन को हराते हुये, दस अंक पाकर वैद्य स्मारक शतरंज प्रतियोगिता जीती।

• जुलाई को, के० रि० पु० बल के नासिर अली और यूनियन बैंक के रवि हेगडे, 10-10 अंक पाकर संयुक्त विजेता घोषित हुये। श्री बी. वर्मा, निदेशक, आन्तरिक सुरक्षा अकादमी ने (जो अ.भा. शतरंज के अध्यक्ष भी हैं) पुरस्कार वितरित किये।

ऑसबोर्न अब नहीं रहे

हेनरी ऑसबोर्न चले गये। मुझे वह ईश्वर के पास लंगड़ाते हुये वापस जाते से दीखते हैं। 6 जुलाई के तड़के, उनका देहान्त हो गया। कुछ मास, उन्होंने यातना सही। वह बुरी तरह गिर गये थे, जिससे उनके कूल्हे की हड्डियाँ सव्रण भंग हो गयी थीं। 88 बर्ष की आयु में, वह दुर्घटना सचमुच में कष्टदायी थी।

उनकी दुःखदायी मृत्यु, के० रि० पु० बल में सभी को एक क्रूर आघात लगा। के० रि० पु० बल के जीवन और आकांक्षाओं के वह सदाबहार प्रतीक रहे; वह इस बल से और इसके सदस्यों से, बहुत घनिष्ठ बने रहे।

जब कभी नीमच जाना होता था, तब हम उनसे मिला करते थे। उस आयु में भी वह, वह ही थे, कुछ कठोर, स्तंभित से, बेतों की बनी बैसाखियों पर खड़े होते और चलते थे। सीना उठाते हुये, वह अभिवादन करते थे —'आओ भाई, बहत दिनों बाद मिले। कैसा है ?' वह मेरे दादा के मित्र थे, जो स्वयं मध्यप्रदेश पुलिस के वृद्ध महा पुरुष थे और जिनका स्वर्गवास हुये भी 40 वर्ष से अधिक हो गये हैं। वह खड़े होकर हाथ मिलाते थे और दोस्त-दुश्मनों सभी की योगक्षेम पूछते थे। वह सभी समारोहों में भाग लेते थे। वह कभी किटकिटाते, कभी ताली बजाते और हँसते-हँसते आँसू छलकाते थे। नीमच गये आगन्तुओं को पा कर, वह प्रसन्नता से बागबाग होते थे तथा लंगड़ाते हुये अपने मुख पर व्यापक मुस्कान छोड़ते थे। वह कभी कभी इंगलैंड वाले परिवार को भी याद कर लिया करते थे; किन्तु सदा शुरू में कहते थे "अहा, क्या ही यह अद्भुत देश है भारत! यहाँ मेरी कितनी अच्छी तरह देख रेख हुई है—" और उनकी आँखों के कोनों में कोई छिपा आँसू टपकता हुआ देखा जा सकता था।

उनमें एक सच्चे ब्रिटेनवासी की कठोरता और हठीलापन था। बिल्कुल मफ़लूज होते हुये भी, वह चलते रहते थे। हम उनको उठा कर कुर्सी पर बिठा देते थे। "अरे भाई, मत करो। तुम नहीं होगे, तब कौन से करायेंगे" वह कहा करते थे। वह आपने बँगले में घूमने को हमें बुलाया करते थे, जो उन्हें 45 रु० मासिक किराये पर मध्यप्रदेश सरकार ने पिछले 35 वर्ष से दे रखा था। वहाँ ह्विस्की और कुछ नाश्ता होता था; परन्तु इस मिलन में उल्लेखनीय होती थी बात शराकत-रफ़ाक़त की। सब से बढ़ कर बात थी कि ऑसबोर्न में जीवट, तुरतबुद्धि और पुरानी घटनाओं के वर्णन कूट-कूट कर भरे हुये

थे।



स्वर्गीय श्री ऑसबोर्न

उन्होंने 36 वर्ष पुलिस में शानदार सेवा की और नीमच में 2 बटालियन (के० रि० पु० बल) के कमांडैंट एक वर्ष से अधिक रह कर, 1949 में पेंशन भोगी। सी. पी. (आज के मध्य प्रदेश) पुलिस में एक ब्रिटिश सर्जेण्ट के रूप में भर्ती हो कर, वह दृढ़तापूर्वक पदोन्नति पाते हुये कमांडैंट के पद से सेवा निवृत्त हुये। ब्रिटिश दिनों के, पुराने

सी. पी. की और सी. आर. पी. (सम्राट प्रतिनिधि पुलिस) की सरगर्मियों और भागदौड़ की चर्चा वह किया करते थे और यह बताते थे कि केन्द्रीय रिजर्व पुलिस कैसे बनी, उसने किस प्रकार अपराधों की छानबीन की, कानून-व्यवस्था बनाये रखी और एक रेलवे चलाई। वह शिकार-चोरी की उत्तम बातें और हंसों पर गोली मारने की अखबारी तकनीक बताते थे। वह सदा अपनी पुरानी कार के चले जाने का दुःखड़ा सुनाते थे, जिसे एक भारतीय सज्जन ने 2,000 रु. की ज़रा सी रकम पर उनसे ले ली थी।' । 'दो हज़ार मेढ़े, ज़रा सोचो तो तुम' अंगूठे और अंगुली की अपनी मशहूर हरक़त करते हुये वह कहते थे 'और तब से हमारा शिकार खत्म--वह चांडाल व्यक्ति ।'

वह महा वयोवृद्ध अब चले गये और के०रि०पु० बल को नीमच में अब प्यार की बहुत कुछ चीज़ खत्म हो गयी। ऑक्टरलोनीमेस और ढहते किले के अतिरिक्त, वहाँ अब कोई पुराना चिह्नस्तंभ नहीं रह गया है । ओफ़, भले

और सच्चे, वह वेचारे चले गये। और उनके जाने का ढंग भी निराला रहा— चुपचाप और बिना किसी धूमधाम के; शोक मनाने और कन्धा देने को कोई सगा सम्बन्धी भी नहीं; केवल था तो के०रि०पु० बल, जिसे उन्होंने इतना प्यार दिया था। इसी बल ने अन्तिम शान्तिस्थल में उन्हें पहुँचाया।

ऑसवोर्न चले गये और के० रि० पु० बल अमर रहे । जोश की मृत्यु पर फिराक़ का यह शेर मैं कहे बिना नहीं रह सकता— 'मर्दे हक़ पैशा को दारो रसन पे खेंचा, यक सतून और गिरा, यक चिराग़ और बुझा।' (एक संभ्रांत को और इस निर्दयी और क्रूर जगत ने मारा। एक स्तंभ और गिरा और एक दीपक और गुल हो गया)

ले०—श्री जे. एम. कुरैशी

कहानी :

संयोग

ले—ए. एस. आई. (एम) देशराज

'पापा, यह है मेरा दोस्त रूबी। हम दोनों एक ही कक्षा में पढ़ते हैं—साथ-साथ स्कूल जाते हैं' कहते हुए मेरे पांच वर्षीय पुत्र ने एक हमउम्र बच्चे के साथ प्रवेश किया। मैं आफिस से आकर बैठा ही था कि उसकी ये चहकती बाते मुझमें कुछ अजीब सी गुदुगदी पैदा कर रही थीं; पर नवागन्तुक बच्चे की ओर मैं कुछ ज्यादा ही आकर्षित हो रहा था। उसकी शक्ल किसी जाने पहचाने चेहरे से मिलती-जुलती लग रही थी। बीते जीवन के गहरे सागर में गोते लगाये, पर कुछ हाथ नहीं आया। तभी यह प्रश्न सुनाई दिया 'पापा, अच्छा है न मेरा दोस्त !"

"अहाँ, अच्छा, बहुत अच्छा; जब मेरा मनु अच्छा है, तब उसका दोस्त क्यों न अच्छा होगा" कहते हुए मैंने अपने पुत्र को गोदी में उठा लिया और उसके गाल चूम लिये।

उसी समय मनु की माता चाय ले आई। "अच्छा भई, अपने दोस्त को अब चाय तो पिलाओ" और एक प्याली मनु के हाथ मैंने रूबी को दिलवाई।

"मनु, तुम्हारे दोस्त का घर दूर तो नहीं हैं ?' हमने पूछा । मनु बोल भी नहीं पाया था कि रूवी चहचहाया 'वो रहा सामने अंकल"।

"तुम्हारे पापा क्या करते हैं, बेटे ?"

"बाजार में, मेरे पापा की दुकान है।'

“अच्छा, कभी हमें भी मिलवाना।”

“जरूर, अंकल । आप घर आइए न”

“देखो, नीलमा, कैसा प्यारा बच्चा है ?”

“आपने तो मेरे मुँह की बात ही छीन ली। यह क्या? इसकी मम्मी भी बहुत अच्छी हैं।”

“अच्छा यहां तक नौबत पहुँच गयी है ।”

“क्यों नहीं पहुँचे। पास में जो रहती हैं; फिर अपनी ही तरफ़ की हैं।”

“तबतो खूब घुटेगी, मिल बैठेंगी दीवानी दो” कह कर मैं हंसा ।

“आपभी बड़े वो हैं” कह कर नीलमा भी खिलखिला पड़ी ।

रविवार की दोपहर थी। जाड़ों में धूप सेवन का अपना ही मजा होता है। मैं धर्मयुग लेकर छत पर चला गया। नीलमा भी वहीं आकर सलाइयों से स्वेटर का तानाबाना बुनने लगी और देखा देखी मनु भी वहाँ अपने खिलौने बिखेर कर खेलने लगा।

मैं एक रोचक लेख को पढ़ने में मग्न था, तभी अचानक मनु की आवाज़ ने चौंका दिया—‘रूबी—पापा, आज तो रूबी की मम्मी भी आई हैं।”

तुरन्त मेरी नजर उठी, तब उठी रह गई । मैं एकटक रूबी की मम्मी को देखे जा रहा था। वह बाक़ई में जानी-पहचानी सूरत दीखती थी। जैसे ही ‘नमस्ते’ को मेरे हाथ उठे कि अचानक ‘राज’ शब्द मधुर कण्ठध्वनि से गूँजा। मेरे शरीर में भी बिजली सी कौंधी “अरे मोहनी, तुम यहाँ ?”

“तब क्या पहले से आप एक दूसरे को जानते हैं ?”

“बिलकुल” हम दोनों के मुख से एक साथ निकला। फिर यह प्रकरण यहीं समाप्त हो गया और नीलमा को एक अवर्णनीय उलझन पैदा कर गया।

उसने रूबी की मम्मी को अधिक देर नहीं बिठाया और इधर-उधर की बात कर शीघ्र विदा किया। फिर नीचे से आवाज लगायी “यहां आना जी।”

मेरे पहुंचते ही वह कमरे में ले गयी “आप इन्हें कैसे जानते हैं; कहाँ दोस्ती की?”

“कुछ दूसरे की भी सुनोगी कि अपने शकों की फुलझड़ी छोड़ती रहोगी। नीलमा, जरा ठण्डे दिमाग से सुनो। देखो में जुलाई 1973 में अपने पिता के पास दिल्ली आया था। तुम जानती ही हो; पिताजी एक चतुर्थ श्रेणी के कर्मचारी है, जिससे घर का खर्चा नहीं चल रहा था। मैंने दिल की बात एक पडौसी से कही। वह दूसरे दिन एक दफ्तर ले गये। परन्तु उन्होंने बताया कि वहाँ लड़का नहीं, लड़की की जरूरत है।

‘मरता क्या न करता’ सोच कर मैंने मैने- उनसे मिलने की ठानी। उसी समय पड़ोसी को तो उसका पुराना साथी खींच कर एक रेस्तरॉ में ले गया, पर मैंने साहस बटोरा और धीरे से काला शीशे वाला दरवाजा पुश किया । ‘एस, कम इन’ की पतली तेज आवाज मेरे शरीर में झनझना गयी। अन्दर कमरे में जाने पर उस आवाज की पुष्टि हुई। मैं तो चौंका ही, परन्तु मुझसे ज्यादा मैंनेजर चौके “आप...यहाँ...आपको

किससे मिलना है।"

अन्ततः वह एक लड़की थी, मोटी-मोटी आँखें, भोली-सी सूरत, आयु में मेरे बराबर या कुछ कम ही होगी। मैं समझ गया कि यही मैनेजर है और इसीलिये, लड़की की ही जरूरत है।

अभी हमारा परिचय हो ही रहा था कि बॉस चौधरी साहब आ गये। शायद बाहर ही उन्हें मेरे बारे में पता चल गया था। घुसते ही वह बोले 'मनमोहन, इस कैंडीडेट के बारे में तुम्हारा क्या विचार है ? एक टाइपिस्ट की जरूरत तो हमें है ही।

'सर, जैसा आप उचित समझें।'

'नहीं, नहीं, हम तो अधिकतर बाहर रहते हैं। आफ़िस तो तुम्हें चलाना है। यह फ़ैसला तुम पर छोड़ता हूँ।"

मैनेजर बॉस के स्वभाव को जान गयी थी। उसका कुछ रुझान देखकर, मनमोहन ने कहा, "ट्राई कर लेते हैं, सर।"

इसके उपरान्त सभी औपचारिकता हुई। साधारण सी लिखित परीक्षा, टाइपिंग-टेस्ट और बाद को, नाम मात्र का साक्षात्कार।

तत्पश्चात्, मैं बिना छुट्टी के, आफिस के अन्दर-बाहर के सभी कार्य करने लगा। चपरासी से लेकर क्लर्क तक की ड्युटी मैं अकेला करता था और क्या बॉस और क्या मैनेजर, दोनों को खुश रखने का भरसक प्रयत्न करता था। धीरे-धीरे मैनेजर से मैं बहुत घुल मिल गया। मनमोहन को जब भी में 'मैनेजर साहब' कह कर सम्बोधित करता, तब वह प्रतिवाद करती 'देखो, आफिस में हम सहयोगी हैं। यहां कोई मैनेजर-नौकर नहीं है।' उसके निरन्तर प्रतिवाद से तंग आकर, मैंने सुझाव रखा 'आज से मैनेजर साहब नहीं कहूँगा।—" पर मनमोहन भी नहीं कहूँगा—"

'फिर क्या कहोगे?'

'मोहिनी' क्यों पसन्द है ?' मुस्कराकर मैंने पूछा।

'अहा, यही तो कह कर घर में मुझे सब बुलाते हैं। अच्छा, आज से तुम्हारा पूरा नाम भी मैं नहीं बोलूंगी। सिर्फ 'राज' कहूंगी।"

मैंने नत मस्तक होकर स्वीकार कर लिया। परस्पर एक अजीब अपनापन महसूस होने लगा; लेकिन मेरी नीलमा, इसके कोई दूसरे अर्थ नहीं निकाल बैठना, अन्य नारियों की भांति। ईश सौगन्ध, हम दोनों कभी आफिस से बाहर एक साथ मिल कर नहीं चले।"

'तब नहीं चले, अब तो चलो, आगे तो बतइओ, क्या हुआ? मेरे राज, पूरा राज बताओ। मेरा दिल धक्-धक् कर रहा है" नीलमा ने वक्षस्थल पकड़ कर कहा।

'वही हुआ, जो दुर्दान्त समय कराता है। हम एक दूसरे से अलग होने लगे। अन्त में, मैंने सर्विस छोड़ दी और आकर सी० पार० पी० ज्वाइन कर ली।

'तब फिर कभी नहीं मिले?'

‘कभी नहीं, एक दिन एक निमन्त्रण पत्र जरूर उसके विवाह का मिला था। । संयोग से, उसी दिनांक की तुम्हारी शादी थी। बोलो” नीलमा के चिबुक को उठाकर मैंने नेत्रों में नेत्र डालते हुये कहा, “तुम ज्यादा प्यारी थीं कि वह।” औपचारिकता मात्र मैंने भी बधाई का पत्र डाल दिया, उत्तर में, अपना निमन्त्रण कार्ड भी भेजा, जिसका जवाब अभी तक नहीं मिला इन छै सालों में।”

“खुद जो मिल ली।” हँसकर नीलमा बोली।

‘कहो, क्या यह ‘संयोग’ नहीं है कि इतने लम्बे अन्तराल के बाद, इस प्रकार सहसा हम आ मिले।’

नीलमा एक क्षण मुझे देखती रही। फिर न जाने क्यों उसने कस कर मुझे अपनी बाहों में भर लिया।

कविता :

प्रहरी खड़ा हुआ पहरे पर

(रचयिता—स० उ० नि० हंसराज औझा ग्रुप केन्द्र गौहाटी)

गोली बरसे चाहे गोला, जले तवा सम चाहे भूतल ।
प्रहरी खड़ा हुआ पहरे पर, दुश्मन को शोला है प्रतिपल ॥
‘लौह-पुरुष’ की देन हमारा, केन्द्र पुलिस का आरक्षित बल।
भीषण हैं कर्त्तव्य हमारे, प्रबल शक्ति पर रखते निश्चल ॥
अम्बर में ध्वज फहरे, जिसका, वही केन्द्र का है निर्भय दल ।
प्रहरी खड़ा हुआ पहरे पर, दुश्मन को शोला है प्रतिपल ॥
‘पर्ट’ चमूपति ने सत्वर ही, गठित किया था यह बल अपना।
‘साँबल’ सिंह’ ने किया उजागर, ‘लौह पुरुष’ का सुन्दर सपना ॥
मध्य देश में नीमच इसका, कहलाता उद्गम का संस्थल ।
प्रहरी खड़ा हुआ पहरे पर, दुश्मन को शोला है प्रतिपल ॥
रिमझिम-रिमझिम हो वर्षा या, आँधी हो या दारुण गर्मी।
शत्रुशमन को सदा निकलता, केन्द्र पुलिस का उद्भट कर्मी ॥
आवासों का नहीं ठिकाना, नहीं प्यास को है निर्मल जल ।
प्रहरी खड़ा हुआ पहरे पर, दुश्मन को शोला है प्रतिपल ॥
हिन्दू-मुस्लिम-सिक्ख-ईसाई, का यह मिला-जुला बल अनुपम ।
कूट-कूट कर भरा इसी में, देश प्रेम, निष्ठा अरु उद्यम ॥

सभी जवानों के मन में, दृढ़, 'सेवा-भक्ति' ध्येय है केवल ।
प्रहरी खड़ा हुआ पहरे पर, दुश्मन को शोला है प्रतिपल ॥
शस्त्र सिपाही कर में लेकर, न्याय-व्यवस्था कायम करते।
जाति-धर्म के भेद मिटा कर, सदा एकता सब में भरते ॥
मातृभूमि की गरिमा के हित, 'हंसराज' का मन है विह्वल ।
प्रहरी खड़ा हुआ पहरे पर, दुश्मन को शोला है प्रतिपल ॥

सूक्ति सुधा

जब तक मनुष्य पुरुषार्थ नहीं करता, तब तक दूसरे पर विजय दुर्लभ होती है।

—पंचतंत्र

पहले से सोचने वाला सदा सुखी रहता है।

—संकलित

त्याग और विनय ही उत्तम तप हैं।

—व्यास

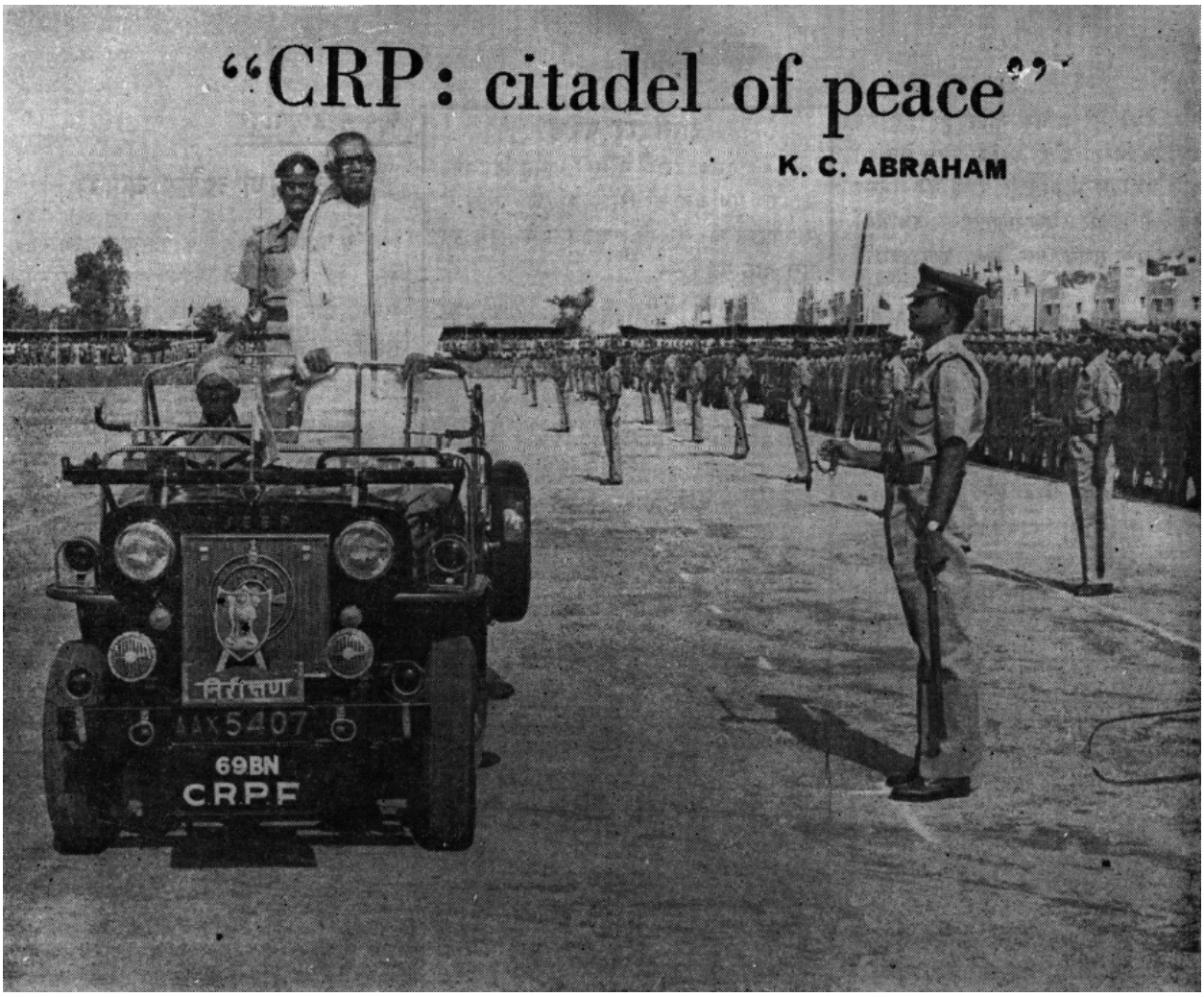
एक दूसरे की सहायता और रक्षा करना मनुष्य का पहला कर्त्तव्य है।

—ऋग्वेद

विज्ञान के चढ़ते चरण

इटली में एक ऐसी मोटर साइकिल बनी है, जिसे मोड़ कर सूटकेस में बन्द कर दफ्तर के कमरे में या अलमारी में रखा जा सकता है।

बेंगलूर स्थित इंडियन टेलीफ़ोन इंडस्ट्रीज़ ने ऐसा टेलीफोन बनाया है, जो ध्वनि से प्राप्त शक्ति द्वारा चलता है और इसमें बिजली; वैटरी या अकूमेलेटर्स की जरूरत नहीं होती।



शान्ति दुर्ग—के० रि० पु० बल

आँध्र प्रदेश के राज्यपाल, श्री के० सी० अब्राहम ने ग्रुप केन्द्र हैदराबाद में 24 अप्रैल 1982 को, 69 बटालियन की दीक्षान्त परेड की सलामी लेते हुए, के० रि० पु० बल को "संकट में मित्र' और 'लोक रक्षक' बताया।

के० रि० पु० बल की भूरि-भूरि सराहना करते हुये, राज्यपाल ने कहा कि राज्य पुलिस बलों ने उपद्रवग्रस्त क्षेत्रों में फिर से सामान्य स्थिति लाने में इस बहुमुखी बल को शान्ति का दुर्ग माना है। तीन शान्ति रक्षिणी बटालियनों को के० रि० पु० बल में मिलने से उसकी शक्ति वृद्धि पर उन्होंने प्रसन्नता प्रकट की।

उनके भाषण का अविकल रूप यह है—

"आइये, प्रारंभ में परेड के ऐसे चुस्त प्रदर्शन पर बधाई दें, जो इतना प्रभावशाली

था कि मुझे कहना पड़ रहा है कि यह उन शानदार प्रदर्शनों में से एक था, जिसे मैंने वर्दीधारी जवानों द्वारा दिखाते देखा है। कठोर प्रशिक्षण द्वारा इस बटालियन को खूब बनाठना रखने वालों को भी बराबर का श्रेय है।

"जैसा मुझे पता है भारत सरकार द्वारा स्वीकृत तीन विशेष बटालियनों में से एक, 69 बटालियन (के०रि०पु० बल) जो हैदराबाद में गठित और पालित-पोषित हुई है, अनुकरणीय काम करने की अतिरिक्त क्षमता रखती है। इस बटालियन को दिए गए सघन प्रशिक्षण ने, देश-सेवा में किए जाते हुए कर्त्तव्यों से उत्पन्न विशेष स्थितियों से निपटने के योग्य बनाकर, इस बटालियन को उच्चतर पीठ पर बिठाया है। इसलिए, इस संस्थान को यह दीक्षान्त परेड अत्यन्त महत्व रखती है, क्योंकि नए हुनरों, और जानकारियों से इस बल को सुसज्जित कर, कमियों को दूर किया गया है।

"सर्वविदित कारणों से, आज पुलिस की छवि, विभिन्न लोगों ने और कुल मिला कर, समाज ने विविध दृष्टिकोणों से आँकी है। पहले और अब भी, इसकी प्रशंसाये और पथराव, बल्कि पथराव ज्यादा, मिले हैं। यह निविवाद सत्य है कि पुलिस जैसे बल को उपस्थिति और कारगर कार्रवाईयों के बिना, कानून और व्यवस्था की स्थिति किसी भी नागरिक के दैनिक जीवन में सबसे बड़ा खतरा होती है।

"केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल ने, जिसे चालीस वर्षों से अधिक गठित हुये हो गए हैं। अत्यन्त निष्ठा और आदेश प्राप्त सेवाओं के प्रति समर्पित भावना से, राष्ट्र की अमूल्य सेवा की है। अत्यधिक संकटापन्न स्थितियों से सुलझने के समय, इस बल द्वारा दर्शाई गई शूरवीरता, दिलेरी और निःस्वार्थ वलिदानों की व्यापक सराहना होती है । विरोधाभासतः, यह 'नाशुक्रगुजार काम' है, जिसकी कीमत उसकी स्पष्ट अनुपस्थिति में ही आँकी जाती है।

"इन तमाम वर्षों में, के०रि०पु० बल का शानदार काम, 'सेवा और भक्ति' वाले उसके प्रमाणांक के, निश्चय ही अनुरूप रहा है। राज्य पुलिस बलों ने उपद्रवग्रस्त क्षेत्रों में फिर से सामान्य स्थिति लाने में इस बहुमुखी बल को शक्तिदुर्ग माना है । आपात्कालों में और भी अधिक अच्छे प्रकार से जनसेवा करने की आवश्यकता ध्यान में रखकर, संकटापन्न स्थितियों से सुलझने के लिए, इसे, और भी अधिक साधनों से सज्जित किया गया है। के०रि०पु० बल के मनोबल को मजबूत करने के लिए, यह विशेषता स्वागतयोग्य है और पुलिस भूमिका की अनेक भ्रांतियों को दूर करती है।

"बेहतर क्रियाशीलता, अतिरिक्त अर्द्धसैनिक शक्ति और अग्निशमन क्षमता के लिए, हैदराबाद में 69 बटालियन को ढाला गया है। मुझे विश्वास है कि इन नये कामों के करने के समय, यह बटालियन 'संकट के मित्र' के रूप में पुलिस की छवि निखारने में महान योगदान करेगी।

"इस अवसर पर, इस भव्य "लोक-रक्षक" द्वारा निर्धारित अनुशासन और समर्पण के उच्च आदर्शों के अनुरूप एक अत्यन्त सुन्दर भविष्य के लिए, इस बल के प्रति मेरी शुभ कामनायें हैं।"

शानदार परेड

श्री एस० दत्ता चौधरी, महानिदेशक, के० रि० पु० बल को लिखे आन्ध्र प्रदेश के राज्यपाल श्री के. सी. अब्राहम के पत्र का मूल पाठ यह है—

"दिनांक 24 अप्रैल 1982 को हैदराबाद के प्रसिद्ध परिसर चन्द्रायनगटा में, के०रि०पु० बल द्वारा गठित 69 बटालियन (शान्तिरक्षक बल) की दीक्षान्त-परेड में, मुझे सलामी लेने का विशेषाधिकार मिला।

वर्दीधारी लोगों के अत्यधिक प्रभावशाली और दर्शनीय प्रदर्शनों में से (जो मैंने देखे हैं) यह भी एक था। कठोर और सतर्क प्रशिक्षण में संस्थान द्वारा ली गयी गहरी रुचि का ही, इससे पता लगता है।

बटालियन के उत्तम प्रदर्शन के लिये, श्री पी० एस० कादियान कमांडैंट और उनके अधिकारियों और कर्मचारियों के प्रति, मैं अपना अत्यधिक अधिमूल्यन और हार्दिक बधाइयाँ अभिलेखबद्ध करना चाहूँगा। राष्ट्र सेवा में निरन्तर सफलता पाते रहने के लिये, इस बटालियन और के०रि०पु० बल को मेरी मंगलकामनायें प्रस्तुत हैं।"

नीचे—69 बटा० के सर्वोत्तम रंगरूट—

1. राम सिंह 2. मुहम्मद अमीन
3. देदावशीष राम



ग्रुप केन्द्र दुर्गापुर :

प्रशिक्षण और काम

ग्रुप केन्द्र दुर्गापुर के परिवार-कल्याण-केन्द्र ने 1970 से काम करना प्रारम्भ किया, और अब परिवारों को काफी आय यह दिला रहा है। इसमें चार शाखायें हैं, जिनमें सबसे बड़ी शाखा सिलाई शाखा है।

सिलाई की शाखा—इस शाखा में इस समय 85 महिलायें काम कर रही हैं । 11 हाथ की और 24 पैरों वाली—कुल 32 सिलाई की मशीनें यहाँ उपलब्ध हैं और कुछ महिलायें अपनी मशीने अपने साथ लाती हैं। खाकी पतलूनें, खाकी कमीज़ें, सफेद कमीजें, बड़े कोट, जंगी पतलूनें, निकरें (खाकी जींन) और अंगोला की कमीजें यहाँ फिट की जाती हैं। कच्चा सामान मिलने पर, मच्छरदानियाँ भी बनाई जा सकती हैं।

मोजे बुनाई की शाखा—इस शाखा में चार मोजे-बुनने की मशीने हैं और तीन प्रशिक्षित महिलायें प्रति दिन 20 मोजों के जोड़े बुन रही हैं। चार सिपाही भी मोजे बुनने की मशीने चलाने का प्रशिक्षण पा रहे हैं। छै और मशीने खरीदने के लिए, महानिरीक्षक से० II ने 4,960 रु० की आर्थिक सहाय्य दी है।

यहाँ ऊनी वस्त्रों बुनने की भी एक मशीन उपलब्ध है। एक मास में 15 से ले कर 20 वस्त्र तक बुने जा रहे हैं।

कढ़ाई की शाखा—सिंगर मशीन कम्पनी ने सिलाई-कढ़ाई के प्रशिक्षण का प्रबन्ध यहाँ किया है। आजकल, 6 महिलाये प्रशिक्षण पा रही हैं।

परिवार-कल्याण-केन्द्र की सहायतार्थ लगाये गये मेलों में, जवानों को सभी कढ़ाई के वस्त्र, उनी कपड़े और अन्य पदार्थ बेचे जाते हैं।

बेकरी शाखा—एक बेकरी जल्द ही खोली जा रही है।

परिवार-कल्याण-केन्द्र में काम करने वाली महिलायें 150 से 200 रु० तक कमा रही हैं। परिवार-कल्याण-केन्द्र लगभग 900 रु० का मासिक लाभ कमा लेता है।



राष्ट्रीय और के० रि० पु० बल की ध्वजाओं के निकलते समय, शपथ लेते हुये 69 बटालियन के जवान

[रजिस्टर्ड नं० 25627/74



क्रैपलर

केन्द्रीय रिज़र्व पुलिस बल
की
पत्रिका

वार्षिकोत्सव संस्करण

खण्ड XI अंक 4 दिसम्बर 31, 1982 [पौष 10, 1904]





श्री पी. सी. सेठी, गृहमंत्री से राष्ट्रपति पुलिस वीरता पदक पाता हुआ का० चन्दगीराम

क्रैपलर

केन्द्रीय रिज़र्व पुलिस बल की सचित्र पत्रिका

[हिन्दी संस्करण–त्रैमासिक]

खण्ड XI

अंक 4

31 दिसम्बर, 1982

10 पौष, 1904

मुख्य सम्पादक :

एच० एस० सेठी

हिन्दी सम्पादक :

जे. एस. शर्म्मा

[छाया : शिव कुमार]

मुखपृष्ठ : वार्षिकोत्सव परेड का निरीक्षण करते हुये, केन्द्रीय गृह मंत्री श्री पी. सी. सेठी ।

31 पृष्ठ : महानिदेशक केन्द्रीय रि०पु० बल से अन्तर्रेंज दौड़कूद (एथ्लेटिक्स) चैम्पियनशिप ट्राफी पाता हुआ हैदराबाद रेंज का रमाशंकर राई ।

सम्पादकीय कार्यालय :

द्वारा महानिदेशालय, केन्द्रीय रिज़र्व पुलिस बल, पूर्वीय खंड 10, रामकृष्णपुरम, नई दिल्ली-110066

मुद्रक—सी० आर० पी० एफ० प्रेस, नई दिल्ली-110072

प्रकाशक—महानिदेशक, के० रि० पु० बल की ओर से **एच० एस० सेठी**।

सम्पादकीय

क्रैपलर का यह 43वें वार्षिकोत्सव का संस्करण है। वर्ष-वर्षान्तर, के० रि० पु० बल अपनी वर्षगाँठ मनाता रहता है। इस समय 43 वाँ है और अगले वर्ष 44वाँ जन्मोत्सव होगा। क्या वार्षिकोत्सव को मनाना केवल गणना का एक अभ्यास है—सिर्फ एक रस्मभर है ?

वर्षों की बढ़ोत्तरी, किसी को और मुख्यकर किसी बल को, कोई श्रेय नहीं है। आखिरकार, सभी बढ़ते हैं; परिपक्व होते हैं और नष्ट होते हैं। के०रि०पु० बल ने किस प्रकार वृद्धि पायी है ?

यह निस्संकोच कहा जा सकता है कि इन सब वर्षों में के०रि०पु० बल की क्या गुणवत्ता और क्या परिमाण, दोनों में परिवर्तन आया है। सम्राट प्रतिनिधि पुलिस की एक बटालियन से श्रीगणेश कर, आज, इस बल में 18 ग्रुप केन्द्र, और तीन सिगनल बटालियनों के सहित, 66 बटालियनें हैं। स्वतन्त्रता के उपरान्त 1947 में, एक वह समय था जब अनेकों ने इसे ब्रिटिश साम्राज्य की एक वसीयत मात्र समझा और इसे भंग करने की सोची, किन्तु दूरदर्शी सरदार पटेल ने भविष्य को ज्यादा जाना। इस बल को रखा ही नहीं गया; अपितु सुदृढ़ भी किया गया। कौन इस निर्णय की बुद्धिमत्ता पर, प्रश्न-चिन्ह अब लगा सकता है ?

इसी वर्ष, कम से कम आठ बटालियनें बढ़ायी गयी हैं। सारे देश में व्यवस्था बनाये रखने की धारणा के फलस्वरूप, तीन तो इन में शान्ति रक्षिणी बटालियनें गठित की गयी हैं। इन बटालियनों के शान्ति रक्षक तत्वों में, वे सम्मिलित हैं, जिन्हें उपद्रवों में नष्ट गृहों को फिर से निर्माण करने की, अग्नि बुझाने की तथा दुःखी जनता को चिकित्सा सुविधायें प्रदान करने की दक्षता है। मेरठ और कूडो में इन्ही दिनों हुये दंगों में ऐसी एक बटालियन ने वह कार्य किया, जिसकी प्रशंसा इस पत्रिका में दी जा चुकी है। यह अत्यन्त महत्वपूर्ण उत्तम परिवर्तन है। इस बल की परिक्ता ओर बहुमुखी प्रतिभा को कम करने के उद्देश्य से यह नहीं कहा जा रहा है । क्योंकि इन सब वर्षों में, देश के सभी प्रकार की स्थितियों के सुलझाने का काम के० रि० पु० बल को सौंपा गया है।

वार्षिकोत्सव के साथ अन्तर्रेंज दौड़कूद जुड़े रहते हैं। इस संस्करण में इन तथा अन्य खेलों की प्रतियोगिता पर प्रकाश डाला गया है।

अभी देश की सबसे बढ़ी खेल प्रतियोगिता एशियाड हुयी है । अतएव, अप्पू के साथ के० रि० पु० बल की मुख्य खिलाड़ियों ने भी इसमें स्थान पाया है।

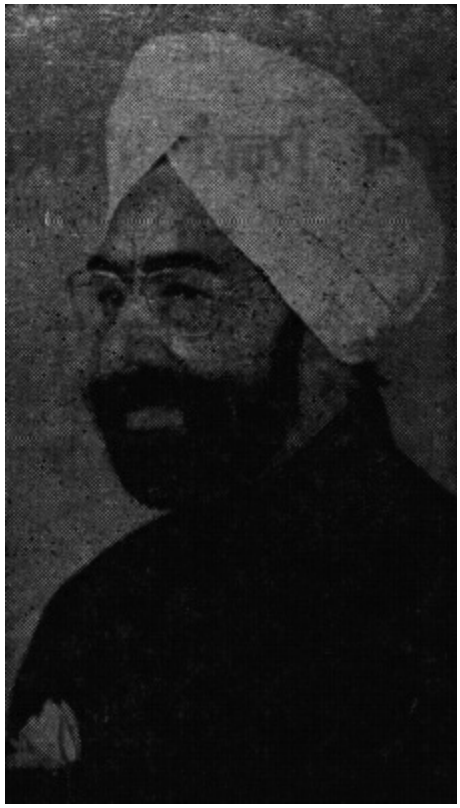
क्रैपलर अंग्रेजी में भी प्रकाशित होती है। इसमें प्रकाशित सामग्री के प्रयोग के लिए, कृपया मुख्य संपादक को लिखें। इसमें प्रकाशित सामग्री का आधिकारिक दृष्टिकोण के सर्वथा अनुरूप होना आवश्यक नहीं है।

बधाई - संदेश

मुझे यह जानकर हर्ष हो रहा है कि केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल अपना 43वां वार्षिकोत्सव मना रहा है।

इन सब वर्षों में, यह बल आन्दोलनों और उपद्रवों में कानून-व्यवस्था कायम रखने वाला ही केवल एक संगठन नहीं जाना गया है, बल्कि प्राकृतिक संकटों में सहायता और राहत का भी एक स्रोत माना गया है । जोखिम से भरे अत्यन्त क्रूर तथा अहितकारी स्थितियों तथा अवस्थाओं में, इस बल को प्राय: कार्य करना पड़ता है; किन्तु अनुशासन और समर्पण की भावना से, इसने कठिन सेवाभार उठाये हैं।

43वें वार्षिकोत्सव के अवसर पर, के० रि० पु० बल के सभी अधिकारियों और जवानों को, मैं शुभकामनायें भेज रहा हूं और यह आशा करता हूँ कि राष्ट्र-सेवा में यह संगठन निरन्तर सफलता पाता रहेगा।



जैल सिंह
[राष्ट्रपति]

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के 43वें वार्षिकोत्सव मनाने के लिए, इसके अधिकारियों और जवानों को प्रधानमंत्री अपनी मंगल कामनायें प्रेषित करती हैं।

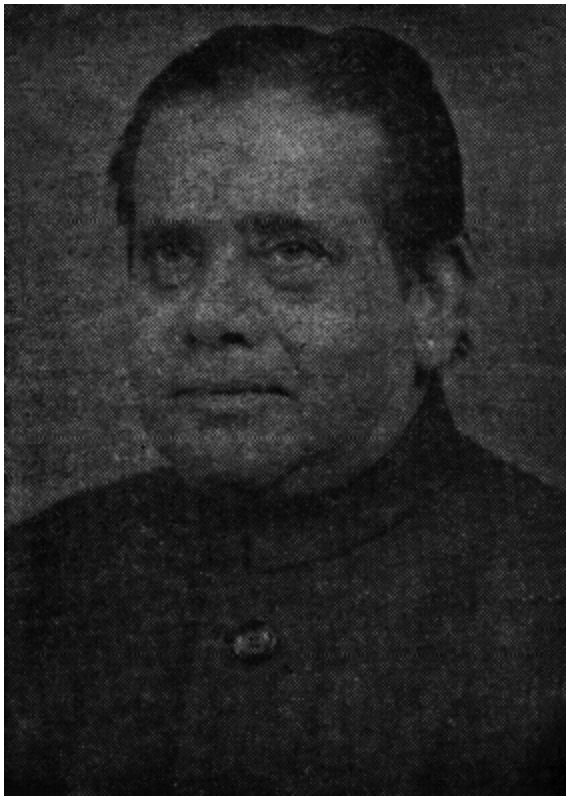


वजाहत हवीवुल्लाह
[निदेशक, प्रधान मंत्री कार्यालय]

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के 43वे वाषिकोत्सव पर, इसके अधिकारियों और जवानों को मेरी हार्दिक बधाइयाँ हैं। एक सर्वतोमुखी दल होने के नाते, क़ानून और व्यवस्था बनाये रखने के लिये राज्यों और केन्द्र शासित क्षेत्रों को सहयोग देने में तथा बाहरी संकटों के समय, सशस्त्र दलों के लिये सहकारी बल के रूप में काम करने में, इसने खूब नाम कमाया है।

देश के कोने-कोने से जवानों को भर्ती कर, राष्ट्रीय एकता लाने में भी केन्द्रीय रिज़र्व पुलिस बल थोड़ा बहुत साधन रहा है। मुझे विश्वास है कि यह बल अपनी पिछली सफलताओं पर ही नहीं गर्व करता रहेगा, बल्कि अनुशासन और कार्य-कुशलता की नई ऊंचाइयों को लांवने का भी यत्न करेगा।

इस अवसर पर मेरी शुभकामनायें स्वीकृत हों।

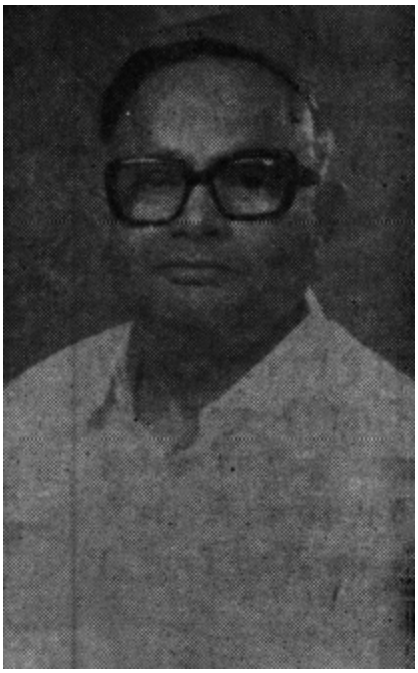


पी. सी. सेठी
[गृह मंत्री]

मुझे यह जान कर प्रसन्नता है कि केन्द्रीय रिजर्व बल अपनी 43वीं वर्षगांठ अक्टूबर 1982 में मना रहा है।

राष्ट्र-सेवा में, के० रि० पु० बल का शानदार रिकार्ड रहा है । गृह मंत्रालय के आधीन काम करने वाला यह सब से पुराना बल ही केवल नहीं है, साथ ही, यह सर्सतोमुखी बल भी है। जब-जब कानून-व्यवस्था या प्राकृतिक संकटों से उत्पन्न कठिन स्थितियों से सुलझाने के लिये नागरिक पुलिस की सहायता के वास्ते इस बल की मांग की गयी है, तब-तब इसके कार्य की सराहना हुई है।

इस बल के सभी सदस्यों को मेरी बधाइयाँ तथा शुभकामनायें हैं।



पी. बंकट सुबय्या
(गृह राज्यमंत्री)

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के सभी सदस्यों को, उसके 43वें वार्षिकोत्सव पर, मेरा अभिनन्दन प्रेषित है।

संघ के सशस्त्र बल के रूप में, के० रि० पु० बल देश के कोने-कोने में शान्ति और आन्तरिक सुरक्षा बनाये रखने में बड़ा सराहनीय कार्य करता रहा है। प्राकृतिक संकटों के समय असैनिक अधिकारियों की सहायता कर और युद्ध के समय सेना के साथ संग्राम कर, इसने अपनी वहुमुखी प्रतिभा सिद्ध की है।

"सेवा और भक्ति" के अपने सिद्धान्त पर दृढ़, के०रि०पु० बल के जवान कठोर परिस्थितियों वाले सुदूर क्षेत्रों में अपना सेवा-भार बिना आनाकानी के उठाते रहे हैं, ताकि राष्ट्र के अन्य लोग अपना जीवन शान्ति-पूर्वक बिता सकें।

इस संदेश के द्वारा, क्या मैं, इस बल के उज्ज्वल भविष्य के लिये अपनी मंगलकामना भेज सकता हूँ ?



एन. आर. लस्कर
(गृहराज्य मन्त्री)

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के 43वें वार्षिकोत्सव के शुभ अवसर पर, इसके सभी जवानों को मेरी बधाइयां हैं।

देश की कानून-व्यवस्था की विभिन्न स्थितियों की चुनौतियों से सुलझने के लिए राज्यों की मदद करने में, के०रि०पु० बल ने सराहनीय कार्य किया है। इन तमाम सालों में, यह बल शान्ति व्यवस्था का संरक्षक, सभी समाजद्रोही और राष्ट्र विरोधी तत्त्वों का प्रतिरोधक और देश के प्राकृतिक संकटों में सहायता चाहने वालों का मित्र, सिद्ध हुआ है।

राष्ट्र के प्रति की गई अपनी सेवाओं के लिये, इस शानदार बल के सदस्य गर्व अनुभव कर सकते हैं और देश के प्रति सेवा और उत्तरदायित्व की भावना के निमित्त, सदा बढ़ती हुई सतर्कता को, इससे प्रेरणा मिलती रहेगी।

इस संदेश के द्वारा, इस बल के सदस्यों को मेरी मंगल कामनायें प्रेषित हैं।



टी० एन० चतुर्वेदी
(गृह सचिव)

गौरव गाथा

देशभक्ति

दंगा-ग्रस्त अमृतसर में 27 अक्टूबर 82 को शान्ति-व्यवस्था लौटाने के प्रयास में, शहीद होने वाले 22 बटालियन, के० रि० पु. बल के का० खालिद कमाल अंसारी के पिता श्री मुहम्मद हफीज जलालुद्दीन ने यह प्रार्थना की है कि 'प्रभु, देश की राष्ट्रीय अखंडता, प्रतिष्ठा और गौरव बनाये रखने के लिये, हरेक युवक को खालिद कमाल अंसारी बनाये।' एक बम-विस्फोट से घायल होने पर, का० अंसारी का निधन हो गया था।

श्री एस० दत्ता चौधरी, महानिदेशक ने उसके पिता को शोक सन्देश में लिखा है कि संतप्त परिवार के शोक में सारा के० रि० पु० बल सम्मिलित है। उन्होंने केन्द्रीय गृहमंत्री का भी शोक संदेश उक्त

परिवार को भेजा है। उसी के उत्तर में, श्री जलालुद्दीन ने उपयुक्त इच्छा प्रकट की हैं।

दलदल में धंसती बालिका की प्राणरक्षा

नवम्बर 16, 1980 के प्रात को, बिहार वासियों द्वारा मनाये जाने वाले 'छट-उत्सव' के सम्बन्ध में, मुकामेघाट की एक दस वर्षीय कन्या आशा कुमारी, अपनी बड़ी बहन के साथ गंगा पूजने गई। प्रचलित प्रथा के अनुसार, 'पूजा' करने से पूर्व, लोग नदी में स्नान करते हैं। जब वह कन्या नदी में घुसी, वह दलदल में फँस गई और कमर तक उसमें धँस गई। वह सहायता के लिए चिल्लाई। नदी के किनारे पर खड़ी उसकी बड़ी बहन घबड़ा कर, सहायता के लिए चीख पुकार करने लगी।

नदी के तट पर खड़े लोगों को उसे बचाने का साहस नहीं हुआ। हेड कांस्टेबल (आर्मरर) बाबू सिंह,. 53 बटालियन (के० रि० पु० बल) ने, जो अपने परिवार के साथ पास के मन्दिर में गया हुआ था, वह चीत्कार सुना और घटनास्थल पर जा धाया। अपने प्राणों की बिना चिंता किये हुए, वह उस कन्या को बचाने के लिए नदी में कूद पड़ा । दलदल से जूझता हुआ, वह उस कन्या के पास तक पहुँच गया और उसको बचा लिया।

क्या वे माता-पिता और क्या जनता, सबने हे० कां० बाबूराम के इस साहस और मानवीय काम की भूरि-भूरि सराहना की।

डूबते व्यक्ति को जीवन रक्षा

कांस्टेबल महेन्द्र नाथ सिंह, 4 बटालियन, ने रंगपो के पास टीष्टा नदी में 9 जून 1982 को एक व्यक्ति को डूबने से बचा लिया। किसी मणिराम राय को स्नान करते समय टीष्टा की तेज धार बहा ले गई। इसे देखते ही महेन्द्र नाथ सिंह नदी में कूद पड़ा और उस युवक को सफलतापूर्वक खेंच कर सुरक्षित स्थान पर ले आया। गंगतोक के रोटरी क्लब के एक सम्मेलन में, सिक्किम के राज्यपाल श्री एच० जी० एच० तलेयर खाँ ने इसके उपलक्ष्य में, उस सिपाही को एच० एम० टी० की एक घड़ी प्रदान की। राज्य विधान सभा के निर्वाचित सदस्यों द्वारा, रंगपो के निवासियों ने भी अपना आभार प्रकट किया।



साथ ही, रंगपो, मेल्ली, जीरेर्थग पर भीषण अग्निशमन के लिए तथा मानव प्राणों के बचाने के हेतु स्वेच्छापूर्वक रक्तदान के दृष्टान्तों के हेतु, 34 बटालियन के अधिकारियों और जवानों की राज्यपाल ने सराहना की।

70 बटालियन की प्रशंसा

भारत सरकार के लिखे अपने पत्र में, बिहार सरकार ने फूलवाड़ी और बगलवा में कठिन परिस्थितियों में कानून-व्यवस्था बनाये रखने में सहयोग देने के लिए, 70 बटालियन के अधिकारियों और जवानों की बड़ी सराहना की है।

के०रि०पु० बल को रक्तदान ट्राफी

विज्ञान भवन, नई दिल्ली में 15 सितम्बर 82 को एक भव्य समारोह में, श्री शिव मोहन सिंह, पुलिस महानिरीक्षक, मुख्यालय ने, के०रि०पु० बल की ओर से 1981 की रक्तदान ट्राफी प्राप्त की। श्री एम० रंगानाथन, भारतीय रेडक्रास सोसाइटी के भूतपूर्व अध्यक्ष ने वह ट्राफी प्रदान की।

भारतीय रेड क्रॉस सोसाइटी द्वारा संस्थापित अनेक ट्राफियों और शील्डों में, थल सेना, जल सेना, वायु सेना, राष्ट्रीय कैडेट कोर, पुलिस, सीमा सुरक्षा बल, भारतीय तिब्बत सीमा पुलिस और के० रि० पु० बल जैसी रक्षा सेवाओं में, एक ट्राफी सर्वाधिक रक्तदान की भी है।

एक वर्ष में, इस ट्राफी को पाने के लिये, कम से कम 250 यूनिट रक्तदान होना चाहिये, जबकि के०रि०पु० बल ने रक्षा सेवाओं में 348 यूनिट का सर्वाधिक रक्तदान किया और ट्राफी प्राप्त की।

बान्देयों को बच भागने का यत्न अकारथ

इम्फाल में, 11 जून 1982 को, 40 बटालियन की साथ जाने वाली सतर्क टुकड़ी ने विचाराधीन बन्दियों की बच भागने की साहसी चेष्टा अकारथ कर दी। उस दिन इम्फाल के सेशन कोर्ट (सत्र-न्यायालय) की पुलिस संरक्षा में 32 बन्दी ले जाये जा रहे थे। उनमें से चार ने न्यायालय परिसर से बच भागने का यत्न किया। जबकि दो को उनकी संरक्षा करते हुये के० रि० पु० बल के जवानों ने तुरन्त धर दबोचा, अन्य दो परसिर की दीवार फाँदने और व्यस्त मार्ग से भागने में सफल हो गये। किन्तु पूर्व इसके कि वे भीड़ में रिलमिल जायें, उन पर गोली चलाई गई। उनमें एक के चोट आई और दूसरा ठौर मारा गया।

इ० मनवर सिंह, का० भरत सिंह और का० रघुबीर सिंह के इस कार्य को, मणिपुर सरकार ने बहुत सराहा। मणिपुर पुलिस और पुलिस महानिरीक्षक, के० रि० पु० बल सेक्टर IV ने उन्हें नकद पुरस्कार दिये।



दंगाग्रस्त बम्बई में के०रि०पु० बल के सशस्त्र जवान बम्बई में शान्ति-व्यवस्था लौटाने में सतर्क

बम्बई के अनेक भागों में 18 अगस्त 1982 को अभूतपूर्व दंगों ने शान्ति नष्टभ्रष्ट कर दी। पुलिस कर्मी आवेश में झपट । पड़े और वाहनों, रेलगाड़ियों पर पथराव, अग्निकांड, 'रेल रोको' 'रास्ता रोको' बल्कि दुकानों और भण्डारों को लूटने पर उतर पाये। कई महीनों की हड़तालवाले कपड़े मिलों के कर्मचारियों सहित, और भी दूसरे लोग आन्दोलनकारी पुलिसकर्मियों के साथ हो गये।

अन्य अर्द्ध-सैनिक संगठनों के साथ, के० रि० पु० बल की टुकडियाँ भी जा धायीं

और बिजली की सी द्रुतगति से, पुलिस कर्मियों को निरस्त्र कर दिया गया, शस्त्रभंडार काबू में किये गये और पुलिस कर्मचारी संगठन के नेता, बन्दी बना लिये गये।

श्री के० पी० मोदबेकर, पुलिस महानिरीक्षक, महाराष्ट्र ने, के०रि०पु० बल के बम्बई अविलम्ब पहुँचने की और विस्फोटक स्थिति को निपटने में उसकी प्रमुख भूमिका की, सराहना की है।

के०रि०पु० बल की सेवा के प्रति उपद्रव ग्रस्त मेरठ का आभार

महानिदेशक, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल को लिखे अपने पत्र में, श्री आर. डी. | सोंकर, आयुक्त, मेरठ मंडल ने लिखा है—

"मेरठ में हुये इन्हीं दिनों साम्प्रदायिक उपद्रव में, के०रि०पु० बल की 71 बटालियन (शान्ति रक्षिणी) के जवानों की कार्रवाई की सराहना करने में मुझे अपार हर्ष हो रहा है। इस दंगे में उपद्रवियों ने अनेकों मकान-दुकान जला दी और आपके जवानों को उन्हें फिर से बनाने के आदेश दिये गये। आपके जवानों द्वारा फिर से निर्मित और मरम्मत किये गये सभी मकानों-दुकानों का मैंने निरीक्षण किया पौर मुझे कहना पड़ता है कि उन्होंने इस कार्य को सुन्दर प्रकार से किया है। उन्होंने तीव्रगति से काम किया और उनके काम की गुणवत्ता उत्तम पाई गयी और सबसे बड़ी बात तो यह है कि उन्होंने अपने काम को खुशी-खुशी और निष्ठापूर्वक किया। आपके जवानों के कार्य तथा अनुशासन को, मेरठ के नागरिकों और स्थानीय प्रशासन ने बहुत सराहा और पसन्द किया है।

"इतने थोड़े समय में मेरठ की जनता से प्रशंसा पाने वाले 71 बटालियन (शान्ति रक्षिणी), के० रि० पु० बल, के जवानों और अधिकारियों के पास इस सराहना को प्रेषित करने के लिये क्या मैं प्रार्थना कर सकता हूँ।

नागा विद्रोही गिरफ्तार

दीमापुर से 5 कि० मी० दूर, चकिया ग्राम को सी० सु० बल सेना के साथ, कमांडैंट श्री भगतसिंह के नेतृत्व में 23 बटालियन के०रि०पु० बल, की दो प्लाटूनों ने घेर लिया। जबकि सेना और के०रि०पु० बल ने क्षेत्र की नाकाबन्दी की, सी० सु० बल ने विद्रोहियों के गुप्त स्थानों पर छापा मार कर, मैजर इटोखू के गिरोह वाले पांच विद्रोहियों को आत्मसमर्पण करने के लिए बाध्य किया। बरामद-शस्त्र और गोले बारूद, में एक चीनी मशीनगन व एक कार्बाइन स्टेनगन मिली। थलसेना कमांडर से० 5 ने 23 बटालियन द्वारा दी गई सहायता की सराहना की है।

के०रि०पु० बल के डाक्टर द्वारा नामदार कि अनुशंधान ,



डॉ० जी० सी० सत्पथी

विभिन्न स्नायु शूल विकारों के प्रारंम्भिक विभेदीकरण पर, के०रि०पू० बल के एक डाक्टर ने अनुसंधान किया है।

अन्य चार के साथ, डा० जी० सी० सत्पथी ने उन तत्वों की ओर संकेत किया है, जो विभिन्न स्नायुशल विकारों के विभेदन करने में आरंभिक निदान-साधन का काम कर सकते हैं। उनके इस अभिपत्र को भारतीय आयुर्वेदिक अनुसंधान परिषद् ने अपनी पत्रिका 'इण्डियन जर्नल आफ मंडी | कल रिसर्च' में प्रकाशित करना स्वीकार कर लिया है।

इस पत्रिका में प्रकाशित होने वाला यह अभिपत्र, के०रि०पु० बल के किसी भी डाक्टर का पहला होगा।

शहीदों को श्रद्धांजलि

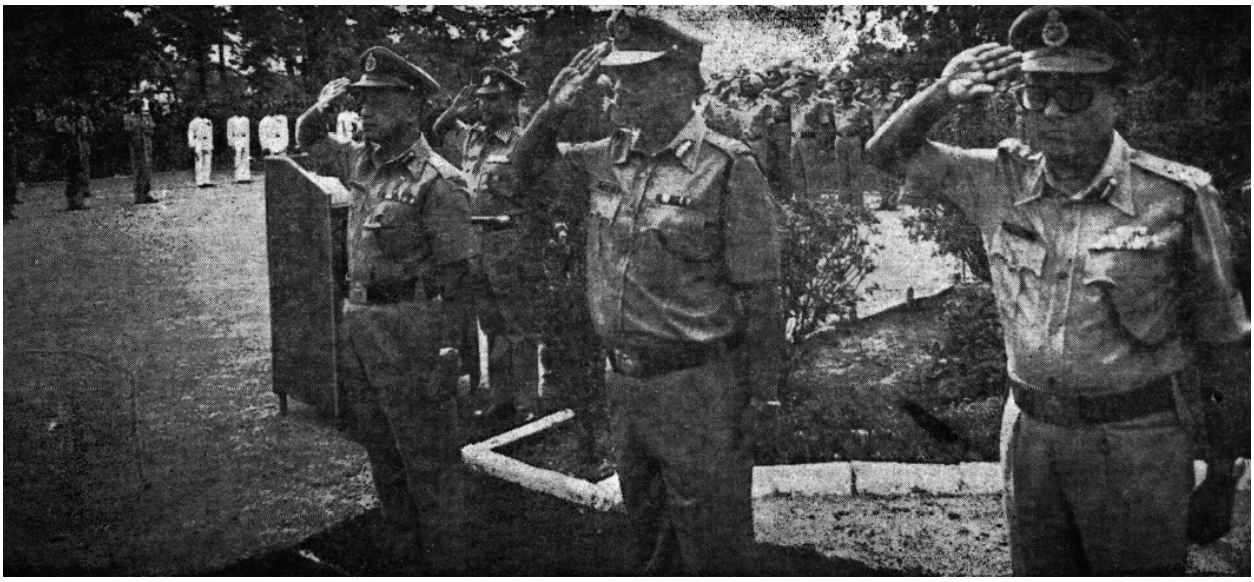
सारे देश में 21 अक्टूनर, पुलिस स्मारक दिवस के रूप में मनाया गया। 1959 का यह वह दिन था, जब केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के दस जवानों ने लद्दाख में सीमित्रों की सुरक्षा करते हुये अपने प्राण न्यौछावर कर दिये थे।

नीमच में, इस वर्ष एक विधिवत् समारोह मनाया गया। शहीद स्मारक पर, श्री एस० दत्ता चौधरी, महानिदेशक और अन्य गण्यमान्यों ने शहीदों को श्रद्धाञ्जलि देते

हुये फूल मालायें चढ़ायीं। महानिदेशक ने पुलिस स्मारक दिवस का महत्व संक्षेप में बताया। कमांडेंट, ग्रुप केन्द्र नीमच ने पुलिस के उन सभी जवानों के नाम पढ़े, जिनका पिछले एक वर्ष में निधन हुआ था। शोक विगुल की ध्वनि पर, दो मिनट का मौन धारण किया गया और समारोह का समापन वस्त्र के बाजों की इस धुन के साथ हुआ —'वतन की राह में, वतन के नौजवान शहीद हो।'



पुष्पांजलि चढ़ाते हुये महानिदेशक, के०रि०पु० बल।



शहीदों के प्रति सलामी।



के० रि० पु० बल का 43वाँ वार्षिकोत्सव

केन्द्रीय गृह मन्त्री द्वारा के० रि० पु० बल की प्रशंसा,

झड़ोदा कलां नई दिल्ली में, 31 । अक्टूबर 1982 को केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल का 43वाँ वार्षिकोत्सव मनाया गया।

सामारोहिक परेड को सम्बोधित करते हुये, केन्द्रीय गृहमंत्री श्री प्रकाशचन्द्र सेठी ने राज्यों का विश्वास पाने के लिये, के० रि० पु० बल की सराहना की। दशहरा और

मुहर्रम के उत्सव साथ-साथ पड़ने पर, । अधिकांश राज्यों ने इस बल की बड़ी मांग की। इन बढ़ती हुई मांगों के कारण, यह बल, अब रिजर्व बल नहीं रह कर, कानून व्यवस्था बनाये रखने की कार्यवाइयों में, एक सक्रिय बल बन गया है।

श्री सेठी ने यह भी बताया कि पूर्वोत्तर | अंचल में पृथकतावादी और साम्प्रदायिक तत्वों से निपटने और शान्ति-व्यवस्था बनाये रखने में, के० रि० पु० बल ने बड़ी | सहायता की है । मिज़ो नेशनल फ्रंट की विघटनकारी गतिविधियों को, इस बल ने केवल बढ़ने से ही नहीं रोका है, बल्कि विद्रोहियों को बन्दी बना, हथियार बरामद करने में भी इसने शानदार सफलता पायी है। पिछले दिनों, मेरठ में साम्प्रदायिक दंगों के समय, सभी सम्प्रदायों द्वारा किये गये इस बल के जवानों के स्वागत से स्पष्ट है कि इस बल का, दृष्टिकोण गैर साम्प्रदायिक है।

गृह मंत्री ने उल्लेख किया कि भारत सरकार, के० रि० पु० बल के कर्मियों की सेवा-स्थिति सुधारने की सोच रही है। पूर्वोत्तर क्षेत्र मे, के. रि. पु. बल की भारी संख्या निरत होने के कारण, गोहाटी में वर्तमान 50 बिस्तरों के अस्पताल को 100 बिस्तरों वाला बनाया जा रहा है। जवानों के राशन भत्ते को भी बढ़ाने पर सहानुभूतिपूर्वक विचार किया जा रहा है।



परेड कमांडर श्री जी० जी० ए० शर्मा

समारोह में, श्री सेठी ने 39 अधिकारियों और जवानों को वीरता तथा सराहनीय विशिष्ट सेवाओं के लिये पदक प्रदान कर, उन्हें सम्मानित किया।

परेड का नेतृत्व श्री जी. जी. ए. शर्मा कमान्डेन्ट 29, बटालियन ने किया।

गृहमन्त्री ने श्री नरसिंहम, कमांडेन्ट, 4 बटालियन को चौथी बार 'सर्वश्रेष्ठ'

बटालियन को ट्राफी प्रदान की, 'सर्वश्रेष्ठ एम. टी. फ्लीट' (परिवहन बेड़ा) की ट्राफी श्री डी. डी. मिश्र, कमांडेंट की बटालियन को मिली। बाद को, गृहमंत्री 'कल्याण उत्पादन' की प्रदर्शिनी भी देखने गये।

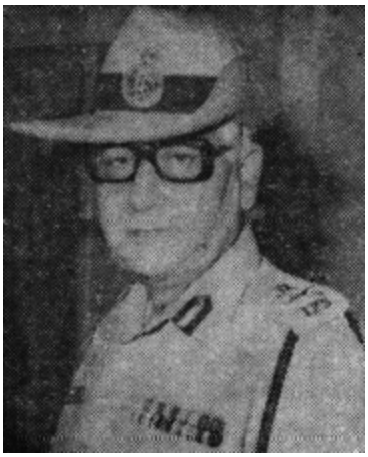
शानदार परेड

परेड प्रभावशाली थी। जैसा महानिदेशक ने कमांडेंटों को अपने पत्र में लिखा है —'दर्शक सहमत थे कि के. रि. पु. बल में, बल्कि देशभर में क्या यहाँ और क्या अन्यत्र भी, हाल में उनकी देखी हुयी यह परेड सर्वश्रेष्ठ थी। यही राय निदेशक (प्रशिक्षण), पुलिस अनुसंधान विकास ब्यूरो की भी थी, जो ऐसी परेड देखते ही रहते हैं। एयर मार्शल गोले और लेफ्टीनेंट जनरल सोढी (जो विशिष्ट दर्शकों में थे) जैसे उच्च रक्षा अधिकारियों ने भी परेड की भूरि-भूरि सराहना की।"

इस सफलता के लिये, महानिदेशक ने परेड कमांडर और उप कमांडर, कम्पनी कमांडरगण तथा रिजर्व परेड कमान्डर और उप कमांडर को बधाई दी है।

पिछले वर्ष के

विशिष्ट सेवा पदक



स्व. श्री शिवपुरी



श्री ओहरी



श्री रघुबीर सिंह

इस वर्ष, के० रि० पु० बल के 39 सदस्यों ने विभिन्न पदक इस प्रकार पाये हैं—पुलिस वीरता पदक 1, राष्ट्रपति पुलिस बिशिष्ट सेवा पदक 3; पुलिस सराहनीय सेवा पदक—34 (गणतन्त्र दिवस और स्वाधीनता दिवस पर सत्तरह-सत्तरह) एवं प्रधानमन्त्री जीवनरक्षकपदक—1।

सराहनीय सेवा पदक

(गणतंत्र दिवस पर)



(बायें से दायें) ऊपरी पंक्ति : सर्व श्री बाधवा बलबीर सिंह, राजिन्दर सिंह, गोपाल दास और गुरमेल सिंह।
मध्य पक्ति: सर्व श्री शंकर लाल, राबिन टोप्पो, प्रहलाद सिंह, असवल, दरगाह सिंह और बख्तावर सिंह।
निचली पंक्ति : सर्व श्री गुरमेज सिंह शर्मा, किशोरी लाल, नेगी, राम प्रकाश और सुब्बाराब।

पदक विजेता

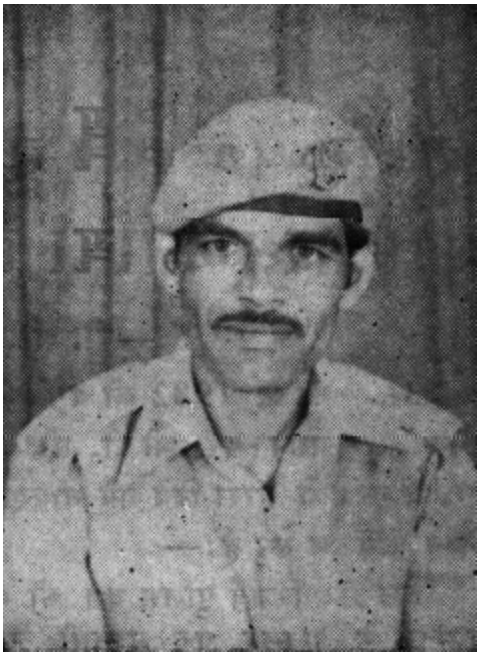
राष्ट्रपति पुलिस वीरता पदक

इम्फाल में 2 सितम्बर, 1981 को जब बच्चों की एक स्कूल वस की संरक्षा करती हुई के० रि० पु० बल की एक गाड़ी में राजद्रोहियों ने एक गोला फेंका, तब का० चन्दगी राम ने उसको लातमार कर उछाल दिया। हवा में वह फटा और उसके टुकड़ों ने चंदगीराम के धुटनों को क्षति पहुँचायी। वह घायल हो गया; किन्तु बालक बच गथे।

तब पास के बाँस-कुन्ज में छिपे राजद्रोहियों ने दोनों वाहनों पर गोली चलाई। संरक्षक दल के चंदगी राम तथा अन्य जवान भी जबाब में गोली चलाते रहे, जब तक कि राजद्रोही भाग नहीं गये।

चन्दगीराम के अनुकरणीय साहस और शूरवीरता के उपलक्ष्य में, उसे राष्ट्रपति

का पुलिस वीरता पदक प्रदान किया गया।



चन्दगीराम

सराहनीय सेवा पदक
(स्वाधीनता दिवस पर)



(बायें से दायें) ऊपरी पंक्ति : सर्वश्री चक्रवर्ती, माथुर, सन्थानम, महिन्द्रा और कर्नल सोडी।
मध्यम पंक्ति: सर्वश्री देवा सिंह, मिश्रा, आर० के० सिंह, अवतार सिंह, आर० सी० यादव और नेगी।
निचली पंक्ति : सर्वश्री जीत सिंह, जांगले, धन सिंह, भीम बहादुर और कौल।

के०रि०पु० बल ने इतिहास बनाया है

—पी. सी. सेठी

31 अक्टूबर 1982 को वार्षिकोत्सव परेड के अवसर पर श्री पी. सी. सेठी, केन्द्रीय गृहमंत्री द्वारा दिये गये भाषण का निम्न अविकल रूप है :—

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की 43वीं जयन्ती के अवसर पर सलामी लेने के विशेषाधिकार प्रदान करने के लिये, मैं इसके महानिदेशक, अधिकारियों और जवानों का आभारी हूँ। 1939 में केवल एक बटालियन से इस बल का श्री गणेश हुआ और 1949 में इसमें दो तीन बटालियनों की बढ़ोत्तरी हुई। यह जान कर हर्ष होता है कि आज 66 बटालियन की जन-शक्ति इस में है। इस बल के उत्साह और अनुशासन से जाहिर है कि यह 'सेवा और भक्ति' के अपने सिद्धान्त पर अटल है और उसी के

अनुसार देश और समाज की सेवा यह कर रहा है। मुझे यह कहने में गर्व हो रहा है कि जहाँ कहीं भी के० रि० पु० बल निरत हुआ है, कठोर परिश्रम से इसने वहाँ अच्छा नाम कमाया है। अत्यन्त कठोर क्षेत्रों में मुख्यकर पूर्वोत्तर में, इस बल को तैनात किया गया है; परन्तु राजद्रोह और हिंसा की चुनौतियों के होते हुये भी, इसके जवान कर्तव्य-च्युत नहीं हुये हैं। मिजोरम के मुख्य एवं अन्य मंत्री, जो इन्हीं दिनों मुझ से मिले थे, उस केन्द्र शासित क्षेत्र में के० रि० पु० बल और सी० सु० बल द्वारा किये गये कार्यों की प्रशंसा, कर रहे थे। राजद्रोहियों की गतिविधियाँ रोकने में गोलाबारूद के साथ उन्हें पकड़ने तथा आत्मसमर्पण में और मुठभेड़ों में बहुधा बड़े से बड़े विद्रोहियों को मुँह की खिलाने में, यह बल सफल रहा है।

2. इसी प्रकार, यद्यपि कानून-व्यवस्था बनाये रखना एक राज्य की जिम्मेदारी है, विभिन्न राज्यों में बढ़ती हुई अराजकता से सुलझने के लिये के० रि० पु० बल की बटालियनों को बार-बार जाना पड़ता है। इस वर्ष संयोग से दशहरा और मुहर्रम एक साथ पड़ गये हैं और समाज के सभी अंगों से समान और न्याय संगत व्यवहार करने के लिए एवं कानून-उल्लंघकों से सख्ती से निपटने के हेतु प्रार्थनायें प्राप्त की। इस क्षेत्र में, के०रि०पु० बल के अधिकारियों एवं जवानों ने एक इतिहास कायम किया।



3. आज बड़ी जोखिमों से मुख्यकर पूर्वोत्तर अंचल में, आप लोगों को जूझना पड़ रहा है। राहत और विश्राम के बिना, विभिन्न क्षेत्रों में लम्बी अवधियों तक बटालियनों को कार्य करना पड़ रहा है। देश विकास के मार्ग पर अग्रसर है तथा औद्योगिक और हरित क्रान्तियों में से गुजर रहा है और एक नये समाज का निर्माण होने वाला है। तो भी संकीर्ण विचार वाले, अस्थिरता की स्थितियाँ उत्पन्न करने में संलग्न हैं। इस समय

स्थिति ऐसी है कि यह पुलिस बल जिसे सामान्यतः (रिजर्व) आरक्षित बल के रूप में सेवाभार उठाना चाहिये, आज सक्रिय पुलिस बल के समान काम कर रहा है और राहत तथा विश्राम की आवश्यकता अनुभव कर रहा है। अतएव, जैसा कल के सम्मेलन में मैंने और गृह सचिव ने उल्लेख किया था, साहाय्य और विश्राम की जरूरतों को पूरी करने के लिए, के०रि०पु० बल में कुछ और बटालियनें बढ़ाना, अनिवार्य है।

4. साथ ही, इस बल की और भी कठिनाइयों को कम करने के प्रयास जारी हैं। साधन संकुचित होते हुये भी, पूर्वोत्तर में इस बल के बड़े पैमाने पर निरत होने के कारण, हम गौहाटी अस्पताल की 50 बिस्तरों वाली क्षमता को 100 बिस्तरों वाली बढ़ा रहे हैं। राशन भत्ते के बढ़ाने के प्रश्न पर भी सहानुभूतिपूर्वक विचार किया जा रहा है, जिससे मुद्रास्फीति के इन दिनों में, आप उचित राशन पोषाहार पा सकें।

5. संकट के इन दिनों में, आपने देश के प्रति अपनी सेवायें समर्पित की हैं और आपकी सेवा तथा भक्ति की मान्यता के ही फलस्वरूप, आप में से इतने लोग आज पदक पा रहे हैं। साथ ही, आपका ही एक जवान प्रधान मंत्री जीवन रक्षा पदक पा रहा है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि आप ऐसे ही उत्साह अनुशासन और समर्पण-भावना से काम करते रहेंगे।

6. निस्सन्देह, आपके अधिकारी गृह मंत्रालय का ध्यान समय-समय पर आपकी कठिनाइयों की ओर आकर्षित करते रहेंगे, जिससे हम यथाशक्य उनकी सेवा कर सकेंगे। इस अवसर पर, मैं अपने और देश वासियों की ओर से आपकी कार्रवाइयों के उपलक्ष्य में बधाइयाँ देता हूँ। आपके कल्याण के लिए, मैं मंत्रालय की ओर से 10,000 रु० का अनुदान भी घोषित करता हैं। मुझे विश्वास है कि इस राशि को जरूरत की जगह ही काम में लाया जायेगा।

7. महानिदेशक, अधिकारीगण, जवानों तथा जवानों को प्रोत्साहित करने को पधारी हुई इस विशिष्ट जनता को, मेरा धन्यबाद है।

बाढ़ पीड़ितों की सहायता

उड़ीसा के बाढ़पीड़ितों के विशाल सहायता अभियान में ग्रुप केन्द्र भुवनेश्वर ने अपना भी अंशदान किया। राज्य सरकार द्वारा दिये गये 10 क्विंटल आटे और 7 क्विंटल आलुओं के खाद्य पैकेटों को युद्ध स्तर पर कुछ ही घंटों में सारे जवानों द्वारा तैयार किया गया और असहाय ग्रामों में विमानों द्वारा गिराने के लिये, उनको सहायता-अधिकारियों को दिया गया।



प्रदर्शिनी में हथियारों का निरीक्षण करते हुये, महानिदेशक और गृह सचिव के साथ गृहमंत्री श्री प्रकाश चन्द सेठी।

॥ पहेलियाँ ॥

[प्रस्तोता—ला० ना० मानचन्द, 49 बटा०]

कदम मिलाने की ऊँची ध्वनि,
सुन सुन मैं थक जाती।
नालदार बूटों की ठोकर,
से नित रौंदी जाती।
फिर भी कहती कुछ नहिं मुख से,
चुप-चुप सब कुछ सहती।
चले गये वे कहाँ रौंद कर,
पड़ी यहीं मैं रहती ॥1॥

तीन अक्षर का मेरा नाम।
उलट पुलट वोही परिणाम।
अन्त कटे तब जल को पाऊँ।
मध्य छटे तब न्याय सुनाऊँ।
आदि कटे तब लज लज जाऊँ।
पूर्ण रूप से फूल कहाऊँ ॥2॥

उत्तर—1. परेड ग्राउन्ड 2. जलज

पदोन्नतियाँ

सन् 1982 की पहली छमाही में, 1618 अराजपत्रित (सामान्य तथा तकनीकी) जवानों (के.रि.पु.बल) को पदोन्नतियाँ दी गयीं।

61 बटालियन की वर्ष गाँठ

टीहू (असम) में 61 बटालियन की चौथी वर्षगांठ अत्यन्त मनोविनोद और धूम-धाम से मनाई गई। उस समारोह के विशेष कार्यक्रम थे—तंबोला, विविध लिबास प्रदर्शन, परिवारों की ईंट दौड़, बालकों की 'जलेबी' दौड़' और लाटरी। समारोह का समापन, बटालियन के जवानों द्वारा प्रस्तुत मनोरंजक रंगारंगी कार्यक्रम के साथ हुआ।



बांये से दांये—के० रि० पु० बल के वरिष्ठ अधिकारियों के सम्मेलन में श्री टी० एन० चतुर्वेदी, श्री पी० सी० सेठी, गृह मंत्री और श्री एस. बत्ता चौधरी, महानिदेशक

वरिष्ठ अधिकारी सम्मेलन :

के० रि० पु० बल की जन-शक्ति-वृद्धि की सम्भावना

विज्ञान भवन नई दिल्ली में आयोजित एक सम्मेलन में 30, अक्टूबर 82 को श्री पी. सी. सेठी, केन्द्रीय गृहमन्त्री ने के० रि० पु० बल के वरिष्ठ अधिकारियों को सम्बोधित किया। इस अवसर पर बोलते हुये, उन्होंने कहा कि भारत सरकार के० रि० पु० बल की जन-शक्ति को बढ़ाने की सोच रही है। इस बल के धर्मनिरपेक्ष और न्यायोचित रवैये से, क्या केन्द्र और क्या राज्य,—सभी प्रभावित हुये हैं। उपलब्ध जनशक्ति की तुलना में राज्यों से इस बल की माँग ज्यादा रहती है, जिसने इसकी रिजर्व-क्षमता रिक्त कर दी है।

उनके शब्दों में, "यद्यपि व्यवस्था बनाये रखने के लिये, तीन विशेष बटालियनों को शान्ति बल के रूप में गठित किया गया है; किन्तु (जैसा महानिदेशक ने बताया) आपको राहत देने और प्रशिक्षण कार्यक्रम को कायम रखने के लिये (जो आप जैसे सशस्त्र बल को बहुत जरूरी है) चार या पाँच बटालियनों के रिजर्व की आवश्यकता है। मुझे यह कहने में हर्ष हो रहा है कि हम यही करने जा रहे हैं।"

मंत्री महोदय ने बताया कि के०रि०पु० बल की कठिनाइयों और के० रि० पु० बल के कर्मियों के काम करने की कठिन परिस्थितियों से वह परिचित हैं। उन्होंने अधिकारियों को विश्वास दिलाया कि सरकार आवश्यक सुविधाओं को जुटाने और साधन ढूढने का भरसक प्रयत्न करेगी।

श्री टी. एन, चतुर्वेदी, गृह सचिव ने कहा कि के० रि० पु० बल में कुछ और बटालियने जोड़ने का प्रस्ताव वित्त मंत्रालय के स्तर पर विचाराधीन है। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि किसी दल की प्रभावोत्पादकता, उसके मनोबल और अनुशासन पर निर्भर है। इस विषय में, उन्होंने तुरन्त यह जोड़ा कि देश के विभिन्न भागों में कठिन परिस्थितियों के बीच जवानों के मनोबल बनाये रखने के लिये, के० रि० पु० बल के बरिष्ठ अधिकारी धन्यवाद के पात्र हैं।

श्रीचतुर्वेदी ने स्वर्गीय श्री शिवपुरी को श्रद्धाञ्जलि अर्पित की और कहा कि वह "महान सज्जन और व्यावसायिक प्रधान थे, जिन्हें जनता, अपने सहयोगियों और जवानों की निष्ठा प्राप्त थी।" उन्होंने आशा प्रकट की कि श्री शिवपुरी द्वारा स्थापित । परम्परायें चलती रहेंगी। उन्होंने यह भी उम्मीद दिलायी कि कॉडर पुनरीक्षण सहित सभी समस्यायें शीघ्र सुलझेगी।

उन्होंने राज्य सरकारों को अपनी क्षमता सुधारने की मंत्रणा दी, जिससे व्यवस्था और स्थिरता के खतरों से निपटने के लिये, केन्द्रीय बलों की मांगों की आवश्यकता

कम हो।

इस से पूर्व, श्री एस० दत्ता चौधरी, महानिदेशक के० कि० पु० बल में इस बल के अधिकारियों और जवानों की कार्रवाई और सेवा स्थितियों में सुधारने के विचाराधीन विविध प्रस्तावों पर सरकार से निर्णय लेने के लिये अनुरोध किया। उन्होंने बताया कि के० रि० पु० बल इतने ब्यापक रूप से निरत की जाती है और इतनी शीघ्रतापूर्वक एक संकट से दूसरे संकट को सुलझने लिये उसे जाना पड़ता है कि प्रशिक्षण और विश्राम को बिल्कुल समय नहीं मिलता; उसकी सारी बटालियने सारे वर्ष सेवारत रहती हैं। अपनी निरन्तर उत्तम दक्षता के लिये, के० रि० पु० बल को लगातार प्रशिक्षण तथा उच्च तनाव वाली सेवाओं के बीच अपने जवानों को समुचित बिश्राम प्रदान करने की आवश्यकता है। उन्होंने सरकार को आश्वासन दिया कि के० रि० पु० बल अपने दायित्वों को समुचित एवं कारगर रूप से सदैव निभाता रहेगा।

आन्तरिक सुरक्षा अकादमी में वरिष्ठ पुलिस अधिकारियों की विचार गोष्ठी

माउन्ट आबू में स्थित के० रि० पु० बल की आन्तरिक सुरक्षा अकादमी में 4 से 9 अक्टूबर 1982 तक सारे देश के पुलिस उपमहानिरीक्षकों की 15वीं आन्तरिक सुरक्षा विचार-गोष्ठी आयोजित हुई।

आन्तरिक सुरक्षा सम्बन्धी समस्याओं । के प्रति पुलिस का अभिनव दृष्टिकोण, ग्रामीण भारत में आन्तरिक सुरक्षा की की समस्यायें, राजनीतिक गतिविधियों और पुलिस की भूमिका, युवकों में असन्तोष और आन्तरिक सुरक्षा पर उसका प्रभाव तथा पुलिस भूमिका से, विशेषतौर से सम्बद्ध निर्वाचन में, गड़बड़ियां जैसे व्यापक विषयों पर विचार-विनिमय हुआ।

श्री एन. एस. सक्सेना, आई. पी. । (रिटायर्ड) संघ लोक सेवा आयोग के सदस्य; श्री एस. एम. दायज, भूतपूर्व निदेशक, राष्ट्रीय पुलिस अकादमी; श्रो वेणु गोपाल, भूतपूर्व निदेशक, पुलिस अनुसंधान और विकास ब्यूरो, प्रोफेसर एस. आर. माहेश्वरी, भारतीय लोक, प्रशासन संस्थान डॉ. आर. के० अरोड़ा, डॉ० राम आहूजा और प्रो० पी. जी. मावलंकर सहित वरिष्ठ अधिकारियों और शिक्षाविदों ने उस में भाग लिया।

इससे पूर्व, प्रतिनिधियों का स्वागत करते हुये, श्री बी० बर्मा, निदेशक आन्तरिक सुरक्षा अकादमी ने विधि विहित पुलिस भूमिका और जनता के विभिन्न दलों द्वारा आकांक्षित भूमिका के बीच बड़े अन्तराल का उल्लेख किया।

जवान की सूझबूझ

जब 27 जून 1982 को का० राम लाल (14 बटालियन) जम्मू हवाई अड्डे पर सुरक्षा-सेवा में निरत था, उसने एक सन्दूक को असाधारण भारी पाया। उसने तुरन्त प्रभारी अधिकारी को इसकी सूचना दी। छानबीन करने पर पता लगा कि उस सन्दूक में 90,000 रु० के आभूषण थे। कां० रामलाल के इस काम की बड़ी प्रशंसा हुई और पुलिस महानिरीक्षक से III ने उसको 200 रु० का नकद पुरस्कार दिया।



सम्मेलन में पधारे के०रि०पु० बल के वरिस्थ अधिकारी गण

तरण-ताल

में

के०रि० पु० बल का बोलबाला

नवम् एशियाई खेलों में भारत की ओर से के० रि० पु० बल के पाँच तैराकों ने भाग लिया। वे थे—

I खजान सिंह

तैराकी में के० रि० पु० बल की नयी उपलब्धि खजान सिंह टोकस है। अभी वह 13 से 19 वर्ष के बीच का ही किशोर है। यह नई दिल्ली के मुनीरका ग्राम का निवासी है और राष्ट्रीय स्कूल तैराकी में इसने बड़ा नाम कमाया है। 1981 की खुली राष्ट्रीय प्रतियोगिता में, इसने 100 मी० बटर फ्लाई में तृतीय स्थान पाया। तुरन्त ही, यह के०रि०पु० बल में सबइंस्पेक्टर के रूप में भर्ती कर लिया गया।

सितम्बर 1982 के प्रशिक्षण खेलों में, खजान सिंह ने 200 मी० व्यक्तिगत मेडले (2:23.4), 400 मी० व्यक्तिगत मेडले (5:07.0) और 200 मी० बटर फ्लाई (2:14.5) में

तीन नये कीर्तिमान स्थापित किये । यह बड़ा कष्टसाध्य प्रयत्न था और खजानासिंह सर्वश्रेष्ठ तैराक घोषित हुआ। ब्रिसबेन में खेले गये राष्ट्रमंडल खेलों में, इसके रिकार्डों ने देश की तरफ से खेलने के लिये अनायास इसे चुनने को बाध्य किया।

II थोबा सिंह

एशियाई खेलों में, भारत की प्रमुख आशाओं में से एक आज थोबा सिंह है।"

जब यह केवल 10 वर्ष का था, तब | आज के इस 22 वर्षीय युवक ने इम्फाल में अपने घर के निकट ताल में तैरना प्रारम्भ में किया था। 1976 में, राष्ट्रीय क्रीड़ा प्रतिष्ठान पटियाला को ग्रामीण प्रशिक्षण शिविर के लिये यह भेजा गया। इस पहली प्रतियोगिता में ही, इसने चार स्वर्ण पदक जीते । इसके बाद, इसने फिर पीछे मुड़कर नहीं। देखा। 1977 में जूनियर नेशनल्स में , 100 मी० ब्रेस्टस्ट्रोक और 200 मी० ब्रेस्टस्ट्रोक में नये कीर्तिमान स्थापित कर इसने सनसनी फैला दी। 1978 के जूनियर नेशनल्स में, इसने वही जीत दोहराई और उसी वर्ष, भारत-श्रीलंका-बंगला देश प्रतियोगिता में, इन्हीं स्पर्द्धात्रों में इसने प्रथम स्थान पाया।

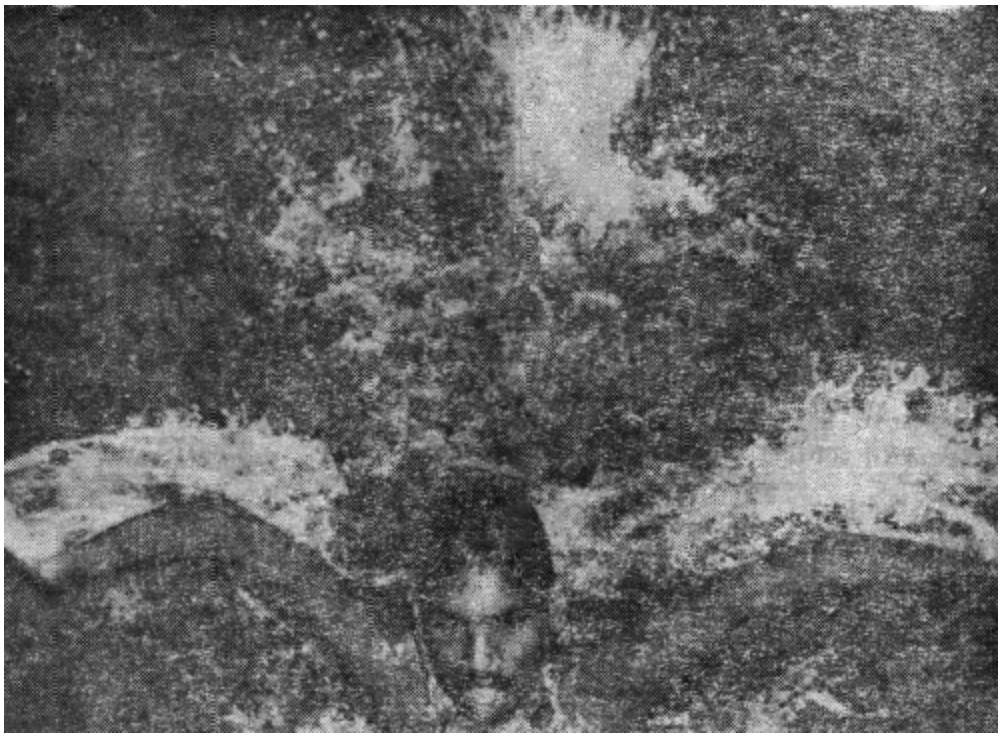
इसको ब्रैस्टस्ट्रोक इतनी सहज हो गयी कि आज भारत में यह ब्रेस्टस्ट्रोक का धुरन्दर तैराक माना जाता है।



ब्रेस्टस्ट्रोक का तैराक-योबासिंह



“बटरफ्लाई और व्यक्तिगत मेडले का राष्ट्रीय कीर्तिमान विजेता खजानसिंह”



मेडेले और बटरफ्लाई का तैराक जैकब



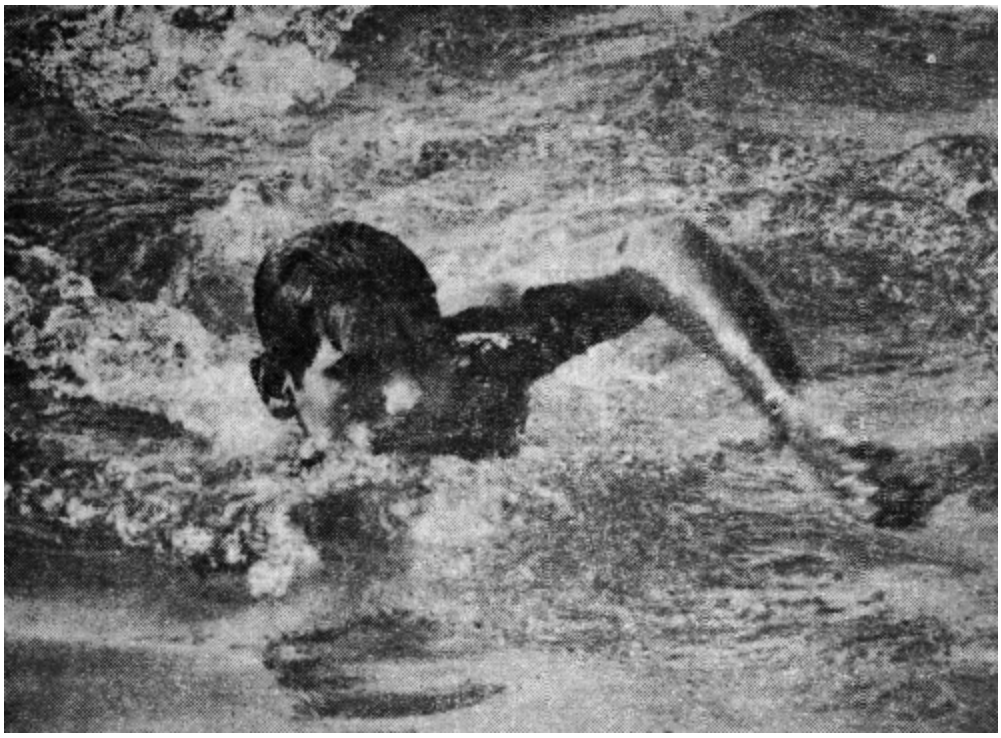
1,500 मी० फ्रीस्टाइल तैराक मोहिन्दर कुमार

हिन्दी क्रैपलर—सितम्बर 82 में निम्न सुधार करें।

पृष्ठ-4 स्तम्भ 3—श्री लस्कर का सही नाम श्री एन० पार० लस्कर है।

पृष्ठ-11 स्तम्म 3—श्री मिश्रा का सही नाम श्री डी० एम० मिश्रा है।

पृष्ठ-17 स्तम्भ 2, श्री चीमा का सही नाम श्री एच० पी० एस० चीमा है।



फ्रीस्टाइल का तेज तैराक सोमशेखरन

1979 में बम्बई में हुई जूनियर नेशनल्स और बेंगलूर में आयोजित खुले नेशनल्स में, थल सेना के रामदेव सिंह द्वारा 200 मी० ब्रेस्टस्ट्रोक में 16 वर्षीय पुराना कीर्तिमान भंग कर 100 मी० और 200 मी० ब्रेस्टस्ट्रोक में 1:15.4 और 2:44.1 के नये रिकार्ड उसने बनाये। फलस्वरूप, इसको सब इन्सपेक्टर के पद पर उन्नति हुयी। ढाका में प्रायोजित प्रथम एशियाई तैराकी प्रतियोगिता में, इसने दो रजत और एक कास्य पदक पाया।

अगले वर्ष, लखनऊ में आयोजित खुले नेशनल्स में थोबा सिंह ने 100 मी० ब्रेस्ट स्ट्रोक में अपना 1:15.4 वाले रिकार्ड को 1:12.9 से सुधारा और 200 मी० ब्रेस्ट स्ट्रोक में अपना राष्ट्रीय कीर्तिमान (2:41.4) का कायम रखा। 1981 में, अखिल भारतीय पुलिस तैराकी प्रतियोगिता में थोबा सिंह ने 1:11.9 और 2:40.7 के नये रिकार्ड बनाये तथा खुली राष्ट्रीय तैराकी प्रतियोगिता में, इसने 200 मी० ब्रेस्ट स्ट्रोक में अपना पिछला राष्ट्रीय कीर्तिमान 2.2 से० से सुधारा।

इन्हीं दिनों, प्रशिक्षण खेलों में 100 मी० ब्रस्ट स्ट्रोक 1:11.4 में और 200 मी० ब्रेस्ट स्ट्रोक 2:37.0 में तैर कर, अपने ही राष्ट्रीय रिकार्ड सुधारे।

III. टी. जे. जैकब

थोप्पिल जोजेफ जैकब जब केवल 14 वर्ष का ही था, तब उसने अपना तैराकी जीवन प्रारम्भ किया। जब जूनियर नेशनल्स में उसने 100 मी० और 200 मी० बटरफ्लाई में रिकार्ड बनाये, तब उसकी बड़ी ख्याति हुई । वाणिज्य स्नातक, जैकब ने

तैराकी विश्व में भाग्य परीक्षा करनी चाही और 1979 में के० रि० पु० बल में भर्ती हो गया।

1980 में आयोजित खुली राष्ट्रीय तैराकी प्रतियोगिता में, जैकब ने 200 मी. बटरफ्लाई को 2:22.8 में, 200 मी. व्यक्तिगत मेडले को 2:28.6 में और 400 मी. व्यक्तिगत मेडले को 5:22.3 में, तैरकर तीन राष्ट्रीय रिकार्ड कायम किये तथा प्रतियोगिता का सर्वश्रेष्ठ तैराक उसे घोषित किया गया।

अखिल भारतीय पुलिस तैराकी प्रतियोगिताओं में, जैकब तैराकी के अच्छे प्रदर्शन करता रहा है। 1981 में, 200 मी. बटरफ्लाई और 400 मी. व्यक्तिगत मेडले में उसने दो पुलिस प्रतियोगिता कीर्तिमान स्थापित किये। 1982 की पुलिस प्रतियोगिता में 200 मी. बटरफ्लाई को 2:28.0 में और 400 मी. व्यक्तिगत मेडले को 5:17.2 में तैरकर, उसने अपने ही रिकार्ड सुधारे। परीक्षण खेलों में, अपने पिछले कीर्तिमान सुधार कर, उसने 200 मी. बटरफ्लाई तथा 400 मी. व्यक्तिगत मेडले में द्वितीय स्थान और 200 मी. व्यक्तिगत मेडले में तृतीय स्थान पाया।

IV. मोहिन्दर कुमार

जब मोहिन्दर कुमार केवल 15 वर्ष का ही था, तब 1978 में तैराकी प्रतियोगिता में उसने प्रवेश किया था। दक्षिणी दिल्ली के मुनीरका ग्राम के निवासी, मोहिन्दर सिह को वस्तुतः तैराकी के कुछ भी अनुभव नहीं होते हुये भी, 1980 में मद्रास में आयोजित स्कूल नेशनल्स में और पिछले वर्ष कलकत्ता में जूनियर नेशनल्स में, उसने अत्युत्तम कुशलता दिखलाई। वह जुलाई 1981 में के. रि. पु. बल में भर्ती हुआ और इसके तुरन्त बाद, नई दिल्ली में आयोजित खुली तैराकी प्रतियोगिता में 1500 मी० फ्री स्टाइल को 18:21.2 में तैर कर, उसने नया कीर्तिमान स्थापित किया। इस वर्ष अखिल भारतीय पुलिस तैराकी प्रतियोगिता में, उसने 1 स्वर्ण, 4 रजत और 1 कास्य पदक पाये।

नवम् एशियाई खेलों के प्रशिक्षण प्रतियोगिता में, उसने 1500 मी० फ्री-स्टाइल की बड़ी संघर्षमयी स्पर्द्धा में द्वितीय स्थान पाया।

V.के० सोम शेखरन

कांस्टेबल के रूप में के०रि०पु० बल में 1975 भर्ती हुए, के.सोमशेखरन आज इस बल का सबसे तेज तैराक है। 1980 में आयोजित राष्ट्रीय तैराकी प्रतियोगिता में, 100 मी० बटरफ्लाई, 100 फ्रीस्टाइल का 400 मी० फ्रीस्टाइल का वह चैम्पियन रहा। के० रि० पु० बल और देश, दोनों की विजय पताका का फहराने में उसका बड़ा योगदान रहा है और इसी उपलक्ष्य में, 6 वर्ष के भीतर उसे पांच पदोन्नतियाँ मिली हैं।

1976 में, भोपाल में आयोजित अखिल भारतीय पुलिस तैराकी प्रतियोगिता में, सोमशेखरन ने अपने प्रथम ही प्रवेश में 100 मी० फ्रीस्टाइल में (60 से० वाला) एक नया रिकार्ड बनाया। दूसरे वर्ष, अहमदाबाद में आयोजित अ०भा०पु० प्रतियोगिता में उसने इस रिकार्ड को सुधारा और 4 स्वर्ण तथा 1 रजत पदक पाये । 1978 वाली अ०

भा० पु० प्रतियोगिता में, उसने 5 स्वर्णपदक पाये। 1979 की ऐसी प्रतियोगिता में, रिले तैराकियों में स्वर्ण पदकों को पाने में ही उसने सहयोग नहीं दिया, वरंच 100 मी० फ्रीस्टाइल में भी अपना रिकार्ड सुधारा। 1980 वाली ऐसी ही प्रतियोगिता में, 100 मी० फ्रीस्टाइल में पुलिस और राष्ट्र का एक नया कीर्तिस्तंभ कायम किया; और एक स्वर्णपदक पाया। तुरन्त ही इसके बाद, लखनऊ में आयोजित राष्ट्रीय तैराकी प्रतियोगिता में, सोमशेखरन ने 100 मी० फ्रीस्टाइल को 57.1 से० में तैरकर एक नया कीर्तिमान स्थापित किया। 1981 में मद्रास में आयोजित अ. भा. पु. प्रतियोगिता में, सोमशेखरन ने 200 मी. व्यक्तिगत मैडले तैराकी में 2 मि० और 29.6 से० का एक नया रिकार्ड बनाया।

श्री लंका में 1978 में भारत-लंका' बंगला देश तैराकी प्रतियोगिता में, सोमशेखरन ने भाग लेकर 100 मी. फ्री स्टाइल में दूसरा स्थान पाया । दूसरे वर्ष, सोमशेखरन भारतीय टीम का कप्तान बना और 100 मी. मेडलेरिले और 4X100 मी. फ्रीस्टाइल रिले में स्वर्णपदक पाकर उसने अपना नाम रोशन किया।

सेंट स्टीफेन तैराकी प्रतियोगिता

दिल्ली में 25 सितम्बर 1982 को आयोजित सेंट स्टीफेन तैराकी प्रतियोगिता में, के०रि०पु बल ने 73 अंकों के आधार पर चैम्पियनशिप ट्राफी जीती, जब कि प्रतिद्वन्दी पंजाब रेजीमेंटल केन्द्र केवल 36 अंक पा सका । पद्मनाभन, दलीपसिंह, आर. के. राजन और पी. वी. पिल्लै की तैराकी प्रशंसनीय रही।

गरवारे बास्केट वॉल टूर्नामेन्ट

दिल्ली में अगस्त 1982 में खेले गये गरवारे बास्केटबॉल टूर्नामेंट में, के०रि० पु० बल उपविजेता के रूप में उभरा। पी. पी. सिह, जगजीत सिंह और बाबू जैसे सितारों की अनुपस्थिति के होते हुये भी, के० रि० पु० बल ने फाइनल में बड़ा जबरदस्त मुकाबला किया, किन्तु थल सेना सिगनल्स से (69-71) हार गया। के० रि० पु० बल के लिये 30 अंकों का सबसे भारी योगदान, वी. एन. कुट्टी ने किया।

क्रास कण्ट्री दौड़ में सिरमौर

अखिल भारतीय पुलिस क्रास कंट्री प्रतियोगिता में भाग लेकर, सी० सु० बल के 76 नकारात्मक अंकों के स्थान पर, के० रि० पु० बल ने चैम्पियनशिप जीती। इस प्रतियोगिता में, हरीचन्द (के० रि० पु० बल) ने प्रथम स्थान पाया।

के० रि० पु० बल के यौहनान, भगवान-राम और जीत राम इसमें भाग नहीं ले सके, क्यों कि 14 अगस्त 82 को उन्हें मद्रास में आयोजित 16 वीं राष्ट्रीय क्रास कंट्री दौड़ में भाग लेना था।

पुलिस टीम उपविजेता रही।

मोदी हॉकी टूर्नामेंट

मेरठ में 19 दिसम्बर 1982 को खेले गये आखेल भारतीय गूजरल मोदी स्वर्ण कप हॉकी टूर्नामेंट के फाइनल में मोदी रबड़ टीम से 1-0 से हारकर, के० रि० पु० बल उपविजेता रहा, कांटेदार खेल के पूरे समय में कोई भी टीम गोल नही कर सकी।

वीरता पदकों पर भत्ते की बढोत्तरी

भारत सरकार ने राष्ट्रपति के पुलिस वीरता पदक से संलग्नित भत्ता 60 रु० से 90 रु० प्रति मास और पुलिस वीरता पदक से सम्बद्ध भत्ता 40 रु० से०से 60 रु० प्रति मास बढ़ाने का निर्णय लिया है। तदुपरान्त, प्रति पट्टी (बार) पर 40 रु. से 60 रु. और 20 रु० से 30 रु० क्रमशः बढाया गया है।

ये संशोधित दरें 24 सितम्बर 1982 से लागू होंगी और उनको भी मिलेंगी। जिन्हें पहले भी इन से विभूषित किया जा चुका है।

कविता :

जन्म दिवस पर अभिनन्दन

[रचयिता—इ० लल्लन सिह, 64 बटालियन]

'केन्द्र-पुलिस' के जन्म-दिवस का, स्वागत बारम्बार ।
वाह्य-भीतरी रिपुओं को जो, है घातक तलवार ।
थी सन उन्तालिस, सत्ताइस, जोलाई में, विपदाभारी।
नीमच में अवतीर्ण हुयी तब, शान्ति-न्याय की राजकुमारी।
"लौह पुरुष" की नव पुत्री ने, जहाँ कहीं प्रस्थान किया जब ।
भारत का दिल जीत लिया द्रुत, सफल अमन अभियान किया तब ।
'सेवाभक्ति'-लक्ष्य की तेरे, गूंजे जय-जय कार ।
'केन्द्र-पुलिस' के जन्म दिवस का, स्वागत बारम्बार ॥
तूने ही लद्दाख लेह में, प्राणों का बलिदान चढ़ाया।
'रन' के रण में, चिकन पाक्स में, लड़ कर पाकिस्तान हराया।
निर्मल अंचल भारत माँ का, मुक्त गगन में है फहराया।
कीर्तिकौमुदी को है तूने, विपुल विश्व में अब विकसाया।
राष्ट्र-हेतु भारत की ललना, देती साजन बार।
'केन्द्र पुलिस' के जन्म दिवस का, स्वागत वारम्बार ।
'तिलक' तिलक बन गये जूझ कर, 'राष्ट्रपिता' गाँधी कहलाते।
भगत सिंह, सुख देव, राजगुरु, फाँसी पर झूले मुस्काते।

नेता जो को सिंह-गर्जना, गोरा-शासन को थर्राती।
नेहरू, शास्त्री व इन्दिरा को, मानों सत्ता-सूत्र थमाती।
रहीं ढाल यह केन्द्र पुलिस भी, इन सब को साकार।
'केन्द्र-पुलिस' के जन्म-दिवस का, स्वागत बारम्बार ।
निज बधुओं को छोड़ सिपाही, हँस-हँस सेवा भार उठाते।
आँधी-वर्षा, शरत्-ग्रीष्म में, कभी नहीं वे हैं घबड़ाते ।
अग्निकांड-दुर्भिक्ष-बाढ़ के, वे दैवी संकट के मोचन ।
शान्ति-व्यवस्था के रक्षण में, वे पाते सबका अभिनन्दन।
अरु पाते निष्पक्ष कर्म से, जन-जन का वे प्यार ।
'केन्द्र-पुलिस' के जन्म दिवस का, स्वागत बारम्बार॥

राष्ट्रीय जूडों में के० रि० पु० बल की धाक

जूडो के राष्ट्रीय मंच पर, के० रि० पु० बल के जूडो खिलाड़ियों ने 22 अगस्त 1982 को अपने प्रदर्शन से सबको चकित कर दिया। तृतीय अखिल भारतीय स्वतंत्रता कप जूडो प्रतियोगिता के फाइनल में हमारी दिल्ली और नीमच की टीमों के बीच ही खेल रह गया। इससे पूर्व, के० रि० पु० बल ने इसी प्रतियोगिता में श्रीलंका को हराया था। 1 स्वर्ण, 5 रजत और 2 कास्य पदक जीत कर, के० रि० पु० बल ने जूडो में अपनी सर्वोच्चता सुनिश्चित रूप स्थापित की; तृत्तीय प्रोफेसर गिंगरों कानों जूडो कप टूर्नामेंट में भी, के० रि० पु० बल के खिलाड़ियों ने अपना श्रेष्ठ खेल प्रदर्शित किया। पांच में से तीन स्वर्ण पदक उन्होंने जीते। भारत के शेष खिलाड़ियों से के० रि० पु० बल में मुकाबला किया और उन्हें हरा दिया ।

गाजियाबाद में हुयी श्री लंका जूडो प्रतियोगिता में, भारतीय टीम की ओर से के० रि० पु० बल के बानू सिंह और राम निवास श्रीलंका के विरुद्ध खेले। दोनों ही अपनी स्पर्द्धाओं में जीते और भारत को श्री लंका से 3-1 अंकों द्वारा जीतने में उन्होंने मदद की।

राष्ट्र मंडलीय तैराकी

ब्रिसबेन (आस्ट्रेलिया) में, 30 सितम्बर से 9 अक्टूबर 1982 तक आयोजित 12वें राष्ट्रमंडलीय खेलों में, के० रि० पु० बल के इन तीन तैराकों ने भाग लिया—टी. जैकब, थोबा सिंह और के सोमशेखरन।

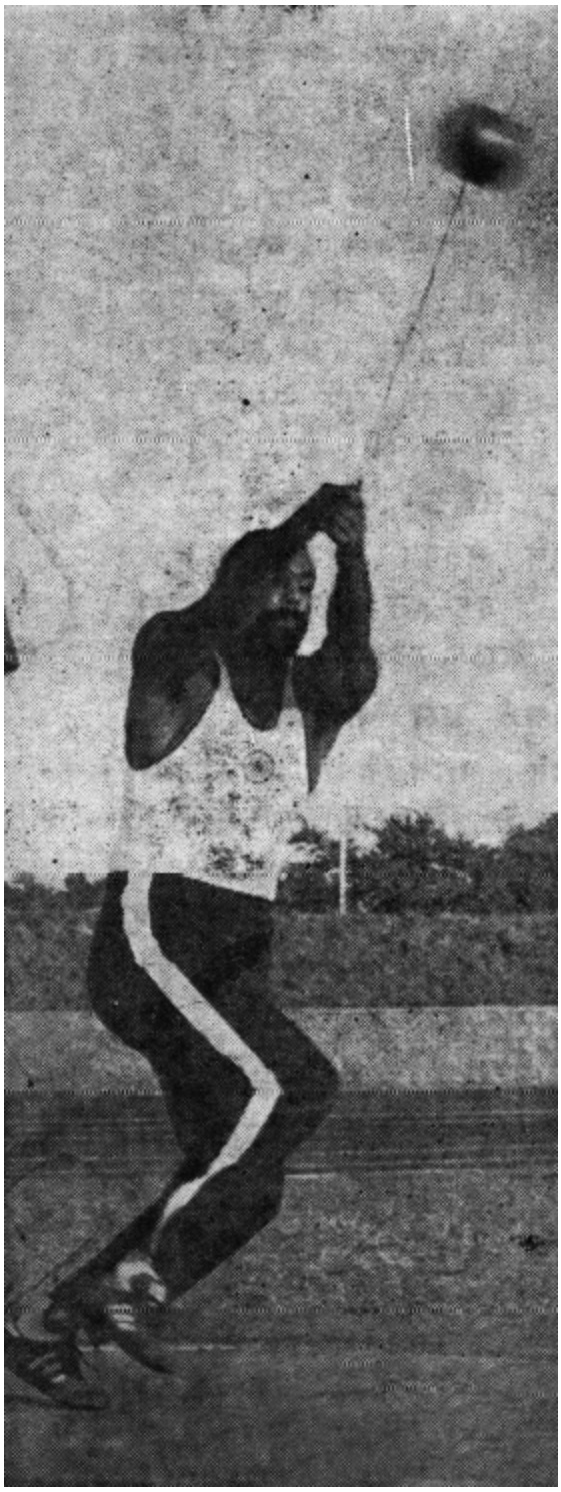
अप्पू के साथ

के० रि० पु० बल के तैराक और खिलाड़ी



यह गर्व का विषय है कि इस वर्ष नवम्बर में नई दिल्ली में आयोजित नवम् एशियाई खेलों के लिये, के० रि० पु० बल के कम से कम 23 एथ्लीटों और खिलाड़ियों ने भाग लिया।

एथ्लीटिक्स (दौड़ कूद) में, के०रि०पु० बल ने सदा ख्याति पाई है। परम्परा के अनुरूप, इस बल के 3 एथ्लीटों ने दौड़-कूद स्पर्द्धाओं में संघर्ष किया, ये थे--रघुबीर सिंह बल।



रघुबीर सिंह बल

(फेंकना), प्रदीप कुमार (3,000 मी० स्टीपल चेज), और गुरुमुख सिंह (1,500 मी० दौड़),।

रघुबीर सिंह बल पूर्वी जर्मनी में प्रशिक्षण पाकर लौटा है। प्रदीप कुमार ने

पाकेस्तान राष्ट्रीय एथ्लेटेक्स प्रतियोगिता में भाग लेकर, रजत पदक अर्जित किया।

श्री एच. पी. एस. चीमा को नवम् एशियाई खेलों में 'जजथ्रो' चुना गया।

खेद यह रहा कि किसी को भी प्रथम तृतीय स्थानों को पाने का सौभाग्य नहीं मिल सका। बहरहाल, उनकी दक्षता पर कोई भी प्रश्न चिन्ह नहीं लगा सकता। एशियाई खेलों में भाग लेने वाले एथ्लीटों और खिलाड़ियों के शाब्दिक चित्र कुछ इस प्रकार हैं —

I. रघुबीर सिंह बल

रघुबीर सिंह बल के. रि. पु. बल और देश की ओर से विभिन्न राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में भाग लेता रहा है। 1973 से अखिल भारतीय पुलिस खेलों में भाग लेते हुये, घनफेंक में 64.20 मी० का रिकार्ड बनाया।

1978 और 1981 में खेली गई खुली राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में, बल ने घनफेंक में स्वर्णपदक पाये । सियोल (कोरिया) में द्वितीय एशियाई ट्रैक और फील्ड प्रतियोगिताओं में, उसने भारत की ओर से भाग लिया तथा घन फेंक में स्वर्णपदक पाया। फिलीपीन्स में, उसने घन फेंक और चक्का फेंक में क्रमशः स्वर्ण और कास्य पदक जीते । लाहौर में हुई कायदे आजम आमंत्रण प्रतियोगिता में भी, उसने भाग लेकर घनफेंक में स्वर्णपदक अर्जित किया।

II. प्रदीप कुमार

3000 मी. स्टीपल चेज में अपना कीर्तिमान बनाने वाला एक खिलाड़ी, प्रदीप कुमार है। खुली राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में भाग लेकर वह 1973 से रजत पदक पाता रहा है। 1978 वाले एशियाई खेलों में भाग लेकर, उसने चौथा स्थान पाया था। 1982 में आयोजित पाकिस्तान राष्ट्रीय प्रतियोगिता में देश की ओर से भाग लेकर 3000 मी० स्टीपल चेज में उसने रजत पदक को पाया है। एशियाड 1982 में राष्ट्रीय स्तर पर एथ्लीटों को तैयार करने वाले प्रशिक्षण शिविर में, उसे खुद व खुद चुना गया।



प्रदीप कुमार

III. गुरमुख सिंह

होशियारपुर में उतपन्न, 1971 में के० रि० पु० बल में सिपाही के रूप में भर्ती होकर, गुरुमुख सिंह ने बास्केटवॉल से अपना खिलाड़ी जीवन प्रारम्भ किया; परन्तु 1975 में रह एथ्लीट बन गया और 1977 में इस बल की केन्द्रीय टीम में, उसने अपना स्थान बना लिया। जनवरी 1982 में कालीकट में आयोजित राष्ट्रीय एथ्लीटिक प्रतियोगिता में, 1500 मी० दौड़ को 3.51.8 से० में पूरा कर उसने 3.53.5 से० का अखिल भार पुलिस वाले अपने ही रिकार्ड को सुधारते हुए तृतीय स्थान पाया।



गुरुमुख सिंह

राष्ट्रीय खेल संस्थान पटियाला में प्रशिक्षण के समय, गुरुमुख सिंह ने 3.47. 4 से०

वही दौड़ पूरी कर अपने कीर्तिमान को और भी सुधारा है।

इनके अतिरिक्त के० रि० पु० बल के अन्य प्रमुख खिलाड़ी, जिम्नास्ट लक्ष्य भेदक ये हैं—तजिन्दर सिंह ढिल्लों

तजिन्दर सिंह ढिल्लों ने बड़ी शान से लक्ष्य भेदन क्षेत्र में प्रवेश किया। अप्रेल 1980 में नासिक में आयोजित अखिल भारतीय पुलिस ड्यूटी प्रतियोगिता में, इसके नेतृत्व में के० रि० पु० बल की लक्ष्यभेदन टीम ने शानदार विजय पायी; इसका अपना योगदान पिस्तौल और राइफल में दो व्यक्तिगत पदकों के रूप में रहा। बेंगलूर में हुयी अगली अखिल भारतीय पुलिस ड्यूटी प्रतियोगिता में, यह दूसरा सर्वश्रेष्ठ निशानेबाज माना गया। इसने तीन राष्ट्रीय लक्ष्यभेदन प्रतियोगिताओं में के० रि० पु० बल की टीमों का नेतृत्व किया। अहमदाबाद में 16 से 31 जनवरी 1982 तक आयोजित नवम् एशियाई खेल के लक्ष्यभेदन प्रशिक्षण शिविर में इसने भाग लिया। विश्व चैम्पियन, आटो हर्बर के अधीन अगस्त 1981 में चलाये गये जज (निर्णायक) कोर्स करने के लिये भारत के राष्ट्रीय राइफल संगठन ने ढिल्लों को चुना और अन्तर्राष्ट्रीय लक्ष्य भेदन की प्रतियोगिताओं के लिये अर्हता प्राप्त सरकारी रेफरी के रूप में अन्तर्राष्ट्रीय सरकारी ला सेंस देने के लिये भी, ढिल्लों को, अन्तर्राष्ट्रीय लक्ष्य भेदन संघ ने स्वीकार किया है।



टी०एस० ढिल्लों

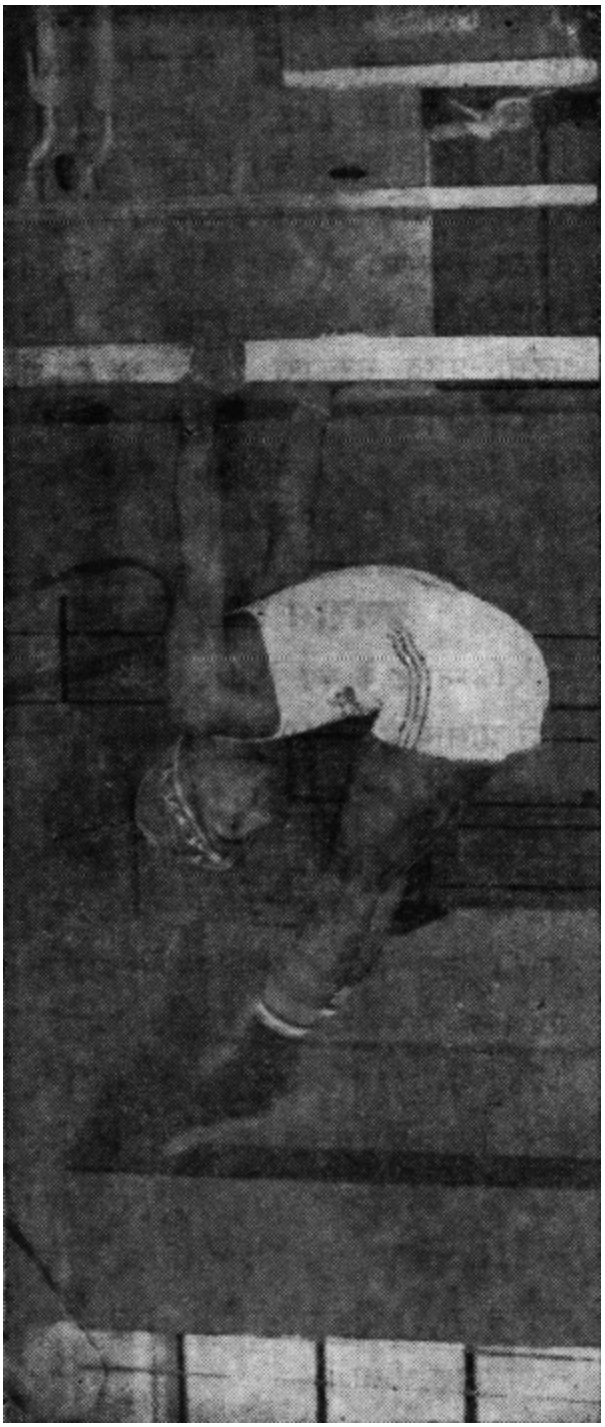
बलराम शील

जिम्नास्ट के रूप में, बलराम शील से बड़ी आशायें हैं। 1976-77 में रूपनगर (पंजाब) में कनिष्ठों के लिये आयोजित राष्ट्रीय चैम्पियनशिप में 18 वर्ष की आयु में, वह सर्वश्रेठ जिम्नास्ट घोषित किया गया। दूसरे वर्ष भी चण्डीगढ़ में वह फिर सर्वश्रेष्ठ जिम्नास्ट करार दिया गया। 1981 में अखिल भारतीय पुलिस खेलों में, शील ने फ्लोर एक्सरसाइज में उत्तम खेल दिखाकर, स्वर्णपदक पाया और पटियाला में आयोजित राष्ट्रीय जिम्नास्टिक प्रतियोगिता में, वॉल्टिंग हार्स में, उसने फिर स्वर्ण पदक जीता।

1982 में रूस के मास्को और रिगा में खेले गये दो अन्तर्राष्ट्रीय टूर्नामेंटों में, शील को भारत की ओर से खेलने का गौरव प्राप्त हुआ और अपने उत्तम खेल से दर्शकों को उसने मंत्र-मुग्ध सा किया।

बलरामशील-जिम्नास्टिक्स चैम्पियन

के० रि० पु० बल का बलरामशील नया राष्ट्रीय जिम्नास्टिक्स चैम्पियन है। 18 अक्टूबर, 1982 को इन्द्रप्रस्थ इन्डोर स्टेडियम दिल्ली में खेले गये राष्ट्रीय जिम्नास्टिक्स प्रतियोगिता में, उसने 48, 450 अंक पाकर, व्यक्तिगत सर्वतोमुखी फाइनल जीता। शील ने टीम स्पर्धाओं में 46.250 का योग दिया और कुल मिलाकर 94.700 का समुच्चय किया; इस प्रकार बी. एस. नंदी को द्वितीय स्थान पर धकेल दिया।



बलरामशील

बलरामशील ने रोमन रिंग्स में व्यक्तिगत खिताब भी जीता।

परीक्षण खेल 1982

एशियाई खेलों के तैयारी में, सितम्बर 1982 में परीक्षण खेल खेले गये। कितनी ही

स्पद्धाओं में के० रि० पु० बल के खिलाड़ियों ने भाग लिया और उनकी कुछ सफलतायें इस प्रकार हैं—

एथ्लैटिक्स—प्रदीप कुमार ने 3000 मी० स्टीपल चेज़ में स्वर्णपदक, आर. एस. एल. घन फेंक में रजत पदक, प्रभातसिंह ने डिकँथलँन में कास्य पदक और रसदेव सिंह ने मँराथँन दौड़ में कास्य पदक पाया। सभी चारों को एशियाई खेलों के लिए प्रशिक्षक चुना गया।

तैराकी—के० रि० पु० बल के तैराकों के बल पर ही, पुलिस टीम ने निरन्तर तीसरे वर्ष राष्ट्रीय तैराकी चैम्पियनशिप जीती। खजान सिंह ने 200 मी० व्यक्तिगत मैडले, 400 मी० व्यक्तिगत मैडले, 200 मी० बटरफाई और 4x100 मी० फ्री स्टाइल रिले में चार राष्ट्रीय रिकार्ड बनाये । इस प्रतियोगिता का 'सर्वश्रेष्ठ तैराक' वह माना गया। थोबा सिंह ने 100 मी० प्रेस्ट स्ट्रोक और 200 मी० ब्रेस्ट स्ट्रोक में, दो राष्ट्रीय कीर्तिमान स्थापित किये।

पुलिस टीम द्वारा जीते 16 स्वर्ण, 9 रजत और 3 कांस्य पदकों की संख्या में, के० रि० पु० बल ने 11 स्वर्ण, 8 रजत और 3 कांस्य पदक पाये।

कुश्ती—परीक्षण दंगल में, सुरेश चन्दर ने 100 कि०ग्रा० में प्रथम, सत्यवान 68 कि० ग्रा० में प्रथम और सहदेव सिंह 90 कि० ग्रा० में तृतीय रहा।

नाक्स बिली (अमेरिका) में 3 अक्टूबर 1982 से शुरू होने वाले विश्व सामारोहिक खेलों में भाग लेने वाली रस्सा-कशी की राष्ट्रीय टीम के लिए सुरेश चन्दर को चुना गया।

कर्कर-सामारोहिक समिति अध्यक्ष

श्री बी० के० कर्कर, सहायक निदेशक (प्रशिक्षण) को सरदार बूटा सिंह, अध्यक्ष, ए. ए. एफ. आई, ने 17 से 20 सितम्बर 1982 तक आयोजित XXI अखिल भारतीय खुले एथ्लीटिक प्रतियोगिता की सामारोहिक समिति का संयोजक मनोनीत किया। आगामी एशियाई खेलों की एथ्लीटिक स्पर्धाओं से सम्बन्धित सभी सामारोहिक गतिविधियों का प्रबन्ध, इस समिति को सौंपा गया है।

सीधे नियुक्त सहायक सब इन्स्पेक्टर (लिपिक वर्ग) का प्रशिक्षण

ग्रुप केन्द्र के० रि० पु० बल, झड़ौदा कलां ने 7 जून से 4 सितम्बर 1982 तक सीधे नियुक्त सहायक सब इन्स्पेक्टरों (लिपिक वर्गीय) के लिये एक कोर्स गठित किया। इस 13 सप्ताह के कोर्स में (जिसमें हथियार चलाना भी सम्मिलित था) महिला सहित 60 अभ्यार्थियों ने प्रशिक्षण लिया।

अनुशासन की उच्च भावना भरने के साथ-साथ, कार्यालय प्रक्रिया, शारीरिक प्रशिक्षण, हथियार चलाना आदि में नये नियुक्त वर्दीधारी लिपिक कर्मियों को प्रशिक्षित करने के लिये, यह चौथा कोर्स था।

श्री शिव मोहन सिंह, पुलिस महानिरीक्षक (मुख्यालय) में 4.9.1982 को झड़ौदा कलां में हुये समापन समारोह की अध्यक्षता की और पुरस्कार वितरित किये। श्री एन. राघवन, सहायक सबइस्पेक्टर (लिपिक) अपकेन्द्र बनतालाब को 'सर्वश्रेष्ठ प्रशिक्षार्थी' का पदक प्राप्त हुआ।

रगंरुट प्रशिक्षण केन्द्र बड़वाहा

रंगरूट प्रशिक्षण केन्द्र, बड़वाहा ने अपना 14वां वार्षिकोत्सव बड़ी शान से 31 जुलाई और 1 अगस्त 1982 को मनाया। वरिष्ठ राज्य अधिकारी और खरगाँव, खण्डवा तथा बड़वाहा के सम्भ्रान्त व्यक्ति उसमें पधारे। उस समारोह के प्रमुख आकर्षण थे—रंगारंगी कार्यक्रम, मेला और आतिशबाजी।

रसदेव सिंह

मीलों दौड़ने वाला, कदम से कदम को ताल से बढ़ाने वाला तथा शान्त और गम्भीर मुखाकृति वाला, रसदेव सिंह सच्चे साहस और दृढ़निश्चय की एक तस्वीर है। रसदेव सिंह को आशा थी कि राष्ट्रीय खेल प्रतिष्ठान पटियाला में कठोर प्रशिक्षण पाकर नवम् एशियाई खेलों की मैराथॉन दौड़ में, वह कुछ गौरव अवश्य पायेगा।

हिमाचल प्रदेश के गानू ग्राम में उत्पन्न और पालितपोषित हुआ, के० रि० पु० बल के अन्तर्रेंज एथ्लीट प्रतियोगिताओं की मैराथॅन दौड़ों में निरंतर पिछले सात वर्षों से वह स्वर्णपदक पा रहा है।

इस वर्ष अखिल भारतीय पुलिस खेलों में, 2 घं० 17 मि. 55.5 से० में मैराथान दौड़ पूरी कर, उसने एक नया पुलिस रिकार्ड कायम किया है। इसी वर्ष मार्च में, उसने सियोल (दक्षिणी कोरिया) में आयोजित विश्व मैराथॉन दौड़ में भाग लेकर 13वाँ स्थान पाया है।

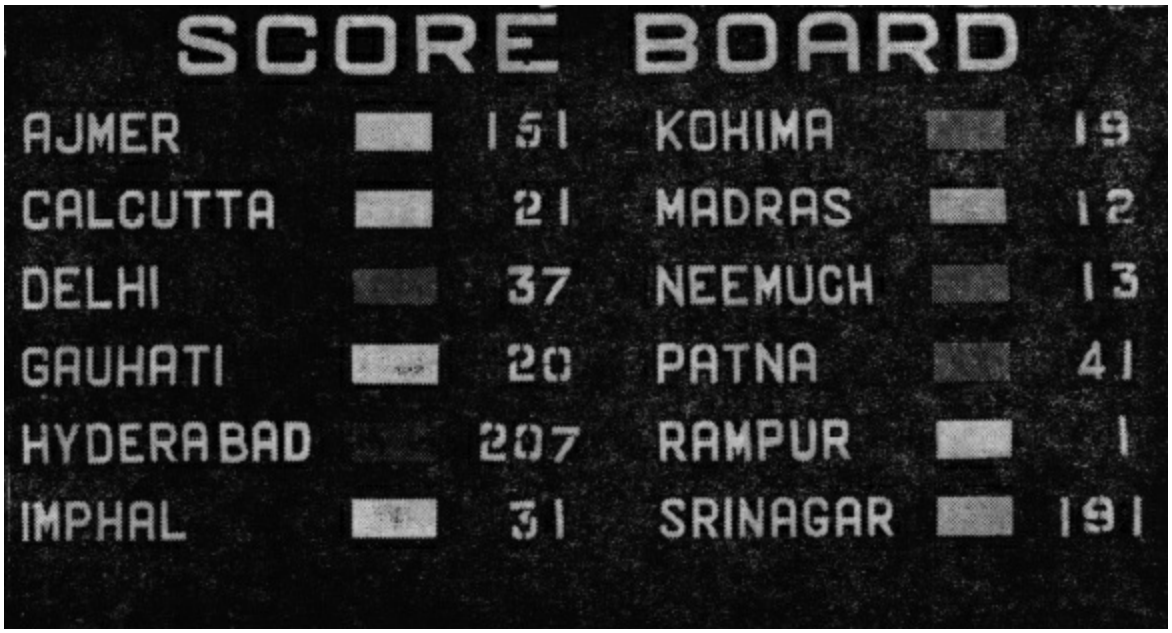
के० रि० पु० बल में 1968 में कांस्टेबल के रूप में भर्ती होकर, आज वह सबइंस्पेक्टर है।

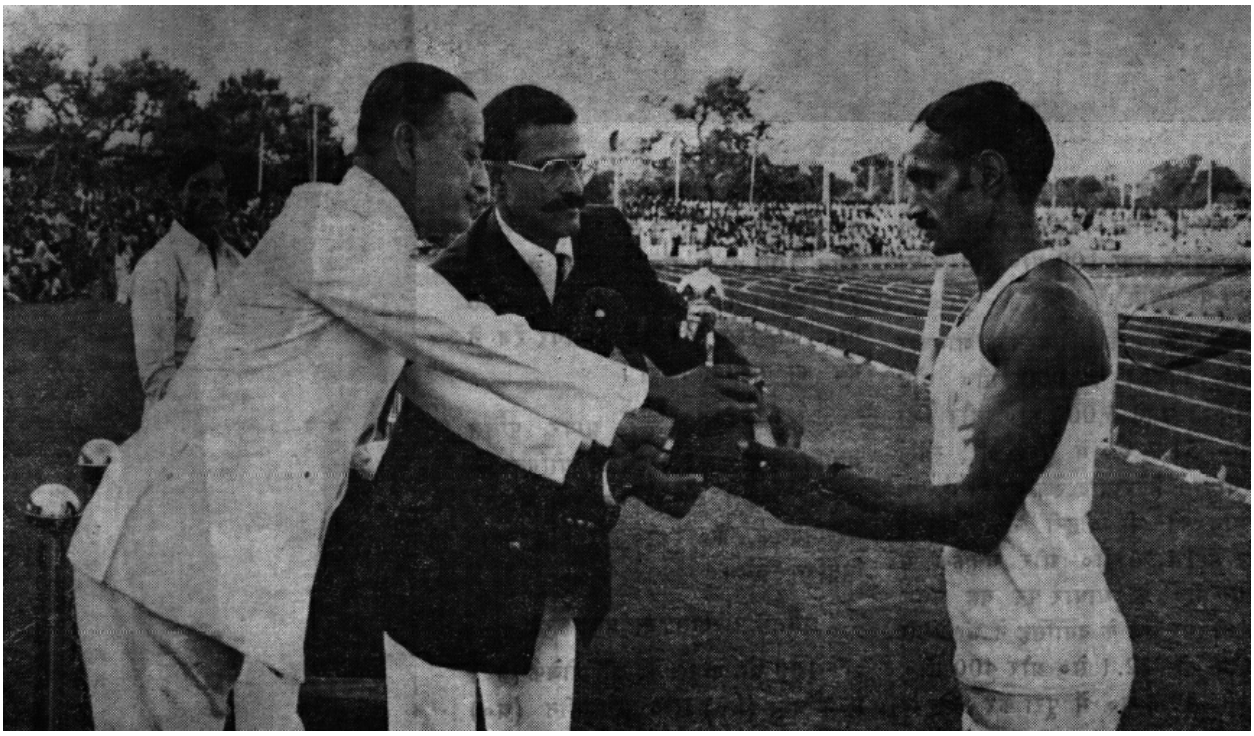
<u>XVI अन्तर्रेंज एथ्लेटिक्स (दौड़कूद) प्रतियोगिता</u>

हैदराबाद रेंज को सिरमौर

नीमच में 18 से 21 अक्टूबर 1982 तक आयोजित XVI अन्तर्रेंज दौड़कूद प्रतियोगिता में, हैदराबाद में (207 अंक) ने सिरमौर जीता। श्रीनगर रेंज (199 अंक) II और अजमेर रेंज़ (151 अंक) III रही। पटियाला के राष्ट्रीय कीड़ा संस्थान में उस समय प्रशिक्षण पाने के कारण, हरीचन्द, आर. एस. बल, प्रदीप कुमार, प्रभातसिंह रसदेवसिंह और गुरमुख सिंह जैसे धुरन्धर खिलाड़ी इस प्रतियोगिता में भाग नहीं ले

सके। हरीचन्द तो वस्तुतः बीमार थे। इधर दुर्भाग्य से प्रतियोगिता के दिनों वर्षा चालू रही, जिसके कारण वातावरण भारी रहा और एथ्लीटों की क्षमता और समय मानों को वह दुष्प्रभावित करता रहा। तब भी 3 नये रिकार्ड इस प्रतियोगिता में स्थापित हुये। 10,000 दौड़ में हरीचन्द द्वारा 1978 में 30 मि० 29 से० के कीर्तिमान को भंग कर, शशिधरन ने 30 मि० 21.2 से० में पूरा कर सनसनी फैला दी। 110 मी० ऊँची बाधाओं को तरनजीत सिंह ने 14 मि० 9 से० में पूराकर, 1975 में बी. एस. बालिया द्वारा 15 से मि० वाला कीर्तिमान भंग कर एक नया रिकार्ड बनाया। 400 मी० दौड़ में, बच्चूसिंह द्वारा 1978 में स्थापित 49.5 से० वाले रिकार्ड को, दयासिंह ने 49 से० में दौड़ कर सुधारा।





महानिदेशक से 'सर्वश्रेष्ठ एथलीट' की ट्राफी पाता हुआ जनक चन्द

प्रतियोगिता का 'सर्वश्रेष्ठ एथ्लीट,' हैदराबाद रेंज के जनकचन्द को घोषित किया गया। उसने डिकॅथलॅन में स्वर्ण और पोलवाल्ट तथा 100 मी० ऊँची बाधा में रजत पदक पाये।

हैदराबाद रेंज के शशिधरन को शानदार सफलता मिली। 10,000 मी० दौड़ के अलावा, उसने 5,000 मी० दौड़ को 14 मी. 51.7 से० में पूरा कर, स्वर्ण पदक पाया। हैदराबाद रेंज के ही ए. पी. एस. मान की भी दोहरी जीत मिली; शॉटपुट में 14.34 मी० और घनफेंक में 44.90 मी० के आधार पर वह प्रथम रहा। श्रीनगर रेंज के दयासिंह ने भी 200 मी. दौड़ को 22.1 से० और 400 मी० दौर को 49.4 से० में पूरा कर दोहरी जीत पायी।

के० जी० जोजफ (हैदराबाद रेंज) प्रतियोगिता का सबसे तेज धावक रहा। उसने 100 मी० दौड़ को 11 से० में पूरा किया। 4x100 मी. और 4x400 मी० की रिले दौड़ों में, श्रीनगर रेंज ने सब का सफाया किया।

श्री टी. जी. एल. आयर, पुलिस महानिरीक्षक से० I ने इस प्रतियोगिता का उद्घाटन किया, और श्री एस. दत्ता चौधरी, महानिदेशक, के०रि०पु० बल ने पुरस्कार वितरित किये।

अन्तिम परिणाम इस प्रकार रहे—

100 मी. दौड़ : के. जी. जोजेफ (है०) I; कन्जम्बू (अ०) II व नइमुद्दीन (अ०) III.

कौतेमान स्थापक :



10,000 मी० दौड़ में हरीचन्द के रिकार्ड—सुधारक शशिधरन ।



400 मी० दौड़ों में बच्चू सिंह के कीर्तिमान-भंजक दयासिंह।



घन फेंक का विजेता जे. एस. भुल्लर

200 मी० दौड़ : दया सिंह (श्रीनगर) I; सुरेन्दर सिंह (श्रीनगर) II व नइमुद्दीन (अ०) III.

400 मी० दौड़ : दयासिंह (श्रीनगर) I; गुरदेव सिंह (श्रीनगर) II व राजेन्द्र सिंह (इम्फाल) III.

800 मी० दौड़ : मदन नायड (है०) I; टी. कुंजूमोहन (है०) II व जगन्नाथ (इम्फाल) III.

1,500 मी० दौड़ : मोहनराम (अ०) I; जगन्नाथ (इम्फाल) II व रामसिंह (अ०) III.

5,000 मी. दौड :-शशिधरन (है.) I; प्रेमचन्द (है.) II व सम्मुद्दीन (अ.) III.

10,000 मी. दौड़ :-शशिधरन (है.) I ए. एस. यूनान (श्रीनगर) II व प्रेम चन्द (है.) III.

मॅराथॉन दौड़—रामभगत (गौ०) I; ए. एस, योनान (श्रीनगर) ब के. सी. वी. नायर (है०) III.

3000 मी. स्टीपल चेजः मोहन राम (अ०) I, चन्दरभानु (है०) II व हरीराम (नी०) III.

110 मी० ऊँची बाधा : तरनजीतसिंह (श्रीनगर) I, जनक चन्द (है०) I व नजर सिंह (अ०) III.

चौड़ी कूद :- गस्सीराम (अ०) I; बलदेव सिंह (श्रीनगर) II व तेजा राम (है०) III.

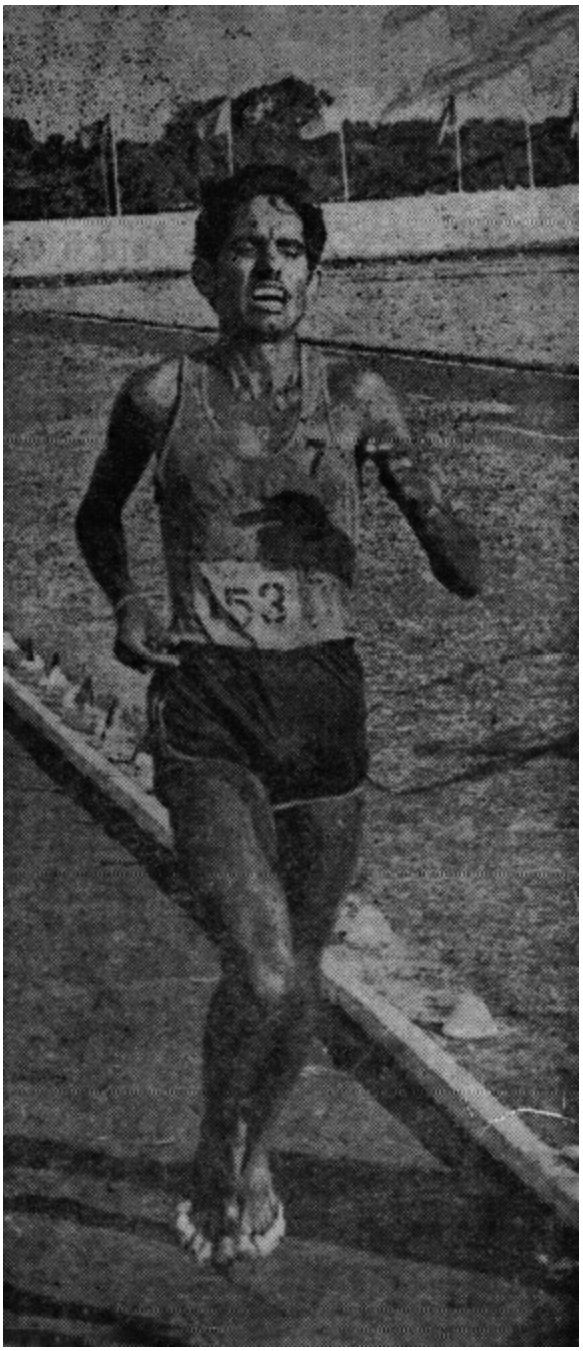
ऊँची कूद—सतवीर सिंह (अ.) I राजकुमार (अ.) II व मनकन्दन नायर (म.) III.

त्रिकूद—इकबाल सिंह (प०) I, के. राघव (दि०) II व टी. एन. राजन (अ.) III.

पोलवाल्ट—रामगोपाल (कोहिमा) I, जनक चन्द (है०) II व पालगोपालन (म.) III.

शाटपुट :-ए. पी. एस. मान (है.) I, एस. एस. बाल (है.) II व वी. सुशीलन (क.) III.

नेजा फेंक—के. नटराजन (है०) I, रमाशंकर (अ०) II व बी. सुशीलम (कलकत्ता) III.



मराथॅन दौड़ में स्वर्ण कप विजेता राम भगत (गोहाटी रेंज)

4X100 मी० रिले—श्रीनगर रेंज I; हैदराबाद रेंज II व अजमेर रेंज III.

4X400 मी० रिले—श्रीनगर रेंज I, पटना रेंज II व इम्फाल रेंज III.

डिकॅथलॅन—जनक चन्द (है) I, नासर हुसैन (श्रीनगर) II व आर के. बुदानिया (अ.) III.

400 मी० बाधा—डी. तालुकदार (पटना) I; तरनजीत सिंह (श्रीनगर) II व सुरेंदर

ासिंह (श्रीनगर) III.

इंदौर का अखिल भारतीय नीमा स्मारक वालीवॉल टूर्नामेंट

इन्दौर में 8 से 10 अक्टूबर 1982 तक खेले गये अखिल भारतीय नीमा स्मारक बालीबॉल टूर्नामेंट में, के० रि० पु० बल ने भाग लिया। बड़े संघर्षमय फाइनलों में, स्टेट बैक आफ़ बीकानेर एण्ड जयपुर से 15-11,15-11,11-15, 11-15 और 2-15 से यह बल हार गया। इस से पूर्व, इसने कई धुरंधर टीमों को हराया था।

कबड्डी में के०रि०पु० बल

I. अखिल भारतीय आमंत्रण कबड्डी टूर्नामेंट

बेगपुर में 25-26 सितम्बर 1982 को आयोजित अखिल भारतीय आमंत्रण कबड्डी टूर्नामेंट को के.रि.पु. बल ने जीता। फाइनल में, इस बल ने यंग फार्मर्स क्लब टिगरा को 27-19 से हराया।

II. बीसवें अखिल भारतीय कबड्डी टूर्नामेंट

उज्जैन में 14 दिसम्बर 1982 को खेले गये बीसवें अखिल भारतीय कबड्डी टूर्नामेंट के फाइनल में के० रि० पु० बल (दिल्ली) और हाफकिंस क्लब (बम्बई) में कांटेदार संघर्ष रहा और समय की समाप्ति तक 26-26 अंक से दोनों बराबर रहे। अतिरिक्त समय में, के.रि.पु. बल के 4 अंक और बम्बई की टीम के 2 अंक पाने पर, के.रि.पु. बल ने 30-28 से सिरमौर जीता।

विज्ञान के चढ़ते चरण

जापान ने एक ऐसी ट्रैफिक लाइट बनाई है जो लाल-हरी रोशनी के अलावा यह भी बोलती है 'कृपया रुकिये' या 'अब आप रास्ता पार कर सकते हैं।' यदि लाल बत्ती होने पर भी, कोई चौराहा पार करने की कोशिश करता है, तब यह बोलने लगती है कि वह खतरा मोल ले रहा है।

रूस ने ऐसी बिजली की कंघी तैयार की है, जिसमें धातु के दाँत लगे हैं और एक बोल्ट शक्ति बैटरी लगी है, जिसका स्विच कंघी के हैण्डल में लगा है। स्विच दबाने से कंघी के दाँतों में वही प्रक्रिया होती है, जैसी गैल्वैनों पंक्चर से उससे सरदर्द दूर होता है, नाड़ियों का उच्च दवाव कम होता है और नींद अच्छी आती है।

रूस में ही आपरेशन के बाद, आंत की सिलाई चुम्बक से करने का नया तरीका निकाला है। आपरेशन के स्थान के पास सिलिकन रबड़ के छल्ले रखे जाते हैं। आंत के किनारे भीतर को मोड़ दिये जाते हैं और चुम्बक लाया जाता है। इस विधि से, रोगी को कुछ घंटों के बाद खाना भी खिलाया जा सकता है।



बाये से दायें : तरनजीत सिंह, गुरदेव सिंह, दया सिंह और सुरिन्दर सिंह (दोनों रिले दौड़ों का विजेता—श्रीनगर रेंज़ का चौगड्डा)

अखिल भारतीय लिबरल्स हॉकी टूर्नामेंट में जीत

नाभा में 24 से 31 अक्टूबर 1982 तक आयोजित अखिल भारतीय लिबरल्स हॉकी टूर्नामेंट में, के० रि० पु० बल ने प्रतिष्ठित चैम्पियनशिप जीती। पंजाब राज्य विद्युत बोर्ड, भारतीय नौ सेना, सिगनल्स कोर जालन्धर, पूर्वोत्तर रेलवे, गोरखपुर जैसी प्रख्यात टीमों ने इसमें भाग लिया। संघर्षमय फाइनल में, के. रि. पु. बल ने सिगनल्स कोर जालंधर को 3-1 के अच्छे अन्तर से हरा दिया। यह पहला अवसर था, जब पंजाब से बाहर की टीम ने मनोवांछित ट्राफी पायी थी। डॉ. केवलकृष्ण, वित्तमंत्री, पंजाब से, यह ट्राफी हबिल कजूर और एस. एस. मान ने प्राप्त की।



ट्राफी के साथ कजूर और मान

अन्तर्रेंज प्रतियोगितायें

1. वालीबॉल : आवडी में, 20 से 25 जुलाई 1982 तक खेली गई अन्तर्रेंज वालीबॉल प्रतियोगिता में, नीमच रेंज I, श्रीनगर रेंज II और अजमेर रेंज III रही।

II. कबड्डी : दुर्गापुर में 9 से 14 अगस्त 1982 तक खेले अंतर्रेंज कबड्डी टूर्नामेंट में, हैदराबाद रेंज I, अजमेर रेंज II तथा कलकत्ता रेंज III रही।

III. बास्केटबाल : हैदराबाद में 5 से 16 जुलाई 1982 तक खेल गये अन्तर्रेंज बास्केट बाल टूर्नामेंट में, अजमेर रेंज I, हैदराबाद रेंज II तथा श्रीनगर रेंज III रही।

अन्तर्बटालियन बास्केटबॉल

खोंसा में 24 अप्रेल 1982 को मद्रास रेंज की 5वीं अन्तर्बटालियन बॉस्केटबॉल प्रतियोगिता के समापन समारोह की अध्यक्षता करते हुये, श्री टी. एल. राज कुमार अध्यक्ष, अरुणाचल विधानसभा, ने यह अभिव्यक्त किया कि वह खिलाड़ियों के खेल-स्तर तथा अनुशासन से प्रभावित हुये। उन्होंने यह भी कहा कि के० रि० पुलिस अत्युत्तम काम कर रही है।

दिल्ली राज्य बाँस्केट बॉल

दिल्ली के करोड़ीमल कालेज में आयोजित दिल्ली राज्य के बास्केटबाल टूर्नामेंट के फाइनल में थलसेना सिगनल्स को 74-62 से हराकर सिरमौर जीता। लम्बे दुबले पतले वी० एन० कुट्टी को ही अपने 28 अंक की प्राप्ति पर, इस जीत का प्रमुख श्रेय जाता है।

कैप्टंस स्पोंट्स कल्ब बास्केटबाल टूर्नामेंट

दिल्ली में 4 से 11 सितम्बर 1982 तक खेले गये कैप्टंस् स्पोर्ट्स कल्ब टूर्नामेंट में, के०रि०पु० बल ने विजय पाई। दिल्ली क्लाथ मिल्स्, भारतीय वायु सेना और ई. एम. ई. जैसे शक्तिशाली प्रतियोगियों को इस बल ने हरा कर, दिल्ली पुलिस को फाइनल में 63-41 अंको से जीता। टूर्नामेंट का सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी, के०रि०पु० बल का पी.एन. कुट्टी घोषित किया गया।

दलपति

[ले०—श्री दुर्गामाधव मिश्र, आई. जी.]

दलपति विकास बाबू डनलप-गद्दी की कुर्सी पर बैठे वायें से दायें घूम रहे हैं।

खिड़की से माघ का महुआ-पवन शायद अन्दर आने की अनुमति मांग रहा है। किसी अधखुले किवाड़ को वह खटखटा रहा है—'क्या मैं अन्दर आ सकता हूँ?' मुड़कर देखा, तब सामने दीवार पर टंगा है श्याम पट्ट, जिस पर लिखा है सफेद अक्षरों में उनकी वाहिनी के कर्मचारियों का ब्यौरा-दलपति से लेकर छोटे कर्मियों तक की गिनती—उनमें कितने बीमार हैं। कितने काम से बाहर भेजे गये हैं। कुल एक हजार एक सौ त्रियान्वें लोगों के माई बाप हैं विकास बाबू—वे सब उनकी प्रजा है और उनकी जमींदारी है दो सौ एकड़ भूमि का परिसर।

दायीं ओर एक अन्य है श्याम पट्ट, जिस पर लिखे हैं उन व्यक्तियों के नाम, जो 1945 से इस वाहिनी के गठन के बाद से दलपति रहे हैं और उनके विकास बाबू हैं तेरहवें दलपति—'अनलकी थर्टीन'— 'अभागे तेरह'—मन ही मन, विकास बाबू लगे बड़बड़ाने।

बायीं ओर रखी है शीशे की अलमारी; उसमें रखे हैं चार शील्ड और नौ कप, जिन्हें आठ दिन पहले अन्तर्वाहिनी प्रतियोगिता में उनकी वाहिनी ने जीता है।—जरा मुस्कराने लगे विकास राय—लेकिन यह क्या ? चार शील्ड और नो कप का योग—फिर वही तेरह !

विकास बाबू के मुख पर थिरकती मुस्कान सिहर गयी। उनकी चिकनी काली मूछों में कहीं सिमट कर वह सो गयी। दलपति के अधरों की रेखा कड़ी हो गयी। झुँझलाहट का निशाना सा बनाकर, मेज की बायीं तरफ लगी बिजली की घंटी को दबा दिया। विचारी घंटी टें-टें करती बजने लगी। अर्दली सिपाही दौड़ा-दौड़ा कमरे में घुस कर सैलूट मारते बोला—हुजू—र—र।

फिर भी अंध-विश्वास से संत्रस्त विकास बाबू को अंगुली से बिजली की घंटी को छुटकारा कहाँ ? वह बजे जा रही थी। उस की निरन्तर ध्वनि सुनकर उपदलपति, अधिदल पति, सूबेदार, जमादार, सभी दौड़ पड़े। पर सभी थे एक दूसरे का मुख देखते हुये चुप।

तभी पहुँचे हैड क्लर्क—एक प्रौढ़ व्यक्ति, नाक पर गोल-गोल काँच का चश्मा चढ़ा। वह सब को धकेल कर सामने आ पहुँचे। तोड़ते खिलोने को बच्चे के हाथ से छीनने की भाँति, बड़े बाबू ने विकास बाबू की अंगुली बटन से हटा दी। तब कहीं जा कर घंटी को मुक्ति मिली; विकास बाबू को चेतना आई; जवा के फूल जैसी लाल उनकी आँखें हो रही थीं और धकधका रही थीं धौंकनी की तरह उनकी शिरायें। कुर्सी छोड़ कर खड़े हो गये वह छै फुटे विकास राय;—बढ़िया प्रेस की हुयी टेरीकाट पैंट, कमीज और—चौड़ी पेटी।

यहाँ कोई तमाशा हो रहा है, जो सबने भीड़ लगा रखी है ? कितनी बार कहा—एक-एक करके आओगे, तब हम सबकी फरियाद सुनेगे? एक तुम लोग हो जो सभी कमरे में..." कहते हुए वह भीड़ की तरफ लपके "जाओ, जाओ, अपना काम देखो।"

मेमनों की तरह, एक-एक करके सभी सलाम करते चले गये—कोई यह नहीं बता सका कि क्यों वे वहाँ हाजिर हुए थे।

अकेले खड़े रह गये थे हैड क्लर्क-जल धर बाबू-चश्मे के मोटे शीशे से निर्भीक ताक रहे थे बह विकास राय की तरफ, जैसे उनके इस लड़के ने कोई शैतानी की हो। विकास राय नेत्र ऊपर नहीं उठा पा रहे थे। वस्तुतः एक नासमझ बच्चे से, वह मौन बैठे हुये थे।

पहले ही खबर करा दी थी जलधर बाबू ने। डाक्टर साहब रक्तचाप मापक यंत्र लिये अन्दर आ पहुँचे। कमीज की बायीं आस्तीन ऊपर चढ़ा कर, उन्होंने यंत्र लगाया और लगे देखने कान में स्टेथेस्कोप लगाकर रक्तचाप। 210 व 120 । डाक्टरसाहब के चेहरे पर शिकन पड़ी; पर तुरन्त हँसी में बदलते हुये, उन्होने पूछा-कल रात देर से सोये थे, सर।

अचानक टेलीफोन की गरज, विकास राय चौंके। वह उठाने ही जा रहे थे कि जलधर बावू ने उसे ले लिया। संक्षिप्त बात की; और दबा दिया एक बटन। अब यहाँ फोन आयेगा ही नहीं; दूसरे कमरे में, अब फोन की घंटी बजेगी।

इधर डाक्टर अपने प्रश्न के उत्तर की प्रतीक्षा में विकास राय पर नजर गड़ा रहा था —पर विकास बाबू को कुछ भी याद नहीं कि कल एक सामरिक वाहिनी के वार्षिकोत्सव की पार्टी थी और उसके मुख्य अतिथि थे वह खुद। उन्होंने ही दो चार अंग्रेजी वाक्य बोलकर, समारोह का उद्घाटन, किया था। वे वाक्य भी उनके अपने नहीं थे, वे थे किसी अन्य व्यक्ति के, टाइप किये हुए कागज पर; बड़ी तालियाँ बजी थीं —मानों लोगों ने ऐसा सारगर्भित भाषण जीवन में पहली बार सुना हो।

तत्पश्चात् मनोरंजन कार्यक्रम चला; प्रेक्षागार के घने अंधकार में मुख्य अतिथि के सामने रखी थी एक मेज और मेज पर ईगल पक्षी जैसी एक बादामी बोतल, सोडा और बर्फ।

फौज के गोरखा सिपाहियों ने शुरू किया अपना नाच; पर्दे के पीछे से आने लगी सुमधुर तान; उधर विकास राय के मुँह में लगा था जाम—वह पीते चले जा रहे थे और देखते जा रहे थे थिरकते फौजियों के हाव-भाव।

अगर कभी गिलास खाली होता, तब भर देता था तत्काल उसे पास में बैठा एक हवलदार, जो पास बैठे फौज के कमान्डर की भी सेवा कर रहा था। कुछ काल के बाद, विकास राय ने कमांडर की ओर सार्थक दृष्टि डाली।

'बाहर जायेंगे, सर।'

विकास राय ने कोई जवाब नहीं दिया; पर कुर्सी छोड़ कर खड़े हो गये। उन्हें लगा मानों डनलप पिलो पर खड़े हों; पैर डगमगा रहे थे; पर मन थिरक रहा था। तभी तो स्टेज पर वह जा पहुँचे और मिल गये नाचने वाले गोरखों की टोली में, हाथों में सुरा का गिलास लिये।

बाजा जोर-जोर से बजने लगा; गाना और भी मीठा लगने लगा—'प्रियतमा की याद में चाँदनी रात में प्रेमी विलाप कर रहा है।' विकास राय नाच रहे हैं—न कोई छन्द—न कोई ताल; परन्तु प्रेक्षागृह में तालियों की ढेर सारी गड़गड़ाहट, भूरि-भूरि

प्रशंसा—'सच्चे नायक इसे कहते हैं; कितने बड़े अफसर हैं, पर नाच रहे हैं सामान्य जवानों के साथ, बिना घमंड के।'

नाच खत्म हुआ; रोशनी बुझी; सहसा गिरने की ध्वनि। कोई नहीं देख सका कि कैसे लोकप्रिय दलपति नशे में भूलुण्ठित हो रहे हैं। जवान उन्हें उठा ले गये—लिटा दिया गाड़ी में, जो चल पड़ी विकास राय के बंगले की ओर।

'हां, कल रात सोने में कुछ देर हो गयी थी। कोई खास बात।'

डाक्टर ने उन्हें धीरे से झिंझोड़ा। 'कुछ नहीं। महज थकान है आपको। ये दो गोलियाँ खा कर आराम कीजिये।' रक्तचाप मापक यंत्र को समेट कर, डाक्टर उन्हें आश्वासित कर चले गये; लेकिन जलधर बाबू खड़े रहे। और डाल रहे थे दृष्टि विकास राय पर—वह दृष्टि जो विकास राय के अन्तर्मन को भेद कर व्योरेवार छानबीन कर रही थी।

विकास बाबू के पिता तापसराय जलधर बाबू को इसी फौज में नौकर कराते हैं; उस समय विकास बाबू सात साल के हैं; उनको पढ़ाने का भार जलधर बाबू पर सौंपा जाता है। आफिस करते व सुबह शाम उन्हें वह पढ़ाते। कभी बाल विकास पढ़ना नहीं चाहते-उनकी माँ कहती—'आज घर पर पार्टी है—विकास नहीं पढ़ेगा। कल आइयेगा।'

लौटते हुये तापस राय से भेंट हो जाती है, वह पूछते हैं 'आज जल्दी पढ़ाई खत्म हो गई।' जलधर बाबू कुछ नहीं कहें चुपचाप सरक जाते हैं। पीछे से सुनाई पड़ती है तापस बाबू और उनकी पत्नी की तू-तू, मैं-मैं। मन में दुःख का बोझ लिये जलधर बाबू घर चले जाते हैं।

दूसरे दिन तापस राय आफिस में गुमसुम बैठे होते हैं। जलधर बाबू से क्षमापरक स्वर में कहते हैं, 'कल आपको कष्ट ही हुआ न।'

दारुण नीरव।

'मैं सोच रहा हूँ, विकास को होस्टल में डाल दें। घर में रह कर तो वह आदमी बन नहीं सकता।'

विकास राय पब्लिक स्कूल गये—पास हुये। कॉलेज गये। दो तीन बार इम्तहान में धक्का देकर, पास किया। फिर इस फौज में भर्ती हो गये। पिता के सेवा निवृत्त होने पर आज वह इसके दलपति हैं। जलधर बाबू भी गुमाश्ते से बढ़ते हुये आज हेड क्लर्क हैं। वही सब कुछ संभाल लेते हैं।

हाथ पकड़कर उठाया विकास राय को; गाड़ी में बिठा कर खुद पास बैठे। गाड़ी पहुँचती है विकास राय के बंगले पर। सिपाही उन्हें सहारा देकर ड्राइंगरूम में ले जाता है। स्वर्गीय तापस राय के टंगे तैल चित्र को जलधर बाबू मन ही मन नमस्कार करते हैं, फिर सोने के कमरे में लिटा कर, विकास राय को दो गोली खिलाते हैं; तब बाहर चले आते हैं : 'थापा, मेम साहब कहाँ हैं ?'

सिपाही कुछ क्षण मौन रहकर बोला, 'वह तो नहीं हैं, हुजूर।'

'कहाँ गई ?'

थापा फिर मौनः तब बुदबुदाया—'आज सुबह कहीं चली गईं, साहब'।

सिपाही को इमसे अधिक जानकारी जान कर भी नहीं देते हुये देख कर, जलधर बाबू आफिस को चल पड़े। उन्हें ध्यान आ रहा है—दस साल पहले, इस घर में विकास की शादी हुई थी। सब कुछ इन्तजाम जलधर बाबू पर था; बड़े ठाटबाट से शादी हो गई; पर दूसरे दिन सुबह, जलधर ने देखा—तापस राय माथे पर हाथ टेक कर बैठे हैं।

'क्या बात है, सर?'

'और क्या होता? मेरा बेटा न होता' तो कल रात को, मैं पिस्तौल से भून देता; अच्छा, आप जाइये।'

सारी उत्कंठा को दबाये, जलधर बाबू लौट पड़े; उधर से घोड़े को दौड़ाये आ रहे हैं निकास राय। जलधर बाबू को देख कर उतर पड़े 'ओह, तुम घर से आ रहे हो। क्या देखा ?'

इससे पूर्व कि जलधर बाबू कुछ बोलते, उन पर दो चाबुक जमा दिये विकास राय ने। फिर घोड़े पर सवार होकर नौ दो ग्यारह हो गये। जलधर भौंचक्के खड़े रह गये। मन में तो आया-तापस बाबू के आगे सारी बातें बता दें। शिकायत करें ? पर यह क्या ? साहब के बंगले से ही रुदन ध्वनि उनके कानों में पड़ीं। उनके पैर रोके से नहीं रुके; वहाँ जाकर देखा : तापस राय ने खुद अपनी छाती में गोली मार ली है।

खून का झरना बह रहा है। शराब का गिलास हाथ में लेकर ढीठ भरी नजरों से विकास राय पिता की ओर निहार रहे हैं। सारी लोकलाज भूलकर, नवविवाहिता वधु ससुर की लाश पर लोट रही है; करुण क्रन्दन कर रही है।

जलधर बाबू के दृगों में वही दृश्य तर गया। तभी थापा ने उनके दिवा-स्वप्न को भंग किया, 'जाने के वक्त मेम साहब ने कहा—अब वह नहीं लौटेंगी।'

चौंक उठे जलधर बाबू। थापा भी उनके पीछे-पीछे चला जा रहा है—यह वह नहीं जानते थे। घूम कर देखा, तब थापा की आँखों में आँसू थे।

जलधर बाबू ने दर्द भरी एक आह भरी और अपने आँसू पोंछते हुये, वह धीरे धीरे बढ़ने लगे।

सूक्ति सुधा

तृष्णा का कोई अन्त नहीं है, बुद्धिमान् सन्तोष को सर्वश्रेष्ठ और परम सुख मानते हैं।

—वेदव्यास

आशा सर्वोत्तम प्रकाश है और निराशा घोर अन्धकार है।

—रश्मिमाला

संसार में दुःखी निधन होता है; किन्तु उससे भी दुःखी वह होता है जिसे कर्ज चुकाना होता है।

—बिदुर

दस डूबते व्यक्तियों की प्राण रक्षा

दिनांक 8 जून 1982 को, फकीराग्राम (असम) के पास हेल नदी में गिरी बन विभाग की गाड़ी में फंसे 10 व्यक्तियों के प्राण, 61 बटालियन के जवानों ने बचाये। एक बालक को बचाने के यत्न में, ड्राइवर गाड़ी को संभाल नहीं सका और वह तेज नदी में जा गिरी।

बिना अपने प्राणों की चिन्ता किए हुए, का० मीर हाकिम अली, टी. एस. आर. सी. प्रसाद, करनैल सिंह और गणेश चन्दर, नदी में कूद पड़े और फँसे हुए सभी यात्रियों को बचा लिया। स्थानीय लोगों और वन विभाग के अधिकारियों ने उनके वीरता के इस काम की बड़ी प्रशंसा की।

लोक मुक्ति सेना के दो शीर्षस्थ नजरबन्दी

लाऊशंग स्वोर्ग ग्राम के निकट, 5 बटालियन ने 9 जून 1982 को एक साहसी अभियान में लोक मुक्ति सेना के दो प्रमुख जन-बुद्धासिंह और रॉबिन सिंह को बन्दी बनाया।

उससे पहली रात को, तरखुल और कीबी खुल्लेन के निकट नदी-के पार पथ पर दो घातें लगाई गयीं। सुबह होते ही, के० रि० पु० बल की दो टुकड़ियां निकटवर्ती गांवों को लौट गयीं। स०इ० सन्तोषसिंह और उसकी टुकड़ी लुशंगखोरी ग्राम को वापस गई और कीबी खुल्लन को जाने वाले मार्ग के ऊपर दीखने वाले घर पर तैनात हो गयी। उत्तराह्न में, कां० केशव राम ने तीन आगन्तुकों की गतिविधि देखी, टुकड़ी मारने को तैयार हो गयी गयी। जैसे ही आगन्तुक नाले के पार करने वाले थे, हे० कां० गोपालसिंह, कां० सी. एस. बी. राव, केशव राम, इन्दरसिंह और तेजबीर सिंह ने उन्हें ललकारा।

तीनों आगन्तुकों ने तुरन्त स्थान संभाल कर गोली चलानी शुरू कर दी। ज़वाबी गोलियों की बौछार से, कां० राव ने दो आगन्तुकों को बेध डाला; तभी टुकड़ी ने झपट कर उन्हें बन्दी बना लिया, तद्यपि खूब पीछा करने पर भी उनका नेता मणिकान्त बच भागा।

बुद्धसिंह और राबिनसिंह से एक स्टेनगन, एक पिस्तौल मणिकांत की निजी डायरी के साथ, कुछ महत्वपूर्ण क़ागज़ात भी बरामद हुये।

घात में चार की मृत्यु

मिजोरम में 23 अक्टूबर 82 को राजद्रोहियों द्वारा लगाई गयी घात में, 38 बटालियन, के० रि० पु० बल के श्री जी. पी. पुँज, डी वाई. एस. पी., ला. ना. डी. के.

अवस्थी, अनुचर भूप सिंह और अनुचर अजबलाल मारे गये। तीन रायफलें, एक पिस्तौल और बारूद के साथ, तीन मैगजीनें भी राजद्रोही ले भागे।

जोहूमन चौकी पर जवानों को वेतन देकर लौटते समय, स्व० श्री पुंज को लक्ष्य बनाया गया। मिजो राष्ट्रीय मोर्चे के राजद्रोहियों के विरुद्ध, उन्होंने भारी जिहाद छेड़ रक्खा था।



राजसिंह सेवा निवृत

श्री राजसिंह, पुलिस उपमहानिरीक्षक (के० रि० पु० बल) नीमच 35 वर्ष सेवा कर 31 अक्टूबर 1982 को सेवा से निवृत्त हो गये। 1959 में हाट स्प्रिंग्ज पर के. रि. पु. बल के जवानों पर चीनियों की घात, 1962 में लद्दाख पर चीनी आक्रमण, 1965 जम्मू-कश्मीर पर पाकिस्तानी आक्रमण और पूर्वोत्तर में राजद्रोह जैसे ऐतिहासिक अवसरों की कितनी ही कार्रवाईयों से, वह सम्बद्ध रहे। उन्हें पुलिस सराहनीय सेवा पदक तथा राष्ट्रपति पुलिस और अग्निशमन सेवापदक भी मिले हैं।

अजमेर में वृक्षारोपण

ग्रुप केन्द्र I अजमेर ने 24 जुलाई 1982 को वृक्षारोपण-दिवस के रूप में मनाया। उस दिन कम से कम 3,000 वृक्ष परिसर में लगाये गये। श्री त्रिपेश त्रिपाठी, उपमहानिरीक्षक, अजमेर ने उस उस समारोह का उद्घाटन किया।

पुलिस कर्मियों के आश्रितों को लाभ

के०रि०पु० बल के उन सदस्यों के आश्रितों को जिनका जनवरी 1982 को के बाद

या तो सेवारत निधन हो गया है या जो असमर्थ हो गये हैं, निम्नालेखित दरों से, के० रि० पु० बल शिक्षाकोष से वित्तीय साहाय्य दी जाने लगी है—

(I) 1 से 4वीं कक्षा तक—

125 रु० प्रति मास—

(II) 5 से 12वीं कक्षा तक—

150 रु० प्रति मास।

(III) 12वीं कक्षा से ऊपर—

सामान्य छात्रवृत्ति के अनुसार।

(IV) बल के मृतक सदस्यों के आश्रित बालक, गुणवन्ता छात्रवृत्ति के भी योग्यपात्र होंगे; पाने वाले बालक सामान्य छात्रवृति योग्यपात्र होंगे; किन्तु गुणवत्ता छात्रवृति के पात्र नहीं हो सकेगे।

केन्द्रीय कल्याण कोष से लाभ

केन्द्रीय कल्याण (संकट प्रतिफल) कोष से, 3.65 लाख रु० की कुल धनराशि, फरवरी से सितम्बर 82 तक मुत्युप्रकरणों को स्वीकृत की गयी; साथ में, हर मामले में बीस वर्ष तक 250 रु० प्रतिमास भी देने की व्यवस्था की गई। इसके अतिरिक्त, 195 अन्य मामलों में 7,500/3,750 रु० की दर से 13,83,750रु० की इकट्ठी धनराशि दी गई।

राशन धन

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के अराज-पत्रित वर्दीधारी कर्मियों के लिये, 1 अक्टूबर, 1982 से राशन धन में सरकारी अंशदान की दरें इस प्रकार संशोधित की गई हैं—

(i) **अर्हता प्राप्त क्षेत्र**—141 रु० प्रतिमास प्रति व्यक्ति।

(i) अनर्हता प्राप्त क्षेत्र—119 रु० प्रतिमास प्रति व्यक्ति।

मुख्यालयों पर स्थिर यूनिटों और प्रशिक्षण संस्थानों में, इसके लिये 50 रु० प्रति मास प्रति व्यक्ति की ही दर चलती है।



रजिस्टर्ड नम्बर 25627/74

श्री आर. एन. शिवपुरी को मरणोपरान्त दिये गये राष्ट्रपति पुलिस विशिष्ट सेवा पदक को पाती हुयीं श्रीमती शिवपुरी

